मॉडर्न

विश्व का सैन्य इतिहास

(World Military History)

डॉ. सुरेन्द्र कुमार मिश्र

AN ISO 9001 : 2000 CERTIFIED COMPANY

मॉडर्न पब्लिशर्ज़

मॉडर्न

विश्व का सैन्य इतिहास

(World Military History)

बी० ए० प्रथम वर्ष

(कुरुक्षेत्र व महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के लिए)

संशोधित संस्करण

लेखक

डॉ० सुरेन्द्र कुमार मिश्र

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता

एच० ई० एस०

(एम०ए०, पी-एच०डी०, सी०आई०सी०, पी०जी०डी०जे०एम०सी०)

अध्यक्ष

रक्षा अध्ययन विभाग,

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार

2007

मॉडर्न पब्लिशर्ज़

(उच्चकोटि की पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशक)

मूल्य रु० 100.00

Our Addresses In India

- **New Delhi.** Gulab Bhawan, 6, Bahadur Shah Zafar Marg *Ph. 23317931, 23318301, 51509091 to 95*
- **Jalandhar City.** MBD House, Railway Road *Ph. 2458388, 2459046, 2455663*
- **Delhi.** 1675, Nai Sarak *Ph. 23264887*
- **Delhi(Shakarpur).** MB161, Street No. 4 *Ph.22518122,22546557*
- **Delhi(Daryaganj).** MBD House, 4587/15, Opp. Times of India *Ph.23245676*
- **Delhi(Patparganj).** Plot No. 225, Industrial Area *Ph.22149691,22147073*
- **Mumbai.** A-683, MIDC, T.T.C. Industrial Area, Off. Thane-Belapur Road, Navi *Ph.55906739,55906740*
- **Pune.** C-Kaul Building No. 2, IInd Floor, Flat 'C', Gurunanak Nagar, Shankar Sheth Road *Ph. 6431413, 6435071*
- **Kolkata (Calcutta).** Satyam Building, 46-D, Rafi Ahmed Kidwai Marg *Ph. 22296863, 22161670*
- **Chennai.** 26/1, Motilal Street, T. Nagar *Ph. 24343171, 24332564*
- **Chennai.** No. 26 B/2 SIDCO Estate, North Phase, Pattravakkam Ambattur Indu. Estate, Ambattur *Ph. 26356350, 26359376*
- **Chennai.** 17/16, Sundar Bans, 2nd Floor, 1st Avenue, Near Ashok Pillar, Ashok Nagar *Ph. 52077808, 31067991*
- **Hyderabad.** 3-4-829/A, 1st Floor, Barkathpura *Ph. 27564788, 27568884, 27560086*
- **Bangalore.** 124/31, Ist Main, Industrial Town (Near, Chowdeshwari Kalyan Mantap), West of Chord Road, Rajajinagar *Ph. 3103329*
- **Ernakulam.** Surabhi Building, South Janatha Road, Palarivattom, Kochi-682 025 *Ph. 2338107, 2347371*
- **Patna.** Ist Floor, Annapuma Complex, Naya Tola *Ph.2686994,2672732,2672478*
- **Bhopal.** MBD House, 13, Hamidia Road *Ph. 2741540, 2741103, 4240662*
- **Jabalpur.** 640, Palash Chamber, Malviya Chowk *Ph. 2405854*
- **Lucknow.** 173/15, Dr. B.N. Verma Road, Old 30 Kutchery Road *Ph. 2228062, 2759178*
- **Agra (U.P.).** 8/131, Kaushal Pur, Bye Pass Road
- **Ahmedabad.** 1-Saransh Bunglow, Near The General Co-op. Bank, Gopal Chowk, Bhairav Nath Road, Mani Nagar-380008 *Ph. 25471831, 55445730*
- **Guwahati.** Chancellor Commercial, Hem Baruah Road, Paan Bazar *Ph. 2510492, 2731008*
- **Goa.** H.No. 932, Plot No. 66, Kranti Nagar, Behind Azad Bhawan, Alto Porvorim, Bardez *Ph. 2413982, 2414394*
- **Cuttack.** Badam Bari, Link Road *Ph. 2312795, 2314767*
- **Sahibabad(U.P.).** B-9 & 10, Site IV, Industrial Area *Ph.2896933, 2896939*
- **Nagpur.** Govind Bhawan, 49/C, Bhagwagar Layout, Dharampeth *Ph.2536610, 2550587, 2550592*
- **Jaipur.** G-11, Kartarpura Industrial Area, 22 Godown *Ph. 2210158*
- **Raipur.** Beside Kailash Provision Store, Ravi Nagar *Ph. 4057201, 4038006*
- **Shimla.** Sector-I, Phase-I, 24/25-D Below B.C.S. New Shimla *Ph. 2670221*
- **Karnal.** Plot No. 203, Sector-3, HSIDC, Near Namste Chowk, Opp. New World *Ph. 2220006, 2220009*
- **Ranchi (Jharkhand).** Shivani Complex, 2nd Floor, Jyoti Sangam Lane, Upper Bazar
- **Dehradun**

We are committed to serve students with best of our knowledge and resources. We have taken utmost care and attention while editing and printing this book but we would beg to state that Authors and Publishers should not be held responsible for unintentional mistake that might have crept in. However, errors brought to our notice, shall be gratefully acknowledged and attended to.

© All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise without the prior written permission of the publisher. Any breach will entail legal action and prosecution without further notice.

Published by :
BALWANT SHARMA (G.M.)
Modern Publishers,
Railway Road, Jalandhar.
Printed at :
MBD Printographics (P) Ltd.,
Ram Nagar, Industrial Area, Gagret, Distt. Una (H.P.)

JC

‘यह पुस्तक
समर्पित है, उन्हें
जो विश्व शान्ति एवं
सुरक्षा हेतु सतत
प्रयत्नशील हैं।’

प्राक्कथन

इतिहास का अध्ययन, मनन एवं चिन्तन सदैव से ही विगत घटनाओं से सबक सीखने का सबसे सबल साधन रहा है। संग्रामों अथवा संघर्षों के द्वारा ही इतिहास में नवीन अध्याय जोड़े गये हैं। युद्धों का अध्ययन प्राचीन काल से ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। हमारे भारतीय चिन्तन में युद्ध-इतिहास की विशेष भूमिका सदैव से रही है क्योंकि विगत घटनाओं की कमज़ोरियों एवं कमियों की जानकारी और उनमें सुधार करने का सही पाठ इतिहास के द्वारा ही पढ़ने को मिलता है। युद्धों ने अपने द्वारा इतिहास की धारा को ही मोड़ दिया है। अब तो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा व शान्ति का भाग्य युद्धों के परिणामों पर निर्भर करने लगा है। यही कारण है कि विश्व-स्तर पर युद्धों के प्रति जागरूकता लाने के लिए प्रत्येक वर्ग अब चिन्तित ही नहीं बल्कि विवश भी हो गया है।

विश्व का सैन्य-इतिहास तत्कालीन सैनिक संगठन, शस्त्रास्त्र, कूटियोजना,समरतन्त्र एवं संरचनाओं का ही उल्लेख नहीं करता बल्कि सेनापतियों की सामरिक प्रतिभा का स्पष्ट विवेचन प्रस्तुत करता है। इसी के साथ ही समकालीन सैन्य विचारकों का समीक्षात्मक संक्षिप्त उल्लेख भी किया गया है। इसका उद्देश्य तत्कालीन के विचारों एवं प्रक्रियाओं की जानकारी करना ताकि विश्व-व्यापी और विनाशकारी युद्धों पर अंकुश लगाया जा सके। 3 जनवरी, 1993 को अमेरिका एवं रूस ने अपने परमाणु हथियारों के ज़खीरे में दो तिहाई कटौती की तथा ऐतिहासिक सन्धि 'स्टार्ट द्वितीय' (START-II) पर हस्ताक्षर किये, जिसमें शांति का एक नया अध्याय शुरू हुआ। यही कारण है कि युद्धों का अध्ययन शान्ति का प्रेरणा स्रोत कहा जाता है। सैन्य विज्ञान के विद्यार्थियों को विश्व का सैन्य इतिहास न केवल सैन्य विचारकों तथा सेनापतियों की सामरिक गतिविधियों को ही परिलक्षित करेगा, बल्कि विनाश पर अंकुश लगाने के साथ ही राष्ट्रीय सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाये रखने की प्रेरणा भी प्रदान करेगा, ऐसा दृढ़ विश्वास है।

महाभारत का युद्ध-क्षेत्र अर्थात् कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय एवं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय ने 'बी० ए० प्रथम वर्ष' के सैन्य विज्ञान रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन में इस पाठ्यक्रम को इसी उद्देश्य से शायद रखा है ताकि पाश्चात्य युद्धों से सबक ले और आगामी युद्धों के प्रति सतर्क रह सके। नवीन व संशोधित संस्करण छात्रों के हितों को दृष्टि में रखते हुए प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक की संरचना में जिन लेखकों की कृतियों का सहयोग लिया है, उन लेखकों के प्रति विशेष रूप से आभार प्रकट करना चाहूँगा। आरम्भ से अब तक

जिन गुरुओं की कृपा से आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है उनके नाम लिखकर न तो स्वयं को तथा न उन सभी को सन्तुष्ट कर सकूँगा किन्तु उनके प्रति सदैव श्रद्धावनत रहूँगा। पूज्य पिता जी एवं माता जी के साथ ही अग्रज श्री वीरेन्द्र कुमार मिश्र एवं दीदी श्रीमती विजय दुबे की शुभकामनायें ही हमारा सम्बल रही हैं। सहज एवं सादगी के सच्चे उदाहरण के रूप में अपने मित्र श्री नरेन्द्र कुमार पाण्डेय , कल्याण अधिकारी लोक-सभा, दिल्ली तथा स्नेही एस० के० शर्मा जी (महाप्रबन्धक), हिसार तथा स्व० शिवप्रताप शर्मा जी, रोहतक का उल्लेख करके गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ।

अन्त में प्रस्तुत पुस्तक की रचना के लिए श्रेय सैन्य विज्ञान में विद्यार्थियों की बढ़ती रुचि एवं विषय के प्राध्यापकों की प्रेरणा को देना चाहूँगा। अपनी धर्मपत्नी डॉ० (श्रीमती) माया मिश्र (मोनिका) एवं बहन कु० करुणा को पुस्तक की संरचना में सहयोग के लिए धन्यवाद के शब्द लिखना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूँ। अपने बच्चों यशस्वी एवं सौम्या की मधुर मुस्कानों के लिए भी कायल रहूँगा। पाण्डुलिपि को पुस्तक का सुन्दर स्वरूप प्रदान करने के लिए अपने प्रकाशक के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ। पाठक अपने विचारों से अवश्य अवगत करायेंगे, ऐसा दृढ़ विश्वास है।

डॉ० सुरेन्द्र कुमार मिश्र

SYLLABUS

MILITARY SCIENCE

Outlines of Test

Paper-I	(Theory)World Military History (Earliest Times to 1789 A.D.)	Max. Marks 70	Time 3 Hours
Paper-II	Practical	30	3 Hours

Syllabus & Courses of Reading

Note :
1. There will be one theory paper of 70 marks and one paper of practical having 30 marks.
2. Examiner should set at least ten questions including one objective type (multiple choice) question covering the entire syllabus. Candidates are required to attempt any five questions. No question is compulsory.
3. The candidates are required to pass separately both in theory and practical papers.

Paper-I World Military History (Earliest Times to 1789 A.D.) M.M. : 70 Time : 3 Hrs.

1. Influence of Armament on the History of World.
- (*a*) Inter-Relationship of weapons and tactics.
- (*b*) Winteringham's theory and Fuller's classification.
- (*c*) Constant Tactical Factor.

2. The Age of Valour :
- (*a*) Comparative study of Greeck Phalanx and Roman Legion with special reference to the Battle of Pydna (168 B.C.)
- (*b*) Detailed study of the Battle of Arbella (331 B.C.)
- (*c*) Battle of Cannae (216 B.C.)
- (*d*) Reforms made by Alexander the Great in the art of warfare.

3. The Age of Chivalry :
   (*a*) Decline of Infantry and emergence of cavalry with special reference to the Battle of Adrianople (378 A.D.)
   (*b*) Study of the Battle of Hastings (1068 A.D.)
   (*c*) Study of the Battle of Crecy (1346 A.D.)
   (*d*) Causes of the decline of Cavalry.
   (*e*) Influence of Feudalism, Church and Chivalry on medieval Warfare.
4. The Age of Gun-powder :
   (*a*) Advent of fire arms and re-emergence of infantry.
   (*b*) Impact of Science and Technology on Warfare.
   (*c*) Military reforms and contributions of Gustavus Adolphus and Frederick and Great.
5. The Age of Steam :
   (*a*) Revolution in Tactics.
   (*b*) French Revolution 1789 A.D.
   (*c*) Nepoleonic Art of War.
   (*d*) Battle of Waterloo 1815 A.D.
6. Contemporary Military Thinkers :
   (*a*) Suntzu
   (*b*) Kautilya
   (*c*) Machiaveli
   (*d*) Clausewitz
   (*e*) Jomini

विषय-सूची

1.	आयुध का विश्व इतिहास में प्रभाव (Influence of Armament in the History of World)	1—30
2.	पराक्रम का युग (The Age of Vabur)	31—70
3.	वीरता का युग (The Age of Chivalry)	71—107
4.	बारूद का युग—1346 ई० से 1789 ई० तक (The Age of Gun Powder)	108—148
5.	भाप का युग (The Age of Steam)	149-165
6.	फ्रांसीसी क्रान्ति (French Revolution)	166-187
7.	नेपोलियन की युद्ध कला (Napolionic Art of War)	188-204
8.	समकालीन सैन्य विचारक (Contemporary Military Thinkers)	205-247
	यूनिवर्सिटी पेपर	**248-250**

1 आयुध का विश्व इतिहास में प्रभाव (INFLUENCE OF ARMAMENT IN THE HISTORY OF WORLD)

1. आयुध का इतिहास (History of Armament)

विश्व इतिहास की शुरुआत कहां से हुई ? इस प्रश्न का सटीक जवाब मिलना कठिन है, परन्तु यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि इतिहास को आगे बढ़ाने में आयुधों की भूमिका सदैव से अग्रणीय रही है। जैसे-जैसे सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के साथ वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति की ओर मानवता ने अपने कदम बढ़ाये हैं, वैसे-वैसे हमने इतिहास के अध्यायों को तेज़ी से आगे बढ़ाया है। प्रकृति से ही हमें अपना बचाव करने के लिए प्रेरणा मिली है। उसके स्वरूप में हमने अपनी इच्छानुसार तथा परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन किया है। प्रारम्भ में हथियार का काम मात्र विरोधी को चोट अथवा आघात पहुंचाना ही रहा किन्तु अब तो विनाश की उस कगार तक पहुंचाने में सफल हो गये हैं, जहां से स्वयं का बचाव भी कर पाना कठिन हो गया है।

विश्व में अब एक ध्रुवीय व्यवस्था स्थापित हो गयी है। सुरक्षा के समीकरण बदल गये हैं, परन्तु आयुधों की कहानी अब भी व्याप्त है और संभवतया मानवता के अन्त तक उसके साथ जुड़ी रहेगी। यद्यपि घातक हथियारों की कटौती के लिए कठिन से कठिन प्रयास जारी हैं, किन्तु उत्पादित हथियारों को विनष्ट करना भी प्रकृति एवं पर्यावरण से खिलवाड़ करके एक प्रकार से मानव सभ्यता को भारी आघात पहुंचाना ही होगा। सोवियत संघ के पतन से परमाणु हथियारों के प्रयोग की आशंका तो अब समाप्त हो गयी, किन्तु तैयार शुदा हथियारों को सुरक्षित रूप से समाप्त करना, विश्व के परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों के लिए एक गम्भीर चुनौती है। अत: आयुधों का विश्व इतिहास में अनूठा प्रभाव रहा है और भविष्य में भी बाकायदा बरकरार रहेगा।

किसी भी कार्यवाही को आरम्भ करने के लिए जहां उद्देश्य की आवश्यकता होती है, वहां उसको कार्यान्वित करने के लिए साधनों का सहारा सदैव से लिया गया है। मानव की प्रथम आवश्यकता के रूप में जो साधन रक्षा अथवा बचाव के निमित के रूप में प्रयोग हुआ उसे हम हथियारों की शुरुआत अथवा प्रथम हथियार के रूप में भी व्यक्त कर सकते हैं। स्वयं, समूह, समाज एवं स्वराष्ट्र की सुरक्षा में हथियारों की भूमिका सदैव से अग्रणीय

ही नहीं रही है, अपितु मूलाधार के समान कार्य करती रही है। युद्धों में तो हथियारों की भूमिका सदैव ही महत्त्वपूर्ण रही है और भविष्य में भी इसकी भूमिका को कभी भी नकारा नहीं जा सकेगा। हथियारों के साथ ही भौतिक एवं मानवीय अन्य साधन जो युद्ध में प्रयोग किये जाते हैं, उसे योधनसंभार (Armament) कहा गया है।

युद्ध का इतिहास और इसकी वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति मुख्य रूप से पाश्चात्य देशों (Western Countries) पर केन्द्रित रही ,क्योंकि यूरोपीय देशों ने ही पूरी दुनिया को अपने अधिकार की परिधि में घेर लिया और उन्होंने जिन हथियारों एवं युद्ध के तरीकों की शुरुआत की, वह आज तक पूरी दुनिया पर अपना वर्चस्व बनाये हुए है। जैसे-जैसे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास होता रहा वैसे-वैसे रक्षा क्षेत्र में विकास व आधुनिकता के नाम पर हथियारों की प्रगति का सिलसिला जारी रहा जो आज तक बराबर बरकरार है। यूरोपीय मध्यकालीन सामन्त युग जैसे ही आधुनिक औद्योगिक युग में प्रविष्ट हुआ वैसे ही वहां के युद्ध के तौर-तरीकों में भी तेज़ी के साथ बदलाव आया और उन्होंने सुनियोजित रूप से मौजूदा विज्ञान व तकनीकी प्रगति का उपयोग हथियारों के निर्माण के लिए शुरू कर दिया। यह आम धारणा है कि रणनीति और युद्ध कौशल के इतिहास में बारूद के युग को एक क्रान्तिकारी परिवर्तन युग या समय माना जाता है, परन्तु ध्यान देने की बात यह है कि यूरोप में हुई सैनिक क्रान्ति की शुरुआत से ही नयी तकनीकी का उपयोग धीमी गति से ही युद्ध के निमित्त किया जाने लगा था।

आयुध (हथियारों) का इतिहास का अध्ययन इसलिए आवश्यक माना गया कि हम युद्ध पद्धति को भली-भांति समझ सकें और फलस्वरूप युद्ध में सफलता प्राप्त की जा सके । यह शस्त्रों एवं सामरिकी का सम्पूर्ण इतिहास नहीं है। यह तो हथियारों एवं समरतन्त्र के उन पुराने परिवर्तनों का इतिहास है, जो वर्तमान को भी प्रभावित करते हुए नज़र आते हैं। **वाल्टेयर** का कहना है कि '**इतिहास मुख्य रूप से हिंसा, विनाश ,मानव दुःखों व मृत्यु की घटनाओं से परिपूर्ण है तथा विभिन्न देशों के बीच सशस्त्र संघर्ष तो अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास की एक साधारण घटना है। प्राचीन काल से ही एक वर्ग दूसरे वर्ग, एक समाज दूसरे समाज तथा एक देश दूसरे देश से संघर्ष सदैव ही करता आया है।**' इतिहास इस बात का साक्षी है कि विश्व में हो रहे राजनीतिक,आर्थिक, सामाजिक, कूटनीतिक, वैज्ञानिक व तकनीकी परिवर्तन के कारण युद्ध की प्रकृति व क्षेत्र में परिवर्तन तो होते रहे हैं, परन्तु युद्ध कभी अन्तिम रूप से समाप्त नहीं हुआ। बदलते समय के साथ हथियारों के उपयोग और युद्ध के तौर-तरीके में ज़ोरदार बदलाव अवश्य आया।

यह बात सही है कि किसी भी साध्य की प्राप्ति हेतु साधनों की ज़रूरत होती है, जिसमें मानवीय, भौतिक, मनोवैज्ञानिक एवं बौद्धिक साधन अधिकांश रूप से सहयोगी होते हैं। इसी सन्दर्भ में हम कह सकते हैं कि हम अपने हितों की सुरक्षा के लिए अनेक साधनों का प्रयोग करते हैं। इसमें युद्ध या संघर्ष एक महत्त्वपूर्ण कारक रहा है, जिसने मानव को विकास एवं शक्तिशाली बनने की प्रेरणा प्रदान की। मनुष्य ने सर्वप्रथम अपने हथियारों का निर्माण युद्धों के लिए ही किया। किसी भी युद्ध के लिए इरादा और

प्रतिस्पर्धा का अस्तित्व अति आवश्यक है। युद्ध के इरादे को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार की सेनाओं, साज-सज्जा, शस्त्रास्त्रों की आवश्यकता होती है। इन साधनों को श्रेष्ठ व उपयोगी बनाने हेतु उसके विषय में जानकारी की ज़रूरत पड़ती है। युद्ध में प्रयोग किये जाने वाले इन्हीं मानवीय व भौतिक साधनों को आयुध (Armament) कहा जाता है।

इस संदर्भ में **क्वींसी राइट** (Quincy Wright) ने अपनी पुस्तक **'ए स्टडी ऑफ वार'** (A Study of war) में लिखा है-

" A military instrument is a material or social entily used by a government to distroy or to control by threate or violence another government or ward off such distruction or control."

(योधन संभार या आयुध वह भौतिक तथा सामाजिक अस्तित्व है, जिसका प्रयोग कर कोई सरकार किसी अन्य सरकार को समाप्त करती है अथवा धमकाकर या हिंसा के माध्यम से नियन्त्रित करती है अथवा स्वयं की ऐसे विनाश या नियन्त्रण से सुरक्षा करती है।)

मेजर जनरल **जे०एफ०सी० फुलर** (Maj Gen.J.F.C Fuller) ने **'आयुध'** Armament के सन्दर्भ में लिखा है-

"In the fullest, the word 'armaments'includes the whole paraphernalia of war- the sea, land and air force of a nation."

(आयुध या योधन संभार शब्द के सम्पूर्ण अर्थ में युद्ध की सभी सामग्री सम्भावित है, जैसे किसी राष्ट्र की समुद्रीय, ज़मीनी और वायुशक्ति।)

आयुध में मुख्य रूप से हथियार आते हैं, जिसे युद्ध सामग्री का मुख्य तत्त्व कह सकते हैं। अत: हथियारों की व्यवस्था का विश्लेषण ज़रूरी है।

हथियारों के अध्ययन के पूर्व इस शब्द की व्याख्या करके परिभाषा जानना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इसके आभास में विषय-वस्तु का स्थान अधूरा-सा रह जाता है। हथियार शब्द की परिभाषा देने के लिए अनेक विद्वानों ने अनेक पक्षों जैसे—उसकी उपयोगिता, विशेषतायें तथा कार्यक्षमता आदि को विशेष रूप से ध्यान में रखकर परिभाषित करने का प्रयास किया है। यही कारण है कि हथियारों की एक सर्वमान्य परिभाषा निश्चित नहीं हो सकी है। इसका एक कारण यह है कि कुछ विद्वान् आयुध को हथियारों का विज्ञान मात्र ही कहते हैं, जबकि कुछ विद्वान् हथियारों को आयुध का प्रमुख अंग कहते हैं। इन लोगों के मतानुसार हथियार अन्य यौद्धिक सामग्री की अपेक्षा बेहतर है। उनके अनुसार हथियार वह मुख्य साधन है, जिसके माध्यम से युद्ध का फैसला होता है, परन्तु यह सोच आयुध के क्षेत्र को एक सीमित परिधि में ही घेर देती है।

अब हम संक्षिप्त में हथियारों के सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानों की परिभाषाओं का अलग-अलग उल्लेख करते हैं, जो इस प्रकार से है-

1. परिभाषा

1. प्रसिद्ध सैन्य विचारक **जनरल जे०एफ०सी० फुलर** (Gen. J.F.C. Fuller) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक " Armament and History " में हथियार को इस प्रकार से परिभाषित किया है-

" Weapon is an instrument with striking power."

(हथियार आघात या चोट पहुंचाने वाला शक्तिशाली औज़ार है।)

2. **ब्रेडले ए० फिस्की** (Brodley A. Fiske) ने अपनी पुस्तक "The Art of Fighting " में हथियार की परिभाषा इस प्रकार से की है-

" If used to guard or attack an implement becomes a weapon....."

(जब कोई साधन यदि आक्रमण या रक्षा के लिए प्रयुक्त किया जाता है, तो वह हथियार बन जाता है।)

क्वीन्सी राइट (Quency Wright) महोदय ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Study of War' में हथियार शब्द को इस प्रकार से परिभाषित किया है-

3. **" Weapons are materials or machanical devices for use in war. A weapons usually combines striking power, mobility, protection and holding power in varying degrees."**

(हथियार युद्ध में प्रयोग किये जाने वाले भौतिक अथवा यान्त्रिक साधन हैं। एक हथियार साधारणतया प्रहारक शक्ति, गतिशीलता, बचाव एवं रक्षा शक्ति का विभिन्न अनुपात में समावेश करता है।)

4. **प्रो० श्याम लाल एवं मुकर्जी** ने अपनी पुस्तक सैन्य विज्ञान खण्ड प्रथम में हथियार को इस प्रकार परिभाषित किया है-

" Weapon is a device for inflicting damage on the enemy."

(हथियार वह साधन है, जिसके द्वारा शत्रु को चोट पहुंचायी अथवा घायल किया जा सकता है।)

5. **ऑक्सफोर्ड शब्दकोष** के आधार पर हथियार शब्द की व्याख्या इस प्रकार से की गयी है-

" Material things designed or used or unusable as an instrument for inflicting bodily harm."

(शस्त्र वह साधन है, जिसमें शरीर को चोट पहुंचाने अथवा घायल करने की पर्याप्त क्षमता विद्यमान हो।)

6. **ब्रैडले ए० फिस्की** की एक अन्य परिभाषा में हथियार की व्याख्या इस प्रकार से की गयी है-

" A weapon is merely a tool for a war like purpose."

(हथियार युद्ध जैसे कार्यों में प्रयोग किये जाने वाला केवल एक औज़ार मात्र है।)

7. **वैबस्टर के नये विश्व शब्दकोष** के आधार पर हथियार शब्द को इस प्रकार से परिभाषित किया गया है-

" Weapon is any means of attack or defence."

(हथियार आक्रमण अथवा सुरक्षा का एक उपाय अथवा साधन है।)

8. **क्रैप्टन एम०पी०वर्मा** के अनुसार-

"कोई भी भौतिक वस्तु जब उसे प्रत्यक्ष रूप से शत्रु पर प्रहार के लिए अथवा शत्रु से स्वयं की रक्षा के लिए प्रयोग करते हैं, तो उसे हथियार कहते हैं।"

लेखक ने अपनी पुस्तक 'संसार का सैन्य इतिहास' में हथियार शब्द की व्याख्या इस प्रकार से की है-

"हथियार वह साधन है, जिसे अपने विरोधी के निमित्त आक्रमण अथवा प्रतिरक्षा में अपनाया जाता है,ताकि उसे घातक चोट पहुंचायी जा सके।"

इस प्रकार संक्षेप में हम कह सकते हैं कि-

हथियार वह यान्त्रिक अथवा भौतिक साधन है, जिसके द्वारा किसी भी व्यक्ति, वस्तु एवं व्यवस्था को आघात पहुंचाया जा सके। इसके साथ ही आक्रमण अथवा प्रतिरक्षा की परिस्थिति में एक सबल साधन के रूप में प्रमाणित किया जा सके।

2. हथियारों का वर्गीकरण (Classification of Weapons)

हथियारों के अध्ययन के पूर्व यह आवश्यक है कि इनका वर्गीकरण कर लिया जाए ताकि क्रमानुसार एवं पूर्ण अध्ययन किया जा सके। हथियारों का वर्गीकरण करना एक कठिन कार्य भी है, क्योंकि विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप नित-नवीन प्रकार के हथियारों का विकास एवं आविष्कार होता जा रहा है तथा भविष्य के हथियारों का अनुमान लगाकर वर्गीकरण नहीं किया जा सकता है।

हथियारों का वर्गीकरण उनकी कार्यक्षमता एवं उपयोगिता के आधार पर किया जाए, तो हम मुख्य रूप से इस प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं-

1. आक्रमणात्मक हथियार (Offencive Weapons)
2. प्रतिरक्षात्मक हथियार (Defencive Weapons)

1. आक्रमणात्मक हथियार (Offencive Weapons)—इस श्रेणी के अन्तर्गत वे हथियार आते हैं जो प्राय: शत्रु को आघात अथवा चोट पहुंचाये जाने के उद्देश्य से प्रयोग किये जाते हैं । इन हथियारों का अधिकांश उपयोग आक्रमण की स्थिति में ही किया जाता है। इसके अन्तर्गत छोटे-से-छोटे हथियार से लेकर अन्तर्महाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्र (I.C.B.M.) श्रेणी तक के सभी हथियार आते हैं। आक्रमणात्मक हथियारों को पुन: तीन भागों में विभक्त किया गया है-

(क) आरक्षित हथियार (Unattented Weapons)

(ख) भिड़त हथियार (Close Combat Weapons)

(ग) प्रक्षेप हथियार (Missiles Weapons)

2. प्रतिरक्षात्मक हथियार (Defencive Weapons)— इस श्रेणी के अन्तर्गत वे हथियार आते हैं, जो शत्रु पक्ष के हथियारों के बचाव के विरुद्ध प्रयोग किये जाते हैं और शत्रु के आक्रमण को विफल करने का प्रयास करते हैं। इसके अन्तर्गत वे सभी हथियार आते हैं जैसे—एण्टीएयर क्राफ्ट मशीनगन, एण्टी टैंक गन, एण्टी टैंक रॉकेट, प्रक्षेपास्त्र विरोधी प्रक्षेपास्त्र, पनडुब्बी विरोधी प्रक्षेपास्त्र, विमान विरोधी विमान तथा विमान विरोधी प्रक्षेपास्त्र, पनडुब्बी विरोधी पनडुब्बी आदि।

उपर्युक्त वर्गीकरण के अलावा भी इनका सही विश्लेषण करने के लिए कुछ अन्य पहलुओं का भी अध्ययन करना आवश्यक है, ताकि प्रत्येक पहलू का सही माप-दण्ड निर्धारित किया जा सके, इसी कारण हम निम्नलिखित प्रकार के हथियारों का भी उल्लेख करते हैं—

1. कूटियोजनात्मक हथियार (Strategical Weapons)
2. समरतान्त्रिक हथियार (Tactical Weapons)

1. कूटियोजनात्मक हथियार (Strategical Weapons)—इसी श्रेणी के हथियारों के अन्तर्गत वे सभी हथियार आते हैं जो अपनी विनाशक एवं प्रहारक क्षमता के कारण केवल सम्बन्धित क्षेत्र को ही प्रभावित नहीं करते हैं, बल्कि समस्त क्षेत्र में अपना प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रभाव डालते हैं। इस श्रेणी के हथियारों की विशेषता यह है कि इनके मार की दूरी (Range of Action) तथा विनाशक क्षमता तुलनात्मक कही अधिक होती है। इसके अन्तर्गत निम्न प्रकार के हथियार आते हैं जैसे—

तीव्र गति वाले लड़ाकू विमान मिराज— 2000, मिग—29, एफ—16 तथा अवाक्स (AWACS) विमान तथा अन्तर्महाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्र (I.C.B.M) आदि।

2. समरतान्त्रिक हथियार (Tactical Weapons)— इस श्रेणी के अन्तर्गत वे हथियार आते हैं, जिनका प्रयोग समस्त युद्ध में प्रतिद्वन्दी सेनायें एक दूसरे के विरुद्ध समर क्षेत्र में प्रयोग करती हैं। इन्हें रणभूमि में एक दूसरे से बेहतर हथियार सिद्ध करना होता है। लड़ाई के दौरान ही प्रयोग में एक दूसरे के विरुद्ध लाया जाता है। इन हथियारों की प्रहारक शक्ति तथा मार की दूरी का एक सीमित दायरा होता है। जैसे— 7.62 मिमी. रायफल, एल०एम०सी०, 2 इंच मार्टर, 3 इंच मार्टर मशीनगन, मीडियम मशीनगन, राकेट लान्चर, सीमित मार करने वाली तोपें तथा बम फेंकने वाली प्रक्षेपास्त्र आदि आते हैं।

जिस प्रकार से आक्रमणात्मक हथियारों का वर्गीकरण किया गया है, ठीक उसी प्रकार से समरतान्त्रिक हथियारों का भी विभाजन किया जा सकता है, जो इस प्रकार से है—

(क) आरक्षित हथियार (Unattented Weapons)
(ख) भिडंत हथियार (Close Combat Weapons)
(ग) प्रक्षेप हथियार (Missile Weapons)

यदि अब हम दोनों प्रकार के हथियारों को देखते है, तो हमें इस बात का भ्रम होता है कि आग्नेय हथियारों को हम किस प्रकार से विभाजित करें। अब हम इनको एक अलग प्रकार की श्रेणी के रूप में व्यक्त करते हैं।

आग्नेय हथियार
(Fire Arms)

आग्नेय हथियारों का विभाजन मोटे तौर पर दो रूपों में किया गया है, इसके अन्तर्गत विस्फोटक हथियार भी आते हैं—

1. छोटे आग्नेय हथियार (Small Fire Arms)
2. तोपें (Artillery)

1. छोटे आग्नेय हथियार (Small Fire Arms)— इसके अन्तर्गत वे हथियार आते हैं, जिसका भार कम होता है तथा इनको एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए कोई कठिनाई अथवा शक्ति नहीं लगानी पड़ती है। एक व्यक्ति सुविधा व सरलता के साथ ला तथा ले जा सकता है। ऐसे हथियारों की नाल का व्यास 20 मिमी०से कम होता है। इनको Hayes ने " Element of Ordinance" में इस प्रकार से लिखा है—

"Small arms embrace not only the hand and shoulder weapons of the individual soldier, but also machine guns and automatic weapons of all sizes less than 20 mm. in callber."

इस प्रकार के हथियारों की श्रेणी में, रिवाल्वर, पिस्तौल, रायफल, स्टेनगन तथा मशीनगन आदि आते हैं। इन छोटे हथियारों का वर्गीकरण उनके गुणों के आधार पर किया गया है जैसे—

(क) कार्यक्षमता (ख) फायर विधि
(ग) मार की दूरी (घ) प्रक्षेप पक्ष
(ङ) प्रहारक शक्ति।

2. तोप (Artillery)— इसके अन्तर्गत बड़ी प्रहारक क्षमता एवं लम्बी मार करने वाले आग्नेय हथियार आते हैं जैसे—

(*i*) 20 मिमी० व्यास से अधिक व्यास वाली गनें
(*ii*) 2 इंच मार्टर
(*iii*) इंच मार्टर
(*iv*) हाउविट्जर
(*v*) धक्का रहित तोपें
(*vi*) वायुयान एवं टैंक विरोधी तोपें
(*vii*) रॉकेट
(*viii*) 106 मिमी० धक्का रहित तोपें।

3. हथियारों की विशेषताएं (Characteristics of Weapons)

किसी भी वस्तु की विशेषता उसके अन्दर निहित गुणों पर निर्भर करती है। यह सिद्धान्त हथियारों के सन्दर्भ में भी पूरी तरह से लागू होता है। किसी भी हथियार की विशेषता का अनुमान उसकी प्रहारक शक्ति, मार की दूरी एवं वहनीयता (भार) के आधार पर लगाया जा सकता है। इसके साथ ही सम्बन्धित हथियार में बदलती हुई परिस्थितियों में कुशलता से फायर करने की क्षमता का होना बहुत ज़रूरी होता है, जोकि इसकी विशेषताओं का सूचक है। आक्रमणात्मक एवं प्रतिरक्षात्मक दोनों ही परिस्थितियों में कुशल शस्त्र सदैव अपनी विशेषता का स्पष्ट प्रदर्शन करते हैं।

अब हथियारों की विशेषताओं का उल्लेख करते हैं, जिससे कुछ विद्वानों ने हथियारों के निम्नलिखित तीन लक्षण बताए हैं—

1. सुरक्षा (Protection)
2. प्रहारक क्षमता (Striking power)
3. शीघ्र कार्य क्षमता (Mobility)

उपर्युक्त तीनों लक्षणों से हथियारों की समस्त विशेषताओं का विश्लेषण नहीं किया जा सकता क्योंकि हथियारों में इन गुणों के साथ ही वाचनीयता एवं अचूकता आदि का होना अत्यन्त आवश्यक माना जाता है जिससे सही रूप में व्याख्या की जा सके।

प्रसिद्ध सैन्य विचारक जनरल जे०एफ०सी० फुलर (General J.F.C Fuller) ने हथियारों की विशेषताओं के अन्तर्गत निम्नलिखित लक्षणों का होना अनिवार्य बतलाया है—

1. मार की दूरी (Range of Action)
2. प्रहारक क्षमता (Striking Power)
3. फायर क्षमता (Volume of fire)
4. अचूकता (Accuracy of Aim)
5. वहनीयता (Portability)

निम्नलिखित गुणों के साथ ही एक उत्तम श्रेणी के हथियारों के अन्तर्गत इन गुणों का होना भी अत्यन्त आवश्यक होता है जैसे—

1. सरलता (Simplicity)
2. अनुकूलता (Adaptability)
3. दृढ़ता (Endurance)
4. विश्वसनीयता (Reliability)
5. मज़बूती (Sturdiness)

अब हम जनरल फुलर द्वारा बताए गए हथियारों के लक्षणों का अलग-अलग उल्लेख करते हैं—

4. मार की दूरी (Range of Action)— किसी भी हथियार की मार की दूरी जितनी अधिक होगी उसकी प्रहारक क्षमता भी उतनी ही अधिक होगी तथा उसे तेज़ी के साथ प्रयोग में लाया जा सकेगा। श्रेष्ठ हथियार में मारक क्षमता अधिक होना एक उत्तम लक्षण है। यही कारण है कि इस प्रकार के हथियारों का युद्ध क्षेत्र में विशेष प्रकार का महत्त्व होता है। इस सन्दर्भ मे जनरल जे०एफ०सी०फुलर ने लिखा है—

" The greater the reach or range of a weapon, the more speadily can striking power be brought into play."

(किसी भी हथियार की मार की दूरी जितनी अधिक होगी प्रहारक शक्ति को उतनी ही तीव्र-गति से प्रयोग में लाया जा सकता है।)

इस सन्दर्भ में जे०एफ०सी०फुलर महोदय ने पुन: लिखा है—

"Thus the weapon of superior range should be looked upon as the fulcrum of combined tactics—the weapon around which the tactics should revolve."

(अधिक मारक क्षमता वाले हथियार को मिले-जुले समरतन्त्र का सन्तुलन बिन्दु समझना चाहिए—यह वह हथियार है जिसके चारों ओर समरतन्त्र को घूमना चाहिए।)

2. प्रहारक शक्ति (Striking Power)— किसी भी हथियार में आघात अथवा प्रहार करने की शक्ति का होना नितान्त आवश्यक होता है क्योंकि जिस हथियार की प्रहारक क्षमता जितनी अधिक होगी उसका प्रभाव विरोधी सेना पर उतना ही पड़ेगा। किसी भी हथियार में प्रहारक शक्ति को बढ़ाने के लिए कुछ विशेष बातों पर ध्यान देना आवश्यक होता है। जैसे—वज़न , पैनापन, प्रक्षेप्य की गति, भेदन क्रिया तथा विनाशक क्षमता आदि। इस सन्दर्भ में **जनरल फुलर** महोदय ने लिखा है—

"The greater the striking power of a weapon, the more effective will be the below striking."

इस सन्दर्भ में कैप्टन **एम०पी०वर्मा** ने लिखा है कि—

"किसी प्रक्षेप का सही निशाने पर लगना और उसके द्वारा उत्पन्न भयावह, क्षेत्र, फायर गति, प्रक्षेप का वेग आदि हथियार की प्रहारक शक्ति (Striking Power) के ही अंग है।"

इस प्रकार श्रेष्ठ हथियार में प्रहारक शक्ति का होना अनिवार्य लक्षण अथवा प्रमुख विशेषता माना गया है।

3. अचूकता (Accuracy of Aim)— किसी भी हथियार की श्रेष्ठता का अनुमान उसकी अचूकता के आधार पर लगाया जा सकता है, क्योंकि लक्ष्य की अचूकता ही प्रहारक शक्ति एवं विचारक क्षमता में वृद्धि करने में सक्रिय सहयोग प्रदान करते हैं। यही कारण है कि हथियारों को अचूक बनाने के लिए नित नवीन वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति का प्रयोग किया जाता है जैसे—रेन्ज फाइन्डर, दूरबीन, रात्रि में देखने के लिए सक्षम चश्मे तथा राडार आदि नियन्त्रित निशाना साधने के साधन हैं। इस सन्दर्भ में जनरल फुलर ने लिखा है—

"The more accurately a weapon can be aimed, that is thrown of projected the more likely is that the target will be hit."

इस प्रकार यह अनुभव किया जाने लगा कि वही हथियार श्रेष्ठ है, जो लक्ष्य की अचूकता की विशेषता से युक्त हों।

4. वहनीयता (Portability)—किसी भी हथियार की श्रेष्ठता के लिए उसकी भार क्षमता का सीमित होना भी नितान्त आवश्यक होता है, जिसे बिना किसी परेशानी के एक स्थान से दूसरे स्थान तक सुविधा के साथ लाया तथा ले जाया जा सके। इस प्रकार के हथियार युद्ध क्षेत्र को अधिक सफल एवं कारगर माने जाते हैं, क्योंकि इसका प्रयोग अधिक तेज़ी के साथ सरलता एवं सुविधापूर्वक किया जा सकता है। जनरल **जे०एफ०सी०फुलर** ने इस संदर्भ में लिखा है—

" The more easily a weapon can be carried, handled or moved, handled or wielded, the more rapidly will it be brought in to use."

(हथियार को जितनी सुविधा के साथ ले जाया जाए अथवा उससे कार्यवाही की जाए, पकड़े रहना अथवा प्रयोग में लाया जाना उतना ही अधिक तेज़ी से उपयोग में लाया जा सकता है।)

5. फायर क्षमता (Volume of fire)— किसी भी हथियार की विशेषता का एक प्रमुख लक्षण उसकी फायर क्षमता भी मानी जाती है जिससे कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक प्रक्षेप्ण का प्रक्षेण अथवा फायर डाला जा सके। किसी भी हथियार की फायर क्षमता को निम्नलिखित तत्त्वों के आधार पर अनुमानित किया जाता है जैसे—

(क) फायर की गति
(ख) फायर का संचालन
(ग) मैगजीन की क्षमता
(घ) प्रक्षेप्य साधन की आपूर्ति
(ङ) नाल को ठण्डा करने की व्याख्या।

इस प्रकार फायर क्षमता बढ़ाने में उपर्युक्त तत्त्वों का सक्रिय सहयोग रहता है। फायर क्षमता के सन्दर्भ में जनरल **जे०एफ०सी०फुलर** महोदय ने लिखा है कि—

"The more the number of the blow dealt or missiles thrown of projected in a give time, the greater the effect is likely to be."

6. दृढ़ता (Endurance)—किसी भी हथियार को श्रेष्ठ बनाने के लिए उसमें मज़बूती का होना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि युद्ध में तेज़ी के साथ बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप बिना रुके हुए अथवा बिना किसी खराबी के साथ अबाधगति से कार्य करने की क्षमता बनी रहे। इसके साथ ही उच्च श्रेणी के हथियार में इस विशेषता का होना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि यदि उसमें जल्दी से नमी का प्रभाव, अधिक गर्मी, धूप, कीचड़, पानी तथा बर्फ आदि का प्रभाव पड़ जाता है, तो वह कार्य करने में सक्षम नहीं होगी। इस संदर्भ में मार्शल वेवल ने लिखा है—

''हथियार में अन्य गुणों के साथ-साथ दृढ़ता के लक्षण से युक्त होना भी आवश्यक है तथा शस्त्र का प्रमुख गुण दृढ़ता है।''

इस प्रकार हथियार को अधिक नाजुक या कमज़ोर नहीं होना चाहिए ताकि प्रत्येक परिस्थिति में सफल रूप से उससे कार्य लिया जा सके। अचानक खराबी होना सदैव ही सैनिक के लिए घातक सिद्ध होता है।

उपर्युक्त गुणों के आधार पर ही किसी भी हथियार की उपयोगिता का सही अनुमापन किया जा सकता है। यही कारण है कि प्रसिद्ध सैन्य विशेषज्ञ जनरल **जे०एफ०सी०फुलर** ने हथियारों के महत्त्व को युद्ध क्षेत्र में सर्वोत्तम माना है। हथियारों के ऐतिहासिक महत्त्व का वर्णन करते हुए अपनी प्रसिद्ध पुस्तक'' **Armament and History** '' में इस प्रकार से उल्लेख किया है—

'' Tools or weapons, it only be rights ones can be discovered from 99 percent of victory....strategy, command, leadership, courage, discipline, supply, organization and all the moral and physical parapherna lia of war are nothing to be high superiority of weapons at most they go to from the one percent.''

(यदि उत्तम श्रेणी के हथियारों एवं औज़ारों का आविष्कार कर लिया जाए तो उनसे 99 प्रतिशत विजय हासिल की जा सकती है—युद्धनीति, कमाण्ड, नेतृत्व, मनोबल, अनुशासन, आपूर्ति, संगठन और सभी नैतिक तथा शारीरिक साधनों का श्रेष्ठ हथियारों में कोई महत्त्व नहीं है, क्योंकि युद्ध की सफलता में अन्य साधनों का एक प्रतिशत ही महत्त्व रह जाता है।)

इसी सन्दर्भ में प्रसिद्ध पाश्चात्य सैन्य विचारक निकोलो **मैक्यावेली** (Necolo Machiavelli) ने लिखा है— **'' There can't be good laws where are no good arms and where there are good arms there must be good laws.''**

(श्रेष्ठ हथियारों के अभाव में अच्छे नियम नहीं होते परन्तु जहां उत्तम हथियार होते हैं वहां नियम अवश्य ही उत्तम होते हैं।)

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट हो जाता है कि श्रेष्ठ हथियार सदैव ही सफलता के सही परिचायक रहे हैं। इनके अभाव में विफलता का ही मुंह देखना पड़ा है। श्रेष्ठ हथियार वही है, जिसमें उपर्युक्त गुण मौजूद होते हैं। यही कारण है कि आज के समय में युद्धों में वही हथियार श्रेष्ठ व उत्तम माने जाते हैं, जो अपनी प्रमुख विशेषताओं से युक्त होते हैं। जिन हथियारों में सरलता के साथ प्रत्येक परिस्थिति में सफलतापूर्वक कार्यवाही करने की क्षमता होती है। वही सही अर्थों में अच्छे हथियारों में गिने जाते हैं।

4. शस्त्र एवं समरतन्त्र (Weapons and Tactics)

आयुध तथा समरतन्त्र का एक दूसरे के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध सदैव से रहा है। जैसे-जैसे हथियारों में विकास अथवा परिवर्तन हुए हैं वैसे-वैसे समरतन्त्र में भी बदलाव सदैव आता रहा है। समरतन्त्र एवं हथियार की भी हम सर्वप्रथम अलग-अलग व्याख्या कर लेते हैं। समरतन्त्र युद्धकला का एक परिवर्तनशील तत्त्व है। यह परिवर्तन समाज के सामान्य परिवर्तनों की गति पर आधारित होता है। जिस प्रकार से सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, एवं तकनीकी क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन होते रहते हैं उसी प्रकार से समरतन्त्र में भी परिवर्तन होते रहते हैं। नवीन वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के साथ जिस प्रकार से हथियारों में विकास एवं परिवर्तन होता है ठीक उसी प्रकार हथियारों के प्रभाव के कारण समरतन्त्र में भी प्रत्यदा बदलाव आता है।

समरतन्त्र एवं हथियार एक दूसरे के साथ प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। यही कारण है कि अनेक विद्वानों ने शस्त्रास्त्रों को समरतन्त्र प्रणेता बतलाया है। अब हम कुछ विद्वानों की परिभाषाओं का उल्लेख करते हैं—

किंगस्टन मैक क्लाऊरी (Kingston Mc Cloughry) के अनुसार—

"One certain lesson of history which can't be over stressed is that new weapons and devices bring new Tactics."

(इतिहास से हमें एक निश्चित पाठ पढ़ने को मिलता है कि नवीन हथियारों एवं साधनों के द्वारा नयी सामरिकी अवश्य ही पनपती है)

कैप्टन लिडिल हार्ट (Liddle Hart) ने लिखा है—

"Tactics is the domain of weapons."

(शस्त्रास्त्रों का कार्यक्षेत्र ही समरतन्त्र है।)

डॉ०वाई०के०शर्मा के अनुसार—

"समरतन्त्र संग्राम स्थल में सैन्य शक्ति एवं शस्त्रों का भूमि की बनावट के अनुरूप विभिन्न प्रकार की संरचनाओं का अनुप्रयोग कर शत्रु को पराजित करने की कला है, जो कूटियोजना द्वारा निर्धारित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कार्यरत होती है।"

लेखक की पुस्तक 'संसार का सैन्य इतिहास' में स्पष्ट लिखा है कि—

" वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के प्रभाव में जहां शस्त्राशस्त्रों का विकास होता रहता है, वहां समरतन्त्र में भी परिवर्तन स्वाभाविक रूप से होना लाजमी होता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं से पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाता है कि समरतन्त्र एवं शस्त्रास्त्रों का सम्बन्ध सीधा एवं घनिष्ठ है। संसार के सैन्य इतिहास में अनेकों ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जिससे शस्त्रास्त्र तथा समरतन्त्र के सम्बन्धों का स्पष्ट अभास हो जाता है। अब हम अलग-अलग समरतन्त्र का उल्लेख करते हैं—

19वीं शताब्दी में जिस समय आग्नेय हथियारों की मार की दूरी, अचूकता तथा मार की गति बढ़ जाने के कारण समरतन्त्र का स्वरूप प्रतिरक्षात्मक हो गया, क्योंकि खाइयों तथा प्राकृतिक आड़ के पीछे छिपकर शत्रु को सरलता के साथ शिकार बनाया जाना सरल हो गया। अश्वारोही सेना का भी पतन हो गया और पैदल सेना ही प्रधान सेना मानी जाने लगी। बन्दूकों द्वारा सभी स्थितियों जैसे— बैठकर, लेटकर तथा खड़े होकर फायर करना संभव हो सकने के कारण पंक्ति संरचनाओं (Line Formations) की समाप्ति हो गई।

प्रथम विश्व युद्ध के समय भी समरतन्त्र हथियारों के अनुसार परिवर्तित हुआ, क्योंकि इस दौरान जहां हथियारों के रूप में नवीन हथियारों, विषैली गैसों का प्रयोग, तोपखाने का विकास, वायुयानों का आरम्भ, पनडुब्बियों का प्रयोग, टैंकों का प्रयोग तथा कवचित सेना का विकास आदि में सुधार हुआ। वहां आक्रमणात्मक समरतन्त्र एवं प्रतिरक्षात्मक समरतन्त्र में भी बदलाव आया।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान प्रयोग किये गये शस्त्रों के परिणामस्वरूप समरतन्त्र में किस प्रकार से बदलाव आया, उसका संक्षिप्त में उल्लेख करते हैं। छः वर्षों तक लगातार चलने वाला युद्ध प्रत्येक दृष्टिकोण से बड़ा था। इस युद्ध के दौरान बड़े पैमाने पर यन्त्रों का प्रयोग तथा टैंक, तोपखाना तथा वायुसेना के पारस्परिक सहयोग ने समरतन्त्र में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन कर दिया, जिसके कारण समरतन्त्र के क्षेत्र में प्रविष्टीकरण का समरतन्त्र (Infiltration Tactics) उभर कर आया। इस समरतन्त्र के अनुसार सबसे पहले शत्रु की प्रतिरक्षात्मक पंक्ति में जो सर्वाधिक नाजुक स्थान होता था, उसका पता करके उस पर छोटे-छोटे दलों से आक्रमण किया जाने लगा।

भारी तथा कवच युक्त हथियारों के कारण ब्लिट्जक्रिक समरतन्त्र (Blitzkrieg Tactics) का भी अभ्युदय हुआ। इसके अन्तर्गत अत्यधिक तेज़ी के साथ शत्रु के नाजुक स्थान पर हमला किया जाता था, ताकि शत्रु सरलता के साथ उसका मुकाबला न कर सके। इसके पश्चात् क्षेत्रीय प्रतिरक्षा (Web Defence) समरतन्त्र अपनाया जाने लगा। इसके अन्तर्गत यह अनुभव किया गया कि प्रतिरक्षा रेखा के स्थान पर यदि क्षेत्रीय आधार पर प्रतिरक्षा की जाए तो सफलता प्राप्त होने के अधिक अवसर मिल सकते हैं। अनेक प्रकार के हथियारों के कारण आड़ तथा छिपाव से समरतन्त्र का महत्त्व बढ़ गया । परमाणु बम के प्रयोग ने भी समरतन्त्र को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया और उसे समरतान्त्रिक शस्त्र भी कहा जाने लगा।

उपरोक्त विवेचन से पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाता है कि सदैव से ही हथियारों ने समरतन्त्र को प्रभावित किया है। यही कारण है कि प्रत्येक युग में हथियारों के विकास को दृष्टि में रखकर ही तत्कालीन समरतन्त्र बनाया गया है और उसे ही सफलता मिली है। अतः शस्त्र एवं समरतन्त्र एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, जिनको कभी भी अलग किया जा सकता है। जिस प्रकार से हथियार विकसित एवं संहारक बनते जाते हैं, समरतन्त्र या रणक्षेत्र की कला (Art of Battlefield) भी उसी रूप में बदलती जाती है। इस बात को कदापि नकारा नहीं जा सकता है।

टॉम विन्ट्रिघम ने लिखा है कि यह सीखना और भी कठिन है कि विभिन्न प्रकार के कुछ हथियारों के चलाने वाले तथा उपयोग मे लाने वाले सैनिकों के संगठन के साथ-साथ और उन्हें वहन करने वाले यन्त्रों की गति के साथ-साथ उन शस्त्रों के प्रभाव का मेल किस प्रकार किया जाये। सैनिकों को अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका में यह लिखा मिलेगा कि फायर एवं संचलन का मेल ही सामरिकी की तात्विक समस्या है ; अपने उपयोग के अलावा शस्त्रों का कोई मूल्य नहीं हुआ करता। सामरिकी से अलग होने पर यह भारी भरकम और गुमड़ीदार सामग्री (पोटली) का रूप धारण कर लेते हैं, जिन्हें थके-हारे सैनिकों को ढोना था खींचना पड़ जाता है। अत: सामरिकी सीखे बिना हथियारों का सही प्रयोग कर पाना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव भी है।

समरतन्त्र का सम्बन्ध सैनिक, शस्त्रास्त्रों, संचार साधनों एवं अन्य अनेक उन साधनों से होता है, जो संघर्ष में प्रयोग किये जाते हैं। विज्ञान व तकनीकी प्रगति का प्रभाव शस्त्र एवं अन्य आवश्यक साधनों पर पड़ता है। जैसे-जैसे नये शस्त्र व साधन प्रयोग होते हैं, वैसे ही सामरिकी में भी परिवर्तन होता है, जैसा कि किंग्स्टन मैक क्लोरी (Kingston Mc Clougry) ने लिखा है—

"One certain lesson of history which cannot be over stressed is that new weapons and devices being new tactics."

इस सन्दर्भ में मेजर जनरल डी०के० पालित ने कहा कि समरतन्त्र एक परिवर्तनशील प्रक्रिया है जैसे ही हथियार बदलते हैं, वैसे ही समरतन्त्र स्वाभाविक रूप से बदल जाता है। उनके अनुसार—

"Tactics is the art of Military force in combat."
(लड़ाइयों में सेनाओं के संचालन की कला ही समरतन्त्र है।)

एक प्रकार से शस्त्र एवं समरतन्त्र युद्ध रूपी कपड़े का ताना-बाना है जोकि एक दूसरे पर निर्भर है।

5. टॉम विन्ट्रिघम द्वारा काल विभाजन
(Distribution of periods by Tom Wintringham)

प्रसिद्ध सैन्य इतिहास **टॉम विन्ट्रिघम** ने अपनी विख्यात रचना '**शस्त्र एवं सामरिकी**' (Weapons and Tactics) में समस्त सैन्य इतिहास को आयुध तथा तत्कालीन समरतन्त्र के आधार पर प्रमुख रूप से विभक्त करके कुछ छ: विभागों में विभक्त किया है जो इस प्रकार है—

1. कवचरहित काल (Unarmoured Period)
2. कवच-युक्त काल (Armoured Period)

इसी प्रकार प्रसिद्ध इतिहासकार ने अपने प्रमुख कारणों को मुख्य रूप से छ:भागों में दर्शाया है। इन कालों में उसने यह वर्णन किया है कि जैसे—जैसे हथियारों का आविष्कार एवं विकास होता गया उसी-उसी प्रकार से लड़ाइयों का समरतन्त्र में भी सीधा परिवर्तन

होता रहा है। जब मानव ने अपनी सुरक्षा के लिए घातक हथियारों के विरुद्ध उपाय खोजा है तो उसने बचने के लिए कवचों का प्रयोग किया है, लेकिन एक समय में जब इन कवचों के भार के कारण गतिशीलता प्रभावित होने लगी तो मानव ने इनका परित्याग करना आरम्भ कर दिया और वह युग कवच-रहित युग के नाम से बताया है। एक समय के पश्चात् हथियारों की होड़ के कारण बचाव के लिए पुन: किसी-न-किसी प्रकार के कवच की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। इस प्रकार यह समय कवच-युक्त काल बन गया। इस प्रकार समस्त ऐतिहासिक काल में हथियारों के उत्थान-पतन के कारण ही कवच-युक्त एवं कवच-रहित कालों का आरम्भ हुआ। अब विन्ट्रिघम के छ: कालों का समय के साथ-साथ अलग-अलग उल्लेख करते हैं—

1. प्रथम कवच-रहित काल (प्रारम्भ से 479 ई०पूर्व तक)
2. प्रथम कवच-युक्त काल (479 ई० पूर्व से 378 ई०तक)
3. द्वितीय कवच-रहित काल (378 ई० से 774 ई०तक)
4. द्वितीय कवच-युक्त काल (774 ई०से 1346 ई०तक)
5. तृतीय कवच-रहित काल (1346 ई०से 1917 ई०तक)
6. तृतीय कवच-युक्त काल (1917 ई०से अब तक)

1. प्रथम कवच-रहित काल (प्रारम्भ से 479 ई० पू० तक)

[First Unarmoured Period (Beginning to 479 B.C)]

इतिहास के आरम्भिक समय में वर्णित युद्धों से स्पष्ट रूप से पता चल जाता है कि इस समय कवच का प्रयोग नहीं किया जाता था। इसका एक प्रमुख कारण यह भी था कि इस समय धातु-कला के रूप में हथियारों का भी विकास नहीं हुआ था। जैसे—जैसे सभ्यता का विकास हुआ उसके साथ ही तत्कालीन युद्ध पद्धति तथा हथियारों का विकसित होना लाज़मी ही था। आरम्भिक हथियार गोफन, पत्थर तथा लकड़ी आदि का स्थान धनुष एवं बाणों ने ले लिया तथा धातु-कला के विकास पर भी विशेष ध्यान दिया जाने लगा। जिसका परिणाम यह हुआ कि यूनानी शासकों ने अपनी सीमा एवं साम्राज्य की सुरक्षा के लिए सेनाओं को कवच-युक्त करने लगे, जिसके परिणामस्वरूप कवचधारी सेनाओं का महत्त्व बढ़ने लगा। जिस समय प्लेटुआ के युद्ध(479 ई०पू०) में यूनानी कवच-युक्त सेनाओं ने ईरान की धनुर्धारी सेना को पूरी तरह से पराजित कर दिया। उसी समय से कवच-रहित काल के युग की समाप्ति हो गई और उसके साथ ही कवच-युक्त सेनाओं का काल आरम्भ हो गया।

इस प्रकार से प्रथम कवच-रहित काल का समय प्लेटुआ के युद्ध तक का माना जाता है।

2. प्रथम कवच-युक्त काल (479 ई० पू०से 378 ई० तक)

[First Armoured Period (479 B.C to 378 A.D.)]

इस काल का आरम्भ उसी समय से माना जाता है, जब प्लेटुआ के संग्राम में कवच-युक्त सेनाओं ने अपनी सफलता का शुभारम्भ कर दिया था। इसके पश्चात् समस्त यूरोप में कवचधारी सेनाओं का बोलबाला हो गया। इस दौरान जहां यूनान के विश्वविख्यात सैन्य संगठन फैलेक्स का पतन हुआ, वहां रोमन संगठन लीज़न ने अपनी सैनिक श्रेष्ठता कायम कर ली। कवच-युक्त सेना के बल पर रोमन लीजन भी विश्वविख्यात सैन्य संगठन बन गया और एक लम्बी अवधि तक सैनिक शक्ति के बल पर विश्व इतिहास में छाया रहा तथा अत्यधिक आर्थिक उन्नति भी की।

378 ई० में एड्रियानोपल के संग्राम में संसार की विख्यात कवच-युक्त रोमन सेना का उस समय पतन हो गया, जब कवच-रहित तथा गतिशीलता युक्त अश्वारोही गोथों की सेना ने रोमन सेना को बुरी तरह से कुचल दिया। इस प्रकार कवच-युक्त काल का पतन तथा कवच-रहित अश्वारोही सेना को प्रभुसत्ता मिल गई।

3. द्वितीय कवच रहित काल 378 ई० से 774 ई० तक

[Second Unarmoured Period (378 A.D. to 774 A.D.)]

इस युग का आरम्भ उसी समय से माना जाता है, जब एड्रियानोपल के युद्ध में जंगली जाति के गोथों ने विश्वविख्यात सैन्य संगठन रोमन लीजन को धराशायी कर दिया था। इसकी विजय का प्रमुख कारण गोथों की अश्वारोही सेना की गतिशीलता थी। इस प्रकार इस युद्ध के पश्चात् समस्त संसार में अश्वारोही सेना को प्रधान सेना के रूप में संगठित किया जाने लगा, जिससे समान सेनाओं के कारण युद्ध में सफलता प्राप्त करना बड़ा कठिन हो गया था।

जब इस प्रकार एक सी सेनाएं होने लगीं तो इसी समय फ्रांस के सम्राट् चार्ल्स द्वितीय ने अपनी अश्वारोही सेना को कवचधारी सेना बना दिया और पेविया के युद्ध में कवच-युक्त अश्वारोही सेना के बल पर महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की और इसी के साथ ही एक नए युग की शुरुआत हो गई और द्वितीय कवच-रहित काल की समाप्ति हो गई।

4. द्वितीय कवच युक्त काल (774 ई० से 1346 ई० तक)

[Second Armoured Period (774 A.D. to 1346 A.D.)]

इस युग का आरम्भ उसी समय से निर्धारित किया गया है, जब पेविया के संग्राम (774 ई०) में फ्रांस के सम्राट् चार्ल्स द्वितीय को अपनी कवच-युक्त अश्वारोही सेना के बल पर महत्त्वपूर्ण सफलता मिली थी। इसके पश्चात अब कवच-युक्त अश्वारोही सेनाओं का सर्वत्र बोलबाला हो गया। इसी समय जहां धनुष और बाण की प्रहारक शक्ति बढ़ी वहां इसके बचाव के लिए मोटे कवचों का भी प्रयोग किया जाने लगा। इसका परिणाम यह हो गया कि सेना में गतिशीलता का अभाव अनुभव किया जाने लगा।

1346 ई० में प्रसिद्ध क्रेसी के युद्ध में जहां तेज़ तथा नुकीले बाणों के कारण सुरक्षा कवच निषिद्ध हो गए तथा इसी समय बारूद के आविष्कार के कारण आग्नेय हथियारों के प्रयोग से कवच का महत्त्व समाप्त हो गया और इसी के साथ ही इस युग का भी अन्त हो गया।

5. तृतीय कवच रहित काल (1346 ई० से 1917 ई० तक)
[Third Unarmoured Period (1346 A.D. to 1917 A.D.)]

इस युग का आरम्भ आग्नेय हथियारों के प्रयोग के साथ ही हो गया और अब यह अनुभव किया जाने लगा कि वही सेना शक्तिशाली सेना है जिसमें जितनी अधिक फायर क्षमता विद्यमान हो। एक लम्बी अवधि के कारण इस काल में शस्त्रास्त्रों का अत्याधिक आविष्कार एवं विस्तार हुआ, जिसके परिणामस्वरूप आग्नेय हथियारों के छोटे तथा बड़े हथियारों की फायर शक्ति इतनी ज़्यादा हो गई कि सामने से आक्रमण करना कठिन सा हो गया। इस कारण आग्नेय हथियारों के सीधे आक्रमण से बचने के लिए मोर्चेबंदी तथा किलेबन्दी पर ज़ोर दिया जाने लगा और इनसे बचने के लिए उपाय खोजे जाने लगे।

इसी समय प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान टैंकों का विकास कर लिया गया और प्रथम बार कैम्बे के युद्ध (1916 ई०) में टैंकों का प्रयोग हुआ और अपनी श्रेष्ठता भी हासिल कर ली। इसी के साथ ही इस युग का अंत हो गया।

6. तृतीय कवच-युक्त काल (1917 ई० से अब तक का समय)
[Third Armoured Period (1917 A.D. to till today)]

इस युग का आरम्भ उस समय से माना जाता है, जब प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पहली बार टैंकों के प्रयोग ने युद्धों में अपनी धाक जमा ली। इसके साथ ही यह अनुभव किया जाने लगा कि टैंक एक ऐसा कवच-युक्त हथियार है, जिसके प्रयोग के बिना आधुनिक युद्धों में सफलता प्राप्त कर पाना बहुत कठिन है। टैंकों के महत्त्व को ध्यान में रखने के कारण ही इस युग को कवच-युक्त काल की उपाधि दी गई। टैंक एक कवच-युक्त घातक हथियार होने के कारण वर्तमान समय में भी युद्ध क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं।

यही कारण है कि आज भी सुरक्षा को दृष्टि में रखकर कवच की विशेष आवश्यकता अनुभव की जाती है, क्योंकि लम्बी एवं प्रहारक शक्ति से बचाव तभी किया जा सकता है। इसीलिए इस युग को कवच-युक्त काल माना गया।

इस प्रकार टॉम विन्ट्रिघम महोदय ने ऐतिहासिक काल का विभाजन केवल एक सेना को दृष्टि में रखकर किया और वह है, स्थल सेना जबकि आधुनिक परिवेश में तीनों ही सेनाओं (स्थल, जल व वायु सेना) का विशेष महत्त्व होता है। किसी भी सेना के अभाव में सफलता प्राप्त करने की परिकल्पना करना भी बहुत कठिन कार्य है। आधुनिक समय में वायुसेना को विजय का द्योतक माना जाता है। इसका उल्लेख टॉम विन्ट्रिघम के किसी भी काल में नहीं मिलता है।

इसके साथ ही विन्ट्रिघम महोदय ने वर्तमान समय तक को अन्तिम काल विभाजन में लिया है, परन्तु उन्होंने आगामी वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति को ध्यान में नहीं रखा, क्योंकि निरन्तर नवीन प्रणालियों ने युद्ध के स्वरूप को ही परिवर्तित कर दिया है। इस प्रकार इनके काल विभाजन में कतिपय त्रुटियां हैं, जोकि परीक्षण की कसौटी में पूरी तरह खरी नहीं उतरती हैं। इन सबके बावजूद भी युद्ध काल के ऐतिहासिक विभाजन में इसका भो अपना अलग ही महत्त्व है।

वैसे भी टॉम विन्ट्रिघम ने शस्त्र एवं सामरिकी की व्याख्या करने के साथ युद्धकाल को इस रूप में विभक्त किया है कि कुछ हद तक आज के परिवेश में भी खरा उतरता है। यद्यपि इसमें भी कुछ खामियां हैं, किन्तु इसके बावजूद यह सत्य है कि हथियारों का नये रूप में विकास होता रहता है और उससे बचाव के लिए उस प्रतिरूप सुरक्षात्मक हथियार प्रणाली विकसित की जाने की सोच रही है, जिसे कवच-युक्त व कवच-रहित काल के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

6. जनरल फुलर द्वारा काल विभाजन (Distribution of Periods by Fuller)

प्रसिद्ध सैन्य विचारक **जनरल जे० एफ० सी० फुलर** (General J. F. C. Fuller) ने सम्पूर्ण सैन्य इतिहास के काल विभाजन को शक्ति के साधन के आधार पर वर्णित किया है। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक '**अर्मामेण्ट एण्ड हिस्ट्री**' (Armament and History) सम्पूर्ण इतिहास को छः भागों में विभक्त किया है, जिसमें प्रत्येक युग को एक भाग के रूप में दर्शाया है। उस युग में जिस शक्ति की प्रधानता रही उसी शक्ति को उस युग का नाम दे दिया। इनके काल विभाजन में एक विशेषता यह है कि इन्होंने किसी भी युग की तिथि का उल्लेख नहीं किया है कि इसका समय उस तिथि तक माना जाता है। केवल अध्ययन की सुविधा के लिए कुछ विशेषज्ञों ने अपने अनुमान के आधार पर इनकी सीमा निर्धारित कर ली है।

अब हम फुलर द्वारा बताए गए ऐतिहासिक कालों का संक्षिप्त में उल्लेख करते हैं—

1. पराक्रम का युग (Age of Valour)
2. शूरता का युग (Age of Chivalry)
3. बारूद का युग (Age of Gun Powder)
4. भाप का युग (Age of Steam)
5. तेल का युग (Age of Oil)
6. परमाणु का युग Age of Atomic)

1. पराक्रम का युग (Age of Valour)—इस युग का समय निर्धारण आरम्भ काल से लेकर 378 ई० तक किया गया है। उस समय शक्ति का प्रमुख स्रोत योद्धा का शक्ति अथवा पराक्रम हुआ करता था। इसी कारण उस युग को पराक्रम युग कहा गया।

तत्कालीन समय में युद्ध आमने-सामने तथा गुत्थम-गुत्था की लड़ाई होती थी। जो सेना अधिक पराक्रमी अथवा शक्तिशाली होती थी, उसी को युद्ध में सफलता प्राप्त हो पाती थी। यही कारण है कि इस काल के सैनिकों में राष्ट्रीय बलिदान, अनुशासन तथा शारीरिक शक्ति की श्रेष्ठता हुआ करती थी। इस युग के समय योद्धा अपनी शारीरिक सुरक्षा के लिए कवच भी धारण करने लगे, परन्तु उनमें गतिशीलता का अभाव बढ़ता गया। अन्ततः 378 ई० में एड्रियानोपल के संग्राम में जब तेज़ व गतिशील अश्वारोही सेना के द्वारा पराक्रमी सेनाओं को पराजित कर दिया गया तो इसी के साथ ही इस युग की समाप्ति तथा दूसरे युग का आरम्भ हो गया।

2. शूरता का युग (Age of Chivalry)— इस युग का समय निर्धारण 378 ई० के एड्रियानोपल के संग्राम से आरम्भ होकर 1346 ई० के क्रेसी के संग्राम तक माना गया है। 378 ई० के युद्ध में गतिशील अश्वारोही सेना के द्वारा जब पराक्रमी रोमन सेना को बुरी तरह कुचल दिया तो समस्त यूरोप में इस बात पर ज़ोर दिया जाने लगा कि वही सेना अपनी तथा अपने राष्ट्र की सुरक्षा कर सकती है, जिसके पास अत्यन्त गतिशील अश्वारोही सेना होगी। इस प्रकार सारे देशों में अश्वारोही सेना की शक्ति व संख्या बढ़ाने की होड़ सी लग गयी।

इस प्रकार इस होड़ की समाप्ति उस समय हुई, जब क्रेसी के मैदान में अत्यन्त कुशल हथियारों तथा कवचित अश्वारोही सैनिकों के समूह ने फ्रांस की अश्वारोही सेना को बुरी तरह पराजित कर दिया। इस युग का पतन भी इसी के साथ हो गया, जिसके प्रमुख कारण जहां एक ओर श्रेष्ठ हथियार तथा कवचधारी अश्वारोही सेना थी वहां दूसरी ओर बारूद के आविष्कार के कारण आग्नेय हथियारों के प्रयोग से भी इस युग का अन्त तथा नवीन युग की शुरुआत हो गई।

3. बारूद का युग (Age of Gun Powder)— इस युग का समय निर्धारण 1346 ई० के क्रेसी के संग्राम से आरम्भ होकर 18वीं शताब्दी के अन्त तक किया गया है। बारूद के आविष्कार के परिणामस्वरूप उद्योगों एवं हथियारों के क्षेत्र में क्रांति-सी आ गई। वर्षों से चली आ रही युद्ध की पराक्रम एवं शौर्य व्यवस्था का बुरी तरह से पतन हो गया और उसका स्थान नवीन प्रकार के संहारक एवं बड़ी प्रहारक क्षमता रखने वाले आग्नेय हथियारों ने ले लिया। वही सेना शक्तिशाली मानी जाने लगी, जिसके पास जितने अधिक संहारक हथियार होते थे। सेनाओं एवं सैन्य व्यवस्थाओं के स्वरूप में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो गया। इस समय शक्ति बड़ी ताकतों के हाथ में पहुँच गयी, क्योंकि आग्नेय हथियार अत्यधिक महंगे होते थे। इस युग ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति पर विशेष रूप से बल दिया जाने लगा।

इस प्रकार इस युग ने पराक्रम एवं शौर्य युग की प्राचीन परम्परा एवं युद्ध व्यवस्था को पूरी तरह समाप्त करके एक नवीन युग का आरम्भ कर दिया। इसका अन्तिम समय 1780 ई० माना गया है जब भाप की शक्ति का प्रयोग होने लगा।

4. भाप का युग (Age of Steam) — इस युग का समय निर्धारण 1780 ई० 1880 ई० तक का तक माना जाता है। इस युग का शुभारम्भ भाप के आविष्कार से माना जाता है। जब इस शक्ति के प्रयोग का मानव को ज्ञान हुआ तो प्रत्येक क्षेत्र में केवल महत्त्वपूर्ण परिवर्तन ही नहीं हुआ अपितु एक क्रांति सी आ गयी। इस शक्ति के माध्यम से अनेक कारखानों, यातायात के साधनों के रूप में रेलगाड़ियों तथा भाप चलित जलयानों के विकास के कारण युद्ध क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आ गया। इस कारण अनेकों प्रकार के हथियारों का निर्माण भी बड़े पैमाने पर किया जाने लगा। इसका प्रभाव यह हुआ कि सेनाओं की विजय या पराजय उनकी सैनिक संख्या पर निर्भर न होकर अब धोखेबाज़ी, चालाकी तथा निपुणता आदि तत्त्वों के साथ-साथ सेनानायक के नेतृत्व पर पूर्ण रूप से आश्रित हो गई।

यही कारण है कि इस युग में भाप की शक्ति से संचालित साधन अधिक उपयोग के कारण ही इसे भाप का युग कहा गया।

5. तेल का युग (Age of Oil)—इस युग का समय निर्धारण 1880 ई० से 1945 ई० तक का माना गया है। भाप के युग ने जहां अनेक क्षेत्रों में क्रान्ति सी उत्पन्न कर दी थी, परन्तु समरतान्त्रिक अथवा युद्ध क्षेत्र में युद्ध साधन के रूप में इस शक्ति का उपयोग नहीं हो पाया था। किन्तु जिस समय तेल शक्ति के प्रयोग का पता लगा तो परिवहन तथा यातायात के क्षेत्र में अत्यधिक विकास हुआ और समरतान्त्रिक दृष्टिकोण से भी इसका प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हुआ। क्योंकि इसके द्वारा मोटरगाड़ियां, कवचित गाड़ियां, वायुयान, जलयान; पनडुब्बी एवं टैंकों आदि के साधनों का प्रयोग करना संभव हो गया। इस प्रकार युद्ध क्षेत्र पर इस शक्ति का सीधा तथा प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा।

इस प्रकार तेल के द्वारा चलने वाले साधनों से युद्ध-कला पर महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ तथा तेल से चलने वाले वाहनों ने युद्ध क्षेत्र मे अपनी श्रेष्ठता हासिल कर ली। यही कारण है कि इस युग को तेल का युग कहा गया।

6. परमाणु का युग (Age of Atomic)— इस युग का समय निर्धारण उस समय से किया गया जब द्वितीय विश्व युद्ध अपने अन्तिम चरण में था। उसी समय अमेरिका ने जापान के प्रसिद्ध शहरों हिरोशिमा (6 अगस्त, 1945) में तथा नागासाकी (9 अगस्त, 1945) में परमाणु बम का विस्फोट करके सारे संसार को आश्चर्य में डाल कर इस युग की नींव रख दी। उसी समय से संसार के सभी राष्ट्र यह समझने लगे हैं कि अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए परमाणु शक्ति का विकास आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है। उसी समय से लेकर आज तक परमाणु शक्ति का युग चल रहा है।

इस समय तो बहुत अधिक टी० एन० टी० शक्ति वाले परमाणु बमों का विकास कर लिया गया है। इसके साथ ही परमाणु शक्ति के माध्यम से अन्तमर्हाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्र (I.C. B. M.), परमाणु पनडुब्बियों एवं वायुयानों आदि का विकास करके सम्पूर्ण संसार को अत्यन्त संकुचित कर दिया है, जिसके कारण क्षण-भर में विश्व को धूल में मिलाया जा सकता है। न्यूट्रॉन बम एवं हाइड्रोजन भी इसी युग की देन है। इसी कारण आधुनिक काल को परमाणु युग कहा गया है।

7. पाकरोवस्की द्वारा काल विभाजन (Distribution of Periods by Pokrovaski)

प्रसिद्ध रूसी सैन्य इतिहासकार **पाकरोवस्की** महोदय ने अपनी "**टेक्नोलोजी इन कन्टैम्परेरी वार**" (Technology in Contemporary War) में समस्त संसार के सैन्य इतिहास को सामाजिक परिवर्तन के आधार पर विभक्त करके दर्शाने का प्रयास किया है। पाकरोवस्की ने सामाजिक परिवर्तनों के अनुसार ही उस उस काल का निर्धारण उसके नाम से ही किया है। यही कारण है कि उन्होंने सामाजिक ढांचे को प्रमुख रूप से निम्नलिखित चार भागों में विभक्त किया है—

1. गुलाम बनाने की प्रथा का युग
2. जागीरदारी प्रथा का युग
3. शिल्पकारी प्रथा का युग
4. यन्त्रकारी प्रथा का युग

1. गुलाम बनाने की प्रथा का युग (The Slave Holding Period)— इस काल का समय निर्धारण आरम्भ काल से लेकर 6वीं शताब्दी तक माना जाता है क्योंकि इस समय के समाज में दास बनाने की प्रथा ज़ोरों पर थी और इसका अन्त छठी शताब्दी में हुआ।

2. जागीरदारी प्रथा का युग (The Feudal Period)—इस काल का समय निर्धारण छठी शताब्दी से लेकर लगभग 18वीं शताब्दी तक माना गया है, क्योंकि इस समय के समाज में जागीरदारी प्रथा का प्रचलन बड़े ज़ोरों पर था, छोटे-छोटे राज्यों की अपनी जागीरें होती थीं। इसी कारण इस युग को जागीरदारी प्रथा का युग कहा गया।

3. शिल्पकारी प्रथा का युग (The Manufacturing Period)—इस काल का समय निर्धारण 19वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी तक माना जाता है। इस दौरान अनेकों खोजों एवं वैज्ञानिक प्रगति के कारण अनेक वस्तुओं का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया गया इसी कारण इसे शिल्पी युग कहा गया।

4. यन्त्रों का युग (The Machine Period)—इस काल का समय निर्धारण 20वीं शताब्दी से लेकर आब तक माना जाता है क्योंकि इस दौरान यान्त्रिक व्यवस्था वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के कारण चरम सीमा पर चल रही है। यही कारण है कि इस युग को यन्त्र युग भी कहा गया।

8. चिरस्थायी समरतन्त्र [Constant Tactical Factor (C.T.F.)]

सर्वप्रथम इस महत्त्वपूर्ण तत्त्व के सन्दर्भ में **जनरल जे० एफ० सी० फुलर** महोदय ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक '**अर्मामेण्ट एण्ड हिस्टरी**' (Armament and History) में

इसका उल्लेख किया। हथियारों के विकास के सन्दर्भ में फुलर का यह विचार वास्तव में बहुत हद तक अपनी कसौटी में खरा उतरता है। इनके द्वारा प्रतिपादित यह सिद्धान्त सदैव ही रहता है। इसी कारण इस तत्त्व का नाम चिर-स्थायी समरतान्त्रिक तत्त्व अथवा अनवस्त समरतान्त्रिक तत्त्व रखा। यह सर्वविदित तथ्य है कि जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ है वैसे-वैसे हथियारों का विकास निरन्तर होता रहा है। हथियारों का विकास मुख्य रूप से सुरक्षा के भय के कारण से किया जाता रहा है और इन हथियारों से ही सदैव सुरक्षा को खतरे में डालने का प्रयास किया गया है और यह प्रक्रिया लगातार चलती आ रही है और भविष्य में भी चलती रहेगी। यही कारण है कि इस प्रक्रिया को स्थायी समरतान्त्रिक तत्त्व के नाम से सम्बोधित किया गया।

इस संदर्भ में जनरल **जे० एफ० सी० फुलर** ने वर्णित करते हुए लिखा है कि—

"Every improvement in weapons-power has aimed at lessening the danger on one side by increasing it on the other. Therefore, every improvement in weapons has eventually been met by a counter improvement obsolete."

(हथियारों की शक्ति में प्रत्येक सुधार का लक्ष्य एक ओर से भय में कमी करना तथा दूसरी ओर से उसमें वृद्धि करना रहा है। अतः हथियारों में प्रत्येक विकास के पश्चात् उसका विरोधी विकास होता रहा है, जो पहले विकास की श्रेष्ठता को समाप्त कर देता है।)

जब किसी नवीन हथियार का विकास अथवा आविष्कार हुआ है, तो इसके साथ ही उसके बचाव के लिए भी व्यवस्थाओं का आविष्कार हुआ है। यही कारण है कि युद्ध काल में कभी आक्रामक हथियारों की प्रधानता रही तो कभी सुरक्षात्मक हथियारों की। उदाहरण के तौर पर प्राचीन काल में धनुष-बाण से बचाव के लिए कवचों का प्रयोग, तलवार से बचाव के लिए ढाल का प्रयोग, टैंक से बचाव के लिए एन्टी टैंक गनों का प्रयोग, वायुयानों के आक्रमण से बचाव के लिए एण्टी एयर क्राफ्ट गन तथा एण्टी एयर क्राफ्ट तथा प्रक्षेपास्त्रों के विरुद्ध प्रक्षेपास्त्र विरोधी प्रक्षेपास्त्र (Anti Ballestic Missilie A.B.M.) का निर्माण किया गया। इस प्रकार हथियारों की प्रक्रिया अनवरत अथवा लगातार चलती रहती है, जो कभी भी समाप्त नहीं होती। इसी कारण इस प्रक्रिया का नाम चिर-स्थायी समरतान्त्रिक तत्त्व रखा गया।

यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि आक्रमणात्मक एवं सुरक्षात्मक हथियारों के विकास का चक्र सदैव से चलता रहा है और भविष्य में भी यह सदैव चलता रहेगा। इसी कारण यह प्रक्रिया एक स्थायी समरतान्त्रिक तत्त्व के नाम से सम्बोधित की गई। जनरल फुलर का यह सिद्धान्त प्रसिद्ध वैज्ञानिक न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण शक्ति के सिद्धान्त की तरह सदैव सत्य प्रमाणित होगा। यह चक्र सदैव चलता रहेगा। इसी सन्दर्भ में फुलर का यह कथन भी उल्लेखनीय है—

"The evolutionary pendulum of weapon power, slowly or rapidly, swinging from the offencive to the protective and back

again in harmony with the pace of civil progress, each swing in a measurable degree climinating danger."

(हथियारों की शक्ति के विकास रूपी लोलक (पैन्डुलम) धीमा अथवा तेज़ी के साथ आक्रमणात्मक से सुरक्षात्मक तथा पुनः इसके विपरीत सामाजिक प्रगति के साथ-साथ आवर्ती गति करता रहता है। प्रत्येक दोलन में भय कम होता जाता है।)

वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति के इस युग में समय के साथ परिस्थिति में बड़ा बदलाव आया है, चूंकि परिवर्तन इतनी तीव्र गति से हो रहा है कि कोई भी सेना उस प्रगति के अनुसार अपने को बदलने में समर्थ नहीं बना पा रही है और युद्ध के दौरान यह प्रगति और तेज़ हो जाती है। इसी कारण ही जनरल जे० एफ० सी० फुलर ने इस सन्दर्भ में लिखा है—

"The army which is mentally better prepared to meet tactical changes will posses on enormous advantage over all the others."

(वह सेना जो समरतान्त्रिक परिवर्तनों को अपनाने में मानसिक रूप से अपेक्षाकृत अधिक तत्पर है, वह दूसरे सभी पर अत्यधिक लाभ उठाने से युक्त होगी।)

अभी तक के युद्ध इतिहास में समरतन्त्र के सन्दर्भ में एक बात आवश्यक सुनिश्चित हो गई है कि हमले व बचाव के लिए हथियार का सिलसिला अनवरत रहा है और रहेगा। यही कारण है कि हथियारों में सुधार की प्रक्रिया के बावजूद समरतन्त्र उसी अनुरूप में बदलता स्वरूप है, जो स्थायी रूप से रहता है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. योधनसंभार एवं हथियारों की अलग-अलग व्याख्या करो तथा मानव द्वारा प्रयुक्त प्रथम हथियार के स्वरूप का वर्णन करो।
2. हथियारों की परिभाषा बताते हुए हथियारों के वर्गीकरण की सविस्तार व्याख्या करो।
3. हथियारों की परिभाषा बताओ तथा उत्तम हथियार की विशेषताएं विस्तारपूर्वक वर्णित करें।
4. 'हथियार आघात पहुँचाने वाला एक शक्तिशाली औज़ार है।' इस कथन को दृष्टि में रखते हुए हथियारों की विशेषताओं का वर्णन करो।
5. "यदि उत्तम श्रेणी के हथियारों एवं औज़ारों का आविष्कार कर लिया जाए तो उनसे 99 प्रतिशत विजय प्राप्त की जा सकती है।" इस कथन की व्याख्या करते हुए पुष्टि कीजिए।
6. हथियारों एवं समरतन्त्र के सम्बन्धों की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

7. टॉम विन्ड्रिघम द्वारा प्रतिपादित कवच-रहित तथा कवच-युक्त कारणों का संक्षिप्त में विवेचन कीजिए।
8. जनरल जे० एफ० सी० फुलर द्वारा लिए गए हथियारों के ऐतिहासिक काल विभाजन का संक्षिप्त में उल्लेख कीजिए।
9. जनरल फुलर द्वारा सैन्य इतिहास का काल विभाजन कितने रूपों में किया गया है ? संक्षिप्त में वर्णन करो।
10. रूसी सैन्य विचारक पॉकरोवस्की द्वारा किए गए ऐतिहासिक काल विभाजन का उल्लेख कीजिए।
11. चिरस्थायी समरतन्त्र (Constant Tactical Factor) से आपका क्या अभिप्राय है ? सविस्तार व्याख्या करो।
12. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखो—
    (क) हथियारों का महत्त्व
    (ख) हथियारों का वर्गीकरण
    (ग) पॉकरोवस्की का काल विभाजन
    (घ) शस्त्र एवं समरतन्त्र
    (ङ) चिरस्थायी समरतन्त्र।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(Objective Type Questions)

नोट—प्रत्येक प्रश्न के अन्तर्गत कुछ वैकल्पिक एवं भ्रमित उत्तर दिये गये हैं। इसमें सर्वोत्तम उत्तर का चयन करना है।

प्रश्न 1. "हथियार आघात या चोट पहुंचाने वाला शक्तिशाली उपकरण है।" यह परिभाषा किस विद्वान् की है ?

(क) जनरल जे० एफ० सी० फुलर (ख) जनरल जोमिनी
(ग) ब्रेडले ए० फिस्की (घ) क्वीन्सी राइट।

प्रश्न 2. "जब कोई साधन यदि आक्रमण या रक्षा के लिए प्रयुक्त किया जाता है, तो वह हथियार बन जाता है।" यह परिभाषा किस विद्वान् द्वारा व्यक्त की गई है ?

(क) जनरल मैक्यावेली (ख) जनरल जे० एफ० सी० फुलर
(ग) प्रो० श्यामलाल एवं मुखर्जी (घ) ब्रेडले ए० फिस्की

प्रश्न 3. "हथियार युद्ध में प्रयोग किए जाने वाले भौतिक अथवा यान्त्रिक साधन हैं। एक हथियार साधारणतः प्रहारक शक्ति, गतिशीलता, बचाव एवं रक्षाशक्ति का विभिन्न अनुपात में समावेश करता है।" यह परिभाषा किसकी है ?

(क) ऑक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार
(ख) क्वीन्सी राइट (Quency Write)
(ग) जनरल जे० एफ० सी० फुलर
(घ) कैप्टन एम० पी० वर्मा।

प्रश्न 4. "हथियार वह साधन है, जिसके द्वारा शत्रु को चोट पहुंचाई अथवा घायल किया जा सकता है।" उक्त परिभाषा किसने दी ?

(क) जनरल जे० एफ० सी० फुलर (ख) मैक्यावेली
(ग) प्रो० श्यामलाल लाल मुकर्जी (घ) वेबस्टर के नए शब्दकोष।

प्रश्न 5. "शस्त्र वह साधन है, जिसमें शरीर को चोट पहुँचाने अथवा घायल करने की पर्याप्त क्षमता विद्यमान हो।" उक्त परिभाषा किसके द्वारा व्यक्त की गई ?

(क) ऑक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार
(ख) ब्रेडले ए० फिस्की के अनुसार
(ग) वेबस्टर शब्दकोष के अनुसार
(घ) प्रो० श्याम लाल एवं मुकर्जी के अनुसार।

प्रश्न 6. "कोई भी भौतिक वस्तु जब उसे प्रत्यक्ष रूप से शत्रु पर प्रहार के लिए अथवा शत्रु से स्वयं की रक्षा के लिए प्रयोग करते हैं, तो उसे हथियार कहते हैं।" यह परिभाषा किसकी है ?

(क) प्रो० श्याम लाल एवं मुकर्जी (ख) डॉ० वाई० के० शर्मा
(ग) जनरल जे० एफ० सी० फुलर (घ) कैप्टन एम० पी० वर्मा।

प्रश्न 7. प्रसिद्ध पुस्तक "अर्मामेण्ट एण्ड हिस्ट्री" किस विद्वान् द्वारा लिखी गई है ?

(क) जनरल नेपोलियन बोनापार्ट (ख) जनरल जे० एफ० सी० फुलर
(ग) जनरल जोमिनी (घ) जनरल मैक्यावेली।

प्रश्न 8. "योधनसंभार" नामक पुस्तक की रचना किस विद्वान् के द्वारा की गई है ?

(क) प्रो० श्यामलाल मुकर्जी (ख) प्रो० आर० सी० कुल श्रेष्ठ
(ग) कैप्टन एम० पी० वर्मा (घ) कैप्टन वी० एन० मालीवाल।

प्रश्न. 9 "नवीन वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान के आधार पर विकसित किए गए शस्त्रास्त्रों द्वारा नवीन समरतन्त्र का जन्म होता है।" यह विचार किस विद्वान के हैं ?

(क) जनरल जे० एफ० सी० फुलर (ख) प्रो० श्यामलाल एवं मुकर्जी
(ग) डॉ० योगेन्द्र कुमार शर्मा (घ) प्रो० वी० एन० मालीवाल।

प्रश्न 10. "शस्त्राशस्त्रों का कार्यक्षेत्र ही समरतन्त्र है।" यह परिभाषा किस विद्वान् की है ?

(क) कैप्टन एम० पी० वर्मा (ख) कैप्टन लिडिल हार्ट
(ग) जनरल जे० एफ० सी० फुलर (घ) जनरल जोमिनी।

प्रश्न 11. "यदि अच्छे प्रकार के शस्त्रों अथवा यन्त्रों की खोज कर ली जाए तो 99% विजय प्राप्त हो सकती है।" यह कथन किसका है ?

(M.D.U. April 1988)

(क) जनरल जे० एफ० सी० फुलर (ख) टॉम विन्ट्रिघम
(ग) जनरल जोमिनी (घ) जनरल क्लाजविट्ज।

प्रश्न 12. "प्रथम श्रेष्ठ हथियार पत्थर का वह टुकड़ा था जिसे मनुष्य ने हथौड़े के रूप में प्रयोग किया था।" उक्त कथन किसका है ? *(K.U.K. April 1994)*

(क) जे० एफ० सी० फुलर
(ख) लेविस ममफोड (Lewis Mumford)
(ग) क्वीन्सी राइट (Quency Wright)
(घ) मैक क्लाऊरी।

प्रश्न 13. ("टेंकनिक्स एण्ड सिविलाइज़ेशन") (Techiniques and civilization) नामक पुस्तक की रचना किसने की ?

(क) कैप्टन लिडिल हार्ट (ख) जनरल जे० एफ० सी० फुलर
(ग) लेविस ममफोर्ड (घ) क्वीन्सी राइट।

प्रश्न 14. जनरल जो० एफ० सी० फुलर ने हथियारों की विशेषता के लिए कितने लक्षणों का होना अनिवार्य बताया है ?

(क) पाँच (Five) (ख) सात (Seven)
(ग) चार (Four) (घ) छः (Six)।

प्रश्न 15. "किसी भी हथियार की मार की दूरी जितनी अधिक होगी प्रहारक शक्ति को उतनी ही तीव्र गति से प्रयोग सें लाया जा सकता है।" यह कथन किस विचारक का है ?

(क) जनरल मैक्यावेली (ख) टॉम विन्ट्रिघम
(ग) पाकरोवस्की (घ) जे० एफ० सी० फुलर।

प्रश्न 16. "The greater the striking power of a weapon, the more effective will be the below striking". यह कथन किस प्रसिद्ध सैन्य विचारक का है ?

(क) जनरल जे० एफ० सी० फुलर (ख) कैप्टन एम० पी० वर्मा
(ग) टॉम विन्ट्रिघम (घ) मार्शल वेवल।

प्रश्न 17. "श्रेष्ठ हथियारों के अभाव में अच्छे नियम नहीं होते, परन्तु जहां उत्तम हथियार होते हैं, वहां नियम अवश्य ही उत्तम होते हैं"। यह कथन किस विचारक के हैं ?

(क) जनरल जोमिनी (ख) जनरल मैक्यावेली
(ग) कैप्टन लिडिल हार्ट (घ) जनरल जे० एफ० सी० फुलर।

प्रश्न 18. "शस्त्रास्त्रों का कार्य क्षेत्र ही समरतन्त्र है।" यह कथन किस प्रसिद्ध सैन्य विचारक का है ?

(क) जनरल जे० एफ० सी० फुलर (ख) किंगस्टन मैक क्लाऊरी
(ग) कैप्टन लिडिल हार्ट (घ) जनरल मैक्यावेली।

प्रश्न 19. "इतिहास से हमें एक निश्चित पाठ पढ़ने को मिलता है कि नवीन हथियारों एवं साधनों के द्वारा नई सामरिकी अवश्य ही पनपती है।" उक्त कथन किस विचारक का है ?

(क) डॉ० वाई० के० शर्मा (ख) कैप्टन एम० पी० वर्मा
(ग) जे० एफ० सी० फुलर (घ) किंगस्टन मैक क्याऊरी।

प्रश्न 20. प्रसिद्ध पुस्तक "आयुध एवं समरतन्त्र" (Weapons and Tactics) किस विचारक की रचना है ?

(क) टॉम विन्ट्रिघम (ख) जनरल जे० एफ० सी० फुलर
(ग) पाकरोवस्की (घ) जनरल मैक्यावेली।

प्रश्न 21. कवच-रहित तथा कवच-युक्त काल के रूप में सैन्य इतिहास का विभाजन किसने किया है ?

(क) जनरल मैक्यावेली (ख) टॉम विन्ट्रिघम
(ग) जनरल जोमिनी (घ) जनरल जे० एफ० सी० फुलर।

प्रश्न 22. प्रथम कवच रहित काल का समय निर्धारण क्या किया गया है ?

(क) प्रारम्भ से 479 ई० पूर्व तक
(ख) प्रारम्भ से 378 ई० तक
(ग) 479 ई० पू० से 378 ई० तक
(घ) प्रारम्भ से 479 ई० तक।

प्रश्न 23. प्रथम कवच-युक्त काल का क्या समय निर्धारित किया गया है?

(क) 479 ई० से 774 ई० तक (ख) 479 ई० पू० से 378 ई० तक
(ग) 774 ई० से 1346 ई० तक (घ) 378 ई० से 479 ई० तक।

प्रश्न 24. द्वितीय कवच-रहित काल का क्या समय निर्धारित किया गया है?

(क) 378 ई० से 477 ई० तक (ख) 479 ई० पू० से 378 ई० तक
(ग) 378 ई० से 774 ई० तक (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

प्रश्न 25. द्वितीय कवच-युक्त काल का क्या समय निर्धारित किया गया है?

(क) कोई निश्चित तिथि नहीं (ख) 378 ई० से 479 ई० तक
(ग) 378 ई० से 774 ई० तक (घ) 774 ई० से 1346 ई० तक।

प्रश्न 26. तृतीय कवच-रहित काल का क्या समय निर्धारित किया गया है?

(क) 774 ई० से 1346 ई० तक (ख) 1346 ई० से 1917 ई० तक
(ग) 1917 ई० से वर्तमान तक (घ) 1300 ई० से 1600 ई० तक।

प्रश्न 27. तृतीय कवच-युक्त काल का समय क्या निर्धारित किया गया है?

(क) 1917 ई० से अब तक (ख) 1945 ई० से अब तक

(ग) 1346 ई० से 1917 ई० तक (घ) 1917 ई० से 1945 ई० तक।

प्रश्न 28. पराक्रम के युग का समय क्या निर्धारित किया गया है?

(क) आरम्भ काल से 378 ई० तक

(ख) 378 ई० से 1346 ई० तक

(ग) आरम्भ से लेकर 331 ई० पू० तक

(घ) आरम्भ से 1066 ई० तक।

प्रश्न 29. शौर्य के युग का क्या समय निर्धारित किया गया है?

(क) 331 ई० पू० से लेकर 1066 ई० तक

(ख) 378 ई० से 1066 ई० तक

(ग) 378 ई० से 1346 ई० तक

(घ) 1066 ई० से 1346 ई० तक।

प्रश्न 30. बारूद के युग का क्या समय निर्धारित किया गया है?

(क) 1066 ई० से 17वीं शताब्दी तक

(ख) 1346 ई० से 18वीं शताब्दी के अन्त तक

(ग) 1555 ई० से 18वीं शताब्दी तक

(घ) 18वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक।

प्रश्न 31. भाप के युग का क्या युग निर्धारित किया गया है?

(क) 1580 ई० से 1680 ई० तक (ख) 1680 ई० से 1780 ई० तक

(ग) 1880 ई० से 1980 ई० तक (घ) 1780 ई० से 1880 ई० तक।

प्रश्न 32. तेल के युग का क्या युग निर्धारित किया गया है?

(क) 1880 ई० से 1917 ई० तक

(ख) 1880 ई० से 1945 ई० तक

(ग) प्रथम विश्व युद्ध से द्वितीय विश्व युद्ध तक

(घ) उपर्यक्त में से कोई नहीं।

प्रश्न 33. परमाणु युग का क्या समय निश्चित किया गया है?

(क) 1917 ई० से अब तक (ख) 19वीं शताब्दी से अब तक

(ग) 1917 ई० से 1945 ई० तक (घ) 1945 ई० से अब तक।

प्रश्न 34. सर्वप्रथम परमाणु बम का विस्फोट कब और कहां किया गया ?

(क) 9 अगस्त, 1945 नागासाकी में

(ख) 15 अगस्त, 1945 जापान में

(ग) 6 अगस्त, 1945 हिरोशिमा में

(घ) उपर्युक्त में से कोई सही नहीं है।

प्रश्न 35. आई० सी० बी० एम० (I.C.B.M.) क्या है ?

(क) इन्टर कान्टीनेन्टल बिग मिसाइल

(ख) इण्डियन कन्ट्री बिफोर मिसाइल

(ग) इण्टर कान्टीनेन्टल बैलिस्टिक मिसाइल

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

प्रश्न 36. प्रसिद्ध सैन्य विचारक पाकरोवस्की किस देश का निवासी था ?

(क) संयुक्त राज्य अमेरिका (U.S.A.)

(ख) सोवियत संघ (U.S.S.R.)

(ग) इंग्लैण्ड (U.K)

(घ) फ्रांस (France)।

प्रश्न 37. पाकरोवस्की ने संसार के सैन्य इतिहास को किस सिद्धान्त के आधार पर विभाजित किया है ?

(क) सैनिक सिद्धान्त (ख) आर्थिक सिद्धान्त

(ग) सामाजिक सिद्धान्त (घ) राजनैतिक सिद्धान्त।

प्रश्न 38. यन्त्रों के युग का क्या समय निश्चित किया गया है ?

(क) द्वितीय विश्व युद्ध से अब तक

(ख) 18वीं शताब्दी से अब तक

(ग) 20वीं शताब्दी से अब तक

(घ) 19वीं शताब्दी से अब तक।

प्रश्न 39. शिल्पकारी युग का क्या समय निश्चित किया गया है ?

(क) 16वीं शताब्दी से 17वीं शताब्दी तक

(ख) 17वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक

(ग) 18वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक

(घ) 19वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक।

प्रश्न 40. 'चिरस्थायी समरतन्त्र' (Contant Tactical Factor) के सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया ?

(क) क्वीन्सी राइट (ख) टॉम विन्ट्रिघम

(ग) जनरल जे० एफ० सी० फुलर (घ) कैप्टन लिडिल हार्ड।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर
(Answers of Objective Type Questions)

1. (क)	2. (घ)	3. (ख)	4. (ग)	5. (क)
6. (घ)	7. (ख)	8. (ग)	9. (ग)	10. (ख)
11. (क)	12. (ख)	13. (ग)	14. (क)	15. (घ)
16. (क)	17. (ख)	18. (ग)	19. (घ)	20. (क)
21. (ख)	22. (क)	23. (ख)	24. (ग)	25. (घ)
26. (ख)	27. (क)	28. (क)	29. (ग)	30. (ख)
31. (घ)	32. (ख)	33. (घ)	34. (ग)	35. (ग)
36. (ख)	37. (ग)	38. (घ)	39. (घ)	40. (ग)

2 पराक्रम का युग
(THE AGE OF VABUR)

1. ग्रीक फैलेंक्स
(Greek Phalanx)

योरोपीय सैन्य इतिहास की शुरुआत यूनान से मानी जाती है। यूनान ने ही मनुष्य के निर्वाह योग्य साधन ढूंढ़ निकाले थे। यूनान में युद्ध शुरुआत में अपनी खाद्यान्न सामग्री जुटाने के लिए हुआ करते थे। जिस पक्ष को युद्ध में सफलता मिलती थी, वह पक्ष हारे हुए दल की फसल पर अधिकार जमा लेता और खाद्यान्न सामग्री को अपने भण्डारों में एकत्र कर लिया करता था। इस समय अनिवार्य नागरिक भर्ती की जाने लगी थी तथा नागरिक सेना ही प्रयोग की जाती थी। नागरिक सेनाओं को एक सीमित अवधि में सरल तरीके से प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था, ताकि अपनी सुरक्षा व हमले की स्थिति से आसानी से निपट सके। नागरिकों के सैनिक संगठन का प्रशिक्षण अत्यन्त सरल होने के कारण इनका समरतन्त्र (Tactics) भी बहुत आसान तरीके का होता था। जो नागरिक सैनिक अपने भारी हथियारों से सज्जित होते थे, उन्हें 'होपलाइट' (Hoplite) कहा जाता था। होपलाइट एक सरल प्रकार की युद्ध संरचना (War Formation) में संगठित होकर लड़ते थे। इस समूचे व्यूह (Formation) को फैलेंक्स (Phalanx) के नाम से सम्बोधित किया जाता था। इसके पराक्रमी एवं साहसी सैनिक ढाल, तलवार एवं भाला के साथ कवच भी धारण करते थे। सैनिकों की श्रेष्ठता व्यक्तिगत कुशलता, चतुरता एवं होशियारी के स्थान पर पराक्रम, शक्ति एवं साहस की दृष्टि से अधिक अनुमानित की जाती थी।

ग्रीक फैलेंक्स (Greek Phalanx) यूनान का विख्यात सैन्य संगठन था। पराक्रम के युग की यह पहली प्रमुख संगठित सैन्य व्यवस्था मानी जाती है। इस संगठन से सम्बद्ध सभी सैनिक अत्यधिक साहसी, कुशल, अनुशासित, श्रेष्ठ शस्त्रास्त्रों से सज्जित तथा नेतृत्व क्षमता का निर्वाह करने में निपुण थे। यही कारण था कि पाश्चात्य सैन्य इतिहास में एक लम्बी अवधि तक पूरी तरह छाए रहे और सैन्य इतिहास की धारा को एक नया मोड़ दिया। इस संगठन में समय-समय पर अनेक सेनापतियों ने सुधार किये। उनमें से प्रमुख सेनापतियों में सिकन्दर, फिलिप द्वितीय तथा एपामिनोनडास को माना जाता है।

इस सबके बावजूद एक समय के पश्चात् इस संगठन में कतिपय दोष आ गए, जिसके कारण प्राचीन काल से प्रचलित इस सैन्य संगठन का पतन हो गया और इसका स्थान रोमन लीजन ने ग्रहण कर लिया। अब हम ग्रीक फैलेंक्स (सैन्य संगठन) के प्रत्येक सामरिक पहलू का अलग-अलग उल्लेख करते हैं।

फैलेंक्स का संगठन
(Organization of Phalanx)

यूनानी सैनिकों को विभिन्न गहराइयों के साथ समानान्तर एकहरी पंक्तियों में संगठित किया जाता था। इस संरचना का फैलाव ठोस एवं गहराई युक्त होता था। इसे फैलेंक्स के नाम से सम्बोधित किया जाता था। सिकन्दर ने अपनी समस्त सेना को अनेकों फैलेंक्स में विभक्त कर दिया था। फैलेंक्स के संगठन में कुल 16384 भारी हथियारों से युक्त पैदल सैनिक होते थे, जिन्हें हॉपलाइट (Hoplites) कहा जाता था। इस संगठन में 1024 पंक्तियां होती थीं, जिन्हें फाइल (File) भी कहा जाता था तथा प्रत्येक पंक्ति में 16 पैदल सैनिक संगठित होते थे। पंक्ति अथवा फाइल इस संगठन की सबसे छोटी इकाई होती थी। दो पंक्तियों के द्वारा एक डाइलौकी (Dilocky) बनायी जाती थी। दो डाइलौकी के द्वारा एक **टैटारकी** (Tetarchy) बनायी जाती थी। दो टैटारकी के द्वारा एक टेक्सीज (Taxis) बनायी जाती थी। इस संगठन की संक्षिप्त एवं स्पष्ट संरचना निम्नलिखित से थी—

फाइल	=	16 × 1	=	16 सैनिक
डाइलौकी	=	16 × 2	=	32 सैनिक
टैटारकी	=	32 × 2	=	64 सैनिक
टैक्सिस	=	64 × 2	=	128 सैनिक
पेन्टेकोनाकी	=	128 × 2	=	256 सैनिक
चिलियाकी	=	256 × 2	=	512 सैनिक
मेरारकी	=	512 × 2	=	1024 सैनिक
फैलेंक्गार्की	=	1024 × 4	=	4096 सैनिक
फैलेंक्स	=	4096 × 4	=	16384 सैनिक

इस संगठन में चार मेरारकी के द्वारा एक फैलेंक्गार्की तथा चार फैलेंक्गार्की के द्वारा एक फैलेंक्स का निर्माण होता है। संगठन में सैनिक एक दूसरे सैनिक से लगभग छः फीट की दूरी में खड़े होते थे, परन्तु जब वह सैनिक मार्च करते थे अथवा युद्ध के लिए आगे बढ़ते थे तो इनका एक-दूसरे के मध्य फासला केवल तीन फीट ही रह जाता था। आक्रमण करते समय सैनिक लगभग एक या डेढ़ फीट की दूरी में ही रह जाते थे और एक-दूसरे के साथ भिड़कर ही आगे बढ़ते थे।

फैलेंक्स का समरतान्त्रिक फैलाव
(Tactical Deployment of Phalanx)

इस संगठन का समरतान्त्रिक फैलाव अपने समय की सर्वश्रेष्ठ सैन्य व्यवस्था के रूप में माना जाता था। युद्ध क्षेत्र में यह संगठन एक आयताकार रूप में अपने शत्रु के सम्मुख खड़ा होता था, जिसकी गहराई 16 सैनिक और समानान्तर पंक्तियां 1024 होती थीं। प्रत्येक फाइल के सामने की ओर 6 सैनिक भाला लेकर आगे खड़े रहते थे। पैदल सेना का संगठन फैलेंक्स मुख्य सेना के रूप में मध्य भाग में खड़ा किया जाता था, जिसके दायें तथा बायें पार्श्व पर अश्वारोही खड़ी की जाती थी। सबसे आगे अपनी रथ सेना को

खड़ा करते थे। फैलेंक्स के पीछे पूरक सेनाओं को खड़ा किया जाता था। इनके बाद भारी धनुष-धारी व गोफनधारी सैनिक तैनात किए जाते थे। सबसे पीछे युद्ध यन्त्रों (War Machine) को खड़ा किया जाता था, जिन्हें **कैटापुल्ट** तथा **बैलिसटे** कहा जाता था। इस प्रकार फैलेंक्स का संगठन एवं समरतान्त्रिक फैलाव अत्यन्त ठोस एवं किलेबन्दी के रूप में किया जाता था। यही कारण है कि यह ठोस संगठित सेना अपने समय के किसी भी अन्य संगठन का सुविधा के साथ मुकाबला करके उसे पराजित कर सकने में क्षमता रखती थी।

फैलेंक्स का समरतांत्रिक फैलाव हथियारों की मादक क्षमता एवं उनके प्रयोग को देखते हुए अत्यन्त सुसंगठित रूप में किया गया था। दोनों पार्श्वों को गतिशील, लचीलापन एवं सुदृढ़ बनाये रखने के लिए घुड़सवार सैनिक दोनों पार्श्व में तैनात रहते थे। इसी कारण इस संगठन को ठोस संगठन भी कहा जाता था।

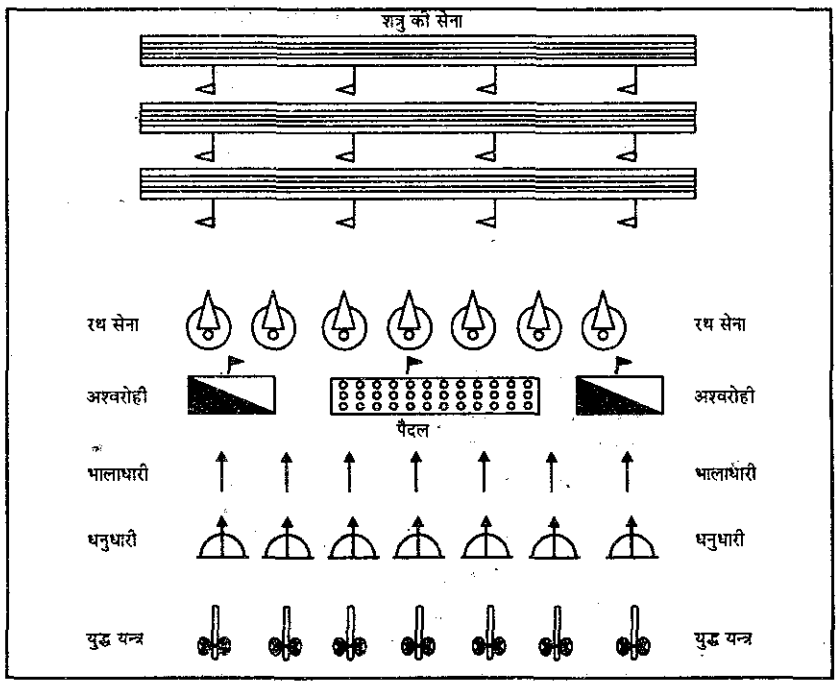

चित्र—फैलेंक्स का समरतांत्रिक फैलाव

फैलेंक्स की युद्ध कला
(Phalanx Art of War)

यूनान के प्रसिद्ध सैन्य संगठन फैलेंक्स की युद्धकला 'फायर एवं आघात' (Fire and Sock) समरतत्त्व पर मुख्य रूप से आधारित थी। इस संगठन (organization) की प्रत्येक कमाण्ड सुविधापूर्वक अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता था, क्योंकि

प्रत्येक दल के मध्य निश्चित अन्तर रहता था। आगे की ओर खड़े सैनिक जहां अपने लम्बे एवं भारी भालों से शत्रु का मुकाबला करते थे, वहीं इनके पीछे खड़े धनुष-धारी तथा गोफनधारी दूर से ही शत्रु पर प्रहार करते थे। सबसे पीछे खड़ी की जाने वाले युद्ध-यन्त्रों के द्वारा अपनी सेना से ऊपर की ओर से भारी संख्या में पत्थर फेंककर शत्रु का सफाया किया जाता था। अश्वारोही सेना दोनों पार्श्व में स्थित होकर गतिशीलता के साथ शत्रु को दबाने का कार्य करती थी। इस प्रकार फैलेंक्स की युद्ध कला अपने समय की उच्चकोटि की युद्ध कला में आंकी जाती थी। यही कारण है कि अपनी उच्च श्रेणी की युद्ध कला के बल पर ही एक लम्बी अवधि तक यह सैन्य संगठन विश्व सैन्य इतिहास में छाया रहा।

फैलेंक्स के हथियार
(Weapons of Phalanx)

फैलेंक्स के संगठन में प्रतिरक्षात्मक एवं आक्रमणात्मक दोनों ही प्रकार के हथियारों का प्रयोग किया जाता था। फैलेंक्स में प्रयोग होने वाले हथियार अपने समय के श्रेष्ठ विधि तथा तकनीकी से निर्मित थे। अब हम इस समय के हथियारों का संक्षिप्त में उल्लेख करते हैं—

1. तलवार
2. छोटे भाले अथवा बल्लम
3. बड़े भाले (सरिसा जो लगभग 21 फीट लम्बा होता था)
4. धनुष-बाण
5. गोफनधारी तथा गुलेलधारी
6. युद्ध-यन्त्र (पत्थर के टुकड़े फेंकने की मशीन) कैटापुल्ट व वैलिस्टे।

सुरक्षा के लिए सैनिक लोहे के टोप, वक्ष कवच तथा पिण्डुली कवच भी धारण करते थे।

फैलेंक्स की विशेषताएं
(Merits of Phalanx)

फैलेंक्स एक विख्यात एवं श्रेष्ठ सैन्य संगठन था, जिसमें अपनी सैनिक विशेषताओं के कारण एक लम्बी अवधि तक अपनी अमिट छाप रखी। अनेक शासकों ने अपने अनुसार इस संगठन में परिवर्तन एवं सुधार भी किए। इसमें अनेक शासकों जैसे फिलिप द्वितीय, सिकन्दर ने भी महत्त्वपूर्ण सुधार करके इस संगठन को नया रूप दिया। दोनों ही शासकों ने आक्रमण के समय एक नवीन धारणा पर ज़ोर दिया और उसको तिरछा आक्रमण (Oblique Attack) के नाम से जाना गया।

अब हम संक्षेप में फैलेंक्स की विशेषताओं का उल्लेख करते हैं, जो इस प्रकार से हैं—

1. फैलेंक्स का संगठन एक ठोस सैनिक संरचना के रूप में किया गया था, जिसके कारण वह शत्रु पर हावी हो जाती थी।

2. फैलेंक्स की सेना में श्रेष्ठ अनुशासन एवं राष्ट्र के प्रति बलिदान की भावना से युक्त सैनिक संगठित थे।

3. फैलेंक्स की सेना के प्रत्येक सैनिक को कुशल प्रशिक्षण के द्वारा दक्ष बना दिया जाता था।

4. दक्ष सेनापतियों के कारण इस संगठन का नेतृत्व श्रेष्ठ होता था।

5. इस संगठन में प्रयोग होने वाले हथियार अपने समय के श्रेष्ठ तकनीकी से बने हथियार थे। उदाहरण के तौर पर इसका 21 फुट लम्बा सरिसा नामक हथियार सेना पर कहर ढा देता था।

6. फैलेंक्स की सेना में युद्ध यन्त्र के रूप में पत्थर फेंकने वाले साधन का भी प्रयोग किया जाता था।

7. फैलेंक्स की सेना ने प्रशासन एवं आपूर्ति व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया। यही कारण है कि भविष्य में नेपोलियन ने भी इस तत्त्व पर ज़ोर दिया था और कहा था कि **'सेना पेट के बल चलती है।'** यह कथन आज भी प्रामाणिक है।

8. अपनी सेना की कवच शक्ति अत्यन्त सुदृढ़ होती थी, जो शत्रु का हर परिस्थिति में मुकाबला कर सकती थी।

9. फैलेंक्स की हल्की पैदल सेना अपनी तीव्र प्रहारक क्षमता से शत्रु पर तुरन्त हावी हो जाती थी।

10. इनके सैनिक नृत्य एवं व्यायाम में निपुण होने के कारण युद्ध में कुशलता के साथ भूमिका निभाते थे।

11. इस संगठन में बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन करने की विशिष्ट क्षमता भी होती थी।

12. इस संगठन का तिरछा आक्रमण व्यवस्था (Oblique Attack System) अपने समय की नवीन युद्ध योजना थी।

इस प्रकार फैलेंक्स में उपर्युक्त विशेषताएं होने के कारण ही महत्त्वपूर्ण सफलता एक लम्बे समय तक प्राप्त करता रहा।

फैलेंक्स के दोष
(Demerits of Phalanx)

यूनानी सैन्य संगठन फैलेंक्स अपने समय का सर्वश्रेष्ठ सैन्य संगठन बन गया था। उसका मुकाबला करना शत्रु के लिए कठिन हो जाता था। इस सबके बावजूद इस संगठन में कतिपय ऐसी त्रुटियां थीं, जिनको दूर न करने के कारण अन्त में इसका पतन भी हुआ। यद्यपि फ्रांस के दो शासकों फिलिप तथा सिकन्दर ने इसमें कुछ सैन्य सुधार किए परन्तु बाद के शासकों ने समय के साथ न तो सुधार किए और न ही इस पर विशेष ध्यान दिया, जिसके परिणामस्वरूप इस श्रेष्ठ सैन्य संगठन का पतन 168 ई० पूर्व लड़े गए पीडना के संग्राम के साथ ही हो गया।

अब संक्षिप्त में फैलेंक्स के पतन के लिए उत्तरदायी प्रमुख कारणों का उल्लेख करते हैं—

1. फैलेंक्स सैन्य संगठन एक ठोस संगठन के रूप में था, जिसके कारण यह केवल समतल भूमि पर ही अपनी कार्यवाही सफलतापूर्वक कर पाता था, जबकि ऊंची-नीची, ऊबड़-खाबड़ तथा तंग व संकरे वाले क्षेत्रों में सफल नहीं हो पाता था।

2. फैलेंक्स का समरतान्त्रिक फैलाव इस प्रकार का होता था कि इसकी केवल अगली पंक्ति ही सफलता से शत्रु का मुकाबला कर पाती थी, जबकि अन्य पीछे की ओर खडे होने वाली सैनिकों की पंक्ति केवल मूक दर्शक बनी रहती थी।

3. इसके संगठन में आरक्षित सेना (Reserve Army) का पूर्ण अभाव था, जिसके कारण आपात्काल के समय इस सैन्य संगठन को कोई भी सैनिक सहयोग नहीं प्राप्त हो पाता था।

4. अत्यन्त ठोस सैन्य संगठन के कारण इसमें युद्ध के प्रमुख सिद्धान्त गतिशीलता (Mobility) का पूर्ण अभाव था, जिसके कारण भागते हुए शत्रु का पीछा करने में भी असमर्थ रहते थे।

5. इस संगठन में लचकता (Flexibility) का पूर्ण अभाव था जिसके कारण एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदलना अत्यन्त कठिन कार्य होता था।

6. इस संगठन में सैनिकों के द्वारा भारी एवं लम्बा 'सरिसा' नामक हथियार का प्रयोग किया जाता था, जिससे सैनिक शीघ्रता के साथ ही थकावट महसूस करने लगते थे, जिससे उनकी यौद्धिक शक्ति प्रभावित होती थी।

7. सैनिकों में राष्ट्र एवं देश की भावना का स्थान वेतन भोगी तथा आर्थिक लाभ प्राप्त करने की रुचि ने ले लिया था।

8. ठोस संगठन के कारण युद्ध के समय इनमें अनुशासन का पूर्ण अभाव हो जाता था, क्योंकि सेनापति द्वारा प्रत्यक्ष रूप से नियन्त्रण नहीं किया जा सकता था।

9. इस संगठन का प्रमुख भाग (Front) टूट जाने पर सम्पूर्ण सेना दबाव में आ जाती थी, चूंकि शेष संगठन के सैनिक पीछे की पंक्ति में होते थे।

10. सिकन्दर ने जो सैन्य सुधार किए उनकी आने वाले समय में पूरी तरह से अवहेलना कर दी गई।

इसके बावजूद भी यूनान का प्रसिद्ध सैन्य संगठन फैलेंक्स अपने समय का सर्वोत्तम सैन्य संगठन था, क्योंकि इसमें एक संतुलित एवं व्यवस्थित तरीके से सैनिक संख्या, इकाई, संगठन, हथियार एवं समरतन्त्र आदि का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इस सन्दर्भ में मेजर जनरल डी० के० पालित ने किया है—

"Parallel order, in single line of ordered masses varying in depth."

(समानांतर इकहरी लाइनों की विभिन्न गहराइयों से युक्त व्यवस्थित समूह की होती थी।)

इस संगठन को मैसेडोनियान फैलेंक्स (Macedonian Phalanx) के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। इस संगठन में भी समय के साथ बदलाव एवं सुधार किया जाता रहा है।

2. रोमन लीजन (Roman Legion)

विश्व सैन्य इतिहास में जब यूनान का प्रसिद्ध सैन्य संगठन फैलेंक्स का पतन होने लगा, उसी दौरान रोम के प्रसिद्ध सैन्य संगठन रोमन लीजन (Roman Legion) ने अपना अस्तित्व स्थापित करना शुरू कर दिया था। रोम के नागरिक स्वाभाविक रूप से

राष्ट्रप्रेमी थे और उनकी यह सोच थी कि जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि देश हित व सुरक्षा के प्रति समर्पित रहे। इनका सैन्य संगठन यूनान के सैन्य संगठन फैलेंक्स की तुलना में कहीं बेहतर था, चूंकि इसके सैनिक स्वयं को राष्ट्र हित के लिए सर्वस्व बलिदान करने के लिए तत्पर रहते थे। इसके साथ ही **जे० एफ० सी० फुलर** (J. F. C. Fuller) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **"Armament and History"** में रोमन सैनिकों एवं नागरिकों के सन्दर्भ में लिखा है—

"To this war loving people, life was battle, and heroism religion."

(इन युद्ध प्रेमी लोगों के लिए युद्ध एक जीवन और पराक्रम उनका धर्म होता था।)

पश्चिमी इतिहासकार **रिचर्ड ए० प्रेस्टन** (Richard A. Preston) ने अपनी पुस्तक **"Men in Arms"** में रोमन सैनिकों की वीरता, बलिदान एवं विचारों का वर्णन करते हुए लिखा है—

"Roman Army was mirror of the society of which it was a part. It was a levy of citizen body or rather of those citizen could meet the property qualification which conveyed the right to serve. Each citizen was responsible for providing his own equipment, grading within the army was determined by wealth, and the mass of the common solidery was composed of small former."

(रोमन सेना उस समाज का आइना थी, जिस समाज का वह हिस्सा थी। वह ऐसे साधन सम्पन्न एवं गुणवान नागरिकों का समूह था, जिसे सैन्य सेवा हेतु आदर्श समझा जाता था। प्रत्येक नागरिक स्वयं ही अपनी साज-सज्जा के लिए उत्तरदायी होता था। सेना में रैंक या श्रेणी का निर्धारण सम्पदा के आधार पर किया जाता था और साधारण सैनिकों के समूह छोटे किसानों के होते थे।)

रोम के सैनिकों एवं नागरिकों की असाधारण क्षमता के कारण उन्हें न केवल सैन्य इतिहास के एक श्रेष्ठ योद्धा होने का गौरव मिला, बल्कि राष्ट्र भक्ति, आस्था एवं विश्वास के नये आयाम स्थापित किये। राष्ट्रीय समर्पण एवं राष्ट्र प्रेम के कारण उनकी प्रवृत्ति आक्रामक हो गयी थी, जैसा कि **लिवी** (Livy) महोदय ने लिखा है—

"Such is the temper of Roman Nation that is knows not how to remain in peace, unquished though it be."

(रोम के नागरिकों की आदत ऐसी हो गयी थी, कि वे पराजित हो जाने के पश्चात् भी शान्ति से बैठना नहीं जानते थे।)

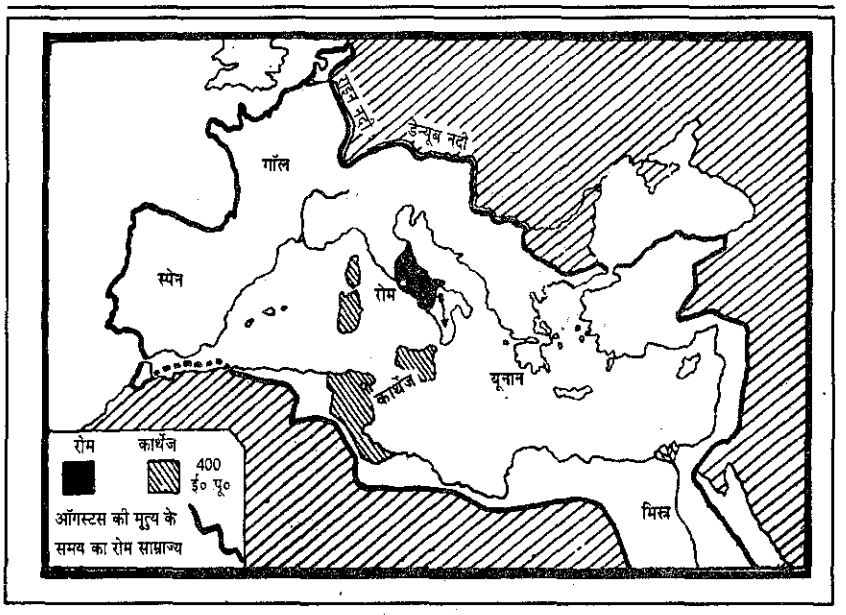

वास्तव में रोमन सेना की श्रेष्ठता की प्रमुख वजह यही थी कि उनकी सोच, उनकी कार्य प्रणाली और उनकी परम्परा राष्ट्रीय एकता एवं बलिदान पर मुख्य रूप से आधारित थी। रोमन सैनिक वास्तव में प्रशिक्षित नागरिक सेना थी। रोम ने जब 168 ई० पूर्व पीडना की लड़ाई (Battle of Pydna) में जब यूनानी सेना तथा उसके संगठन फैलेंक्स का ध्वस्त कर दिया उसी समय से रोमन लीजन ने अपनी प्रभुसत्ता स्थापित कर ली थी। रोमन लोग राष्ट्रीय सेवा के लिए समर्पण को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान करते थे इसी कारण प्रत्येक नागरिक की आवश्यक योग्यता उसकी सैनिक सेवा भावना को माना जाता था। रोम के नागरिक स्वेच्छा से सेना एवं सैन्य सामग्री के लिए समर्पित रहते थे, जिसके कारण उनकी सेना के संगठन ने बहुत जल्दी ख्याति (Famous) प्राप्ति कर ली।

रोमन जाति के लोगों के लिए जीवन एक युद्ध का रूप था तथा नेतृत्व तथा बलिदान करना अपना परम धर्म मानते थे। इनकी कोई नियमित सेना नहीं थी, केवल प्रशिक्षित नागरिक सेना के रूप में ही लीजन का गठन किया गया था। उनमें अनुशासन एवं बलिदान की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी, जिसके कारण कठोर से कठोर प्रशिक्षण के लिए तैयार रहते थे। इसके सन्दर्भ में **जो सीफस** (Jo Sephus) महोदय का यह कथन विशेष रूप से उल्लेखनीय है—

"Roman drills as bloodless battle and their battles as bloodly drills."

(रोम की कवायत अथवा प्रशिक्षण रक्त रहित संग्राम थी और उनके संग्राम खूनी प्रशिक्षण के रूप में था।)

इस प्रकार रोमन लीजन (Roman Legion) विश्व सैन्य इतिहास में एक प्रमुख सैन्य संगठन के रूप में स्थापित हो गया था।

रोमन लीजन का सैन्य संगठन

(Military Organization of Roman Legion)

रोमन सैन्य संगठन का गठन लीजन (Legion) पद्धति के आधार पर किया गया था। रोमन सेना की सैनिक इकाई को लीजन के नाम से सम्बोधित किया जाता था। इसका संगठन भी लगभग फैलेंक्स के आधार पर किया गया था। जनरल जे० एफ० सी० फुलर महोदय ने एक रोमन लीजन में दस कोहार्ट का उल्लेख किया है तथा एक कोहार्ट में तीन मैनीपल्स (Maniples) का वर्णन किया है। पहले दो मैनीपल्स में हस्ताती (Hastati) व प्रिन्साइप्स (Principes) की संख्या 120 होती थी तथा अन्तिम मैनीपल्स में ट्रियारी (Triari) की संख्या 60 होती थी। 120 वेलाइट्स (Velites) का मैनीपल्स अलग बताया। इन सभी के साथ 30 अश्वारोही सैनिक हुआ करते थे। इस प्रकार एक कोहार्ट का गठन इस प्रकार होता था—

वेलाइट्स = 120

हस्ताती = 120

प्रिन्साइप्स = 120

ट्रियारी = 60

इस प्रकार कुल संख्या 420 बताई है तथा दस कोहार्ट का एक लीजन होता था जिसमें कुल 420 × 10 = 4200 सैनिक संगठित किए जाते थे।

रोमन सेना के संगठन में आयु का विशेष महत्त्व हुआ करता था जिसके अनुसार सैनिकों को विभिन्न श्रेणियों में संगठित किया गया था जो इस प्रकार से था—

1. **वेलाइट** (Velites) (16 से 24 वर्ष)
2. **हस्ताती** (Hastati) (24 से 30 वर्ष)
3. **प्रिन्साइप्स** (Principes) (30 से 40 वर्ष)
4. **ट्रियारी** (Triari)-(40 से 50 वर्ष)

रोमन लीजन सेना का गठन मुख्य रूप से तीन रूपों में किया गया था ताकि हर परिस्थिति में सुविधा के साथ शत्रु का सामना किया जा सके। इसका संगठन इस प्रकार करते थे—

1. प्रमुख सेना (Main Army)
2. सहायक सेना (Support Army)
3. आरक्षित सेना (Reserve Army)

इस प्रकार समस्त रोमन लीजन का संगठन शतरंज जैसी रचना (Formation) के आधार पर किया गया था।

रोमन लीजन के हथियार
(Weapons of Roman Legion)

रोमन सेना के द्वारा आक्रमणात्मक एवं प्रतिरक्षात्मक दोनों ही प्रकार के हथियारों का प्रयोग किया जाता था। मुख्य रूप से इस प्रकार से हम व्यक्त कर सकते हैं—

1. एक धार वाली तलवार
2. दो धार वाली तलवार (Gladius)
3. छोटी श्रेणी के भाले (Javelines) या पीलम
4. बड़े प्रकार के भाले (12 फीट लम्बा)
5. शिरस्त्राण व अन्य कवच
6. लोह का टोप
7. लम्बी ढाल (चार फीट लम्बी तथा 2.6 फीट चौड़ी)
8. गोल ढाल (जिसका व्यास 3 फीट होता था)

इसमें **वेलाइट्स** सैनिक ढाल, तलवार एवं छोटे भाले रखते थे और इनके भाले बहुत नुकीले एवं नाजुक होते थे। **हस्ताती** सैनिक चौड़ी ढाल, दुधारी (Gladius) तलवार तथा दो भाले से सज्जित होते थे व कवच भी पहनते थे। **प्रिन्साइप्स** व **ट्रियारी** सैनिक भी हस्ताती वाले हथियार रखते थे किन्तु इनके पास बड़ा भाला भी होता था।

रोमन लीजन का समरतांत्रिक फैलाव
(Tactical Deployment of Roman Legion)

रोमन लीजन का संगठन लचकता या परिवर्तनशीलता की क्षमता से सम्बद्ध था, जिसके कारण उसे बदलती हुई सामरिक स्थिति में भी काम करने में किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पडता था। उसमें पैंतरे बदलने की अद्वितीय क्षमता थी। लीजन में प्रहार शक्ति एवं आघात क्षमता बहुत अधिक थी, जिसके कारण उनका समरतंत्र आघात एवं प्रहारक (Sock and Striking) विधि पर आधारित था। इसके समरतंत्र में हमला एवं बचाव दोनों ही प्रकार की स्थिति का समावेश था। रोमन सैनिक आक्रमण पहल करने की पक्षधर सदैव रही। इसका संगठन रक्षात्मक स्थिति में भी आक्रामक हुआ करता था।

रोमन लीजन का समरतान्त्रिक फैलाव शतरंज के मोहरों की भांति किया जाता था, ताकि प्रत्येक स्थिति में शत्रु पर तुरन्त हावी हुआ जा सके। लीजन में कुल 4200 सैनिकों को संगठित किया जाता था। इसमें आयु को आधार मानकर ही सैनिकों को चार श्रेणियों में विभक्त किया गया था—

प्रथम श्रेणी में हल्की एवं तेज सेना के रूप में **वेलाइट्स** सैनिकों को रखा जाता था जिनकी उम्र कम होने के कारण जोश अधिक होता था। इसी कारण प्रथम धावा यही टुकड़ी करती थी।

दूसरी श्रेणी में अनुभव एवं उम्र के आधार पर परिपक्व सैनिकों को गठित किया जाता था, जिन्हें हस्ताती कहा गया। यह भारी पैदल सेना की पहली पंक्ति में आते थे, जो बड़ी तत्परता एवं धैर्य के साथ अपनी कार्यवाही करते थे।

तीसरे श्रेणी में अत्यन्त परिपक्व एवं मंजे हुए सैनिकों का समूह आता था; जो अधेड़ उम्र के होते थे। यह प्रत्येक परिस्थिति को बड़ी सूझ-बूझ के साथ सुलझाते थे। यह संगठन की रीढ़ की हड्डी (Back Bone) के रूप में भी जाना जाता था। इन्हें **प्रिन्साइप्स** कहा जाता था।

चौथी श्रेणी में सर्वाधिक उम्र के सैनिकों को गठित किया जाता था जो अपने अनुभवों के आधार पर सैनिकों का मनोबल बढ़ाने का काम करते थे, जिन्हें **ट्रियारी** कहा जाता था तथा भारी पैदल सेना की तीसरी पंक्ति को सक्रिय सहयोग देते थे।

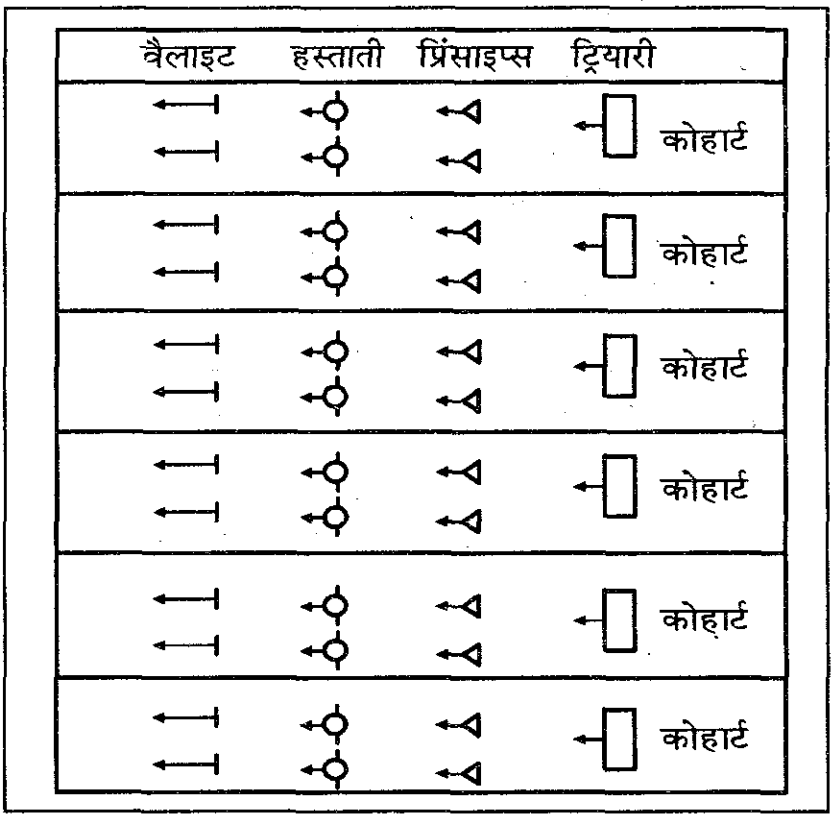

चित्र—रोमन लीजन का समरतान्त्रिक फैलाव

इस प्रकार चारों श्रेणियों के सैनिक संगठित होकर लीजन का रूप धारण करते थे। लीजन की सेना में अत्यन्त लचीलापन भी होने के कारण बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप अपनी कुशलतापूर्वक कार्यवाही करने में सक्षम थी। इसका समरतान्त्रिक फैलाव

एक चक्र की भाँति था, जिसमें प्रत्येक श्रेणी के सैनिकों को क्रमश: युद्ध में भाग लेने का अवसर मिलना था। सबसे पहले वेलाइट अपना आक्रमण आरम्भ कर देते तथा जब यह थक जाते तो इनका स्थान हस्ताती सैनिक श्रेणी ले लेती थी। जब इस श्रेणी के सैनिक थक जाते थे, तो प्रिंसाइप्स श्रेणी के सैनिक युद्ध की बागडोर थाम लेते थे। इसके बाद ट्रियारी सैनिक आगे आ जाते थे। जब ट्रियारी सैनिक थक जाते तो पुन: वेलाइट्स सैनिक युद्ध के लिए आगे बढ़ जाते थे। इस प्रकार क्रम से प्रत्येक श्रेणी के सैनिकों का नम्बर आता रहता था और अपने-अपने पैतरें बदलते रहते थे।

अत: हम कह सकते हैं कि रोमन लीजन का समरतान्त्रिक फैलाव एक विशिष्ट प्रकार से किया गया था कि प्रत्येक श्रेणी के सैनिक को युद्ध क्षेत्र में समान रूप से अपनी शक्ति प्रदर्शन का सही अवसर मिल सके। यही कारण था कि रोमन लीजन के बल पर ही रोम यूरोप का प्रसिद्ध राष्ट्र बन गया और सभी ओर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। अन्त में रोम सेना में देशभक्त, अनुशासित एवं स्वतन्त्र सैनिकों के स्थान पर असभ्य एवं धन-लोभी सैनिकों ने ले लिया, जो इसके पतन के प्रमुख कारण प्रमाणित हुए।

रोमन लीजन की विशेषतायें
(Merits of Roman Legion)

रोमन लीजन एक विख्यात एवं श्रेष्ठ सैन्य संगठन था, जिसने अपनी सैनिक विशेषताओं के परिणामस्वरूप एक लम्बी अवधि तक अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाए रखा। अपनी विशेषताओं एवं सैनिक क्षमताओं के कारण प्रसिद्ध फैलेंक्स को समाप्त कर दिया तथा उसका स्थान ग्रहण कर लिया था। 168 ई० में लड़े गए पीडना के संग्राम (Battle of Pydna) के पश्चात् अपना विकास एवं विस्तार एक प्रसिद्ध संग्राम एड्रियानोपल 378 ई० (Battle of Adrinople 378 A.D.) तक बनाए रखे तथा इसके साथ ही इस संगठन का पतन हो गया।

अब हम संक्षिप्त में रोमन लीजन की विशेषताओं का उल्लेख करते हैं, जो इस प्रकार से है—

1. रोमन लीजन अत्यन्त लचीला होने के कारण युद्ध में तेज़ी के साथ बदलती हुई परिस्थितियों में सरलता के साथ परिवर्तन करने में पूर्ण सक्षम संगठन था।

2. रोमन लीजन में युद्ध के प्रसिद्ध सिद्धान्त गतिशीलता (Mobility) का विशेष रूप से ध्यान रखा गया था, जिसके कारण वह तेज़ी से कार्यवाही करने तथा शीघ्रता के साथ पीछे की ओर हटने की पूर्ण क्षमता इस संगठन में निहित थी।

3. रोमन लीजन की संख्या कुल 4200 होती थी, जिसके कारण नेतृत्व करना अत्यन्त सुविधाजनक तथा प्रशासनिक व्यवस्था भी श्रेष्ठ बनी रहती थी।

4. रोमन सेना में श्रेष्ठ अनुशासन एवं राष्ट्र के प्रति बलिदान की भावना भी कूट-कूट कर भरी हुई थी, जिसके कारण इनकी सैनिक क्षमता अत्यधिक बढ़ गई थी।

5. रोमन सेना को प्रशिक्षण (Training) अथवा कवायद (Drill) श्रेष्ठ प्रकार का दिया जाता था, जिससे हर प्रकार के मुकाबले में सरलता के साथ जुट जाते थे।

6. रोमन सेना ने निकट एवं दूर के युद्धों में आपसी ताल-मेल बनाए रखने की अभूतपूर्व क्षमता थी।

7. आक्रमणात्मक तथा प्रतिरक्षात्मक दोनों ही प्रकार के युद्धों में सफलतापूर्वक कार्य करने की क्षमता थी।

8. रोमन लीजन के छोटे परास वाले (Small Projectile Weapon) हथियारों का प्रयोग करके महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की।

9. रोमन लीजन का फैलाव शतरंज की भांति किया जाता था, जिससे हर परिस्थिति में शत्रु का सामना कर लेने की क्षमता रखती थी।

10. रोमन लीजन में आरक्षित सेना (Reserve Army) की व्यवस्था की जो कि संकट के समय शत्रु का मुकाबला करती थी।

11. रोमन लीजन के संगठित सैनिक एक-एक क्रम से युद्ध करते थे। इसके कारण उनके सैनिकों की कार्यक्षमता तथा प्रहारक क्षमता बहुत अधिक थी।

इस प्रकार उपर्युक्त विशेषताओं के कारण ही रोमन लीजन ने युद्ध में महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की तथा एक लम्बी अवधि तक यूरोप में श्रेष्ठ सैन्य संगठन के रूप में छाया रहा।

रोमन लीजन की कमियां
(Limitations of Roman Legion)

रोमन लीजन में जहां अपनी सामरिक विशेषताएं थीं वहां उनमें अनेक कमियां दिन-प्रतिदिन आती गईं, जिसके कारण इस सैन्य संगठन का भी पतन हो गया। अब हम उन कमियों का संक्षेप में उल्लेख करते हैं जो इस प्रकार से थीं—

1. रोमन लीजन के सैनिक एवं अधिकारी धन एवं सत्ता के लालच में आ गए जिसके कारण राष्ट्रीय भावना का पतन हो गया। विख्यात लीजन सैनिक जब पेशेवर सैनिक के रूप में कार्य करने लगे, जिससे राष्ट्र प्रेम की भावना समाप्त हो गई।

2. रोमन लीजन में अनुशासनहीनता अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई, जिससे पतन होना स्वाभाविक हो गया।

3. आक्रमणात्मक के स्थान पर सुरक्षात्मक युद्ध नीति अपनाने के कारण आघात समरतन्त्र (Shock Tactics) एवं मुठभेड़ की लड़ाई समाप्त हो गई।

4. रोमन सैनिकों ने भारी भालों का प्रयोग करना बन्द कर दिया जो कि आघात तथा प्रक्षेपास्त्र दोनों ही रूपों में युद्ध क्षेत्र में ज़ोरदार हथियार प्रमाणित होता था, जिससे पतन होना निश्चित ही हो गया।

5. रोम सीमा का साम्राज्य अत्यधिक विस्तृत हो जाने के कारण जागरूक सैनिकों का स्थान उदासीन सैनिकों ने ले लिया, जो कि इसका एक महत्त्वपूर्ण दोष प्रमाणित हुआ।

6. सेनाओं का स्तर भी दिन-प्रतिदिन गिरता चला गया और सेनाओं का कार्य राष्ट्र रक्षा का न रहकर केवल पुलिस कार्यों तक ही सीमित हो गया। इस सन्दर्भ में **बिर्नी** महोदय का यह कथन विशेष रूप में यहां पर उल्लेखनीय है—

"रोमन लीजन कुछ समय के बाद ही गिरकर मुख्य रूप से पुलिस के कार्यों को पूरा करने वाली सशस्त्र सिपाहियों के दल के समान हो गई।"

7. रोमन सेना में सभी वर्गों की भर्ती आरम्भ हो जाने के कारण अनुशासन, आत्म विश्वास, नेतृत्व, नियन्त्रण आदि सैनिक गुणों का पतन होता चला गया।

8. रोमन सैनिक जैसे-जैसे कम होते गये उनके स्थान पर बर्बर जाति के सैनिकों को भर्ती किया जाने लगा, जिससे सेना का अनुशासन, मनोबल एवं कार्य क्षमता अत्यधिक प्रभावित हुई।

9. रोमन सैनिक पैसा अधिक जुटा लेने के कारण अत्यधिक भोग-विलासी हो गए, जिससे सैनिक गुणों का पतन होता गया।

10. रोमन लीजन की युद्ध करने की परम्परागत व्यवस्था का पतन होता गया जो कि इसकी महत्त्वपूर्ण कमी प्रमाणित हुई।

उपरोक्त कमियों के कारण ही रोमन लीजन का पतन हो गया और बर्बर तथा जंगली जाति के गोथों ने आखिर एड्रियानोपल के संग्राम में इस संगठन को बुरी तरह से पराजित ही नहीं किया बल्कि इसके साथ ही एक युग की समाप्ति भी हो गई। यह संग्राम इतिहास का एक निर्णयात्मक संग्राम था, जिसमें रोम की बुरी तरह से पराजय हुई तथा रोमन साम्राज्य की शक्ति व प्रतिष्ठा शक्तिशाली गोथों के सामने धूल में मिल गई। लीजन की जहां समाप्ति हुई वहां कोहार्टस को भी विभाजित कर दिया गया। इस सन्दर्भ में **मार्टिन वेग** ने ठीक ही लिखा है—

"जिसके साथ रोम का नाम जुड़ा था, उस पर आंतक छा गया, रोमन साम्राज्य की शक्ति तथा समृद्धि बर्बर समूह के सामने धूल में पूरी तरह से मिल गई।"

3. सीज़र के समय लीजन
(Legion in the time of Ceasar)

जूलियस सीज़र अत्यन्त बुद्धिमान् एवं निपुण सेनापति था। उसने अपनी अनन्य प्रतिभा के बल पर केवल रोमन लीजन का विकास ही नहीं किया अपितु उसे एक नवीन दिशा प्रदान की जोकि पूर्ण रूप से वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित थी। युद्धों के लिए उसने नवीन एवं वैज्ञानिक पद्धति अपनाकर निर्णयात्मक संग्रामों के लिए विशेष बल दिया। इस विद्वान् ने अपने शिविरों को एक गतिशील किले का रूप प्रदान किया। किलेबन्दी एवं घेरेबन्दी के युद्ध में एक कुशल सेनापति जूलियस सीज़र ही था, जिसने अपने काल में अनेकों संग्रामों में महत्त्वपूर्ण सफलता हासिल की थी।

सर्वप्रथम जूलियस सीज़र की नियुक्ति गॉल (Gaul) के रोमन प्रांतों के गवर्नर के रूप में की गई थी, तत्पश्चात् उसने 58 ई० पूर्व गॉल के सेनापति के रूप में अपनी शासन

की बागडोर संभाल ली तथा एक पुस्तक 'गॉलिक युद्ध' (Gaullic War) की भी रचना की। अब हम इस सेनानायक द्वारा किए गए सैन्य सुधारों का संक्षिप्त में उल्लेख करते हैं—

1. सीजर ने लीजन के संगठन में 6 कोहार्ट के स्थान पर 10 कोहार्ट की व्यवस्था कर दी थी।

2. सीज़र ने अपनी सेना में हल्के हथियारों को विशेष रूप से महत्त्व प्रदान किया। इसी कारण धनुर्धारियों तथा हल्के भालाधारी सैनिकों की अधिक भर्ती की।

3. सीज़र ने अपनी सेना का संगठन वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर किया तथा अश्वारोही, तोपखाना तथा इन्जीनियरी सेना को विशेष रूप से महत्त्व प्रदान किया था।

4. सीज़र ने युद्ध काल में हल्के तथा भारी प्रकार के युद्ध-यन्त्रों का प्रयोग करने पर विशेष बल दिया ताकि शत्रु की भीड़ पर तेज़ी के साथ पत्थरों की वर्षा करके उसको अव्यवस्थित कर दिया।

5. तोपखाने के विकास के लिए यूनान तथा कार्थेज आदि देशों से भी सहयोग प्राप्त करने का ज़ोरदार प्रयास किया था।

6. सीज़र ने अपनी सेना की सुरक्षा के लिए किले बन्दी पर विशेष रूप से ध्यान दिया तथा सेना की सुरक्षा के लिए खाइयां खोदने का काम भी उच्चकोटि का अपनाया था।

7. सुरक्षा की दृष्टि से यातायात व्यवस्था पर विशेष रूप से ध्यान दिया। इसी कारण अनेक महत्त्वपूर्ण सड़कों का निर्माण किया जो कि अपने समय की सर्वश्रेष्ठ यातायात व्यवस्था के रूप में मानी जाती थी।

8. जूलियस सीज़र ने आरक्षित दल (Reserve force) के संकेन्द्रण तथा गतिशीलता की आवश्यकता पर विशेष रूप से ध्यान दिया।

9. अपनी सेना में श्रेष्ठ अनुशासन को विशेष महत्त्व प्रदान करता था, ताकि उनमें कार्यकुशलता एवं प्रहारक क्षमता तेज़ी से बनी रहे।

10. सीज़र ने रोमन लीजन की कुल 4200 की सैनिक संख्या को 6000 सैनिक के संगठन के रूप में बदल दिया।

11. सीज़र ने युद्ध में गतिशीलता के सिद्धान्त का महत्त्व समझा, इसी कारण इस पर उसने विशेष रूप से ध्यान दिया।

12. शत्रु पर प्रारम्भिक आघात (Shock) तेज़ से डालने के लिए सबसे अच्छे एवं चुस्त कोहार्टस अगली पंक्ति में खड़ा करता था, जिससे शत्रु पर पहले ही दबाव डाला जा सके।

13. सीज़र ने निर्णयात्मक युद्ध बनाने के लिए सदैव शत्रु के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान को अपना लक्ष्य बिन्दु बनाकर आक्रमण करने का समर्थन प्रदान किया।

इस प्रकार उपरोक्त सैन्य सुधारों एवं परिवर्तनों से स्पष्ट रूप से पता चल जाता है, कि जूलियस सीज़र एक योग्य सेनानायक था, जिसने अपनी कुशल प्रतिभा के बल पर अविजित सेना का संगठन किया। इसी के साथ ही पश्चिमी यूरोप तथा भू-मध्य प्रदेशों

तक उसकी सेना अपनी कुशल क्षमता, योग्य नेतृत्व के कारण पूरी तरह से धाक जमा ली थी। वह दुश्मन को केवल हराने में विश्वास न करके उसको पूरी तरह तहस-नहस करने का प्रबल पक्षधर था। यही कारण था कि उसके द्वारा लड़ी गई अधिकांश लड़ाइयों में बहुत अधिक खून-खराबा एवं निर्मम हत्यायें हुईं। उसके कार्यकाल में यान्त्रिक व्यवस्था के विकास पर विशेष बल दिया गया जिसके कारण सैनिक शक्ति का स्थान यन्त्रों ने धीरे-धीरे लेना शुरू कर दिया था।

4. रोमन लीजन का उदय तथा फैलेंक्स का पतन
(Rise of Roamn Legion and fall of Phalanx)

फैलेंक्स यूनान का प्रसिद्ध प्राचीन सैनिक संगठन था। इस संगठन का पतन उस समय हुआ जब इसके संगठन में अनेक कमियां तथा रोमन लीजन सैन्य संगठन में अनेक विशेषताएं आ चुकी थीं। पीडना के संग्राम के साथ एक सैन्य संगठन की समाप्ति तथा दूसरे सैन्य संगठन के रूप में रोमन लीज़न का शुभारम्भ हो गया। अब हम संक्षिप्त में फैलेंक्स के पतन तथा रोमन लीजन की सफलताओं का उल्लेख करते हैं जो कि इस प्रकार से थे—

1. फैलेंक्स सैन्य संगठन एक ठोस संगठन के रूप में था जिसके कारण यह केवल समतल भूमि पर ही अपनी कार्यवाही करने में समर्थ था, जबकि रोमन लीजन प्रत्येक प्रकार की परिस्थिति वाली भूमि पर कार्यवाही कर सकने की क्षमता रखती थी। जिसके कारण इसका उत्थान एवं फैलेंक्स का पतन हुआ।

2. फैलेंक्स का समरतान्त्रिक फैलाव इस प्रकार का होता था कि इसकी केवल अगली पंक्ति ही सफलता से शत्रु का मुकाबला कर पाती थी जबकि अन्य पीछे की पंक्ति में खड़े सैनिक केवल मूक दर्शक बने रहते थे। इसके विपरीत रोमन लीजन के प्रत्येक दल के सैनिक अपनी अपनी बारी से शत्रु का मुकाबला करते थे जिससे बिना थके हुए शत्रु को आसानी से परास्त करने की क्षमता रखती थी।

3. फैलेंक्स के संगठन में आरक्षित सेना (Reserve Army) का पूर्ण अभाव था, जिसके कारण आपात्काल के समय कोई भी सैनिक सहयोग नहीं प्राप्त हो पाता था; जबकि रोमन लीजन में आपत्तिकाल में अपनी सेना को सक्रिय सहयोग देने के लिए आरक्षित सेना की पूर्ण व्यवस्था का प्रबन्ध था।

4. फैलेंक्स का सैन्य संगठन अत्यन्त ठोस होने के कारण इसमें गतिशीलता (Mobility) का पूर्ण अभाव था, जबकि रोमन लीजन का सैन्य संगठन सीमित था, जिससे गतिशीलता के सिद्धान्त का पूर्ण पालन किया जा सकता था।

5. फैलेंक्स के सैन्य संगठन में लचकता (Flexibility) का भी पूर्ण अभाव था, जिसके कारण एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदलना अत्यन्त कठिन कार्य होता था जबकि इसके विपरीत रोमन लीजन में प्रत्येक दल लचकता के कारण बदल बदल कर शत्रु का मुकाबला करता रहता था।

6. फैलेंक्स के सैनिकों द्वारा भारी एवं लम्बा "सरिसा" नामक भाला का प्रयोग किया जाता था जिसके कारण सैनिक जल्दी से थकावट का अनुभव करने लगते थे जिससे उनकी यौद्धिक क्षमता प्रभावित होती थी जबकि इसके विपरीत रोमन लीजन के सैनिकों द्वारा हल्की श्रेणी के हथियारों का प्रयोग किया जाता था, जिससे लगातार कार्यक्षमता बनी रहती थी।

7. फैलेंक्स के संगठन में एक बार उसकी सेना का सामने (Front) का भाग टूट जाने पर सेना बिखर जाती थी, जबकि रोमन लीजन के संगठन में शत्रु यदि प्रवेश कर भी जाता था क्रम से लड़ने वाले सैनिक सुविधा के साथ उसको परास्त करने की पूर्ण क्षमता रखते थे।

8. फैलेंक्स का सैन्य संगठन एक ही के नेतृत्व में कार्य करता था जबकि रोमन लीजन कोहार्ट तथा मेनीपल्स में संगठित होता था तथा प्रत्येक की भाग का नेतृत्व अलग-अलग सेनानायकों द्वारा किया जाता था। इसी कारण आवश्यकता पड़ने पर यह स्वतन्त्र रूप से भी शत्रु का मुकाबला कर लेते थे। फैलेंक्स में ऐसा कर पाना सम्भव नहीं था।

9. फैलेंक्स की सेना का नेतृत्व करना भी कठिन होता था क्योंकि इसकी सैनिक संख्या 16384 हुआ करती थी जबकि इसके विपरीत रोमन लीजन की सीमित सैनिक संख्या केवल 4200 होती थी जिसके कारण सुविधा एवं सरलता से नेतृत्व करना सम्भव होता था।

10. फैलेंक्स के सैनिक संगठन में एक ही श्रेणी के सैनिक संगठित होते थे, जबकि रोमन लीजन में चार प्रकार (वेलाइट्स, प्रिन्साइप्स, हस्ताती एवं ट्रियारी) के सैनिक संगठित होते थे जो क्रम से अपनी-अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते थे तथा लगातार कार्य करने की क्षमता भी इसी कारण बनी रहती थी।

11. फैलेंक्स के सैन्य संगठन का प्रशिक्षण रोमन लीजन की तुलना में कहीं अधिक निम्नकोटि का था। लीजन के प्रशिक्षण के सन्दर्भ में **जो सीफस** (Jo Sephus) का यह कथन विशेष रूप से उल्लेखनीय है—

"Roman drills as bloodless battle and their battle as bloodly drills."

(रोमन की कवायत रक्त रहित युद्ध थी और उसके युद्ध खूनी कवायते थीं।)

12. फैलेंक्स की सेना की संख्या अधिक होने के कारण उसमें युद्ध के समय अनुशासन का अभाव बना रहता था जबकि रोमन लीजन में प्रत्येक परिस्थिति में अनुशासन बना रहता था, क्योंकि छोटे दलों में इसका संगठन किया जाता था।

13. रोमन लीजन शान्तिकाल में भी अभ्यास एवं युक्तिचालन की क्रिया को निरन्तर बनाये रखता था जबकि फैलेंक्स में इस प्रकार की किसी भी व्यवस्था का प्रावधान नहीं था।

14. रोमन लीजन के प्रत्येक सैनिक को अपनी शक्ति प्रदर्शन का पूरा-पूरा अवसर मिलता था, जबकि फैलेंक्स में केवल अगली पंक्ति में खड़े सैनिकों को ही अपनी शक्ति प्रदर्शन का अवसर मिल पाता था।

इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के आधार पर पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाता है कि फैलेंक्स की तुलना में रोमन लीजन कहीं अधिक शक्तिशाली एवं सशक्त सैन्य संगठन था लेकिन कुछ समय पश्चात् अनेक कमियां आ गईं जिसके कारण इसका भी पतन हो गया।

5. अरबेला का युद्ध-331 ई० पूर्व (Battle of Arbella-331 B.C.)

अरबेला का प्रसिद्ध युद्ध यूनान के शासक सिकन्दर व ईरान के शहंशाह दारा (डैरियस) के बीच 331 ई० पू० अरबेला नामक स्थान पर लड़ा गया। सिकन्दर का पिता फिलिप मकदूनिया का बादशाह था, वह एक योग्य शासक था और अपनी प्रतिभा के बल पर उसने एक कुशल सेना भी संगठित की। सिकन्दर महान् बीस वर्ष की आयु में ही शासक बना, उसकी महानता प्राप्त करने की लालसा से उसका दिल इतना भरा हुआ था कि वह अपने पिता द्वारा संगठित सेना लेकर अपने पुराने दुश्मन ईरान पर धावा करने के लिए बेताब हो रहा था। यूनानी न तो सिकन्दर को चाहते थे और न ही फिलिप को किन्तु इनकी ताकत के आगे वे नतमस्तक थे। इसी कारण सब यूनानियों ने ईरान पर धावा करने वाली सेना का सेनापति पहले फिलिप को और बाद में सिकन्दर को मान लिया। थीव्स नाम के एक यूनानी शहर ने सिकन्दर का आधिपत्य नहीं माना और बगावत कर दी। इस पर सिकन्दर ने उस पर बड़ी क्रूरता और निर्दयता के साथ आक्रमण कर दिया और उस प्रसिद्ध शहर को पूरी तरह से तहस-नहस कर दिया, नगर निवासियों को मौत के घाट उतार दिया और हज़ारों को गुलाम बनाकर बेच दिया। इससे यूनान आतंकित हो गया और सिकन्दर का अनुयायी बना रहा। सिकन्दर ने अपनी सेनाओं का उपयोग शत्रु की कमज़ोरी देखकर उठाया, इसीलिए अरबेला के युद्ध में दारा (डैरियस) की विशाल सेना को 'विभक्त होकर आगे बढ़ो और मिलकर लड़ो' के सिद्धान्त को अपनाया।

जब सिकन्दर ने अपने शासन की बागडोर सम्भाली तो उसके चारों ओर अनेक समस्यायें थीं, परन्तु उसने बड़ी बुद्धिमानी तथा कुशलता के साथ इन समस्याओं का हल किया। सबसे पहले उसने थिसली पर धावा किया और बिना खून-खराबा किये विजय प्राप्त कर ली जिसके कारण उसे थिसली की लीग का अध्यक्ष बना दिया गया। इसी प्रकार से उसने धर्मापायली तथा ऐथे को भी अधिकार में कर लिया। इसके पश्चात् सिकन्दर को फिलिप के स्थान पर कैप्टन जनरल बनाया गया। ग्रीस पर अधिकार के साथ ही उसने उत्तर तथा पश्चिम सीमान्त पर जंगली जातियों को अपने अधीन किया। इसी दौरान जब सिकन्दर को पता लगा कि थीव्स (Thieves) में विद्रोह हो गया है तो वह बिजली की भांति तेज़ी से लौटा और थीव्स को नष्ट कर दिया तथा जिससे भयभीत होकर ऐथेन्स के लोगों ने भी आत्मसमर्पण कर दिया।

इस प्रकार सिकन्दर ने ग्रीस को एक सूत्र में बांध दिया तथा इसके पश्चात् विश्व

विजय के लिए निकल पड़ा। उसके पास 30,000 पैदल तथा 5000 अश्वारोही थे। सिकन्दर का उद्देश्य टिरगिस नदी को निनवेह के निकट से पार करने का था लेकिन इसी दौरान उसे यह पता चला कि ईरान का शासक दारा (डैरियस) भी इसी के पास तैनात है तो उसने नदी को असीरियन के उत्तर पश्चिम की ओर से पार करने की योजना बनायी जिससे अरबेला की ओर बढ़ा जा सके।

जब सिकन्दर को उसके गुप्त सैनिकों के द्वारा इस बात का पता चला कि डैरियस ने आक्रमण की पूरी तैयारी कर ली है तो इसने उसका सामना करने के लिए अपने तेज़ अश्वारोही सैनिकों को आगे बढ़ाया तथा इसी दौरान कुछ ईरानी सैनिकों को भी बन्दी बना लिया जिससे डैरियस की युद्ध योजना का पता कर लिया और उसी के अनुरूप अपनी व्यवस्था बनायी तथा शत्रु को धोखे में डालने के लिए निम्नलिखित निर्णय लिए ताकि शत्रु को अधिकार में आसानी से किया जा सके--

1. अचानक हमला करना होगा।
2. दिन के समय ही हमला किया जायेगा।
3. तीव्रता के साथ हमला करना होगा।
4. शत्रु तक पहुंचने पर शोर नहीं किया जायेगा।
5. युद्ध घोष के नारे नहीं लगाये जायेंगे।
6. अश्वारोही निर्णायक सेना की भूमिका निभायेगी।
7. शत्रु गतिविधियों को अत्यन्त गोपनीय रखा जायेगा।

इस प्रकार सिकन्दर ने डैरियस के विरुद्ध ज़ोरदार मोर्चेबन्दी कर ली जबकि डैरियस सिकन्दर के आक्रमण के इन्तज़ार में खड़ा था, उसे जब इसका सही आभास हुआ तो सेना को और जागरूक बनाने का प्रयास किया और अन्ततः युद्ध का आरम्भ दोनों के मध्य हो ही गया।

तुलनात्मक सैन्य शक्ति
(Comperative Military Strength)

इतिहासकारों ने दोनों की सैनिक संख्या के सन्दर्भ में अलग-अलग विचार दिये हैं। अब हम प्रसिद्ध इतिहासकारों के आधार पर इनकी सैनिक संख्या का वर्णन करते हैं।

सिकन्दर की सेना

प्रसिद्ध इतिहासकार एरियन के अनुसार—

पैदल सेना—40,000
अश्वारोही सेना—7000

जनरल फुलर के अनुसार—

पैदल सेना—30,000
अश्वारोही सेना—5,000

दारा (डैरियस) की सेना

डैरियस की संख्या बहुत अधिक यूरोपीय इतिहास में वर्णित की गयी है तथा संख्या भी अलग-अलग बतायी है। कुछ विद्वानों के अनुसार—

एरियन के अनुसार—

पैदल सेना—10,00,000
अश्वारोही सेना—40,000
दरांतीदार रथ सेना—200
हाथी सेना—200

कार्टियस के अनुसार—

पैदल सेना—200,000
अश्वारोही सेना—35,000
रथ सेना—200

इस प्रकार दोनों की सैनिक संख्या में बहुत अन्तर बताया है परन्तु इस संख्या के आधार पर यह बात स्पष्ट रूप से कही जा सकती है कि सिकन्दर की तुलना में डैरियस की सैनिक संख्या कहीं ज्यादा थी।

सेनाओं के हथियार
(Weapons of Forces)

अब हम दोनों शासकों के द्वारा इस युद्ध में प्रयुक्त किये जाने वाले हथियारों का उल्लेख संक्षिप्त में करते हैं—

सिकन्दर की सेना के हथियार—

1. सरिसा नामक 21 फीट लम्बा भाला
2. धनुष-बाण
3. गोफन या गुलेलधारी
4. युद्ध यन्त्र
5. सुरक्षा-कवच

डैरियस की सेना के हथियार—

1. भाले
2. बल्लम
3. तलवार व ढाल
4. रथों के पहियों में लगी दरातें (Scythe)

सेनाओं का सामरिक फैलाव
(Tactical Deployment of Forces)

सिकन्दर की सेना—सिकन्दर ने अपने प्रसिद्ध सैन्य संगठन फैलेंक्स का सामरिक फैलाव इस युद्ध में इस प्रकार से किया—

1. भारी कवच युक्त पैदल सेना।
2. पैदल सेना के दोनों पार्श्व में अश्वारोही सेना
3. पीछे की ओर आरक्षित सेना
4. फैलेंक्स के पीछे कम्बेनियन अश्वारोही सेना।

डैरियस की सेना—ईरानी शासक डैरियस ने अपनी सेना का समरतान्त्रिक फैलाव इस प्रकार से किया था—

1. सबसे आगे हाथी सेना।
2. इसके पश्चात् रथ सेना तीन दलों में।
3. रथ सेना के पीछे अश्वारोही तीन दलों में।
4. सबसे पीछे पैदल सेना थी।
5. अश्वारोही सेना का दाहिना भाग मेजियस के नेतृत्व में।
6. अश्वारोही सेना का मध्य भाग डैरियस के नेतृत्व में।
7. अश्वारोही सेना का बायां भाग बेसुस के नेतृत्व में।

वास्तविक संघर्ष
(Real Conflict)

30 सितम्बर को जब ईरानी सेना रात को उत्सव मना रही थी उस समय सिकन्दर की सेना विश्राम कर रही थी। डैरियस सिकन्दर से भयभीत था, इसी कारण एक दिन पूर्व ही अपनी सेना को व्यूह में खड़ा कर रखा था। जब सिकन्दर ने यह देखा कि ईरानी सेना की अगली पंक्ति उसकी पंक्ति से दुगनी लम्बी है और शत्रु उसे दोनों ओर से घेर सकता है। इसी कारण अपनी व्यूह रचना में सिकन्दर ने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि उसके पार्श्व पर आक्रमण न हो सके। इस प्रकार सिकन्दर ने अपनी सेना को इस ढंग से खड़ा किया कि उसका आकार बड़ा दिखायी देने लगा। तिरछे क्रम में खड़े सैनिकों को रिज़र्व सेना के रूप में रखा था।

सिकन्दर ने पूर्व अनुमान के आधार पर युद्ध को एक नया स्वरूप प्रदान किया, जिससे बड़ी संख्या में उपस्थित शत्रु को धोखे में रखकर सफलतापूर्वक कार्यवाही की जा सके। इसीलिए अपनी सेना को तिरछे ढंग से आक्रमण (Oblique Order Attack) करने का आदेश दिया तथा अपनी कार्यवाही आरम्भ कर दी।

जब सिकन्दर की सेना ने इरानियों की सेना की ओर मार्च करना आरम्भ कर दिया तो सीधे आक्रमण न करके इरानियों के बाएं पार्श्व की ओर पीछे की ओर बढ़ना शुरू कर दिया। यह देखकर डैरियस ने उसके समानान्तर चलना आरम्भ कर दिया। डैरियस ने अपनी साइथियन अश्वारोही सेना को आगे बढ़कर आक्रमण करने का आदेश दिया। इधर सिकन्दर डैरियस द्वारा समतल बनाये गये युद्ध क्षेत्र को पार करना चाहता था। जब इस बात का अनुमान डैरियस को लग गया तो उसने बेसुस के नेतृत्व वाली बायीं ओर की अश्वारोही सेना को आक्रमण के लिए आगे बढ़ाया, ताकि रथों का समुचित प्रयोग किया जा सके। सिकन्दर ने जब बेसुस की अश्वारोही सेना को आगे बढ़ते देखा तो अपनी

हल्की अश्वारोही सेना के द्वारा उन पर जोरदार हमला बोल दिया, परन्तु इसमें सिकन्दर की सेना को बहुत नुकसान उठाना पड़ा।

इसी दौरान डैरियस ने जब अपनी सेना के एक अंग को सफल होते देखा, तो उसने अपनी रथ सेना को सिकन्दर की पैदल सेना का मुकाबला करने के लिए आगे बड़ा दिया, परन्तु फैलेंक्स की सेना ने अपने लम्बे भालों के द्वारा डैरियस की रथ सेना को शिकार करना आरम्भ कर दिया। क्योंकि जैसे ही रथ आगे की ओर बढ़ते तो उन्हें पार्श्व से आगे बढ़ जाने देते और पीछे की ओर होकर उनका सरलता से शिकार कर देते। इस प्रकार रथ सेना के प्रहार से डैरियस की सेना में बुरी तरह से आतंक छा गया।

अब सिकन्दर के भालाधारी सैनिकों ने आगे बढ़कर डैरियस की अश्वारोही एवं पैदल सेना को शिकार बनाना शुरू कर दिया। फैलेंक्स के लम्बे भाले के कारण समस्त युद्ध क्षेत्र लाश के ढेर में परिवर्तित होने लगा। जब डैरियस ने यह दृश्य देखा तो वह भयभीत हो गया और डरकर युद्ध क्षेत्र से भाग खड़ा हुआ।

अभी सिकन्दर के बाएं तथा डैरियस के दाहिने पार्श्व में आक्रमण चल रहा था, जिसमें सिकन्दर की सेना की हालत अत्यन्त नाजुक हो गयी थी, परन्तु उसने अपने कुशल नेतृत्व के द्वारा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए तुरन्त ही एक टुकड़ी अपने बाएं पार्श्व की सहायता के लिए भेज कर बिगड़ी हुई स्थिति का सुधार किया तथा पीछे की ओर से ईरानी सेना को घेरकर आतंकित कर दिया। इसी दौरान डैरियस की खबर पाकर ईरानी सैनिक और भी अधिक हतोत्साहित हो गये तथा इसी समय ईरानी सेनापति मौजियस भी भाग खड़ा हुआ।

इस प्रकार समस्त ईरानी सेना को सिकन्दर द्वारा बुरी तरह से कुचल दिया गया। जो भी सैनिक शेष बचे तथा भाग खड़े हुए थे, उनका भी पीछा करके सिकन्दर ने उन्हें मौत के घाट उतार दिया। इसी के साथ ही इस निर्णयात्मक युद्ध का अन्त सिकन्दर की विजय के साथ हो गया।

युद्ध से हानि
(Damage by War)

यद्यपि युद्धों में दोनों पक्षों को हानि उठानी पड़ती है, परन्तु इस युद्ध में घटनाक्रम के आधार पर स्पष्ट पता चल जाता है कि इस युद्ध में डैरियस की सेना को तुलनात्मक हानि बहुत उठानी पड़ी। यूरोपीय इतिहासकारों ने इसे भी बहुत ज्यादा संख्या के आधार पर व्यक्त किया है। सेना की हानि का उल्लेख विभिन्न विद्वानों के अनुसार इस प्रकार से है—

एरियन के अनुसार—

1. 30,0000 ईरानी सैनिक मारे गये।
2. 3 लाख से अधिक बन्दी बनाये गये।
3. यूनानी सैनिक केवल 100 मारे गये।
4. यूनानी 1000 घोड़े मारे गये।

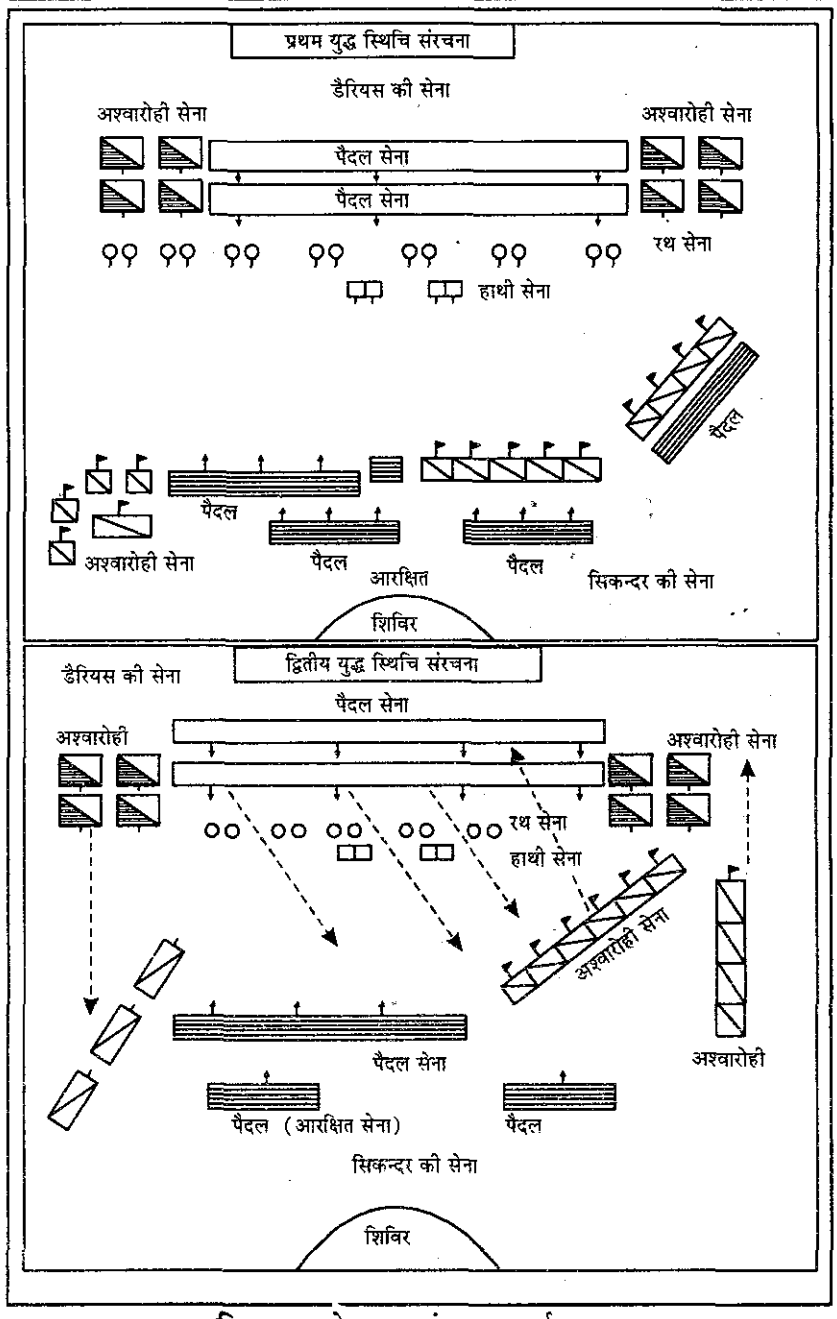

चित्र—अरबेला का संग्राम 331 ई० पू०

डायोडोरस के अनुसार—

1. 90,000 ईरानी मारे गये।
2. 500 यूनानी मारे गये।

कर्टियस के अनुसार—

1. 40,000 ईरानी सैनिक मारे गये।
2. 300 यूनानी सैनिक मारे गए।

इस प्रकार अलग-अलग प्रकार से इतिहासकारों ने सैनिक हानि की संख्या का उल्लेख किया है।

सैनिक शिक्षाएं
(Military Lessons)

अरबेला के इस निर्णयात्मक संग्राम से हमें निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण सैनिक शिक्षाएं मिलती हैं, जैसे—

1. किसी युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिये उस देश के सैनिकों का अनुशासन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है—जैसा कि इस युद्ध में सिकन्दर की सफलता का प्रमुख कारण अनुशासनयुक्त सेना का होना था।

2. युद्धों में कुशल नेतृत्व सदैव सफलता का सूचक प्रमाणित होता रहा है, जैसा कि इस युद्ध में डैरियस की नेतृत्वहीनता के कारण अधिक सैनिक शक्ति होने के बावजूद भी पराजित होना पड़ा।

3. सिकन्दर की सफलता का सबसे बड़ा रहस्य उसके द्वारा चट्टान के समान फैलेंक्स के साथ भारी एवं हल्की अश्वारोही सेना का प्रयोग किया जाना था।

4. युद्ध क्षेत्र में सैनिकों को तैनात उसी समय करना चाहिए, जबकि उसे तुरन्त आक्रमण करना हो जबकि डैरियस ने एक दिन पूर्व की व्यूह रचना करके सैनिकों को थका दिया जोकि इसकी पराजय का एक प्रमुख कारण प्रमाणित हुआ।

5. डैरियस की पराजय का एक प्रमुख कारण सिकन्दर की सेना को घेरने की बजाय, सिकन्दर के आक्रमण की प्रतीक्षा की तथा अन्त में भयभीत होकर स्वयं ही भाग खड़ा हुआ।

6. किसी भी युद्ध में लक्ष्य का निर्धारण तथा उसी के अनुरूप कार्यवाही सफलता का सूचक माना जाता है। जैसा कि इस युद्ध में सिकन्दर ने सुनियोजित ढंग के आधार पर कार्यवाही करके एक अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की।

7. शत्रु को धोखे में रखने के लिए अपनी योजनाओं को गोपनीय रखना भी सफलता की सबसे बड़ी कुंजी है, जैसा इस युद्ध में सिकन्दर ने अपनी योजनाओं को अत्यंन्त गुप्त रखा।

8. युद्ध में नवीन प्रकार के सफल समरतन्त्र के द्वारा शत्रु के इरादे को विफल करते हुए अपनी इच्छा अनुसार उसे लड़ने के लिए मजबूर करना भी सफलता का सूचक माना जाता है।

9. युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिए सदैव ही आक्रमणात्मक स्थिति अपनायी

जानी चाहिए, जिससे समय, स्थान, मनोबल एवं स्थिति का लाभ मिल जाता है, जैसा कि इस युद्ध में सिकन्दर ने आक्रमणात्मक स्थिति अपना कर लाभ उठाया। इसीलिए कहा जाता है कि—

"Only offencive action can achieve the results."

10. युद्ध में शत्रु को धोखा देना सफलता की कुन्जी माना जाता है जैसा कि इस युद्ध में सिकन्दर ने तिरछे आक्रमण के द्वारा शत्रु को धोखे में डाल दिया। इसीलिए **जनरल फुलर** ने इस सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से लिखा हैं—

"Surprise is the soul of every operation, the secret of victory and the key to success."

11. सेनाओं का समुचित रूप में प्रयोग करना भी सफलता का सूचक माना जाता है, जैसा कि सिकन्दर ने अपनी समस्त शक्ति का समुचित प्रयोग करके शक्ति के मितव्ययता (*Economy of Force*) के सिद्धान्त का पालन किया और महत्त्वपूर्ण विजय हासिल की।

12. युद्ध में गतिशीलता का सिद्धान्त सदैव सहयोगी होता है, जैसा कि इस युद्ध में सिकन्दर की गतिशील अश्वारोही सेना ने डैरियस को पराजित होने के लिए मज़बूर कर दिया।

13. सिकन्दर की सेना अनेक युद्धों में विजयी होने के कारण उत्साह युक्त थी, जबकि डैरियस की सेना सिकन्दर के नाम से ही भयभीत थी। अत: युद्ध में मनोबल सदैव महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है जैसा कि **पोलब्यिस** (Polybias) ने लिखा है—

"Of all the forces which are important in war, the spirit of the warrior is the most decisive one."

6. कैने का संग्राम : 216 ई० पू०
(Battle of Canne : 216 B.C.)

यह प्रसिद्ध संग्राम रोम एवं कार्थेज राष्ट्रों के मध्य हुआ, जिसमें कार्थेज की सेना का नेतृत्व शासक व सेनापति हैनीबल के द्वारा किया गया, जबकि रोम की सेना का नेतृत्व शासक व सेनापति वैरो (Varro) द्वारा किया गया था। यह युद्ध कैने नामक स्थान पर 2 अगस्त, 216 ई० पू० हुआ था। यद्यपि कार्थेज एवं रोम के मध्य अनेक लड़ाइयां हुईं, जिन्हें प्यूनिक युद्ध (Punic War) के नाम से भी जाना जाता है। कार्थेज उतरी अफ्रीका में बसा एक छोटा-सा व्यापारिक केन्द्र था। रोम के द्वारा इस पर अधिकार बना लिया गया था तथा दूसरी ओर कार्थेज की नौ सैनिक शक्ति अत्यधिक प्रबल थी, जिसके कारण पश्चिमी भू-मध्य सागर पर अपनी धाक बना रखी थी। कार्थेज एवं रोम के इसी कारण अनेक युद्ध होते रहे।

कार्थेजियन हेनीबल एक कुशल एवं प्रतिभाशाली शासक था, जिसने अपनी समरतान्त्रिक चाल के द्वारा रोम को पराजित करने का संकल्प कर लिया। इसी उद्देश्य से उसने सर्वप्रथम स्पेन में एक शक्तिशाली नौ सेना (Navy) का निर्माण किया तथा स्थल सेना के माध्यम से रोम पर आक्रमण किया, क्योंकि गाल्स (Gauls) को रोमन के खिलाफ

खड़ा करना चाहता था, इसका कारण यह था कि वह समुद्र के द्वारा आक्रमण नहीं करना चाहता था, क्योंकि समुद्र पर रोम का पूर्ण प्रभुत्व कायम था।

इस समय रोम के दो शत्रु थे—कार्थेज तथा मेसोडोनिया। कार्थेज के हेनीबल ने सिकन्दर की युद्ध कला से अश्वारोही सेना का उपयोग सीखा था। वह एक योग्य सेनापति था। वह कठिनाइयों से कभी घबराता नहीं था। जब वह 218 ई० पू० एप्रो की ओर बढ़ा तो उसका विचार रोम को जीतना नहीं, बल्कि रोमन साम्राज्य को शक्तिहीन कर देना था। वह विजेता होने का दावा नहीं रखता था। आखिरकार 2 अगस्त 216 को वैरो (रोम) तथा ऐनबिक (कार्थेज) की सेनाओं का आमना-सामना कैने के मैदान में हो गया।

तुलनात्मक सैन्य शक्ति
(Comperative Military Strength)

कार्थेज की सेना—हेनीबल एक कुशल सेनापति था। उसने अपनी सेना में विभिन्न जातियों के लोगों को भर्ती कर रखा था, जिसमें से कार्थेजियन, नुमीडिन, लीबियन, फोनीसियन, वौलियारिक तथा स्पेनिश आदि प्रमुख रूप से थे। इन विभिन्न जाति के सैनिकों के हथियारों में भी विभिन्नताएं थीं। इस सबके बावजूद कुशल नेतृत्व के कारण विभिन्नता में भी एकता कूट-कूट कर भरी हुई थी। हेनीबल की सेना में अत्यन्त गतिशील अश्वारोही सेना भी संगठित थी जिसका सफलता दिलाने में सदैव सक्रिय सहयोग रहा। अब हम कार्केज की सेना का संक्षिप्त में उल्लेख करते हैं—

पैदल सेना—40,000

घुड़सवार सेना—10,000

रोम की सेना—रोम की सेना का नेतृत्व वैरो (Varro) के द्वारा किया जा रहा था। इसकी पैदल सेना ही प्रमुख लड़ाकू सेना के रूप में थी जबकि अश्वारोही सेना को सहायक सेना के रूप में संगठित कर रखा था। हेनीबल के द्वारा रोमन सैन्य शक्ति पर लगातार अनेक घातक प्रहार करने के कारण उनका मनोबल टूट चुका था। यही कारण है कि अधिक सैन्य शक्ति होने के बावजूद इस युद्ध में बुरी तरह से पराजित होना पड़ा। रोम की सैनिक शक्ति इस प्रकार से थी—

पैदल सेना—80,000

घुड़सवार सेना—7200

सेनाओं के हथियार
(Weapons of Forces)

अब हम दोनों सेनापतियों के हाथ इस युद्ध में प्रयोग किये जाने वाले हथियारों का अलग-अलग उल्लेख करते हैं—

हेनीबल की सेना के हथियार—

1. तलवार
2. भाला
3. गोफन
4. बल्लम या बर्छी

रोम सेना के हथियार—

1. तलवार व ढाल
2. भाला
3. कवचों का प्रयोग
4. लोहे का टोप।

सेनाओं का समरतान्त्रिक फैलाव
(Tactical Deployment of Armies)

कार्थेज की सेना—हेनीबल ने अपनी सेना का सामरिक फैलाव अति गूढ़ योजना (deep laid plan) के अन्तर्गत किया था। इसने इस प्रकार की व्यूह रचना की जिससे वैरो की सेना को इस स्थिति में लाकर खड़ा कर दे, जिसका उन्हें कभी अनुमान भी न हो। यही कारण था कि मध्य भाग को घोड़े की नाल की भांति अर्द्धचन्द्राकार स्थिति में बैड़ा किया तथा मध्यभाग के दोनों ओर पैदल तथा अश्वारोही सेना को संगठित किया। जिसके अश्वारोही के दल के बायें भाग का नेतृत्व हस्डूबल तथा दाहिने भाग का जोकि न्यूमीडियन (Numidian) अश्वारोही सेना का था, इसका नेतृत्व महरबल के द्वारा किया गया था। इसने अपनी सेना का फैलाव चित्र के अनुसार पहले उन्नतोदर या उत्तल (Convex) स्थिति में पैदल सेना रखी, जिसे धीरे-धीरे अवतल (Concave) स्थिति में आना था, जिससे रोमन सेना को पीछे हटने का अंदेशा हो और जब इस स्थिति में शत्रु आ जाये तो उसे चारों ओर से घेर कर नष्ट करना था और उनकी आखिरकार यह योजना सफल भी रही।

रोम की सेना—रोम की सेना का नेतृत्व जनरल वैरो द्वारा किया जा रहा था। उसने अपनी सेना का फैलाव परम्परागत ढंग से न करके 6 फाइलों तथा 20 रैंकों में किया जबकि लीजन 10 फाइलों और 12 रैंकों में खड़े किये जाते थे। इसने अपनी पैदल सेना को तीन भागों में विभक्त करके खड़ा किया। इसके साथ ही दोनों पार्श्व में अश्वारोही को तैनात किया था, ताकि पार्श्व को सही सुरक्षा प्रदान की जा सके।

वास्तविक संघर्ष
(Real Conflict)

प्रारम्भिक आक्रमण में हेनीबल ने अपने पैदल सैनिकों को इस प्रकार आगे बढ़ाया कि बीच का हिस्सा आगे बढ़कर अर्धचन्द्र के आकार में हो गया। इस प्रारम्भिक आक्रमण में भारी सैनिकों ने आक्रमण नहीं किया और अपनी स्थिति में स्थिर रहे। युद्ध स्थिति का आरम्भ दायीं ओर से हेनीबल ने किया। हेनीबल की अश्वारोही सेना ने रोम की अश्वारोही सेना पर आक्रमण बोल दिया तथा उन्हें बुरी तरह से कुचल दिया। इसके बाद रोम की पैदल सेना के पीछे होकर रोमन अश्वारोही सेना पर आक्रमण कर दिया। इस समय रोम की दाहिने ओर की अश्वारोही सेना निबेलिया की अश्वारोही सेना के साथ उलझी हुई थी, उसी समय पीछे से इन पर आक्रमण कर दिया तथा उन्हें भी तितर-बितर कर दिया। इस प्रकार अब कार्थेज की अश्वारोही सेना ने रोम की पैदल सेना पर पीछे से आक्रमण बोल दिया।

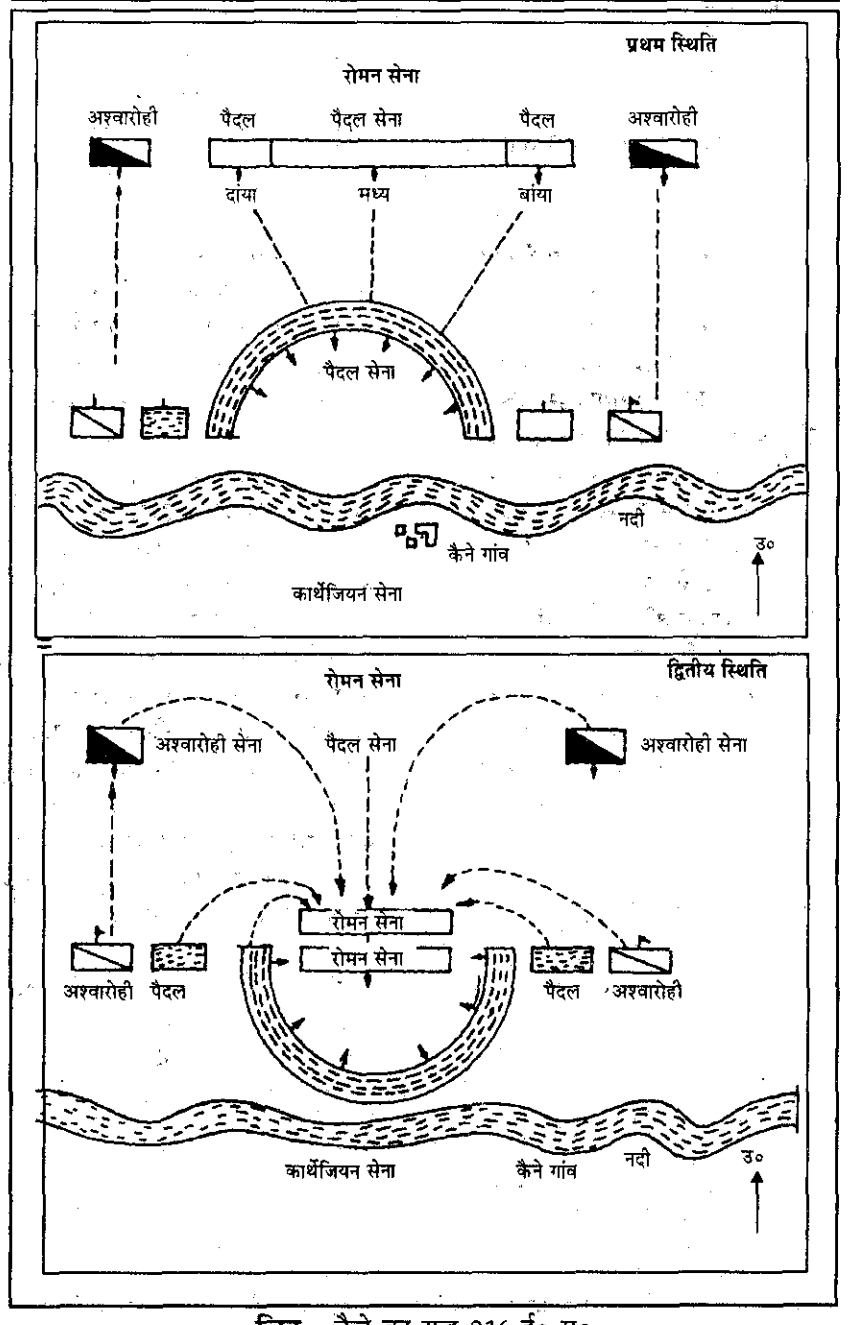

चित्र—कैने का युद्ध 216 ई० पू०

जब अश्वारोही सेना का ज़ोरदार आक्रमण होने लगा, उसी समय हेनीबल ने अपनी भारी पैदल सेना को योजना के अनुसार धीरे-धीरे पीछे की ओर लौटने का संकेत दिया, जिसको रोमन पैदल सेना ने समझा कि हमारी मार के कारण पीछे वापस जा रहे हैं, जिसके कारण रोम की सेना ने तेज़ी के साथ कार्थेजियन सेना की ओर बढ़ना शुरू कर दिया। जब निर्धारित योजनाओं अनुसार हेनीबल की पैदल सेना ने अपनी स्थिति बना ली और युद्ध के लिए अपनी ज़ोरदार स्थिति ले ली और वैरो की सेना को चारों ओर से घेर लिया जैसा कि चित्र में अंकित है। इसके बाद सभी ओर से बुरी तरह रोमन सैनिकों पर टूट पड़े। अन्ततः इस भीषण संघर्ष में घिरी हुई रोमन सेना लाशों के ढेर में बदल गई।

उल्लेखनीय है कि जब रोमन सेनायें आक्रमण के लिए आगे बढ़ी तो केन्द्रीय भाग धीरे-धीरे पीछे हटता गया। दोनों पार्श्वों (साइड) की अपेक्षा पंक्ति का मध्य भाग अधिक पीछे हट गया। इस प्रकार एक निर्णायक टक्कर के लिए सामना करने की नीति त्यागने के कारण पार्श्वों (दोनों साइड या अगल-बगल) स्थित कार्थेज की घुड़सवार सेना को समय मिल गया कि वह अपेक्षाकृत कमज़ोर रोमन रिशालें (घुड़सवार) की इकाइयों को मैदान से खदेड़े। इसी दौरान हेनीबल की अपेक्षाकृत हल्की सेना ने जो कार्थेज रिसाले से जुड़ी हुई या उसके पीछे-पीछे थी, अन्दर की ओर मुड़कर रोमन पैदल सैनिकों को दोनों ओर से घेर लिया। शत्रु सेना के मध्य भाग के पीछे हटने के कारण रोमन सेना संकट की ओर बढ़ती गयी और भीड़ के रूप में इकट्ठे होने के कारण अपने हथियारों का भी प्रयोग नहीं कर पा रहे थे। ऐसी परिस्थिति में हेनीबल की घुड़सवार सेना ने पीछे से हमला कर दिया और रोमन सेना को बुरी तरह से कुचल दिया।

इस प्रकार यह संघर्ष एक सुनिश्चित योजना के अनुसार आरम्भ हेनीबल द्वारा किया गया, जोकि अत्यन्त जोखिम भरा था। यदि रोमन सेना तेज़ी के साथ इस पर हमला कर देती तो कार्थेजियन सेना का निश्चित व्यूह में संगठित हो पाना संभव नहीं था तथा यह विजय भी पराजय में परिणित (बदल) हो जाती। जब चारों ओर से रोमन सैनिक घिर गये तो वे इतने भयभीत तथा आतंकित हो गये थे कि उनमें सहयोग एवं एकता का पूर्ण अभाव हो गया तथा आपस में इतने भिड़ गये कि एक भीड़ के रूप में संगठन बन गया, जिसके कारण वे हथियारों का भी खुलकर प्रयोग नहीं कर सकते थे। इसी दौरान वैरो तथा उसके कुछ साथी युद्ध के मैदान से भाग खड़े हुए। जिसका परिणाम यह हुआ कि नेतृत्वहीन तथा भीड़ के रूप में खड़ी रोमन सेना को बुरी तरह से मौत के घाट उतार दिया गया।

इसी के साथ ही इस युद्ध का निर्णय हेनीबल के पक्ष में हो गया और सफलता का सेहरा उसकी इस समरतान्त्रिक चाल को दिया गया।

युद्ध से हानि
(Damage by War)

यद्यपि युद्धों में दोनों ही पक्षों को हानि उठानी पड़ती है, परन्तु इस युद्ध में घटनाक्रम से आधार पर स्पष्ट अनुमान लग जाता है कि रोमन सेना को कार्थेजियन सेना की तुलना में कहीं अधिक हानि उठानी पड़ी होगी। प्रसिद्ध इतिहासकार **पोलीवियस** महोदय ने इस युद्ध में हानि का उल्लेख इस प्रकार से किया है—

रोमन सेना की हानि—

मारे गये सैनिक—70,000
भागे हुए सैनिक—5,000
बन्दी बनाये गये सैनिक—10,000

बिर्नी के अनुसार रोमन सेना की हानि—

मारे गये सैनिक—48,000
बन्दी सैनिक—10,000

इस प्रकार सैनिक संख्या के सन्दर्भ में भी इतिहासकारों में मतभेद दिखायी देते हैं।

कार्थेज की सेना की हानि—

पालबियस के अनुसार—मारे गये सैनिक—5700
बिर्नी के अनुसार—मारे गये सैनिक—6700

इसी प्रकार से कार्थेजियन सैनिकों की हानि भी अलग-अलग संख्या में व्यक्त की गयी है।

सैनिक शिक्षायें
(Military Lesson)

कैने के इस निर्णायक संग्राम से हमें निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण सैनिक शिक्षायें प्राप्त होती हैं—

1. युद्धों में कुशल नेतृत्व सदैव सफलता का सूचक प्रमाणित होता रहा है, जैसा कि इस युद्ध में हेनीबल ने अपने कुशल नेतृत्व के द्वारा जोखिम भरी समरतान्त्रिक चाल अपना कर एक महत्त्वपूर्ण एवं निर्णयात्मक सफलता प्राप्त की। जबकि इस तत्त्व की अवहेलना पर जनरल वैरो अधिक सैन्य शक्ति लेने पर भी पराजित हुआ।

2. युद्ध का लक्ष्य चुनना और फिर उस पर मज़बूती से जमे रहना युद्ध का सबसे बड़ा सिद्धान्त है, जैसा कि इस युद्ध में हेनीबल ने लक्ष्य निर्धारित करके महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की।

3. यदि युद्ध में सफलता प्राप्त करनी हो तो दुश्मन पर पहलपूर्वक हमला किया जाना चाहिए जैसा कि इस युद्ध में हेनीवल ने आक्रामक पहल करके अप्रत्याशित सफलता प्राप्त की।

4. लड़ाई के एक निश्चित केन्द्र पर अपनी सेनाओं को इस प्रकार लगाया जाये कि उनकी संख्या और मात्रा दुश्मन से अधिक हो जाए। हेनीबल ने इस प्रकार से अपनी सेनाओं को उत्तल (Convex) से अवतल (Cancave) स्थिति में लाकर खड़ा करके सफलता प्राप्त की।

5. युद्ध में लगातार पराजय सदैव भय एवं आतंक को बढ़ावा देती है, जिससे पराजय के अवसर अधिक बढ़ जाते हैं, जैसा कि इस युद्ध में रोम की सेना अनेक युद्धों में कार्थेज से पराजित होने के कारण भयभीत थी। अन्ततः पराजय ही मिली।

6. शत्रु को धोखे में रखने के लिए सदैव अपनी योजनाओं को गोपनीय रखना भी सफलता की सबसे बड़ी कुन्जी है, जैसा कि इस युद्ध में हेनीबल ने अपनी समरतान्त्रिक योजना का रोमन सेना को आभास तक नहीं होने दिया और अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की।

इसीलिए **जनरल जे० एफ० सी० फुलर** ने स्पष्ट लिखा है कि—

"Surprise is the soul of every operation, the secret of victory and the key of success."

7. युद्ध में नवीन प्रकार से समरतन्त्र के द्वारा शत्रु के इरादों को विफल करके अपनी इच्छानुसार उसे लड़ने के लिए मज़बूर करना भी सफलता का सूचक माना जाता है, जैसा कि हेनीबल ने अपने ढंग से वैरो की सेना को लड़ने के लिए मज़बूर करके ऐतिहासिक एवं महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की।

8. सेनाओं का समुचित रूप से प्रयोग करना भी सफलता का सूचक माना जाता है, जैसा कि हेनीबल ने अपना समस्त सैनिक शक्ति का समुचित प्रयोग करके शक्ति के मितव्ययिता के सिद्धान्त का पालन किया और महत्त्वपूर्ण विजय हासिल की।

9. युद्ध में गतिशीलता का सिद्धान्त सदैव सहयोगी होता है, जैसा कि कार्थेज की अश्वारोही सेना ही विजय की सूचक सिद्ध हुई और तीव्रगति के साथ अपनी योजना को लागू करके वैरो (Varro) को बुरी तरह से पराजित किया।

10. हेनीबल की सेना अनेक युद्धों में विजयी होने के कारण उत्साह युक्त थी, जबकि वैरो (Varro) की सेना कार्थेज की सेना से भयभीत थी। अत: युद्ध में मनोबल सदैव महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जैसा कि **पोलबियस** (Polybias) महोदय ने इस सन्दर्भ में स्पष्ट लिखा है—

"Of all the forces which are important in war, the spirit of the warrior is the most decisive one."

11. इस युद्ध में सफलता का श्रेय एक दृढ़ निर्भीक, कुशल, तत्कालिक निर्णय लेने वाला तथा दूरदर्शी सेनापति हेनीबल को ही प्राप्त है। इस सन्दर्भ में **जनरल फुलर** ने लिखा है—

"There is not the slightest doubt that victory was won by the facfical genious of Hannibal."

(कैने की विजय हेनीबल की समरतान्त्रिक बुद्धिमत्ता के कारण ही हुई थी।)

7. सिकन्दर के सैन्य सुधार
(Military Reform made by Alexander)

सिकन्दर महान् एक योग्य एवं कुशल सेनापति व शासक था जिसने अपनी अद्वितीय प्रतिभा के द्वारा न केवल फैलेंक्स के सैन्य संगठन का सुधार किया बल्कि अपने पिता की भांति एक अविजित सेना संगठित करके विशाल साम्राज्य की स्थापना करने में भी सफल रहा। इस सेनापति ने अपनी अल्पायु यानी बारह वर्ष की उम्र में ही शासन की बागडोर संभाल ली थी तथा ऐसे महत्त्वपूर्ण सैनिक परिवर्तन किये जिनका सैन्य इतिहास में आज भी अनूठा स्थान है। इस विद्वान् सेनापति ने अनेक युद्धों में परिस्थितियों के आधार पर कूटयोजना तैयार करके उसको समरतन्त्र में परिवर्तित करने की कला का सही रूप प्रदर्शित किया। यह प्रत्येक कदम उठाने वाले के उसके साथ जुड़ी हुई घटनाओं का भी अनुमान लगा लेने की अभूतपूर्व क्षमता रखता था।

सिकन्दर ने अपने पिता फिलिप द्वितीय से जो सेना विरासत में प्राप्त की थी, उसे इतने विशाल एवं शक्तिशाली रूप में संगठित कर दिया जिसकी आशा उस समय करना कठिन था। वह एक कुशल नेता, शासक, सेनापति एवं प्रभावशाली योद्धा था। उसने अपने जीवन में 22 लड़ाइयां लड़ीं, जिसमें से 15 संग्रामों में निर्णय अपनी सेना के आधार पर ही किया। **जनरल फुलर** ने इसके सन्दर्भ में लिखा है—

"For the first time is history a super armament was mated to supreme genius."

(इतिहास में पहली बार अति श्रेष्ठ योधनसंभार का महान् बुद्धि से मिलन हो सका।)

अब हम सिकन्दर के द्वारा अपने प्रसिद्ध सैन्य संगठन 'फैलेंक्स' में किये गये सैन्य सुधारों का उल्लेख करते हैं, जो प्रमुख रूप से इस प्रकार से है—

1. सिकन्दर ने सर्वप्रथम प्रत्येक प्रकार की परिस्थितियों जैसे—चाहे गर्मी हो, जाड़ा हो, बरसात हो अथवा मैदानी, पर्वतीय व रेगिस्तानी क्षेत्रों में युद्ध करने की क्षमता फैलेंक्स में भर दी।

2. युद्धों में गतिशीलता (Mobility) से सिद्धान्त के महत्त्व को समझते हुए उसे फैलेंक्स में परिवर्तन किया, जिसमें फैलेंक्स को चार फैलेन्मार्की में विभक्त कर दिया, ताकि गतिशीलता में और अधिक वृद्धि हो सके।

3. सिकन्दर अपनी सेना को सदैव सीधे नियन्त्रण में रखने पर बल देता था। इसी कारण उसने एक फाइल में 16 सैनिकों की संख्या घटाकर अथवा कम करके आठ सैनिकों की संख्या कर दी थी।

4. सिकन्दर ने अपनी सेना में तेज़ी लाने के लिए 'पेल्टास्ट' (Peltast) नामक हल्के पैदल सैनिकों का गठन किया, जिसके बल पर उसने अपने समय के युद्धकर्म को एक नवीन दिशा दी।

5. सिकन्दर की समरतान्त्रिक योजना नगरों को घेरकर जमे रहने की अपेक्षा तूफान की भांति आक्रमण करके सफलता प्राप्त कर लेने की अधिक होती थी।

6. सिकन्दर ने लड़ाई के एक निश्चित केन्द्र पर अपनी सेनाओं को इस प्रकार से लगाने पर अधिक ज़ोर दिया कि उसकी संख्या और मात्रा दुगुनी हो जाये अर्थात् वह केन्द्रीयकरण के सिद्धान्त का पूर्ण अनुयायी अथवा समर्थक था। उसका कथन था कि—

"March divided and fight united."

(विभक्त होकर आगे बढ़ो तथा एकत्र होकर लड़ो)

7. सिकन्दर ने समानान्तर क्रम के युद्ध (Parallel Oder Battle) के स्थान पर एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया और अपनी सेना को एक निश्चित दूरी तक शत्रु के पास पहुंचने पर सामने की ओर से बढ़कर तिरछे क्रम (Oblique Order) पर बल दिया, जिससे शत्रु पर आतंक छा जाने तथा सफलता हासिल करने लगा जैसा कि अरबेला के युद्ध (331 ई० पू०) में विजय प्राप्त की।

8. सिकन्दर ने सर्वप्रथम युद्ध में सफलता प्राप्त करने के पश्चात् भागते हुए शत्रु का तेज़ी के साथ पीछा करके उसे नष्ट करने का विचार दिया, जिससे निर्णयात्मक सफलता हासिल की जा सके।

9. सिकन्दर ने अपने सैन्य संगठन को और अधिक चुस्त तथा दुरस्त बनाने के लिए उसमें लचकता (Flexibility) पर ज़ोर दिया, जिससे बदलती हुई परिस्थितियों में इच्छानुसार तुरन्त परिवर्तन किया जाना सरल हो जाए।

10. सेना की क्षमता को बढ़ाने के लिए लगातार तथा कठिन प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया, ताकि तेज़ी के साथ कार्यवाही करके शत्रु को आश्चर्य में डाला जा सके।

11. सिकन्दर ने अपनी सेना में हल्के हथियारों तथा सैनिकों के धारण किये जाने वाले कवच भी हल्के करके उनकी गतिशीलता तथा कार्यक्षमता में वृद्धि की।

12. सिकन्दर ने अन्य सेनाओं की अपेक्षाकृत अश्वारोही सेना को विशेष महत्त्व प्रदान किया। यही कारण था, कि सिकन्दर की सम्पूर्ण सेना में अश्वारोही ही प्रधान सेना होती थी। अनेक युद्धों में महत्त्वपूर्ण एवं निर्णयात्मक सफलता का श्रेय इसी अश्वारोही सेना को ही दिया गया। वह अश्वारोही सेना को स्वयं नियन्त्रण में रखता था तथा स्वयं ही अत्यन्त निपुण अश्वारोही था। इस सन्दर्भ में डाज (Dodge) ने लिखा है—

"Had Alexander not been one of the world's greatest captain he, would have been the typical beau sabreur of the world history."

13. सिकन्दर ने युद्धों में तेज़ी के साथ शत्रु पर भगदड़ मचाने के लिए दो युद्धयन्त्रों का निर्माण भी करवाया—

(क) कैटापुल्ट (Catapult)

(ख) बैलिस्टे (Ballistae)

14. सिकन्दर ने अपनी सेना के साथ-साथ सर्वेक्षक, इन्जीनियर तथा अधिकारिक इतिहासकारों को भी रखने पर विशेष बल दिया, ताकि प्रत्येक प्रकार से व्यवस्था बनायी रखी जा सके।

इस प्रकार से सिकन्दर ने अनेकों सैन्य सुधार किये तथा इन्हीं के बल पर महत्त्वपूर्ण सफलता भी संग्रामों में प्राप्त की।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. ग्रीक फैलेंक्स की रचना किस प्रकार की थी ? उसकी विशेषताओं एवं कमियों सहित वर्णन करें।
2. ग्रीक फैलेंक्स के संगठन, समरतान्त्रिक फैलाव, युद्धकला तथा हथियारों आदि का उल्लेख करते हुए उसके पतन के कारण भी वर्णित करें।
3. ग्रीक फैलेंक्स तथा रोमन लीजन की तुलनात्मक व्याख्या गुण दोषों सहित करें।
4. रोमन लीजन की रचना किस प्रकार की थी ? उसकी विशेषताओं एवं कमियों सहित वर्णन कीजिए।
5. रोमन लीजन के संगठन, समरतान्त्रिक फैलाव, युद्ध-कला तथा हथियारों का उल्लेख करें।

6. रोमन लीजन के पतन के कारण विस्तार सहित वर्णन करें।
7. जूलियस सीज़र के समय रोमन लीजन में क्या-क्या परिवर्तन हुए सभी का विस्तार सहित वर्णन करें।
8. सीज़र के समय रोमन लीज़न के सन्दर्भ में संक्षिप्त में टिप्पणी कीजिए।
9. रोमन लीजन के उत्थान तथा फैलेंक्स के पतन के प्रमुख कारणों का सविस्तारपूर्वक उल्लेख करें।
10. अरबेला के प्रसिद्ध संग्राम में यूनानी शासक सिकन्दर महान् तथा ईरानी शासक डैरियस के मध्य हुए घटनाक्रम की सचित्र व्याख्या करें।
11. 'अरबेला का संग्राम एक निर्णयात्मक युद्ध था' कथन को दृष्टि में रखकर इससे प्राप्त सैन्य शिक्षाओं का उल्लेख करें।
12. कैने के युद्ध का वर्णन करते हुए, रोम की सेना की पराजय के प्रमुख कारणों का सविस्तार उल्लेख करें।
13. 'कैने का संग्राम एक विचित्र कूटयोजना पर आधारित था'—कथन को दृष्टि में रखकर युद्ध की सचित्र व्याख्या करें।
14. फैलेंक्स में सिकन्दर महान् द्वारा किये गये सैन्य सुधारों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।
15. सिकन्दर महान् के द्वारा किये गये सैन्य सुधारों का सविस्तार उल्लेख करें।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(Objective Type Questions)

नोट—प्रत्येक प्रश्न के कुछ वैकल्पिक तथा भ्रमित उत्तर दिये गये हैं। इसमें सर्वोत्तम उत्तर का चयन करना है।

प्रश्न 1. ग्रीक फैलेंक्स कहां का प्रसिद्ध सैन्य संगठन था ?

(क) रोमन का (ख) फ्रांस का
(ग) यूनान का (घ) ईरान का।

प्रश्न 2. ग्रीक फैलेंक्स की कुल संख्या होती थी— *(M.D.U. April 1988)*

(क) 16384 (ख) 1024
(ग) 16684 (घ) 4200.

प्रश्न 3. ग्रीक फैलेंक्स की सबसे छोटी इकाई कहलाती थी—

(क) लीजन (ख) फाइल
(ग) मेरार्की (घ) डाइलौकी।

प्रश्न 4. ग्रीक फैलेंक्स की एक फाइल में कितने सैनिक संगठित किये जाते थे ?

(क) 1200 (ख) 1600
(ग) 16 (घ) 21.

प्रश्न 5. फैलेंक्स की इकाई "डाईलौकी" में कितने सैनिक होते थे ?

(क) 16 (ख) 32

(ग) 64 (घ) 128.

प्रश्न 6. फैलेंक्स की इकाई 'टेटारकी' में कितने सैनिक होते थे ?

(क) 128 (ख) 64

(ग) 32 (घ) 256.

प्रश्न 7. फैलेंक्स के 'टेक्सिस' में कुल कितने सैनिक होते थे ?

(क) 32 (ख) 512

(ग) 64 (घ) 128.

प्रश्न 8. फैलेंक्स के 'पेन्टाकोनार्की' में कुल कितने सैनिक होते थे ?

(क) 64 (ख) 512

(ग) 256 (घ) 32.

प्रश्न 9. फैलेंक्स के संगठन 'चिलियार्की' में कुल कितने सैनिक होते थे ?

(क) 512 (ख) 412

(ग) 256 (घ) 64.

प्रश्न 10. फैलेंक्स के संगठन 'मेरारकी' में कितने सैनिक होते थे ?

(क) 1820 (ख) 1024

(ग) 4200 (घ) 4096.

प्रश्न 11. फैलेंक्स के संगठन 'फैलेक्गार्की' में कुल कितने सैनिक होते थे ?

(क) 256 (ख) 5200

(ग) 4200 (घ) 4096.

प्रश्न 12. फैलेंक्स संगठन की सबसे बड़ी इकाई कौन-सी थी ?

(क) मेरारकी (ख) फैलेंक्गार्की

(ग) टेक्सिस (घ) पेन्टोकोनार्की।

प्रश्न 13. फैलेंक्स के संगठन में 'कैटापुल्ट' (Catapult) के नाम से किसे सम्बोधित किया जाता था ?

(क) कुशल सेनापति को (ख) युद्धयन्त्र को

(ग) समरतन्त्र को (घ) लम्बे भाले को।

प्रश्न 14. फैलेंक्स के संगठन में 'सरिसा' के नाम से किसे जाना जाता था ?

(क) लम्बे भाले को (ख) युद्धयन्त्र को

(ग) सैन्य संगठन को (घ) सेनापति को।

प्रश्न 15. फैलेंक्स के संगठन में प्रयोग होने वाले अस्त्र सरिसा की लम्बाई कितनी होती थी ?

(क) 18 फीट (ख) 20 फीट

(ग) 21 फीट (घ) 10 फीट।

प्रश्न 16. फैलेंक्स में 'वैलिस्टे' किसे कहा जाता था ?

(क) समरतन्त्र को (ख) कूटयोजना को
(ग) यान्त्रिक हथियार को (घ) सैन्य संगठन को।

प्रश्न 17. फैलेंक्स की युद्ध कला मुख्य रूप से किस समरतन्त्र पर आधारित थी ?

(क) मारो तथा भागो (ख) अप्रत्यक्ष उपाय
(ग) फायर एवं आघात (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

प्रश्न 18. फैलेंक्स में सबसे आगे किस सेना को खड़ा किया जाता था ?

(क) हाथी सेना (ख) रथ सेना
(ग) अश्वारोही सेना (घ) पैदल सेना।

प्रश्न 19. पीडना का संग्राम कब लड़ा गया था ? ***(K.U.K. April 1993)***

(क) 168 ई० पूर्व (ख) 186 ई० पूर्व
(ग) 681 ई० पूर्व (घ) 816 ई० पूर्व।

प्रश्न 20. रोमन सेना का गठन किस संगठन के रूप में किया गया था ?

(क) फैलेंक्स (ख) लीजन
(ग) हस्ताती (घ) उपर्युक्त में कोई नहीं।

प्रश्न 21. एक रोमन लीजन में कुल कितने सैनिक होते थे ?

(क) 16384 (ख) 5200
(ग) 4200 (घ) 1200.

प्रश्न 22. रोमन लीजन में सैनिकों का फैलाव किस पद्धति के आधार पर किया गया था ?

(क) सैनिकों की आयु के आधार पर
(ख) सैनिकों की संख्या के आधार पर
(ग) शस्त्रास्त्रों के आधार पर
(घ) सामरिक स्थिति के आधार पर।

प्रश्न 23. 'वेलाइट्स' सैनिकों की आयु सीमा क्या होती थी ?

(क) 18 से 20 वर्ष (ख) 16 से 24 वर्ष
(ग) 25 से 30 वर्ष (घ) 30 से 40 वर्ष।

प्रश्न 24. 25 से 30 वर्ष की आयु ग्रुप के सैनिकों को रोमन लीजन के किस संगठन में रखा जाता था ?

(क) हस्ताती (ख) प्रिंसाइप्स
(ग) वेलाइट्स (घ) ट्रियारी।

प्रश्न 25. रोमन लीजन में कितने वैलाइट्स होते थे ? ***(M.D.U. April 1988)***

(क) 2500 (ख) 1800
(ग) 1200 (घ) 1600.

प्रश्न 26. प्रिन्साइप्स किस उम्र के सैनिक होते थे ?

(क) 40 से 50 वर्ष (ख) 25 से 30 वर्ष
(ग) 30 से 35 वर्ष (घ) 31 से 40 वर्ष।

प्रश्न 27. 'ट्रियारी' सैनिक किस उम्र के हुआ करते थे ?

(क) 40 से 50 वर्ष (ख) 50 से 60 वर्ष
(ग) 40 से 45 वर्ष (घ) 33 से 40 वर्ष।

प्रश्न 28. 'पीडना' का संग्राम किन राष्ट्रों के मध्य लड़ा गया ?

(क) इटली तथा रोम (ख) रोम तथा मैसोडोनिया
(ग) यूनान तथा ईरान (घ) रोम तथा सिसली।

प्रश्न 29. सीजर ने लीजन की संख्या 4200 से बढ़ाकर कितनी कर दी थी ?

(क) 5000 (ख) 6000
(ग) 7000 (घ) 8000.

प्रश्न 30. एक लीजन में कितने कोहार्ट होते थे ?

(क) छः कोहार्ट (ख) आठ कोहार्ट
(ग) चार कोहार्ट (घ) बीस कोहार्ट।

प्रश्न 31. एक लीजन में कितने 'हस्ताती' सैनिक होते थे ?

(क) 1200 (ख) 1800
(ग) 1600 (घ) 1400.

प्रश्न 32. एक लीजन में कितने 'प्रिन्साइप्स' सैनिक होते थे ?

(क) 1000 (ख) 1600
(ग) 1200 (घ) 1800.

प्रश्न 33. एक लीजन में कितने 'ट्रियारी' सैनिक होते थे ?

(क) 1200 (ख) 1600
(ग) 600 (घ) 1000.

प्रश्न 34. रोम लीजन में सबसे आगे किस सैन्य इकाई को रखा जाता था ?

(क) प्रिन्साइप्स (ख) वेलाइट्स
(ग) ट्रियारी (घ) हस्ताती।

प्रश्न 35. शतरंज बोर्ड संरचना के आधार पर किस सैन्य संगठन को संगठित किया गया था ?

(क) रोमन लीजन (ख) फैलेंक्स
(ग) दोनों ही संगठन (घ) उपर्युक्त में कोई नहीं।

प्रश्न 36. 'ट्रियारी' सैनिक इकाई लीजन की किस सेना के रूप में कार्य करती थी ?

(क) प्रमुख सेना के रूप में (ख) सहायक सेना के रूप में
(ग) आरक्षित सेना के रूप में (घ) उपर्युक्त में कोई नहीं।

प्रश्न 37. "रोम की कवायत (प्रशिक्षण) रक्त रहित युद्ध थी और उसके युद्ध खूनी कवायतें थीं।" यह कथन किसका है ?

(क) जनरल जे० एफ० सी० फुलर (ख) जो सीफस
(ग) आर्थर बिर्नी (घ) जनरल मैक्यावेली।

प्रश्न 38. अरबेला का प्रसिद्ध संग्राम कब लड़ा गया ?

(क) 331 ई० पूर्व (ख) 331 ई०

(ग) 133 ई० पूर्व (घ) 168 ई० पूर्व।

प्रश्न 39. अरबेला का संग्राम किन देशों के मध्य लड़ा गया ?

(क) ईरान तथा इराक (ख) यूनान तथा मिश्र

(ग) ईरान तथा यूनान (घ) रोम तथा यूनान।

प्रश्न 40. अरबेला का संग्राम किन सेनापतियों के मध्य लड़ा गया ?

(क) डैरियस व नेपोलियन (ख) सिकन्दर तथा डैरियस

(ग) सीज़र तथा फिलिप (घ) विलियम तथा हेरोल्ड।

प्रश्न 41. दारा (Darious) कौन था ? ***(M.D.U. April 1988)***

(क) रोम का सेनापति

(ख) सिकन्दर की सेना का सेनानायक

(ग) ईरान का राजा

(घ) प्रसिद्ध इतिहासकार।

प्रश्न 42. अरबेला के संग्राम में किस शासक की पराजय हुई ?

(क) सिकन्दर की (ख) डैरियस की

(ग) जनरल वैरी की (घ) हेनीबल की।

प्रश्न 43. अरबेला के संग्राम में किस शासक को विजय मिली ?

(क) डैरियस को (ख) नेपोलियन को

(ग) सिकन्दर महान् को (घ) फिलिप द्वितीय को।

प्रश्न 44. अरबेला के संग्राम में सिकन्दर की सफलता का प्रमुख कारण निम्नलिखित में कौन-सा था ?

(क) विशाल सैन्य शक्ति

(ख) श्रेष्ठ अनुशासन

(ग) श्रेष्ठ हथियार

(घ) तिरछा आक्रमण (Oblique Attack) का अपनाना।

प्रश्न 45. अरबेला के संग्राम में डैरियस की पराजय का प्रमुख कारण निम्नलिखित में से कौन था ?

(क) सैनिक संख्या का अभाव (ख) श्रेष्ठ हथियारों का अभाव

(ग) श्रेष्ठ नेतृत्व का अभाव (घ) सिकन्दर की विशाल सेना।

प्रश्न 46. अरबेला के संग्राम में किस सेना को अधिक हानि उठानी पड़ी ?

(क) डैरियस की सेना को (ख) सिकन्दर की सेना को

(ग) दोनों ही सेना को बराबर (घ) किसी भी सेना को नहीं।

प्रश्न 47. कैने का प्रसिद्ध संग्राम कब लड़ा गया ?

(क) 331 ई० पूर्व (ख) 210 ई० पूर्व
(ग) 261 ई० पूर्व (घ) 216 ई० पूर्व।

प्रश्न 48. कैने का संग्राम किन देशों के मध्य लड़ा गया ?

(क) रोम एवं कार्थज (ख) रोम तथा यूनान
(ग) कार्थेज तथा यूनान (घ) यूनान तथा ईरान।

प्रश्न 49. कैने का संग्राम किन शासकों के मध्य लड़ा गया ?

(क) वैरो तथा डैरियस (ख) हेनीबल तथा विलियम
(ग) हेनीबल तथा वैरो (घ) हैरोल्ड तथा वैरो।

प्रश्न 50. कैने के संग्राम में किस शासक की पराजय हुई ?

(क) जनरल हेनीबल (ख) जनरल डैरियस
(ग) जनरल वैरो (घ) जनरल विलियम द्वितीय।

प्रश्न 51. कैने के संग्राम में किस सेनापति को विजय मिली ?

(क) जनरल हेरोल्ड (ख) जनरल हेनीबल
(ग) जनरल सिकन्दर (घ) जनरल जोमिनी।

प्रश्न 52. वैरो की पराजय का प्रमुख कारण क्या था ?

(क) सैन्य शक्ति का अभाव
(ख) श्रेष्ठ हथियारों का अभाव
(ग) धोखे में आ जाना
(घ) हेनीबल की विशाल सैन्य शक्ति।

प्रश्न 53. कैने के संग्राम में हेनीबल की सफलता का प्रमुख कारण निम्नलिखित में से कौन-सा था ?

(क) विशाल सैन्य शक्ति
(ख) गतिगूढ़ समरतान्त्रिक चाल
(ग) विशाल हथियारों का प्रयोग
(घ) वैरो की सीमित सैनिक संख्या।

प्रश्न 54. "कैने की विजय हेनीबल की समरतान्त्रिक बुद्धिमत्ता के कारण ही हुई थी।" उक्त कथन किस विद्वान् का है ?

(क) नेपोलियन
(ख) पोलिब्यिस
(ग) आर्थर बिर्नी
(घ) जनरल जे० एफ० सी० फुलर।

प्रश्न 55. "विभक्त होकर आगे बढ़ो तथा एकत्र होकर लड़ो" यह कथन किस सैन्य विचारक का है ?

(क) सिकन्दर महान्
(ख) नेपोलियन
(ग) फ्रैड्रिक महान्
(घ) जनरल जोमिनी।

प्रश्न 56. यूनानियों का 'तिरछा मार्च' एक विशिष्ट गुण था, जो सर्वप्रथम प्रचलित किया गया— ***(M.D.U. April 1988)***

(क) सिकन्दर द्वारा
(ख) इपामिनीन दारा द्वारा
(ग) हैनीबल द्वारा
(घ) क्रेटियस द्वारा।

प्रश्न 57. 'मैजियस' कौन था ?

(क) यूनान का राजा
(ख) ईरान का सेनापति
(ग) यूनान का सेनापति
(घ) सिकन्दर का सेनापति।

प्रश्न 58. 'वेसुस' कौन था ?

(क) डैरियस का सेनापति
(ख) यूनान का शासक
(ग) यूनान का सेनापति
(घ) यूनान का सैन्य संगठन।

प्रश्न 59. सर्वप्रथम 'विकेन्द्रीयकरण' के सिद्धान्त को किसने अपनाया ?

(क) डैरियस ने
(ख) हेनीबल ने
(ग) सिकन्दर ने
(घ) फिलिप द्वितीय ने।

प्रश्न 60. सर्वप्रथम किस सेनापति ने भागती हुई सेना का पीछा करने के लिए बल दिया था ?

(क) हेनीबल ने
(ख) रोमन सम्राट् वैरो ने
(ग) सिकन्दर महान् ने
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर
(Answers of Objective Type Questions)

1. (ग)	**2.** (क)	**3.** (ख)	**4.** (ग)	**5.** (ख)
6. (ख)	**7.** (घ)	**8.** (ग)	**9.** (क)	**10.** (ख)
11. (घ)	**12.** (ख)	**13.** (ख)	**14.** (क)	**15.** (ग)
16. (ग)	**17.** (ग)	**18.** (ख)	**19.** (क)	**20.** (ख)
21. (ग)	**22.** (क)	**23.** (ख)	**24.** (क)	**25.** (ग)
26. (घ)	**27.** (क)	**28.** (ख)	**29.** (ख)	**30.** (क)
31. (क)	**32.** (ग)	**33.** (ग)	**34.** (ख)	**35.** (क)
36. (ग)	**37.** (ख)	**38.** (क)	**39.** (ग)	**40.** (ख)
41. (ग)	**42.** (ख)	**43.** (ग)	**44.** (घ)	**45.** (ग)
46. (क)	**47.** (घ)	**48.** (क)	**49.** (ग)	**50.** (ग)
51. (ख)	**52.** (ग)	**53.** (ख)	**54.** (घ)	**55.** (क)
56. (क)	**57.** (ख)	**58.** (क)	**59.** (ग)	**60.** (ग)

3 वीरता का युग (THE AGE OF CHIVALRY)

1. एड्रियानोपल का संग्राम : 378 ई० (Battle of Adrianople : 378 A.D.)

एड्रियानोपल का प्रसिद्ध संग्राम जहां पराक्रम के युग का पतन करता है, वहां वीरता के युग के द्वार भी खोलता है। यह प्रसिद्ध संग्राम रोमन शासक वैलेन्स तथा गोथ सेनाओं के मध्य 378 ई० में लड़ा गया। इस युद्ध ने यह प्रमाणित कर दिया कि गतिशील अश्वारोही सेना के द्वारा भारी कवच युक्त सेनाओं को भी सरलता के साथ हराया जा सकता है। यही कारण था कि एक बार पुन: सभी ने गतिशीलता के सिद्धान्त (Principle of mobility) को ध्यान में रखकर अश्वारोही सेना को अपनी लड़ाकू सेना का प्रमुख अंग बनाया। यद्यपि प्राचीनकाल की अश्वारोही सेना व्यवस्था तथा तत्कालीन अश्वारोही सेना व्यवस्था में बहुत अन्तर था, क्योंकि इसमें परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन भी किए गये थे जोकि अत्यन्त आवश्यक भी होते हैं। यही कारण है कि इस युद्ध के साथ ही अश्वारोही सेना का युग आ गया, जिसे वीरता का युग (The age of Chivalry) कहा जाने लगा।

प्रस्तावना (Introduction)—रोमन साम्राज्य का महत्त्व सीज़र की मृत्यु के बाद दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा था, जो लौंजन आक्रमणात्मक कार्यवाही के लिए विख्यात था। उसने प्रतिरक्षात्मक स्थिति अपनानी आरम्भ कर दी थी तथा इसी के उद्देश्य से किले बन्दी पर विशेष ज़ोर देने लगे। रोमन अत्यन्त विलासी तथा शान्ति प्रिय हो गये, जिसके कारण राष्ट्र के प्रति जागरूकता सदा के लिए समाप्त-सी होने लगी। वेलेन्सटाइन एक योग्य सेनापति था, उसने अपने भाई वेलेन्स शाह को सहयोगी शासक बना लिया। इसी समय वेलेन्सटाइन की मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र ग्रेसियन शासक बना तो उसका प्रभाव वेलेन्स पर नहीं हो सका। हूण जाति के लोग अर्ध बर्बर तथा अन्य सभी पर अपना आतंक फैला रहे थे। इसी समय फ्रिडीजर्न नामक गोथों के सरदार ने हूणों से बचने के लिए वेलेन्स से डेन्यूब नदी पार कर शरण में लेने की प्रार्थना की। वेलेन्स ने प्रसन्नता के साथ इन्हें आने की अनुमति दे दी, क्योंकि वह इन शक्तिशाली बर्बरों को अपनी सेना में भर्ती करना चाहता था, लेकिन इसके साथ ही बर्बरों पर कुछ शर्तें लगा दी थीं जैसे—

1. अपने लड़कों को बन्धक के रूप में रखना होगा।
2. अपने सभी शस्त्र सरकार के पास जमा करने होंगे।
3. अपने साथ सीमित संख्या में ही आना होगा।

जब गोथ सीमा में आने लगे तो भ्रष्ट रोमन अधिकारियों ने उन्हें शस्त्रों सहित प्रवेश करने दिया तथा प्रवेश के दौरान इनके साथ दुर्व्यवहार भी किया, परन्तु इसी दौरान गोथ सरदार ऐथेलियम तथा सेफरेक्स भी बिना अनुमति लिए ही अपने दलों सहित प्रवेश कर गये। जब रोमन जनता को पता लगा तो उन्होंने गोथों को भगाने के लिए अनेकों कूटनीतिक चालें चलीं परन्तु किसी में सफल न हो सके। रोमन जनता ने इसका विरोध किया। इस प्रकार दोनों के मध्य तनाव बहुत अधिक बढ़ गया। गोथों ने अब रोम के विरुद्ध अपना विद्रोह आरम्भ कर दिया और थ्रेस नगर को नष्ट कर दिया तथा इसके साथ ही अब एड्रियानोपल को भी अपना लक्ष्य बना लिया। इसके कारण इस युद्ध का शुभारम्भ हुआ।

वास्तव में गोथ सैनिक जर्मन कबीले के लोग थे और यह बहुत ही निर्भीक एवं बहादुर किस्म के सैनिक थे। इन लोगों ने रोम में उस समय अपना प्रवेश प्रारम्भ किया, जब रोम अपने साम्राज्यिक वैभव का उपयोग कर रहा था। प्रतिकूल परिस्थितियों में रहने एवं जीवन-यापन करने के कारण यह अत्यन्त परिश्रमी, कर्मठ, बहादुर, जोशीले, जुझारु एवं जुनून वाले लोग थे। इन्होंने रोम की सीमा में प्रवेश करना शुरू किया और कबीलों के प्रवेश का प्रवाह निरन्तर बढ़ता गया। रोम के शासक अगस्टस ने इनके प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया हुआ था, परन्तु इसके बाद रोमन अधिकारियों ने अपनी प्रतिष्ठा खो दी, शारीरिक रूप से शक्तिशाली तथा घुड़सवार सेना के द्वारा गतिशीलता (Mobility) प्राप्त हो जाने के कारण ही इस युद्ध में अप्रत्याशित सफलता प्राप्त हुई।

रोमन के विशाल साम्राज्य पर गोथ घुड़सवार सैनिकों ने 9 अगस्त, 378 ई० को हमला कर दिया। गोथ सैनिक इसके पहले हूण वर्ग के द्वारा उत्तर से भगा दिये गए थे, जिसके कारण यह डेन्यूब नदी के पास बसने के लिए एकत्रित हो गये। इसके लिए गोथ सैनिकों ने रोम के सम्राट् वेलेन्स से अनुमति भी मांग ली और ये गोथ सैनिक धीरे-धीरे अनेक कबीलों के रूप में इधर एकत्रित होते चले गये। इस दौरान इन गोथ सैनिकों की छोटी-मोटी झड़पें रोमन (Roman) सैनिकों के साथ होती रही, जिसके कारण रोमन साम्राज्य का थ्रेस नगर नष्ट हो गया। रोमन सम्राट् वेलेन्स ने इन गोथ सैनिकों को इसलिए यहां रुकने दिया कि वह इन शक्तिशाली सैनिकों को रोमन सेना में भर्ती करना चाहता था, किन्तु डेन्यूब नदी के पार करते ही गोथ सैनिक किसी बात को लेकर भड़क गये और थ्रेस नगर को ध्वस्त कर दिया। वेलेन्स ने सबटेनस (Sebastainus) के नेतृत्व में रोमन सेना को गोथों को भगाने के लिए भेजा और उन्हें सफलता भी मिली, इसके बाद भी रोम की सेना ने वेलेन्स के नेतृत्व में गोथ सैनिकों को पूरी तरह सफाई करने की इच्छा से एड्रियानोपल की ओर बढ़ना शुरू कर दिया, जिसके लिए उनके सेनापति सबटेनस ने स्वयं वेलेन्स को इस कार्यवाही के लिए रोका, किन्तु वेलेन्स ने बिना रणनीति बनाये व अपने सहयोगी के सुझाव की उपेक्षा करते हुए 9 अगस्त, 378 ई० को हमला करके इस ऐतिहासिक युद्ध को जन्म दिया। गोथ सेना का संचालन सेनापति फ्रिटीजर्न द्वारा किया जा रहा था।

तुलनात्मक सैन्य शक्ति
(Comperative Military Strength)

रोमन सेनाओं का उल्लेख तो मिलता है परन्तु बर्बर जाति के इन गोथों की सेना का वर्णन नहीं है लेकिन यह सत्य है कि रोमन की तुलना में गोथों की सैनिक संख्या बहुत कम थी।

रोम की सेना (Roman Army)

संयुक्त सेना	=	60,000
जिसमें पैदल सेना	=	40,000
अश्वारोही	=	20,000

गोथों की सेना (Goth Army)

गोथों की सैनिक संख्या का स्पष्ट उल्लेख नहीं है, परन्तु यह स्पष्ट है कि रोमन सेना की तुलना में गोथ सैनिक संख्या बहुत कम थी।

लीजन सेना के हथियार
(Weapons of Roman Army)

रोमन पद्धति पर आधारित इस सेना के द्वारा निम्नलिखित हथियारों का प्रयोग किया गया—

1. भाला (Spear)
2. बर्छी
3. तलवार
4. ढाल
5. लघु पराश वाले प्रक्षेपास्त्र।

गोथों की सेना के हथियार
(Weapons of Goth Army)

गोथों की सेना अधिकांश अश्वारोही सेना थी तथा यह अत्यन्त पराक्रमी तथा वीर सैनिक थे। इनके पास निम्नलिखित हथियार थे—

1. छोटे घातक तलवार
2. लम्बे आघाती तलवार
3. कुल्हाड़ी
4. कवचयुक्त गाड़ियां।

सेनाओं का समरतान्त्रिक फैलाव
(Tactical Deployment of Armies)

रोमन सेना का फैलाव—वेलेन्स ने गोथों के विरुद्ध अपनी सेना का समरतान्त्रिक फैलाव इस प्रकार से किया। पैदन सेना को मध्य भाग में तीन रूपों में संगठित किया।

अग्रभाग तथा पृष्ठ भाग के दोनों पूर्वों में अश्वारोही सेना को तैनात किया। पैदल सेना को व्यूह-बद्ध करते समय वेलेन्स ने अश्वारोही सेना को आगे व्यूह-बद्ध किया।

गोथों की सेना का फैलाव—गोथों के सेनापति फर्डीजर्न ने ऊंची भूमि पर अपनी स्थिति बना रखी थी और अपनी कवचयुक्त गाड़ियों के द्वारा सामने किलेबन्दी कर दी थी जिसे आक्रमण करके पार करना शत्रु के लिए सम्भव नहीं था। उसने अपनी पैदल सेना तथा सबसे पीछे की ओर अश्वारोही सेना को संगठित कर रखा था।

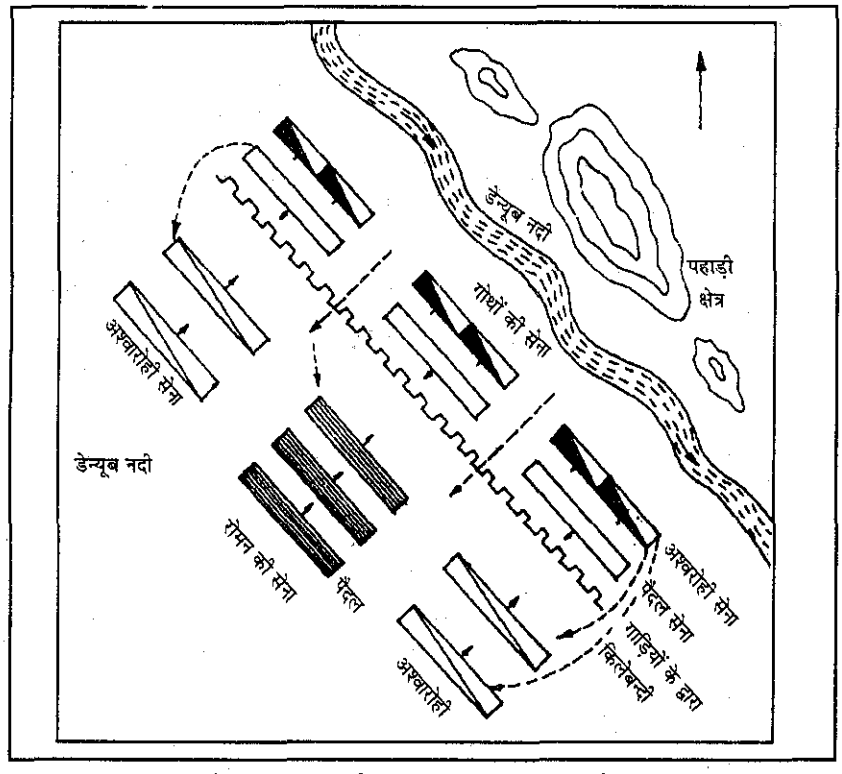

चित्र—एड्रियानोपल का संग्राम (378 ई०)

वास्तविक संघर्ष
(Real Conflict)

जब वेलेन्स को गोथों की विजय का समाचार मिला तो एक बड़ी सेना लेकर एड्रियानोपल की ओर बढ़ा। सवेस्टियम ने वेलेन्स को इस समय आगे बढ़ने से मना कर दिया, परन्तु वेलेन्स ने उसकी सलाह न मानकर आगे बढ़ना जारी रखा। इस समय फिर्डीजर्न के सहायक कैम्प में नहीं थे। उसने समय की प्रतीक्षा के लिए वेलेन्स से प्रार्थना की और आस-पास के क्षेत्र के खेतों में आग लगा दी, जिससे परिस्थितिवश वेलेन्स शत्रु की चाल में फंस गया। इसी समय संयोगवश गोथ सेनापति एनेथियम और सेपरेक्टस एक

बटालियन सहित बाहर वापस आ गये। रोम की सेना को सामने व्यूहबद्ध देखकर पहाड़ियों से बिजली की भांति उन पर टूट पड़े।

जिस समय रोम की सेना अश्वारोही टुकड़ी का दाहिना भाग बर्बरों से जूझ रहा था तथा बायां भाग उसके गाड़ियों के बने किले की ओर बढ़ रहा था, वह भी सहायता न मिल पाने के कारण पराजित हो गया।

इसी दौरान दाहिने पार्श्व के अश्वारोही बुरी तरह परास्त हो चुके थे तथा शेष सेना भी व्यूह बद्ध नहीं हो पायी। इसी समय फिर्डीजर्न ने अपनी पैदल सेना द्वारा ज़ोरदार आक्रमण कर दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि रोमन पैदल सेना भी बुरी प्रकार से पराजित हो गयी और भीषण रक्तपात हुआ। इस युद्ध में नेलेन्स के साथ उसके बड़े सैन्य अधिकारी भी बहुत बड़ी संख्या में मारे गये।

इस प्रकार इस आकस्मिक सफलता से न केवल रोमन लीजन की श्रेष्ठता समाप्त हो गयी, बल्कि पैदल सेना का भी पतन की सामरिक श्रेष्ठता का अन्त हो गया इसका स्थान अश्वारोही सेना ने ले लिया।

युद्ध से हानि
(Damage of War)

इस युद्ध में रोमन सैनिकों को बहुत हानि उठानी पड़ी। इससे लगभग 40,000 रोमन सैनिक मारे गये। ये गोथ इसमें सफल तो हुए परन्तु वे एड्रियानोपल तथा कान्सटेन्टिनोपनल पर घेराबन्दी के उपकरण न होने से असफल रहे। इसके बाद थ्रेस नगर होते हुए इलेनियम पहुंचे इसके बाद 380 ई० फिर्डीजर्न की मृत्यु हो गई।

सैनिक शिक्षाएं
(Military Lessons)

एड्रियानोपल के इस ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण संग्राम से हमें निम्नलिखित सैनिक शिक्षाएं मिलती हैं—

1. किसी भी युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिए उस राष्ट्र के सैनिकों की बलिदान की भावना तथा परित्याग एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जैसा कि इस युद्ध में पराक्रमी तथा बलिदानी गोथों ने आलसी एवं भ्रष्ट रोमन सेना के कारण अप्रत्याशित सफलता प्राप्त की।

2. युद्धों में भाग्य का भाग जितना अधिक होता है, उतना जीवन के अन्य क्षेत्र में नहीं। यह बात इस युद्ध में निर्विवाद रूप से सत्य प्रमाणित हुई, क्योंकि गोथ तो हूणों से बचने आए थे और उन्होंने रोमन साम्राज्य का तख्त ही उलट दिया।

3. इस युद्ध ने यह प्रमाणित कर दिया कि मुठभेड़ तथा आघात युद्ध कला युद्ध विधि का प्रधान साधन है तथा फैलेंक्स एवं लीजन सैन्य संगठन का समरतन्त्र अब पुराना हो चुका है।

4. रोमन लीजन की परम्परागत सैनिक व्यवस्था का पतन हो गया तथा उसका स्थान अश्वारोही सेना ने ग्रहण कर लिया।

5. युद्धों में कुशल नेतृत्व सदैव सफलता का सूचक प्रमाणित होता है जैसा कि इस युद्ध में वेलेन्स के त्रुटिपूर्ण नेतृत्व के कारण ही अपने सहायक की सलाह न मानकर बिना सोचे ही गोथों पर आक्रमण कर दिया और पराजित होना पड़ा।

6. वेलेन्स की सेना की पराजय का एक कारण यह भी बना कि उसकी सेना कवचरहित तथा शक्तिशाली गोथिक सैनिकों के भीषण प्रहार से अपने को सुरक्षित कर पाने में समर्थ नहीं थी, इसी का लाभ उठाकर गोथों ने रोमन सैनिकों को सरलता के साथ शिकार बना लिया था।

7. किसी भी युद्ध में कार्यवाही करने के पूर्व उसकी योजना का निर्धारण तथा उसी के अनुरूप उसकी कार्यवाही सफलता का सूचक होता है, जबकि इसकी अवहेलना करने पर पराजय के अवसर अधिक बढ़ जाते हैं, जैसा कि इस युद्ध में रोमन सैनिकों के साथ हुआ।

8. युद्ध में गतिशीलता का सिद्धान्त (Principle of Mobility) सदैव सहयोगी होता है, जैसा कि इस युद्ध में गोथों की गतिशील तथा तेज़ अश्वारोही सेना ने रोमन पैदल सैनिकों को शीघ्रता से घेर कर अपना शिकार बना लिया।

9. गोथ अथवा बर्बर जाति के लोग जन्म से ही अत्यन्त परिश्रमी तथा ताकतवर होते थे। उनमें बलिदान की भावना परम्परा में व्याप्त थी, जिसके कारण ही विशाल रोमन सेना को परास्त करने में सफल हो सकी। मनोबल सदैव ही युद्धों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है जैसा कि जोलव्यिस ने लिखा है—

"Of all the forces which are important in war, the spirit of the warrior is the most decisive one."

10. युद्ध में उसी पक्ष को सदैव सफलता मिलती है, जो पक्ष अपनी योजना के अनुसार शत्रु को लड़ने के लिए मज़बूर कर देता है, जैसा कि इस युद्ध में गोथों ने अपनी निर्धारित योजना के अनुसार ही रोमन को लड़ने के लिए मजबूर कर दिया था।

11. सेनाओं का समुचित रूप से प्रयोग करना भी सफलता की कुंजी है, जैसा कि गोथों ने अपनी गाड़ियों से क़िलेबन्दी करके अपनी समस्त सेना का सही उपयोग किया, जबकि इसके विपरीत रोमन सैनिक अपनी सैन्य शक्ति का सही प्रयोग नहीं कर सके और पराजित हुए।

इस प्रकार इस युद्ध के साथ ही अश्वारोही सेना एशिया से अटलांटिक सागर तक अनेक राज्यों एवं साम्राज्यों की भाग्य विधाता के रूप में मानी जाने लगी, जैसा मेजर जनरल डी० के० पालित ने इस सन्दर्भ में लिखा है—

"The fate of kingdoms, Empires from Asia to the Atlantic was decided by great lords of cavalry raiders."

2. पैदल सेना का पतन तथा अश्वारोही सेना का उदय (Decline of Infantry and Emergence of Cavalry)

एड्रियानोपल के प्रसिद्ध संग्राम (378 ई०) ने यह प्रमाणित कर दिया कि आगामी युद्धों में वही सेना युद्ध में सफल हो सकेगी, जिसके पास जितनी अधिक अश्वारोही सेना होगी, क्योंकि इस युद्ध में गोथों की अश्वारोही सेना के द्वारा ही विशाल रोमन सेना को रौंद दिया गया था। जबकि इसके पूर्व पराक्रम के युग में भारी कवच-युक्त पैदल सेना का बोलबाला था, उस समय अश्वारोही सेना का उपयोग केवल सहायक सेना के रूप में किया जाता था। एड्रियानोपल के संग्राम के बाद अश्वारोही सेना को प्रमुख लड़ाकू सेना के रूप में गिना जाने लगा तथा युद्धों के निर्णय भी इनकी सैनिक संख्या पर निर्भर होने लगे। यही कारण था कि एक बार पुनः सभी ने गतिशीलता के सिद्धान्त (Principle of Mobility) को ध्यान में रखकर अश्वारोही सेना को अपनी लड़ाकू सेना का मुख्य अंग बताया।

यद्यपि प्राचीन काल में भी अश्वारोही सेना को महत्ता प्रदान की गई थी, परन्तु इस समय की अश्वारोही तथा प्राचीन समय की अश्वारोही सेना में बहुत अन्तर था, क्योंकि इस समय की अश्वारोही सेना में तत्कालीन परिस्थितियों को भी ध्यान में विशेष रूप सें रखा गया था। यही कारण प्रमुख रूप से उत्तरदायी था, जिससे इस युद्ध के साथ ही जहां पैदल सेना का पतन हो गया, वहां अश्वारोही सेना का उदय हो गया। इसी कारण इस युग को 'अश्वारोही युग' के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। जबकि जनरल फुलर ने इसे वीरता या शौर्य का युग (Age of Chivalry) की उपाधि से वर्णित किया।

इस प्रकार प्राचीन काल से चली आ रही रोमन सैनिक परम्परा को गोथों की अश्वारोही सेना द्वारा कुचल दिया गया तथा पैदल सेना की समरतान्त्रिक श्रेष्ठता को भी समाप्त कर दिया। युद्ध में निर्णयात्मक भूमिका केवल अश्वारोही सेना द्वारा ही अदा की जाने लगी तथा एक लम्बी अवधि तक युद्धों में अपनी धाक जमाए रखी। मेजर जनरल डी० के० पालित ने इस सन्दर्भ में लिखा है—

"The Fate of kingdom and Empires from Asia to the Atlantic was decided by great lords of cavalry raiders."

(एशिया से अटलान्टिक महाद्वीप तक के राज्यों एवं शासकों के भाग्य का फैसला अधिकांश अश्वारोही आक्रमणकारी दलों द्वारा किया जाने लगा था।)

इस युग को अन्धकार युग (Dark Age) से भी जाना जाता है क्योंकि इस काल में समरतान्त्रिक प्रोन्नति पर विशेष ध्यान दिया गया। केवल सेनाएं अपने पराक्रम एवं वीरता के आधार पर अपनी विजय का फैसला करती थीं। उनमें सामरिक विशेषताओं का अभाव था। इस सन्दर्भ में भी पालित महोदय ने स्पष्ट रूप से लिखा है—

"Warfare was reduced to the cavalry melee, the hurling of masses of horsemen against each other."

(युद्ध घुड़सवारों के समूह बद्ध युद्धों तक सीमित हो गया था, जिसमें अश्वारोही वीरों के समूह एक-दूसरे के विरुद्ध जूझते थे।)

इस प्रकार इस समय में यद्यपि अश्वारोही सेना प्रधान सेना के रूप में थी, परन्तु सेनाओं की शक्ति समरतान्त्रिक चाल एवं निपुणता न होकर सैनिक संख्या पर अधिक निर्भर हुआ करती थी। युद्ध केवल अधिक संख्या वाली सेनाओं के द्वारा ही लड़े जाते थे। कम शक्तिशाली सेनायें या तो भाग जाती थीं अथवा किलों में छिप जाती थीं। यद्यपि समय-समय पर अश्वारोही सेनाओं में सैनिक सुधार भी किए गये, परन्तु इसके बावजूद की अश्वारोही सेना को सैनिक श्रेष्ठता पूरी तरह से प्राप्त नहीं हो सकी थीं।

अब हम संक्षिप्त रूप में पैदल सेना के पतन तथा अश्वारोही सेना के उत्थान के कारणों का उल्लेख करते हैं, जोकि निम्नलिखित प्रकार से हैं—

1. रोमन लीजन के सैनिक एवं अधिकारी धन तथा सत्ता के लालच में आ गये, जिसके कारण राष्ट्रीय भावना का पतन हो गया। विख्यात लीजन सैनिक पेशेवर सैनिक के रूप में कार्य करने लगे, जिससे राष्ट्र प्रेम की भावना समाप्त हो गई। इसी कारण गोथों की अश्वारोही सेना को विजय का अवसर मिला।

2. रोमन लीजन में अनुशासनहीनता अपनी चरमसीमा पर पहुंच चुकी थी, जिससे पैदल सेना का पतन होना स्वाभाविक सा हो गया तथा इसका स्थान अश्वारोही सेना को मिल गया।

3. पैदल रोमन लीजन ने युद्ध में आक्रमणात्मक स्थिति के स्थान पर सुरक्षात्मक युद्धनीति अपनाने के कारण आघात समरतन्त्र (Shock Tactics) एवं मुठभेड़ की लड़ाई समाप्त हो गई, जिससे अश्वारोही सेना को अवसर मिलना स्वाभाविक ही था।

4. पैदल सेना के द्वारा प्रयोग किये जाने वाले हथियार भी अत्यन्त हल्की श्रेणी के हो गये, जिसके कारण ये तेज़ अश्वारोही सेना के सामने टिकने में आखिरकार पूर्ण असमर्थ हो गई।

5. इस समय रोम शासक का साम्राज्य अत्यधिक विकसित हो जाने के कारण जागरूक पैदल सैनिकों का स्थान उदासीन सैनिकों ने ले लिया था, जिससे अश्वारोही गोथों की सेना के सामने इन सैनिकों का टिक पाना कठिन हो गया, जिसके फलस्वरूप इसका पतन होता चला गया।

6. पैदल सेनाओं का सैनिक स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता चला गया और इनका कार्य राष्ट्रीय सुरक्षा न रहकर केवल पुलिस कार्यों तक ही सीमित होकर रह गया, जिससे अश्वारोही सेनाओं की टुकड़ियों ने इसे अपने पैरों तले रौंद दिया और अपनी श्रेष्ठता की धाक पूरी तरह से जमा ली थी।

7. पैदल सेना के रूप में रोम की सेना में सभी वर्ग के लोगों को भर्ती किया जाने लगा, जिसके कारण अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व, नियन्त्रण आदि सैनिक गुणों का पतन हो गया और गोथों की तेज़ अश्वारोही सेनाओं ने अपनी मजबूत स्थिति बना ली थी।

8. अश्वारोही सेना अपनी गतिशीलता के कारण पैदल सेना पर अपना प्रभुत्व जमाने में सफल हुई और प्रभुत्व सेना के रूप में अपनी मज़बूत स्थिति बना ली।

9. रोमन सेना में लोच एवं गति दोनों का अभाव था। वज्र की भांति आक्रमण कर रहे गोथ सैनिकों द्वारा यह पूर्ण रूप से परास्त कर दी गयी तथा अपनी स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ करके पैदल सेना की परम्परा को एक निश्चित समय तक कमज़ोर कर दिया।

10. इस समय की अश्वारोही सेना शत्रु से निकट एवं दूर रहकर दोनों ही स्थितियों में आक्रमण करने की क्षमता रखने के कारण पैदल सेना पर हावी हो गयी और उसके बाद सेना का प्रमुख अंग अश्वारोही सेना बन गयी।

इस प्रकार अश्वारोही सेना ने अपनी विशेषताओं तथा पैदल सेना की कमियों के कारण ही इस समय का युग अश्वारोही युग कहलाया। यदि हम संक्षिप्त रूप में अश्वारोही की विशेषताओं को व्यक्त करें तो इस प्रकार से थीं—

1. गतिशीलता
2. लोचकता
3. विशाल कार्यक्षमता
4. तीव्रप्रहारक क्षमता
5. समय के अनुसार समरतन्त्र में परिवर्तन
6. आक्रामक क्षमता
7. शत्रु को घेरने की क्षमता
8. विकेन्द्रीयकरण

इसके साथ ही पैदल सेना में निम्न कमियां भी थीं, जिसके कारण अश्वारोही सेना प्रमुख बन गयी थी—

1. गतिशीलता का अभाव
2. लचकता का अभाव
3. अनुशासन का अभाव
4. कार्यक्षमता का अभाव
5. समय के अनुसार समरतन्त्र में परिवर्तन नहीं हुआ
6. आक्रामक क्षमता का अभाव

इस प्रकार पैदल सेना की तुलना में घुड़सवार सेना अधिक महत्त्वपूर्ण एवं गतिशील मानी जाने लगी। इसके साथ ही यह धारणा भी बनती गयी कि अश्वारोही सेना के सामने किसी भी प्रकार की पैदल सेना टिक नहीं सकेगी। इसके साथ घोड़े पर सवार होकर लड़ना सफलता के साथ-साथ सम्मान का सूचक बन गया। इसीलिए मेजर जनरल डी० के० पालित ने अपनी पुस्तक ''Essentials of Military Knowledge' में लिखा है—

"The Fate of kingdoms, Empires from Asia to the Atlantic was decided by great lords of cavalry raiders."

(एशिया से अटलांटिक तक के राज्यों एवं शासकों के भाग्य का फैसला अधिकांश अश्वारोही आक्रमणकारियों द्वारा किया जाने लगा था।)

यही सारे कारण थे, जिसके कारण इस दौरान पैदल सेना का महत्त्व कम हो गया और अश्वारोही सेना ने प्रधान एवं मुख्य सेना का स्थान ग्रहण कर लिया। यही अश्वारोही सेना के उदय का प्रमुख कारण माना गया।

3. हेस्टिंग का संग्राम : 1066 ई० (Battle of Hastings)

यह विख्यात संग्राम फ्रांस के सम्राट् विलियम ऑफ़ नार्मेण्डी तथा इंग्लैण्ड के शासक हैरोल्ड के मध्य 1066 ई० में लड़ा गया। इस युद्ध में इंग्लैंड के भाग्य का निर्णय हो गया। इस युद्ध में फ्रांस के विलियम को समरतान्त्रिक सफलता मिली। इस युद्ध का आरम्भ विलियम की साम्राज्य विस्तार की इच्छा के कारण हुआ। वह अपने अधिकार में इंग्लैंड को लेना चाहता था। इसके लिए उसने कूटिनीतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक दांव पेच अपनाये। एडवर्ड की मृत्यु के बाद जब इंग्लैंड का उत्तराधिकारी हेरोल्ड बना तो कई प्रभावशाली व्यक्ति भी इसके दावेदार थे, परन्तु हेरोल्ड ने अपने प्रयासों से विपक्ष को पक्ष में कर लिया। फिर भी हेरोल्ड की स्थिति ज्यादा मज़बूत नहीं थी।

हेरोल्ड के विरोधी विलियम ने अपनी स्थिति अत्यन्त मज़बूत बना ली थी। उसने सर्वप्रथम यूरोप के राजाओं तथा धार्मिक नेता पोप का समर्थन प्राप्त किया। पोप ने आशीर्वाद के रूप में विलियम को अपना झण्डा (Flag) भी प्रदान किया जिससे उसे और भी सहयोग मिल गया। जब हेरोल्ड को विलियम की आक्रमण के लिए तैयारी का समाचार मिला तो उसने भी अपनी तैयारी आरम्भ कर दी। लेकिन इसी दौरान इंग्लैंड के शासन के एक दावेदार नार्वे के राजा ने यार्कसायर पर आक्रमण कर दिया। हेरोल्ड ने शीघ्रता के साथ यार्कसायर पर पहुंच कर शत्रु को परास्त कर दिया, परन्तु इस संग्राम में उसे काफ़ी हानि उठानी पड़ी। यह युद्ध हेस्टिंग के युद्ध से 1 माह पूर्व यानी सितम्बर, 1066 ई० में हुआ।

27 सितम्बर, 1066 को विलियम अपनी सेना के साथ इंग्लिश चैनेल पार करता हुआ, इंग्लैंड के तट पर आ गया तथा हेस्टिंग के मैदान में अपनी सेना का पड़ाव डाल दिया तथा आस-पास के क्षेत्रों में लूटमार आरम्भ कर दी। हेरोल्ड इस समय यार्कसायर पर था। 1 अक्तूबर, 1066 को हेरोल्ड को विलियम के इंग्लैण्ड में प्रवेश का समाचार मिला तो

वापस वहां से लन्दन (London) आया और सेना एकत्रित की तथा 11 अक्तूबर को लन्दन से चलकर 13 अक्तूबर की रात्रि में हेस्टिंग के पास जा पहुंचा और उचित स्थान की तलाश करके अपनी सेना को व्यूह बद्ध कर दिया तथा युद्ध का श्री गणेश हो गया।

तुलनात्मक सैन्य शक्ति
(Comperative Military Strength)

सैनिक इतिहासकारों ने फ्रांस के शासक विलियम तथा इंग्लैंड के शासक हेरोल्ड की सेना का अलग-अलग रूपों में उल्लेख किया है। अब हम दोनों का उल्लेख करते हैं—

फ्रांस की सेना—विलियम के अधीन फ्रांस की सेना मुख्य रूप से तीनों भागों में संगठित की गई थी जिसकी सैनिक संख्या इस प्रकार से बतायी गयी है—

पैदल धर्नुधारी (1000 सैनिक)

कवच युक्त पैदल सेना (6000 सैनिक)

कवचयुक्त अश्वारोही सेना (3000 सैनिक)

इंग्लैण्ड की सेना—हेरोल्ड के नेतृत्व में इंग्लैण्ड की सेना का संगठन भी प्रमुख रूप से तीन प्रकार से किया गया था। इसकी सेना में केवल पैदल सेना का ही गठन किया गया था। सेना में निम्नलिखित तीन प्रकार के सैनिकों को संगठित किया गया—

1. सामान्य सेवक (House Corls) (1200 सैनिक)
2. मध्यम तथा उच्च श्रेणी के सैनिक (4000 सैनिक)
3. कवचरहित कृषक सैनिक (800 सैनिक)

इस प्रकार हेरोल्ड की अनुमानित सैन्य शक्ति 6000 से 7000 के मध्य वर्णित की गयी है।

फ्रांस की सेना के हथियार
(Weapons of France Army)

फ्रांसीसी सेना के द्वारा इस युद्ध में निम्नलिखित प्रमुख हथियारों का उपयोग किया गया था—

1. धनुष-बाण (Bow and Arrow)
2. भाला (Spear)
3. तलवार
4. पतंगाकार ढाल
5. सुरक्षा कवच

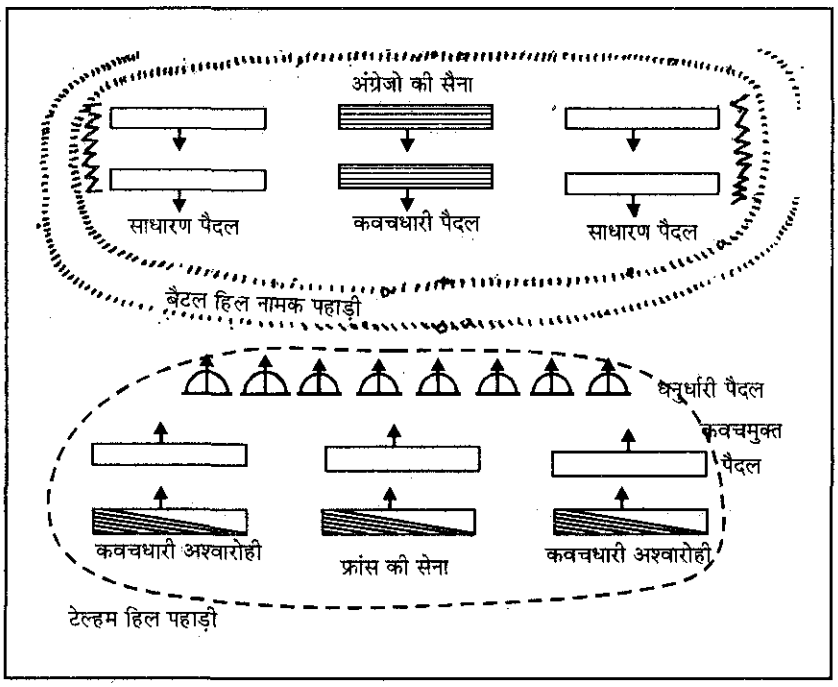

चित्र—हेस्टिंग का संग्राम 1066 ई०

इंग्लैण्ड की सेना के हथियार
(Weapons of England's Army)

इंग्लैण्ड की सेना के द्वारा इस युद्ध में निम्नलिखित प्रमुख हथियारों का उपयोग किया गया था—

1. तलवार (Sword)
2. भाला (Spear)
3. तिर्यक धनुष (Cross bow)
4. गदा (Club)
5. फरसा (Battle Axe)
6. कुल्हाड़ी (Axe)

सेनाओं का समरतान्त्रिक फैलाव
(Tactical Deployment of Armies)

फ्रांस की सेना—फ्रांस के सेनापति विलियम ऑफ़ नार्मेण्डी ने अपनी सेना का समरतान्त्रिक फैलाव तीन भागों (बायां, दायां तथा मध्यम) में किया था तथा इन तीनों भागों में से प्रत्येक भाग को पुन: तीन भागों में विभक्त तक रखा था, जिसमें सबसे आगे

अपनी धनुर्धारी सेना, मध्य भाग में भालाधारी सेना तथा सबसे पीछे अश्वारोही सेना को संगठित किया था। इसने अपनी सेना का फैलाव बैटल हिल (Battle Hill) के ठीक सामने स्थित टेलहम हिल (Telham Hill) पर किया था।

अंग्रेज़ों की सेना—इंग्लैण्ड के शासक हेरोल्ड ने अपनी सेना का समरतान्त्रिक फैलाव इस प्रकार से किया कि शत्रु पार्श्व से उस पर आक्रमण न कर सके। उसने बैटल हिल (Battle Hill) नामक ऊंची पहाड़ी पर अपनी सेना को संगठित किया तथा आगे की ओर खाई खोद दी तथा पेड़ काट कर डाल दिये, जिससे शत्रु सीधा आक्रमण न कर सके। इस प्रकार प्रतिरक्षात्मक स्थिति अपना कर दोनों पार्श्वों को सुरक्षित कर लिया। अपनी सेना का फैलाव फैलेंक्स संगठन के आधार पर किया। इसने साधारण पैदल सेना को दोनों पार्श्व में तथा कवचधारी सेना को मध्य भाग में रखा।

वास्तविक संघर्ष
(Real Conflict)

14 अक्तूबर, 1066 को प्रात: कालीन 9 बजे युद्ध का आरम्भ, विलियम की सेना के आगे बढ़ने के साथ हुआ। विलियम ने अपनी सेना को बैटल हिल पहाड़ी के निकट ले जाकर हेरोल्ड की सेना पर ज़ोरदारी से बाण वर्षा आरम्भ कर दी, परन्तु फ्रांस की सेना को इसमें सफलता नहीं मिली, क्योंकि इनके बाण ऊपर की ओर सही निशाना ले पाने में सक्षम नहीं हो पा रहे थे। इसी दौरान अंग्रेज़ों की सेना ने अपने बर्छों एवं भालों के द्वारा ढाल में छिपे रहकर फ्रांसीसी सैनिकों का शिकार करना शुरू कर दिया। युद्ध के आरम्भिक चरण में फ्रांस की सेना को बहुत हानि उठानी पड़ी, क्योंकि इनकी सेना की स्थिति नीचे की ओर थी। ऊपरी क्षेत्र से अंग्रेज़ों के तीव्र प्रहार के सामने टिक नहीं सके और इनकी सेना को मज़बूर होकर वापस लौटना पड़ा। अंग्रेज़ों की तीव्र मार के कारण फ्रांस की सेना में आतंक छा गया तथा इसका दल वापस भाग आया।

इसी दौरान अंग्रेज़ों की सेना ने पहाड़ों से उतर कर इन फ्रांसीसी सैनिकों का पीछा किया। इसी समय अचानक विलियम की मृत्यु की अफवाह बड़ी तेज़ी के साथ फ्रांसीसी सेना में फैल गयी, जिसके कारण फ्रांसीसी सैनिक अत्यन्त भयभीत तथा निराश हो चुके थे। परन्तु इस दौरान हेरोल्ड की सेना ने पूरी तैयारी के साथ शत्रु का पीछा नहीं किया बल्कि एक टुकड़ी ही शत्रु का पीछा करती रही। जब काफ़ी दूर तक पहुंच गयी तो फ्रांसीसी सेना ने पलट कर उनका सामना किया और उन पर विजय प्राप्त कर ली। यदि इसी समय पूरी शक्ति के साथ हेरोल्ड विलियम की सेना पर आक्रमण कर देता तो उसकी विजय सुनिश्चित हो गयी थी।

इस बीच विलियम ने अपनी सेना को एकत्रित किया तथा उनके उत्साह को बढ़ाया तथा पुन: अपनी कवचयुक्त अश्वारोही सेना के द्वारा अंग्रेज़ों पर धावा बोल दिया, परन्तु दुबारा भी सफल नहीं हो सका। अब विलियम ने हेरोल्ड की सेना को प्रतिरक्षात्मक स्थिति से बाहर निकालने के लिए कूटियोजनात्मक चाल चली। इसी कूटियोजना के तहत उसने अपनी सेना को हेरोल्ड की सेना के पास तक ले जाना था तथा वापस भागने

का नाटक करना था। आखिरकार उसे अन्तिम चरण में इस चाल में सफलता मिल गयी और अंग्रेज़ों की सेना पहाड़ी से नीचे उतर आई। यद्यपि हेरोल्ड ने इन्हें रोका भी था परन्तु जोश के कारण वह नहीं माने। जिसका परिणाम यह हुआ कि फ्रांसीसी अश्वारोही सैनिक पहले भागने का नाटक करके उनको नीचे उतार लाये और मैदान में आते ही पलट कर उन सभी सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।

अभी हेरोल्ड के नेतृत्व में उसकी मध्यम भाग की कमाण्ड बैलट हिल में ही अपनी स्थिति बनाये हुए थी। उसको अपना शिकार बनाना फ्रांसीसी सेनाओं के सामने एक बड़ी चुनौती थी। लगातार फ्रांसीसी सेना के प्रयासों के बाद ऐसा लगा कि आज के दिन निर्णय हो पाना संभव नहीं हो सकता है। अन्तिम आक्रमण के रूप में विलियम ने अपनी धनुर्धारी सेना को पहाड़ी के ऊपर की ओर बाण वर्षा करने का आदेश दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि बाण अंग्रेज़ों की सेना के सिर के ऊपर गिर कर घायल करने लगे। अंग्रेज़ इस समय इतने थक चुके थे कि वह अपनी ढाल को शिरो से नहीं लगा सकते थे। इस कारण इन बाणों के प्रहार से अंग्रेज़ों की सेना में अव्यवस्था फैलने लगी। संयोगवश इसी समय एक बाण हेरोल्ड की आंख में जा लगा, जिससे वह बेहोश हो गया। नेतृत्व के अभाव में अंग्रेज़ी सेना बिखरने लगी। अन्ततः विलियम की सेना को अप्रत्याशित सफलता मिल गयी और इस निर्णायक युद्ध का विराम हो गया।

रोमन साम्राज्य के पतन के कारण

(Causes of downfall of Roman Empire)

पाश्चात्य सैन्य इतिहास में रोमन साम्राज्य का एक समय पूर्ण रूप से आधिपत्य था। रोम आधुनिक इटली राज्य की राजधानी है जो कि भूमध्य सागर के मध्य में एक प्रायद्वीप है—रोम की सभ्यता जो कि पूर्व की सभ्यताओं (यूनान, मिस्र तथा मेसोपोटेमिया आदि) से प्रभावित थी, को पश्चिम के असभ्य लोगों के साथ लगातार संघर्ष करना पड़ा। रोम व्यापार का एक बहुत बड़ा केन्द्र था और एक सुरक्षित क्षेत्र भी था। रोम की सैनिक श्रेष्ठता एवं व्यूह रचना उत्तम श्रेणी की थी जिसके आगे शत्रु साधारणतया टिक नहीं पाता था वह 'सशस्त्र व्यूह' प्रणाली का प्रयोग करते थे। लीजन सैन्य संगठन को विविध भौगोलिक स्थलों पर युद्ध करने का प्रशिक्षण प्राप्त था। इसके साथ इसके सैन्य दल को अलग-अलग करके एक साथ लड़ने का पूरा अभ्यास था। समय के साथ रोमन साम्राज्य जहां विस्तृत होता गया, वहीं इसमें अनेक कमियां भी आती गयीं जो रोमन साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण बनीं—

1. रोमन साम्राज्य इतना विस्तृत था कि उसे संभालने के लिए एक शक्तिशाली, कुशल एवं दक्ष शासक चाहिए था। आगस्टक सीज़र के बाद कोई भी ऐसा शक्तिशाली शासक नहीं हुआ।

2. इतने विशाल साम्राज्य को सुरक्षित रखने के लिए बड़ी सेना की आवश्यकता होती

है। रोमन सेना में अन्य जातियों के भर्ती होने से उनका ध्यान लूट-खसोट पर जाने लगा जो रोमन सैनिकों की एक प्रमुख कमज़ोरी थी।

3. साम्राज्य के शासक सेना पर आश्रित थे। अधिकांश प्रादेशिक सेनापति इस दौरान महत्त्वाकांक्षी हो गये थे और उनमें राष्ट्रीय भावना का स्तर निरन्तर गिरता गया, जिसके कारण शासक कमज़ोर होते गये।

4. साम्राज्य का प्रशासन अत्यन्त खर्चीला व भोग विलासी बन गया था, जिसके कारण राज्य के कर्मचारी रिश्वतखोर व अयोग्य हो रहे थे जहां एक ओर जबरन वसूली करते थे वहां दूसरी ओर राजकोष का पैसा गबन करने में भी नहीं चूकते थे। उनकी सम्राट् भक्ति संदेहात्मक थी, जिससे शासन के पतन का सिलसिला जारी रहा।

5. लगातार अनेक युद्धों का सामना करने के कारण विश्व के इस व्यापारिक केन्द्र का व्यापार विकास ठप्प हो गया और बेरोज़गारी व ग़रीबी बढ़ने से समाज में असन्तोष, हिंसा एवं लूटपाट का बोलबाला बढ़ता गया। बाहरी आक्रमण के समय नागरिक अपने ही नगरों को लूटने लगे थे।

6. वर्ग संघर्ष बहुत बढ़ गया था। कानून का राज्य समाप्त हो गया था। राज्य के प्रति भक्ति एवं भावना निरन्तर कमज़ोर होती गयी।

7. रोमन शासक गुलामों पर आश्रित थे। गुलाम रोम के आर्थिक जीवन के आधार थे, परन्तु उनका स्वयं का जीवन नारकीय (hell) था। वे भी समय पाकर शासक का विरोध एवं विद्रोह करने लगे थे, जिससे आन्तरिक सुरक्षा स्थिति निरन्तर कमज़ोर होती चली गयी।

8. राज्य द्वारा ईसाइयों पर अत्याचार, द्वन्द्व एवं हिंसक युद्ध घटनाओं के कारण शासन की बागडोर निरन्तर ढीली होती गयी।

9. आपसी धार्मिक मतभेद बढ़ जाने के कारण सामाजिक व्यवस्था सामाजिक विद्रोह में बदलने लगी थी क्योंकि साम्राज्य में विभिन्न जातियों, धर्मों एवं सम्प्रदाय के लोग रहते थे।

10. रोम के नागरिक रक्त मिश्रित होने लगे। पहली शताब्दी में टेकीटश लिखता है कि नीरो के दिनों में **"सभी दिशाओं से सभी शैतान और शर्मनांक व्यक्ति रोम में आ जाते थे और वे यहां आकर फैशनेबल बन जाते थे।"**

11. लगातार बाह्य आक्रमणों के कारण रोम का साम्राज्य नष्ट हो गया।

उपरोक्त कारणों से स्पष्ट हो गया कि अनेक कमियों के कारण विशाल रोमन साम्राज्य आखिरकार धराशाही हो गया।

युद्ध का परिणाम
(Result of War)

हेस्टिंग के युद्ध के बाद नार्मन सेना को पता लगा कि टोर्सोटैक्ड मारा गया और इंग्लैंड की सबसे बड़ी सेना पराजित होकर समाप्त हो चुकी है फिर भी विलियम अभी इंग्लैण्ड का स्वामी या शासक नहीं बना था। केवल दक्षिण एवं पूर्व के इलाके ही उसके कब्जे

में अभी आ पाये थे। विलियम अभी 'विजयी' नहीं बना था। किन्तु उसका भाग्य उसका साथ लगातार दे रहा था चूंकि अंग्रेज़ों के (आंग्ल सैक्सन जाति) आपसी मतभेद बहुत अधिक थे और कोई योग्य ब्रिटिश नेता भी नहीं था, जो विलियम के विरुद्ध युद्ध अभियान चलाता। गजनवी और गोरी के दिनों में जो हिन्दुओं की दशा थी वही स्थिति यहां सैक्सन जाति की थी। उन्हें अपने ऊपर आई मुसीबतों का भी अनुमान नहीं था और विदेशी के विरुद्ध एकत्रित होकर नहीं लड़ पाये और विलियम धीरे-धीरे सब पर विजयी बना। वाईटन लन्दन में थी उसने एडमण्ड लौह पुरुष के पोते एडगर को राजा चुन लिया। जब विलियम अपनी सेना लेकर लन्दन पहुंचा तो वहां एडगर स्वयं वाईटन के सभी सदस्यों के साथ उसका स्वागत करने आगे पहुंचा और उसे (विलियम) इंग्लैण्ड का राजा बनने का अनुरोध किया। विलियम ने लन्दन पर अपना अधिकार जमा लिया और वहीं 25 दिसम्बर, 1066 को उसका एक समारोह में राज्याभिषेक भी कर दिया गया। 1069 में जब डेनमार्क के राजा स्वीन (Sweyn) के द्वारा इंग्लैण्ड पर हमला किया गया और यार्क पर कब्ज़ा कर लिया तो विलियम ने नाराज़ होते हुए और इंग्लैण्ड "उत्तर का नाश" करते हुए, विजय प्राप्त की और अन्ततः समस्त इंग्लैण्ड का शासक बन गया।

सैनिक शिक्षायें
(Military Lessons)

हेस्टिंग के महत्त्वपूर्ण एवं निर्णयात्मक संग्राम से हमें निम्नलिखित सैनिक शिक्षायें मिलती हैं—

1. युद्धों में कुशल नेतृत्व सदैव सफलता का सक्रिय सहयोगी होता है, जैसा कि इस युद्ध में विलियम ने अपने कुशल नेतृत्व का परिचय देते हुए हारी हुई बाजी को विजय में परिणित कर दिया। इसके विपरीत कुशल नेतृत्व के अभाव में जीती हुई परिस्थिति में भी हार हो गई।

2. युद्ध में सफलता पाने के लिए आवश्यक है कि बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार काम किया जाना जाहिए। इनकी अवहेलना करने पर पराजय के अवसर अधिक बढ़ जाते हैं, जैसा कि हेरोल्ड के साथ हुआ और जीती हुई बाजी भी हार गया, क्योंकि उसने मिले मौके का फायदा नहीं उठाया।

3. युद्ध में उसी पक्ष को सदैव सफलता मिलती है, जो पक्ष अपनी योजना के अनुसार शत्रु को लड़ने के लिए मजबूर कर देता है, जैसा कि इस युद्ध में विलियम अपनी योजना के अनुसार अंग्रेज़ों की सेना को नीचे बुलाकर उनका सफाया करने में सफल हुआ।

4. इस युद्ध से यह सिद्ध हुआ कि सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित पैदल सेना को श्रेष्ठ अश्वारोही सेना तितर-बितर नहीं कर सकती तथा अच्छी से अच्छी पैदल सेना भी सुव्यवस्थित अश्वारोही पर आक्रमण नहीं कर सकती है। दोनों के सहयोग से विजय को आसान बनाया जा सकता है।

5. सेनाओं का आपसी सहयोग महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, जैसा कि फ्रांसीसी

सेना के अश्वारोही तथा पैदल सेनाओं के सहयोग से ही अंग्रेज़ों पर अप्रत्याशित सफलता प्राप्त की।

6. युद्ध में सेनाओं का अनुशासन एवं मनोबल महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इनके अभाव में पराजय ही मिलती है, जैसा कि हेरोल्ड की सेना में अनुशासन एवं मनोबल की कमी पराजय के लिए उत्तरदायी थी। इसीलिए तो पोलबियस महोदय के ठीक ही लिखा है—

"Of all the forces which are important in war, the spirit of warrior is the most decisive one."

7. युद्ध में शत्रु को हमेशा धोखे में रखना भी सफलता का सच्चा सहयोगी माना गया है, जैसा कि इस युद्ध में विलियम ने हेरोल्ड की सेना को नीचे उतार कर अचानक उस पर आक्रमण करके उसको चकित कर दिया और सफलता हासिल की। इसीलिए तो जनरल फुलर ने इस सन्दर्भ में लिखा है—

"Surprise is the soul of every operation, the secret of victory and the key of Success."

8. युद्ध में सफलता के लिए श्रेष्ठ हथियार भी सच्चे सहयोगी होते हैं, जैसा कि इस युद्ध में फ्रांस की सेना के धनुष बाण ने निर्णायक भूमिका अदा की। जनरल फुलर ने इसीलिए तो कहा है कि—

"Tools or weapons, if only the right one can be discovered from 99% of victory."

9. युद्ध में उसी पक्ष को सफलता मिलने के अधिक अवसर रहते हैं, जो पक्ष आक्रामक स्थिति (Offecive action) को अपनाता है, जैसा कि इस युद्ध में फ्रांस ने आक्रामक पहल करके सफलता प्राप्त की, क्योंकि इससे उसे समय, स्थान एवं उत्साह आदि का लाभ मिल जाता है।

10. युद्ध में गतिशीलता तथा लचकता के सिद्धान्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जैसा कि इस युद्ध में फ्रांसीसी गतिशील अश्वारोही सेना के बल पर ही विलियम को अपनी कार्यवाही करने में सहयोग मिला तथा सफलता प्राप्त की।

इस प्रकार इस युद्ध का इंग्लैण्ड के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि इस निर्णयात्मक युद्ध ने इतिहास की धारा को एक नया मोड़ दिया। इस सन्दर्भ में जनरल जे० एफ० सी० फुलर महोदय ने लिखा है कि—

"For England, Hastings was not only the most decisive battle ever fought on her soil, but also the most decisive in her history, infact, there is no other battle which compares with it in importance."[1]

अत: इस युद्ध के सामरिक विवेचन के आधार पर यह सिद्ध होता है कि दृढ़ संकल्प एवं पक्के इरादे के साथ जब कोई अभियान आरम्भ करते हैं तो सफलता भी स्वयं उसके

1. J.F.C. Fuller— The Decisive battle of western world. Vol. I Page 383.

साथ चलने को मज़बूर हो जाती है, जैसा कि इस युद्ध में विलियम को सफलता मिलती गयी।

4. क्रेसी का युद्ध : 1346 ई० (Battle of Cracy : 1346 A.D.)

क्रेसी का प्रसिद्ध संग्राम फ्रांस एवं इंग्लैण्ड के मध्य 1346 ई० में लड़ा गया। यह युद्ध फ्रांस केन्द्र शासक फिलिप ऑफ़ वैलाइस (Philip of Valois) जिसे फिलिप षष्टम (Philip VI) के नाम से भी जाना जाता था, उसका सामना अंग्रेज़ शासक एडवर्ड तृतीय (Edward III) के साथ हुआ। सैनिक दृष्टिकोण से यह युद्ध सर्वाधिक निर्णयात्मक तथा महत्त्वपूर्ण माना गया। इस युद्ध में पैदल सेना ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करके यह प्रमाणित कर दिया कि पैदल सेना युद्ध क्षेत्र की रानी (Queen of Battle field) है और आधुनिक समय तक अपना स्थान बनाये हुए है। इस युद्ध ने यह भी प्रमाणित कर दिया कि महत्त्वपूर्ण सफलता पाने के लिये यह आवश्यक है कि सेनाओं में अनुशासन तथा श्रेष्ठ हथियार होने चाहिएं, न कि विशाल सैनिक संख्या। इस युद्ध के साथ ही एक युग की समाप्ति तथा नवीन युग अर्थात् बारूद के युग का आरम्भ हो गया। इस संग्राम का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि इंग्लैण्ड का उत्साह बढ़ गया और वह सैनिक राष्ट्र के रूप में सम्मानित हुआ।

प्रस्तावना (Introduction)—एडवर्ड तृतीय फ्रांस के राजा चार्ल्स चतुर्थ (Charls IV) की बड़ी बहन ईशावेला और एडवर्ड द्वितीय का पुत्र था। जब उसे अक्यूटेन (Aquitaine) का इलाका अपने पिता से प्राप्त हुआ तो उसे भी अपने पिता एवं दादा (Grand Father) की तरह चार्ल्स चतुर्थ के प्रति प्रभुता की शपथ लेनी पड़ी। इंग्लैण्ड का राज्य एडवर्ड तृतीय को 15 वर्ष की अवस्था में ही प्राप्त हो गया था। लगभग एक वर्ष के पश्चात् चार्ल्स की मृत्यु हो गयी और फ्रांस की गद्दी में उसके चचेरे भाई ने फिलिप षष्टम् के नाम से फ्रांस की बागडोर सम्भाली। फिलिप के गद्दी पर बैठने के बाद एडवर्ड तृतीय की माता ने फ्रांस के सिंहासन के लिए दावा किया, परन्तु इंग्लैण्ड की परिस्थितियों को देखकर फिलिप ने एडवर्ड के पास यह संदेश भेजा कि केवल उसी ने अभी तक मेरे प्रति प्रभुता की शपथ नहीं ली है, यदि आपने शीघ्र ही ऐसा नहीं किया तो वह अक्यूटेन की जागीर जब्त कर लेगा। इसीलिए अन्त में एडवर्ड को भी उसके प्रति प्रभुता की शपथ लेने के लिए मज़बूर होना पड़ा, परन्तु यह सब अपने हितों को सुरक्षित रखने के लिए राजनीतिक चालें थीं।

जब फिलिप ने गाइनी का इलाका जब्त करने का आदेश दिया तो तुरन्त ही एडवर्ड तृतीय फ्रांस का दावेदार बन गया और समानता के स्तर में संघर्ष आरम्भ कर दिया। यहीं से फ्रांस एवं इंग्लैण्ड के मध्य 100 वर्षों के युद्ध की शुरुआत हो गयी। इस लम्बे युद्ध का एक अन्य कारण यह था कि रोमन साम्राज्य तथा पोप की शक्ति का ह्रास हो चुका था। इसके साथ ही फ्रांस इंग्लैण्ड के विरुद्ध स्काटलैण्ड की सहायता कर रहा था और इंग्लैण्ड फ्रांस के विरुद्ध फ्लैन्डर्स में हस्तक्षेप कर रहा था। इस प्रकार दोनों ने एक-दूसरे

के खिलाफ जोरदार अभियान आरम्भ कर दिये। एडवर्ड ने जुलाई, 1346 में अपनी सेना को फ्रांस की सीमा की ओर बढ़ाया और 2 अगस्त को किसी प्रकार से सोम नदी (Somme River) को पार करके फलैण्डर्स वापस आ गया। फिलिप ने इसका पीछा किया तथा जिस समय फ्रांसीसी सेना सोम नदी पार कर रही थी, एडवर्ड ने क्रेसी के निकट रक्षात्मक स्थिति बनाकर सामना करने की योजना बना ली।

तुलनात्मक सैन्य शक्ति
(Comperative Military Strength)

अब हम दोनों देशों की सैनिक संख्या का अलग-अलग उल्लेख करते हैं, जो इस प्रकार से थी—

अंग्रेज़ों की सेना—एडवर्ड तृतीय के नेतृत्व में अंग्रेज़ी सेना की कुल संख्या इस प्रकार से बतायी गई है—

शस्त्र युक्त सैनिक (Men-at-arms)	=	4000
धनुर्धारी सैनिक	=	11000
वेल्स पैदल सैनिक	=	5000
कुल सैनिक संख्या लगभग	=	20000

फ्रांस की सेना—फिलिप के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना की सैनिक संख्या इस प्रकार से बतायी गई है—

भारी अश्वारोही सेना	=	12000
हल्की अश्वारोही सेना	=	17000
तिर्यक धनुर्धारी सेना	=	6000
साधारण पैदल सेना	=	25000
कुल सैनिक संख्या लगभग	=	60,000

सेनाओं के हथियार
(Weapons of Forces)

अब हम दोनों राष्ट्रों के द्वारा इस युद्ध में प्रयोग किये जाने वाले हथियारों का अलग-अलग उल्लेख करते हैं—

अंग्रेज़ी सेना के हथियार—अंग्रेज़ी सेना के द्वारा इस प्रसिद्ध युद्ध में निम्नलिखित प्रमुख हथियारों का प्रयोग किया गया—

1. लम्बा धनुष
2. सामान्य धनुष

फ्रांसीसी सेना के हथियार—फ्रांस की सेना के द्वारा इस युद्ध में प्रमुख रूप से निम्नलिखित हथियारों का प्रयोग किया गया—

1. तिर्यक धनुष
2. तलवार
3. भाला
4. बरछी

सेनाओं का समरतान्त्रिक फैलाव
(Tactical Deployment of Armies)

अंग्रेज़ों की सेना का फैलाव—एडवर्ड तृतीय ने अपनी सेनाओं को 26 अगस्त, 1346 ई० को इस प्रकार से युद्ध क्षेत्र में लगाया। क्रेसी तथा वादीकूर्त (Wadicourt) के गांव के मध्य स्थित बैटल हिल (Battle Hill) नामक पहाड़ी पर अपने सज्जित सैनिक तथा पैदल सेना के सैनिकों को तीन भागों में विभक्त करके संगठित किया। सेना का दाहिना भाग प्रिन्स ऑफ़ वेल्स के नेतृत्व में, बायां भाग अर्ल ऑफ़ नार्थेम्पटन के नेतृत्व में तथा पृष्ठ भाग का नेतृत्व स्वयं एडवर्ड तृतीय ने किया। इस प्रकार से एडवर्ड ने अपनी सेना के दाहिने पार्श्व को नदी के द्वारा सुरक्षित कर लिया था तथा बायें भाग को पेड़ों की आड़ तथा खाइयों द्वारा सुरक्षित बना लिया था। एडवर्ड ने अपनी स्थिति इस प्रकार से रखी थी कि वह युद्ध की समस्त कार्यवाही का निरीक्षण सरलता के साथ कर सके तथा अपने अधीन अधिकारियों को तुरन्त कार्यवाही हेतु आदेश दे सके। अपनी सेनाओं को अंग्रेज़ी के वी (V) आकार में संगठित किया जैसा कि चित्र में दिया है। प्रत्येक डिवीजन के केन्द्र के पीछे एक छोटी-सी आरक्षित भारी अश्वारोही सेना को रखा था, जिससे फ्रांस की सेना द्वारा अगली पंक्ति में प्रवेश होने पर उन पर प्रत्याक्रमण किया जा सके। इसके साथ ही एडवर्ड ने फ्रांसीसी अश्वारोही सेना को नष्ट करने के लिए छोटे-छोटे गड्ढे खोद दिये थे।

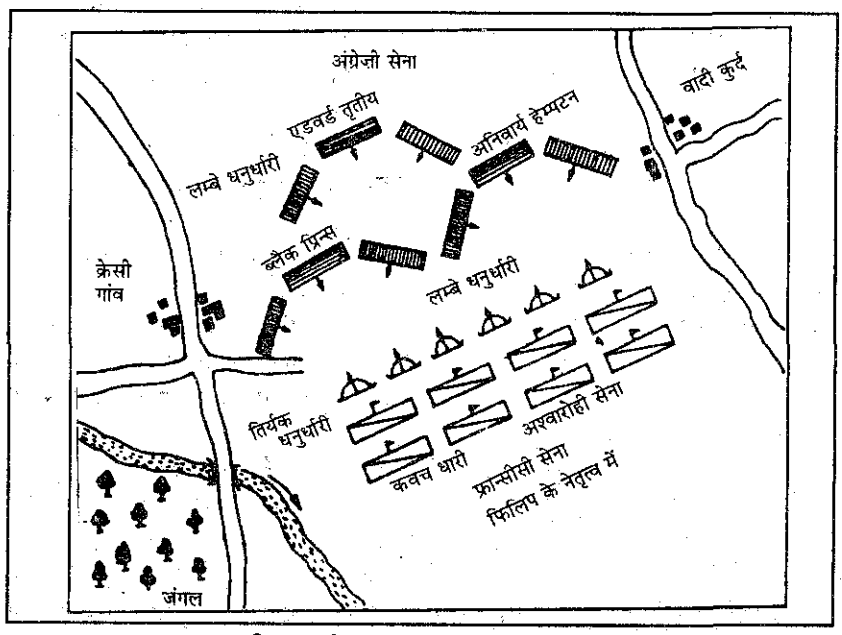

चित्र—क्रेसी का संग्राम 1346 ई०

फ्रांस की सेना का फैलाव—फिलिप को जब यह पता लगा कि एडवर्ड के नेतृत्व में अंग्रेज़ी सेना ने मोर्चेबन्दी कर ली है तो दस किलोमीटर की दूरी में फैली अपनी सेना को एकत्रित होने का आदेश दिया परन्तु विभिन्न सामन्तों में विभक्त सेना ने उसके आदेश की अवहेलना की। यद्यपि इसकी सेना में बहुत बड़ी संख्या में सूरमा (Knights) सैनिक एकत्रित हुए थे, परन्तु एकता एवं अनुशासन का इनमें पूर्ण अभाव था। अपनी प्रतिष्ठा के कारण कुछ सामन्तों ने युद्ध क्षेत्र में शीघ्रता के साथ पहुंच कर आक्रमण की पहल आरम्भ कर दी जबकि अभी पूरी फ्रांसीसी सेना युद्ध क्षेत्र से बहुत दूर थी। इस प्रकार फ्रांसीसी सेना का अनुभाग एक अव्यवस्थित सेना के रूप में संगठित हुआ। इसने भी अपनी सेना को तीन भागों में संगठित किया था जो इस प्रकार से थी—

पहला भाग—ऐलेनकोन के नेतृत्व में

दूसरा भाग—ड्यूक ऑफ़ लॉरेल व्यल्स के नेतृत्व में

तीसरा भाग—फिलिप व रोमन राजा के नेतृत्व में

वास्तविक संघर्ष
(Real Conflict)

फ्रांसीसी सेना का अग्र भाग ज्यों ही एडवर्ड तृतीय के मोर्चे के निकट पहुंचा तो फिलिप ने उन्हें अपनी सेना को पूरी तरह से एकत्रित होने तक आक्रमण से रोके रहने का प्रयास किया परन्तु फ्रांसीसी सैनिक युद्ध के लिए इतने उतावले हो रहे थे कि उन्होंने फिलिप के आदेश की अवहेलना करके युद्ध का आरम्भ कर दिया। यहां तक कि इन्होंने किसी प्रकार की कोई समरतान्त्रिक संरचना का भी प्रयोग नहीं किया। इस प्रकार अलग-अलग टुकड़ियों द्वारा अलग-अलग प्रकार से अंग्रेज़ी सेना पर आक्रमण किया जाने लगा, जिसका लाभ अंग्रेज़ी सेना ने पूरी तरह से उठाया। इसी समय जिनोइज धनुर्धारी सेनाओं को संगठित होने का अवसर मिल गया था। उन्होंने आगे बढ़कर अंग्रेज़ों पर बाण वर्षा आरम्भ कर दी।

इधर अंग्रेज़ों ने भी फ्रांसीसी सेनाओं के आक्रमण का ज़ोरदार जवाब देना शुरू कर दिया और अपने लम्बे धनुषों के द्वारा ज़ोरदार बाण वर्षा करके एक बार भय एवं आतंक सा पैदा कर दिया। अंग्रेज़ों की बाण वर्षा के सामने फ्रांसीसी सेना के सूरमा (Knights) भी नहीं ठहर सके। उनके कवच को भेद देने की क्षमता अंग्रेज़ों के तीरों में थी, इस कारण उसके अनेकों घोड़े भी युद्धक्षेत्र में मारे गये। अंग्रेज़ी सेना के लम्बे धनुर्धारी सैनिक अत्यन्त निशानेबाज भी थे जिसके परिणामस्वरूप फ्रांसीसी सेना लाशों के ढेर में बदलने लगी।

इस प्रकार फ्रांसीसी अश्वारोही सेना ने कम-से-कम पन्द्रह बार अंग्रेज़ी सेनाओं पर आक्रमण किये परन्तु अंग्रेज़ों की धनुर्धारी सेना के कारण उसकी मोर्चेबन्दी को तोड़ने में सफलता नहीं मिल सकी। इस तरह फ्रांसीसी सेना के सभी प्रयास लगभग विफल हो गये। इस पूरे युद्ध में इतने अधिक संख्या में फ्रांसीसी सैनिक मारे गये कि बचे हुए सैनिकों की हिम्मत नहीं हुई कि अब उनके आक्रमण के लिए विचार भी कर सकें। इसी कारण बचे हुए अश्वारोही फ्रांसीसी सैनिक भाग खड़े हुए। फिलिप स्वयं घायल हो गया था

और वह भी मैदान से भाग गया था। इस प्रकार अंग्रेज़ों के धनुर्धारियों ने अपनी कुशलता का परिचय देकर फ्रांस को बुरी तरह से पराजित होने के लिए मज़बूर कर दिया तथा इस ऐतिहासिक एवं निर्णयात्मक युद्ध की समाप्ति हो गई। शनिवार 26 अगस्त, 1346 की रात्रि में क्रेसी के संग्राम का अन्त हुआ।

युद्ध से हानि
(Damage by War)

इस युद्ध में फ्रांसीसी सेना को अंग्रेज़ी सेना की तुलना में बहुत अधिक हानि उठानी पड़ी। इसमें फ्रांस के 1542 लार्ड, सूरमा (Knights) मारे गये तथा अनगिनत योद्धा मौत के शिकार हो गये थे। जबकि अंग्रेज़ी सेना के बहुत थोड़ी संख्या में सैनिक मौत के शिकार हुए थे।

युद्ध का परिणाम
(Result of War)

क्रेसी की विजय और उसके पश्चात् प्वाइन्टियर्स की सफलता से यूरोपीय महाद्वीप में अंग्रेज़ों की युद्ध सम्बन्धी योग्यता एक बार पुनः स्थापित हो गयी। इससे पहले महाद्वीपीय सेनानायक अंग्रेज़ों को निम्नकोटि का सैनिक समझकर सम्मानजनक दृष्टि से नहीं देखते थे। इस संदर्भ में इटली के पेटार्क लिखते हैं। "हमारी नवयुवावस्था में ब्रिटिश लोग बर्बर राष्ट्रों में सबसे कायर समझे जाते थे, किन्तु अब यह सबसे अधिक युद्ध लिप्त जाति है। इंग्लैण्ड ने अप्रत्याशित विजयों की अत्यधिक संख्या द्वारा फ्रांस के प्राचीन सैनिक गौरव का सम्मान ध्वस्त हो गया और उन्हें महाविपत्ति का सामना करना पड़ा जिसके वे पात्र नहीं थे, जिसका ध्यान आने पर आह निकल पड़ती है। लेकिन उन्होंने अपनी बहादुरी से सम्पूर्ण परिस्थिति को बदला।" फ्रांस की सेना ने सैन्य शक्ति रखते हुए भी योजनाबद्ध तरीके से कार्य नहीं किया जिसके कारण उन्हें एक अप्रत्याशित सफलता का सामना करना पड़ा। जे० एफ० सी० फुलर ने अपनी पुस्तक में जॉन मॉरिस का यह कथन उल्लिखित किया है—

"Cracy war as it were an accident."
(क्रेसी युद्ध की घटना एक दुर्घटना जैसा था)

सैनिक शिक्षाएं
(Military Lessons)

क्रेसी के इस महत्त्वपूर्ण एवं निर्णयात्मक संग्राम में हमें निम्नलिखित सैनिक शिक्षाएं मिलती हैं—

1. युद्धों में सेनाओं का अनुशासन एवं मनोबल महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसके अभाव में पराजय का ही सामना करना पड़ता है, जैसा कि इस युद्ध में फ्रांसीसी सेना में अनुशासन का अभाव रहा। इसी कारण फिलिप के आदेश की अवहेलना करके परिस्थितियों के ध्यान दिये बिना ही आक्रमण कर दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि सैनिक संख्या अधिक होते हुए भी पराजित होना पड़ा।

2. युद्ध में सफलता पाने के लिए आवश्यक है कि बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप काम किया जाना जाहिए। इसकी अवहेलना करने पर पराजय के अवसर अधिक बढ़ जाते हैं, जैसा कि फिलिप की सेनाओं ने परिस्थितियों के अनुसार काम नहीं किया और पराजित होना पड़ा।

3. युद्ध में वही पक्ष सदैव सफल होता है जो अपनी योजना के अनुसार शत्रु को लड़ने के लिए मज़बूर कर देता है। जैसा कि इस युद्ध में एडवर्ड ने अपनी योजना के अनुसार फ्रांस की सेना को बुरी तरह से मरने के लिए मज़बूर कर दिया।

4. सेनाओं का आपसी सहयोग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अभाव में कभी में सफलता नहीं मिलती, जैसा कि इस युद्ध में फ्रांसीसी सेनाओं में सहयोग का अभाव था। विभिन्न सामन्तों ने अपने-अपने ढंग से आक्रमण किया, अन्ततः उन्हें पराजित होना पड़ा।

5. इस युद्ध ने यह प्रमाणित कर दिया कि सफलता प्राप्त करने के लिए अधिक संख्या का महत्त्व न होकर सामरिक तकनीकी तथा संघटनात्मक विकास का महत्त्व अधिक होता है। जैसा कि एडवर्ड की सेना ने इसी के बल पर अप्रत्याशित सफलता प्राप्त की जबकि अधिक सैनिक संख्या होते हुए भी फ्रांस को पराजित होना पड़ा।

6. किसी भी युद्ध में कार्यवाही करने के पूर्व उसकी योजना निर्धारित करना तथा उसी के अनुसार कार्यवाही सदैव सफलता की सहयोगी होती है, जैसा कि इस युद्ध में एडवर्ड ने अपनी योजना के अनुसार कार्यवाही करके महत्त्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की।

7. इस युद्ध ने यह प्रमाणित कर दिया कि श्रेष्ठ हथियार सदैव ही निर्णायक भूमिका अदा करने में अग्रणी रहे हैं, जैसा कि इय युद्ध में अंग्रेज़ों के लम्बे धनुष-बाणों ने अपने तीव्र प्रहार से फ्रांसीसी, कवचधारी अश्वारोही तथा पैदल सेना को पराजय स्वीकार करने के लिए मज़बूर कर दिया। इस सन्दर्भ में जनरल जे० एफ० सी० फुलर महोदय का वह कथन विशेष रूप से उल्लेखनीय है—

"Tools or weapons, if only the right ones can be discovered from 99% of Victory."

(यदि श्रेष्ठ प्रकार के हथियारों अथवा यंत्रों की खोज कर ली जाये तो 99 प्रतिशत विजय हासिल की जा सकती है।)

8. इस युद्ध ने श्रेष्ठ एवं अनुशासित पैदल सेना के महत्त्व को एक बार पुनः प्रमाणित कर दिया तथा इसके अभाव में सफलता प्राप्त करना संभव नहीं हो सकता है।

9. श्रेष्ठ हथियारों के अभाव में गतिशील अश्वारोही सेना भी युद्ध क्षेत्र में अपना प्रभुत्व स्थापित कर पाने में समर्थ नहीं हो सकती है, जैसा कि इस युद्ध में हुआ।

10. सेनाओं का समुचित रूप से प्रयोग करने पर ही सफलता मिलती है तथा इसकी अवहेलना पर पराजय ही प्राप्त होती है, जैसा कि इस युद्ध में फिलिप की पराजय हुई।

इस संग्राम में फ्रांसीसी घुड़सवार सैनिक मैदान तक सवार होकर गये, किन्तु वहां उतर

गये और उन्होंने पैदल लड़ने का प्रयत्न किया। भारी कवच के कारण धीरे-धीरे चल पाते थे, इसलिए उनकी सेना का प्रत्येक डिवीजन युद्ध की कार्यवाही में अगले डिवीज़न से पराजित हो जाने पर ही अकेले भाग लेता था। अनेक शूरवीर एक आघात करने के पूर्व केवल कूच करने के श्रम के कारण थक कर चूर हो जाते थे और लड़ने की क्षमता क्षीण हो जाती है। इस पराजय के साथ ही सामन्तशाही व्यवस्था धराशाही होने लगी, इसके पीछे केवल अंग्रेज़ों का लम्बा धनुष ही नहीं था, बल्कि राष्ट्रीय सेना का विचार भी था। अश्वारोही सेना के युग को अंतिम अवस्था में ला दिया।

5. अश्वरोही सेना के पतन के कारण
(Causes of the decline of Cavalry)

क्रेसी के निर्णायक युद्ध के साथ ही पैदल सेना को अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा प्राप्त हो गई और उसके परिणामस्वरूप अश्वारोही सेना जो एक लम्बे समय तक गतिशीलता के कारण सेना के प्रमुख अंग के रूप में थी, उसका महत्त्व समाप्त हो गया। इस युद्ध ने प्रमाणित कर दिया कि श्रेष्ठ एवं अनुशासित आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों से युक्त पैदल सेना प्रत्येक प्रकार की परिस्थितियों में कार्य करने की विशाल क्षमता रखती है। यही कारण है कि इस ऐतिहासिक युद्ध के साथ ही प्राचीन पैदल सेना ने अपनी सफलता का प्रमाण देकर अश्वारोही सेना के महत्त्व को सदा के लिए ही समाप्त कर दिया, जबकि इस युद्ध के पूर्व लगभग 100 वर्षों तक अश्वारोही सेना युद्धों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती थी तथा प्रधान सेना की उपाधि भी इस अंग को ही प्राप्त थी।

अब हम उन प्रमुख कारणों का सविस्तार वर्णन करते हैं, जिन्होंने पैदल सेना को पुनः युद्ध क्षेत्र की महारानी (Queen of Battle Field) बना दिया तथा प्रधान सेना के रूप में जानी जाने वाली अश्वारोही सेनां का पतन हो गया। इसके लिए निम्नलिखित तत्त्व उत्तरदायी थे—

1. नवीन सामरिकी का अभाव
2. नवीन संरचना का अभाव
3. नवीन हथियारों का अभाव
4. गतिशीलता का अभाव
5. पैदल सेना द्वारा नवीन शस्त्रों का प्रयोग
6. आग्नेय हथियारों का आरम्भ
7. किलेबन्दी का विकास
8. आपूर्ति व्यवस्था का महत्त्व
9. नवीन प्रकार का समरतन्त्र
10. राष्ट्रीय सेना की स्थापना
11. कवचित घुड़सवार सैनिक

1. नवीन सामरिकी का अभाव (Lack of New Tactics)—अश्वारोही सेना ने क्रेसी के संग्राम (1346 ई०) से पूर्व लगभग 1000 वर्ष तक युद्धों में प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया। इसी कारण इसे प्रधान सेना भी माना जाता रहा, परन्तु इसके पतन का एक प्रमुख कारण यह भी था कि अश्वारोही सेना ने अपनी प्राचीन परम्परागत सामरिकी का ही प्रयोग किया। उसमें समय एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन नहीं किये गये जोकि इसके पतन का एक प्रमुख कारण प्रमाणित हुआ।

2. नवीन संरचना का अभाव (Lack of New Formation)—अश्वारोही सेना ने अपनी सेना की यौद्धिक संरचना (Battle Formation) में भी कोई परिवर्तन नहीं किया जबकि इसके विपरीत पैदल सेना ने अपनी संरचनाओं में परिवर्तन करके अश्वारोही सेना की प्रमुखता को समाप्त कर दिया और स्वयं युद्ध क्षेत्र की रानी (Queen of Battle Field) के रूप में विख्यात हो गई। अपनी ठोस संरचना एवं नवीन हथियारों के प्रयोग से उसने युद्ध क्षेत्र में अपनी महारत हासिल कर ली।

3. नवीन हथियारों का अभाव (Lack of New Weapons)—अश्वारोही सेना के द्वारा एक लम्बी अवधि तक प्राचीन परम्परागत हथियारों का ही इस्तेमाल किया जाता रहा जिसके कारण इसके समरतन्त्र में भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ तथा इसके विपरीत पैदल सेना ने नवीन प्रकार के हथियारों का प्रयोग किया, जैसे—क्रेसी के युद्ध में लम्बे धनुषों के प्रयोग से फ्रांसीसी अश्वारोही सेना पर कहर ढा दिया। इस प्रकार से अश्वारोही सेना के द्वारा नवीन हथियारों का अभाव भी उसके पतन का एक प्रमुख कारण प्रमाणित हुआ।

4. गतिशीलता का अभाव (Lack of Mobility)—जहां अश्वारोही सेना का उत्थान एवं युद्ध क्षेत्र में प्रमुख स्थान उसकी गतिशीलता के कारण प्राप्त हुआ था वहां कुछ अरसे के बाद अश्वारोही सेना को कवचयुक्त करके उसकी गतिशीलता को कम कर दिया। जिसका प्रभाव यह हुआ कि एक ओर इसकी गतिशीलता का पतन हुआ वहां दूसरी ओर शत्रु को तेज़ी से कार्यवाही करके धोखे में डालने की कला का पतन भी हो गया जो प्रमुख रूप से अश्वारोही सेना के पतन के प्रति उत्तरदायी प्रमाणित हुआ।

5. पैदल सेना द्वारा नवीन शस्त्रों का प्रयोग (Use of New Weapons by Infantary)—अश्वारोही सेना के पतन का एक प्रमुख कारण यह भी बना कि पैदल सेना द्वारा नवीन प्रकार के हथियारों का प्रयोग किया जाने लगा, जैसा कि क्रेसी के प्रसिद्ध संग्राम (1346 ई०) में अंग्रेज़ी पैदल सेना के द्वारा लम्बे धनुष-बाण के प्रयोग ने फ्रांसीसी कवचयुक्त अश्वारोही सेना को घुटने टेकने के लिए मज़बूर कर दिया था। पैदल सेना के इन नवीन शस्त्रों में सही लक्ष्य भेदन क्षमता, प्रबल प्रहारक क्षमता तथा शीघ्रता के साथ फायर क्षमता आदि गुण भी विद्यमान थे। इन्हीं प्रमुख कारणों से पैदल सेना पुनः युद्ध क्षेत्र में प्रमुख सेना मानी जाने लगी और अश्वारोही सेना का पतन हो गया।

6. आग्नेय हथियारों का आरम्भ (Evolution of Fire Arms)—जिस समय पैदल सेना के द्वारा प्रमुख हथियार के रूप में लम्बे धनुष-बाणों का प्रयोग किया जा रहा

था, उसी दौरान 14वीं शताब्दी में एक शक्तिशाली साधन की खोज कर ली गयी थी। वह थी—बारूद (Gun-Powder)। इसका प्रथम हथियार मस्टेक के नाम से जाना गया। इसने अपनी विशाल विध्वंसक एवं प्रहारक क्षमता के द्वारा सम्पूर्ण शक्ति अपने हाथों में ले ली, जिसका प्रमुख प्रयोग पैदल सेना द्वारा ही किया जाना आरम्भ हुआ, जिसका प्रमुख प्रभाव अश्वारोही सेना पर पड़ा और उसका पतन होना भी स्वाभाविक सा हो गया था।

7. किलेबन्दी का विकास (Evolution of Fortification)—धर्म युद्धों की शुरुआत हो जाने के कारण किलेबन्दी पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाने लगा, क्योंकि धर्म युद्ध करने वाले प्राय: किलों के अन्दर ही रहते थे। इस समय प्रत्येक राष्ट्र की सेनायें किलेबन्दी करके अपने को अधिक सुरक्षित महसूस करने लगी। पैदल सेना के द्वारा ही किलों का निर्माण, सुरंगों की खुदाई, खाइयों की खुदाई तथा गोलान्दाजी आदि का कार्य पैदल सेना के द्वारा ही किया जाने लगा। इस कारण से पैदल सेना का महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था तथा नवीन प्रकार के हथियारों के कारण इसका महत्त्व और भी बढ़ गया जिसके परिणामस्वरूप विगत वर्षों से प्रमुख सेना कही जाने वाली अश्वारोही सेना का पतन हो गया।

8. आपूर्ति व्यवस्था का महत्त्व (Importance of Logistics)—इस समय आपूर्ति व्यवस्था (Logistics) का युद्धों में विशेष महत्त्व बढ़ गया था, क्योंकि सेनायें बहुत दूर तक जाकर युद्ध करती थीं, जिससे विषम संभरण (Logistics) परिस्थितियों का सामना करना पड़ता था। अश्वारोही सेना के द्वारा आपूर्ति कर पाना संभव नहीं हो पाता था। इसी कारण पैदल सेना का महत्त्व बढ़ गया, जिससे अश्वारोही सेना का पतन होना स्वाभाविक ही था।

9. नवीन प्रकार का समरतन्त्र (Use of New Tactics)—क्रेसी के युद्ध के समय तक अनेक प्रकार के नवीन हथियारों का प्रयोग किया जाने लगा था, जिससे एक नवीन प्रकार के समरतन्त्र की शुरुआत हो गयी। इस समय लम्बे धनुषों (Long Bow) तथा बन्दूक तथा मस्केट आदि के प्रयोग से नवीन प्रकार की सामरिकी का जन्म हुआ, जिससे पैदल सेना की शक्ति में अत्यधिक वृद्धि हो गई, जबकि इन हथियारों के प्रयोग के अभाव में अश्वारोही सेना का पतन हो गया। इसी कारण नवीन प्रकार के समरतन्त्र के अभाव में अश्वारोही सेना का स्तर निरन्तर गिरता गया और अन्ततः 14 शताब्दी तक पूरी तरह से इसकी प्रभुसत्ता समाप्त हो गयी।

10. राष्ट्रीय सेना की स्थापना (Establishment of National Army)—अश्वारोही सेना के रूप में अधिकांश सामन्त सैनिक होते थे जो अपने अधीन भाड़े के सैनिकों को तथा स्वयं को युद्ध में लगाते थे। परन्तु पैदल सेना के सैनिकों का संगठन राष्ट्रीय सेना के रूप में किया जाने लगा, जैसा कि क्रेसी के युद्ध में पैदल राष्ट्रीय सेना ने फ्रांसीसी कवच-युक्त अश्वारोही सेना को कुचल दिया था। इस युद्ध के अन्तिम चरण में समस्त योरुप में विभिन्न राष्ट्रीय सैन्य संगठन की स्थापना की जाने लगी और महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त करने लगे जो अश्वारोही सेना के पतन का एक प्रमुख कारण भी था।

11. कवचित घुड़सवार सैनिक (Armoured Cavalry)—इस युद्ध में घुड़सवार सैनिक भारी भरकम कवच धारण करने लगे थे जिसके कारण अभी गतिशीलता ही समाप्त नहीं हुई थी, बल्कि उनकी यौद्धिक कार्यवाही की क्षमता भी क्षीण हो गयी थी। इसके साथ आपसी तालमेल एवं सहयोग के अभाव में एक-एक करके शत्रु से भिड़ने के कारण आघात करने के पूर्व ही थक कर चूर हो चुके होते थे और उत्साह भी समाप्त हो चुका होता था। भारी धनुष के प्रहार से इनके कवच भी भेद्य जाते थे। अत: इसका अस्तित्व संकट में आ गया।

इस प्रकार उपरोक्त कारणों से अश्वारोही सेना का स्थापित एक बड़ा आधार ध्वस्त होने लगा और नये घातक हथियारों के समक्ष कोई इसका कोई वजूद नहीं रह गया। इसके साथ ही सामन्तशाही व्यवस्था को भी विराम लग गया। बारूद के आविष्कार ने एक नये समरतन्त्र को जन्म दिया। कवच का महत्त्व समाप्त हो गया और वीरता के युग का पतन हो गया।

6. जागीरदारी प्रथा का प्रभाव (Influence of Feudalism)

मध्यकालीन युद्धकाल में जागीरदारी प्रथा का एक लम्बी अवधि तक प्रभाव बना रहा। जिस समय रोम का विघटन हुआ था, उस समय पूर्वी रोमन साम्राज्य आक्रमणात्मक कार्यवाही को युद्धकला अपनाये जाने के कारण पश्चिमी राष्ट्रों में सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बना रहा, परन्तु पश्चिमी रोमन की गोथों तथा जंगली जातियों के आतंक के कारण स्थिति नाजुक हो गयी थी। उसकी आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक दशा अत्यन्त गम्भीर हो गयी थी, जिसके कारण इसके सीमा में आने वाले नागरिक अत्यन्त भयभीत एवं तनाव का जीवन व्यतीत कर रहे थे क्योंकि निरन्तर लूटपाट बढ़ गयी थी तथा सैनिकों में भी राष्ट्र-भावना न रहकर उनमें लुटेरी-भावना पनपने लगी थी। इस कारण श्रेष्ठ हथियारों तथा उच्च सामरिकी का भी पतन हो गया था।

इस समय पैदल सेना का पतन हो गया था तथा अश्वारोही सेना प्रधान सेना के रूप में मानी जाती थी। पैदल सेना का काम सिर्फ अश्वारोही सेनाओं की व्यवस्था को सहयोग देना ही रह गया था। कवचों का प्रयोग बहुत कम किया जाता था, क्योंकि इनकी कीमत बहुत ज्यादा होती थी। इन सभी परिस्थितियों के परिणामस्वरूप जागीरदारी अथवा सामन्तवादी प्रथा का जन्म हुआ। जागीरदारी प्रथा में जागीरदार अपनी-अपनी रियासतों में स्वयं रक्षा करते थे तथा जनता से सहयोग के रूप में कर वसूल करते थे और जनता इन पर पूरा भरोसा रखती थी तथा इन सामन्तों को ईश्वर का प्रतीक मानकर इनकी आज्ञा का पूरा आदेश भी मानती थी।

इस प्रकार मध्यकालीन समय में सामन्तों ने अपने इस समय में अपनी इच्छानुसार सेना रखने तथा उनकी जिम्मेदारी अपनी सीमा की सुरक्षा करना जिसके लिए कुछ अश्वारोही सैनिकों को संगठित कर रखा था तथा सेना के आर्थिक संचालन के लिए सीमा में आने

वाले नागरिकों से टैक्स के रूप में धन वसूल करते थे। इस तरह सामन्तों के इस युग में युद्धकला बहुत प्रभावित हुई, क्योंकि अपनी सुरक्षा के अनुरूप हथियार एवं समरतन्त्र का विकास इस समय किया था।

संक्षिप्त रूप में इसके प्रभाव को हम इन रूपों में व्यक्त कर सकते हैं जैसे—

1. सामाजिक प्रभाव
2. आर्थिक प्रभाव
3. राजनैतिक प्रभाव
4. सैनिक प्रभाव

(क) हथियारों का विकास

(ख) समरतन्त्र का विकास

(ग) नवीन कला का विकास

1. सामाजिक प्रभाव (Social Effect)—सामन्तशाही या जागीरदारी प्रथा के कारण सामाजिक व्यवस्था अत्यन्त जटिल हो गयी थी जिसके कारण जन साधारण में तनाव एवं भय का वातावरण बन गया था। जागीरदारों की मनमानी के आगे उनकी एक भी नहीं चलती थी। उन्हीं का समाज में बोलबाला था।

2. आर्थिक प्रभाव (Economic Effect)—जागीरदार अपनी-अपनी रियासतों की स्वयं रक्षा करते थे तथा जनता से सहयोग के रूप में कर वसूल करते थे। जनता इनके द्वारा लगाए गए करों (Taxes) को ईश्वर का आदेश मानकर स्वीकार करती थी। अपनी इच्छा के अनुसार ही सेवा के विचार पर व्यय करते थे।

3. राजनीतिक प्रभाव (Political Effect)—सामन्तों की राजनीति में पूरी दखलअंदाजी थी। वे अपनी इच्छानुसार योजना बनाते तथा क्रियान्वित करते थे। युद्ध के सम्बन्ध में इनके निर्णय अपने अन्तिम निर्णय होते थे।

4. सैनिक प्रभाव (Military Effect)—इस युग में सैनिक प्रभाव सर्वाधिक पड़े क्योंकि सामन्तों या, जागीरदारों द्वारा ही अपनी सेना के हथियार, समरतन्त्र व नवीन युद्ध कला स्वयं तय की जाती थी। यह अपनी सुरक्षा के आधार पर ही अपनी राजनीति भी बनाते थे। इस दौरान नये हथियारों का विकास, समरतन्त्र का विकास तथा नवीन युद्ध कला की भी शुरुआत हुई।

7. ईसाई समाज का युद्धकला पर प्रभाव
(Influence of Church in Warfare)

मध्यकालीन समय में जिस समय सामन्तशाही प्रथा का बोलबाला था, उस समय समाज में ईसाई धर्म बड़ी तेज़ी के साथ फैला था जिसका प्रभाव यह हुआ कि सभी सामन्त भी ईसाई धर्म गुरुओं (पोप) के आदेश पालक बन गये तथा उनकी इच्छा के अनुसार ही युद्ध योजनाओं में भी परिवर्तन करने लगे थे। सामन्तों पर धार्मिक प्रचारों का

इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि पादरियों द्वारा बताये गये कार्यों के अनुसार ही अपनी कार्यवाही करने लगे। धर्म प्रधानता के कारण इन पादरियों ने सर्वप्रथम युद्ध में क्रूरता तथा खून-खराबा को खत्म करने के लिए धार्मिक नियम बना दिए जिनका युद्ध काल में पालन करना प्रत्येक सामन्त के लिए आवश्यक माना जाने लगा। इस प्रकार युद्ध धर्म के आधार पर लड़े जाने लगे जिसके परिणामस्वरूप मध्यकालीन समय में समस्त यूरोप की राजनीति तथा युद्धनीति का केन्द्र ईसाइयों के पूजा स्थल (गिरजाघर) माने जाने लगे।

पादरियों ने युद्ध की भयंकरता एवं क्रूरता को कम करने के लिए निम्नलिखित नियम निर्धारित कर दिए, जिनका पालन करना प्रत्येक शासक एवं सामन्त को नैतिक एवं धार्मिक रूप से अनिवार्य था, जो इस प्रकार से है जैसे—

1. सभी सामन्त अनिवार्य रूप से दैविक शान्ति संस्था (Institution for peace of God) के स्थायी सदस्य बनेंगे।

2. प्रत्येक शासक एवं सामन्त धार्मिक स्थानों, धार्मिक संचालकों, स्त्रियों, यात्रियों तथा कृषि से सम्बन्धित सभी तत्त्वों की सुरक्षा करेंगे।

3. सभी शासक एवं सामन्त दैविक विश्राम (The Trace of God) नामक नियमावली का पालन करेंगे, जिसके अन्तर्गत शनिवार सायं से सोमवार (Monday) की सुबह तक युद्ध क्रिया आरम्भ नहीं की जा सकती।

4. प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षा की गारण्टी दी गयी तथा इसकी अवहेलना करने वाले को देश निकाला दे दिया जायेगा।

5. युद्ध में घातक एवं प्रहारक क्षमता रखने वाले किसी भी हथियार का प्रयोग करना पूर्ण रूप से निषिद्ध कर दिया था।

6. युद्ध बन्दियों (P.O.W.) को उचित मूल्य चुका देने पर सज़ा से मुक्त कर दिया जाता था।

7. किसी नारी, बच्चे, पालतू जानवर, फलदार वृक्ष तथा असहाय लोगों पर प्रहार पूर्ण रूप से निषिद्ध कर दिया तथा आग आदि लगाने की भी अनुमति नहीं थी।

8. मैदान छोड़कर भाग रहे सैनिक का पीछा करना धार्मिक नियमों की अवेलना करना होता था।

9. युद्ध क्षेत्र में सैनिक अपने समान सैनिक से ही युद्ध करेगा, किसी अपने से कमज़ोर पर आक्रमण नहीं कर सकता है।

10. युद्ध क्षेत्र में यदि कोई सैनिक शस्त्रहीन हो जाता है तो उस पर हमला नहीं किया जाना चाहिए।

11. युद्ध में धनुष बाण का प्रयोग करना भी धर्म एवं देवता के विरुद्ध माना जाता था।

12. युद्ध के निर्धारित नियमों की अवहेलना करने वाले को कठोर से कठोर दंड दिया जाता था।

13. सैनिकों से धार्मिक भावना के विरुद्ध कोई कार्य करवाना भी अशुभ सूचक माना जाता था।

14. सैनिक युद्ध के समय शत्रु के घरों में लूट-पाट आदि किसी भी प्रकार से न करने के कठोर धार्मिक नियम थे।

15. युद्ध की भयंकरता को कम करने के लिए सभी को इन नियमों का पालन करना अनिवार्य था।

इस प्रकार पादरियों द्वारा इतने कठोर धार्मिक नियम निर्धारित कर दिये गये कि मध्यकालीन युग में सैनिक योग्यताओं का पतन बहुत अधिक हो गया, जिसका प्रभाव एक लम्बी अवधि तक विश्व सैन्य इतिहास पर पड़ा। राजनीति एवं युद्धनीति को अब दिशा केवल पादरियों द्वारा ही दिखाई जाती थी। इस समय ईसाई धर्म की नींव बहुत गहरी हो गयी थी और इनका बहुत अधिक बोलबाला हो गया था। यही कारण था कि मध्यकालीन यूरोपीय सैन्य इतिहास में युद्ध के स्थान पर धर्म की गहरी छाप नज़र आती है। युद्ध की भयंकरता एवं क्रूरता को कम करने के उद्देश्य हेतु सुरक्षा व्यवस्था को ताक पर रख दिया गया जिससे सैनिक भावना, युद्धनीति, शस्त्रास्त्रों तथा सामरिक परिस्थितियों का पतन भी तेज़ी के साथ हो गया। इसीलिए जनरल फुलर महोदय ने हथियारों के सन्दर्भ में लिखा है—

"As a weapon hateful to God and until for christians"
(हथियार ईश्वर द्वारा घृणित तथा ईसाइयों के अयोग्य थे।)

वास्तव में यूरोप में हो रहे ईसाई धर्म के प्रचार के फलस्वरूप युद्धकला विशेष रूप से प्रभावित हुई। ईसाई धर्म के कारण ही युद्ध के कुछ नियमों की स्थापना होने के फलस्वरूप लड़ाई में व्याप्त क्रूरता पर काफ़ी हद तक अंकुश लगाया जा सका। कवच के बढ़ते प्रयोग के महत्त्व के कारण अश्वारोही सेना पूरी तरह से कवचित हो गयी। हिंसात्मक प्रदर्शन, रक्तपात वाले खेल तथा रथदौड़ प्रतियोगितायें भी समाप्त कर दी गयीं। इस युग में जीवन से सम्बन्धित सभी घटनाओं को धार्मिक आकार दे दिया गया, जिससे युद्धकला प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुई।

8. शूरता का युद्ध कला पर प्रभाव
(Influence of Chivalry in Warfare)

एड्रियानोपल के युद्ध के साथ ही रोमन लीजन व पैदल सेना की प्रतिष्ठा समाप्त हो गयी, क्योंकि जिस समय बर्बर जाति के अश्वारोही सैनिकों ने रोमन साम्राज्य को अपनी शक्ति से कुचल दिया उसी समय से अश्वारोही सेना प्रधान सेना के रूप में अपनायी जाने लगी। यही कारण है कि इस युद्ध के साथ ही अश्वारोही सेना का युग आ गया जिसे क्रूरता का युग (The Age of chivalry) कहा जाने लगा। इसको अश्वारोही सेना का युग भी माना जाता है, क्योंकि इस युद्ध के बाद लगभग 1000 वर्ष तक अश्वारोही सेना

ही युद्ध की निर्णायक सेना की भूमिका निभाती रही। इस सन्दर्भ में मेजर जनरल डी० के० पालित ने लिखा है—

"The Fate of kingdoms, Empires from Asia to the Atlantic was decided by great lords of cavalry raiders."

(एशिया से अटलांटिक तक के राज्यों तथा साम्राज्यों के भाग्य का निर्णय अधिसंख्य अश्वारोही आक्रमणकारियों द्वारा किया जाता था।)

मध्यकाल में अश्वारोही सेनाओं के द्वारा लड़ा जाने वाला युद्ध केवल भिड़न्त युद्ध ही रह गया, क्योंकि धार्मिक प्रभाव एवं श्रेष्ठ समरतन्त्र के अभाव में युद्धकला का पतन हो गया। यही कारण था कि युद्धों का निर्णय श्रेष्ठ अश्वारोही दल के द्वारा न होकर अधिक संख्या वाले अश्वारोही दल के पक्ष में होने लगा था। युद्ध में सफलता संख्या या व्यक्तिगत नेतृत्व क्षमता के आधार पर ही मिलती थी।

मध्यकालीन समय में अश्वारोही सेना के श्रेष्ठ समरतन्त्र एवं शस्त्रास्त्रों के अभाव के कारण कोई सामरिक विकास नहीं हुआ। इसी कारण इसे सैनिक प्रगति के सन्दर्भ में अन्धकार का युग भी माना गया है। इस सन्दर्भ में भी मेजर जनरल डी० के० पालित ने लिखा है—

"Warfare was reduced to the cavalry make, the hurling of masses of horsemen against each other."

(युद्ध अश्वारोही सवारों के विशृंखलित युद्धों तक सीमित हो गया था जिसमें अश्वारोही सूरमाओं के समूह एक-दूसरे से लड़ते थे।)

ईसाई धर्म के प्रचार एवं प्रसार के परिणामस्वरूप तत्कालीन युद्ध कला पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा और सैनिक गुणों एवं श्रेष्ठ हथियारों का भी एक लम्बे समय तक अभाव रहा। यही कारण है कि इस दौरान सामरिक श्रेष्ठता की कमी बहुत अधिक रही। युद्ध केवल उसी समय लड़ा जाता था, जबकि सेनायें युद्ध के लिए बहुत अधिक उत्सुक होती थीं। जो सेनायें अपने को कमज़ोर समझती थीं वह भागकर अपने किलों में छिप जाती थीं। किसी भी किले को अधिक-से-अधिक 6 माह तक घेरे रखा जा सकता था। इसके बाद अपनी सीमा पर लौट आते थे। इस युग में ऐसे अश्वारोही सामन्त जो कवच युक्त होते थे तथा ईसाई धर्म का पालन करते थे, उन्हें 'शूरमा' की उपाधि दी गयी थी। इन शूरमाओं की प्रतिष्ठा तब तक बनी रही जब तक बारूद का आविष्कार नहीं हुआ था। इसका पतन क्रेसी के संग्राम (1346 ई०) के साथ आरम्भ हो गया, क्योंकि श्रेष्ठ हथियारों के सामने यह अश्वारोही शूरमा टिक नहीं सके और इनके पतन का इतिहास आरम्भ हो गया।

इस प्रकार मध्यकालीन युद्ध कला में अश्वारोही सेना के प्रभाव स्वरूप कोई सुधार नहीं हुआ। यही कारण है कि इसे अन्धकार का युग भी कहा गया। धार्मिक नियमों के फलस्वरूप सामरिक विशेषताओं का बहुत अधिक पतन हो गया था, जिसके प्रभाव अश्वारोही सेना के युग में विशेष रूप से दिखायी देते हैं।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. एड्रियानोपल के प्रसिद्ध संग्राम का घटनाओं एवं सैनक शिक्षाओं सहित वर्णन करें।
2. 'एड्रियानोपल के युद्ध (378 ई०) के साथ ही एक युग का अन्त हो गया' कथन की व्याख्या करते हुए इसके परिणाम लिखें।
3. पैदल सेना के पतन तथा अश्वारोही सेना के उदय के प्रमुख कारणों का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
4. किन कारणों से अश्वारोही सेना का उत्थान तथा प्राचीन पैदल सेना का पतन हो गया ? उल्लेख करें।
5. 'हेस्टिंग की लड़ाई' इतिहास पर आयुधों के प्रभाव के स्पष्ट उदाहरण के रूप में प्रस्तुत की जाती है।' कथन की पुष्टि करो। ***(M.D.U. 1998)***
6. हेस्टिंग के संग्राम की समरतान्त्रिक संरचनाओं, घटनाओं एवं सैन्य शिक्षाओं का सचित्र वर्णन कीजिए। ***(P.U. 1989)***
7. मध्यकालीन अश्वारोही सेना के पतन तथा पैदल सेना के पुनरुत्थान के क्या कारण थे ? क्रेसी के संग्राम से उदाहरण सहित व्याख्या करें।
8. अंग्रेज़ों के लम्बे धनुष के प्रयोग से युद्ध कला में क्या-क्या परिवर्तन हुए ? क्रेसी के युद्ध को ध्यान में रखते हुए इसकी व्याख्या करो।
9. क्रेसी के संग्राम का वास्तविक घटनाक्रम तथा प्राप्त सैनिक शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।
10. अश्वारोही सेना के पतन के प्रमुख कारणों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए। ***(K.U.K. 1998)***
11. मध्यकालीन युग में जागीरदारी प्रथा का क्या प्रभाव पड़ा ? उदाहरण सहित व्याख्या करें।
12. मध्यकालीन युद्ध कला में ईसाई समाज का क्या प्रभाव पड़ा ? विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
13. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखो—
    (क) मध्यकालीन युग में शूरता का प्रभाव
    (ख) मध्यकालीन युग में जागीरदारी प्रथा का प्रभाव
    (ग) मध्यकालीन युग में ईसाई समाज का प्रभाव।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(Objective Type Questions)

नोट—प्रत्येक प्रश्न के कुछ वैकल्पिक एवं भ्रमित उत्तर दिये गये हैं। इनमें सर्वोत्तम उत्तर का चयन करना है।

प्रश्न 1. 'वीरता का युग' का आरम्भ किस युद्ध के साथ हुआ ?

(क) हेस्टिंग के संग्राम से (ख) क्रेसी के युद्ध से
(ग) एड्रियानोपल के युद्ध से (घ) पीडना के युद्ध से।

प्रश्न 2. एड्रियानोपल का प्रसिद्ध संग्राम कब लड़ा गया ?

(क) 378 ई० (ख) 1346 ई०
(ग) 1066 ई० (घ) 378 ई० पू०।

प्रश्न 3. एड्रियानोपल का युद्ध किनके मध्य लड़ा गया ?

(क) अंग्रेज़ों तथा फ्रांसीसी सेना के मध्य (ख) रोमन तथा यूनानियों के मध्य
(ग) रोमन तथा इरानियों के मध्य (घ) रोमन तथा गोथों के मध्य।

प्रश्न 4. एड्रियानोपल के संग्राम में किस सेनापति की विजय हुई ?

(क) रोमन सेनापति वेलैन्स (ख) गोथ सेनापति फिडीजर्न
(ग) हेनीबल (घ) हेरोल्ड।

प्रश्न 5. एड्रियानोपल के संग्राम में किस सेनापति की पराजय हुई ?

(क) वेलैंन्स (ख) सिकन्दर महान
(ग) विलियम (घ) एडवर्ड तृतीय।

प्रश्न 6. अश्वारोही युग के नाम से किस युग को सम्बोधित किया जाता है ?

(क) वीरता के युग को (ख) पराक्रम के युग को
(ग) भाप के युग को (घ) बारूद के युग को।

प्रश्न 7. एड्रियानोपल का संग्राम किस नदी के किनारे लड़ा गया ?

(क) माये नदी (ख) भोलम नदी
(ग) डेन्यूब नदी (घ) मिसीसिपी नदी।

प्रश्न 8. पैदल सेना का पतन किस युद्ध के साथ हो गया ?

(क) भोलम के युद्ध (ख) हेस्टिंग के युद्ध
(ग) क्रेसी का युद्ध (घ) एड्रियानोपल का युद्ध।

प्रश्न 9. अश्वारोही सेना को प्रधान सेना के रूप में किस युद्ध के साथ माना जाने लगा ?

(क) क्रेसी का युद्ध (ख) कैने का युद्ध
(ग) अरबेला का युद्ध (घ) एड्रियानोपल का युद्ध।

प्रश्न 10. हेस्टिंग का प्रसिद्ध संग्राम कब लड़ा गया ?

(क) 378 ई० (ख) 1066 ई०

(ग) 1606 ई० (घ) 1660 ई०।

प्रश्न 11. हेस्टिंग का संग्राम किन राष्ट्रों के मध्य लड़ा गया ?

(क) इंग्लैण्ड व फ्रांस (ख) रोम व यूनान

(ग) ईरान व यूनान (घ) फ्रांस व पोलैण्ड।

प्रश्न 12. हेस्टिंग के प्रसिद्ध संग्राम (1066 ई०) में किस सेना को महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई ?

(क) विलियम ऑफ नार्मेण्डी को (ख) हेरोल्ड को

(ग) हेनीबल को (घ) नेपोलियन को।

प्रश्न 13. हेरोल्ड किस राष्ट्र का सेनापति था ?

(क) फ्रांस

(ख) इंग्लैण्ड

(ग) रोम

(घ) उपर्युक्त में से किसी का नहीं।

प्रश्न 14. किस शासक की सेना 'बैटल हिल' नामक पहाड़ी पर स्थित थी ?

(क) विलियम की (ख) हेरोल्ड की

(ग) हेनीबल की (घ) डैरियस की।

प्रश्न 15. हेस्टिंग के संग्राम में नार्मन सेनाओं का नेतृत्व किसने किया ?

(क) हेरोल्ड (ख) हेनीबल

(ग) विलियम (घ) फिलिप द्वितीय।

प्रश्न 16. हेस्टिंग के संग्राम में पोप का समर्थन किसे प्राप्त था ?

(क) एडवर्ड तृतीय को (ख) हेरोल्ड को

(ग) फिलिप द्वितीय को (घ) विलियम ऑफ नार्मेण्डी को।

प्रश्न 17. टेल्हम हिल पर किस सेनापति की सेना संगठित थी ?

(क) विलियम की सेना (ख) एडवर्ड तृतीय की सेना

(ग) हेरोल्ड की सेना (घ) हेनीबल की सेना।

प्रश्न 18. हेस्टिंग के संग्राम में किस सेनापति की विजय हुई ?

(क) हेरोल्ड (ख) विलियम ऑफ़ नार्मेण्डी

(ग) एडवर्ड तृतीय (घ) फिलिप द्वितीय।

प्रश्न 19. हेस्टिंग के संग्राम में किस सेनापति की पराजय हुई ?

(क) हेरोल्ड (ख) विलियम ऑफ़ नार्मेण्डी

(ग) विलियम तृतीय (घ) एडवर्ड तृतीय।

प्रश्न 20. हेस्टिंग का संग्राम कब आरम्भ हुआ था ?

(क) 14 अगस्त, 1066 (ख) 14 अक्तूबर, 1066

(ग) 14 अप्रैल, 1066 (घ) 14 जुलाई, 1055।

प्रश्न 21. क्रेसी का प्रसिद्ध संग्राम कब लड़ा गया ?

(क) 1340 ई० (ख) 1066 ई०

(ग) 1346 ई० (घ) 1436 ई०।

प्रश्न 22. क्रेसी का संग्राम किन राष्ट्रों के मध्य लड़ा गया ?

(क) फ्रांस व जर्मन (ख) जर्मन व इंग्लैण्ड

(ग) फ्रांस व इंग्लैण्ड (घ) यूनान व ईरान।

प्रश्न 23. क्रेसी के संग्राम में किस सेनापति की विजय हुई ?

(क) एडवर्ड तृतीय (ख) विलियम ऑफ़ नार्मेण्डी

(ग) फिलिप (घ) हेरोल्ड।

प्रश्न 24. क्रेसी के संग्राम में किस सेनापति की पराजय हुई ?

(क) हेनीबल (ख) विलियम

(ग) फिलिप (घ) एडवर्ड तृतीय।

प्रश्न 25. किस युद्ध ने पैदल सेना को 'युद्ध क्षेत्र की रानी' के रूप में प्रमाणित कर दिया ?

(क) क्रेसी के युद्ध ने (ख) कैने के युद्ध ने

(ग) एड्रियानोपल के युद्ध ने (घ) हेस्टिंग के युद्ध ने।

प्रश्न 26. वादी कुर्द तथा क्रेसी गांव के मध्य किस सेनापति ने सेना का समरतान्त्रिक फैलाव किया था ?

(क) विलियम द्वितीय ने (ख) एडवर्ड तृतीय ने

(ग) फिलिप ने (घ) हेरोल्ड ने।

प्रश्न 27. माये नदी के किनारे कौन-सा संग्राम लड़ा गया ?

(क) क्रेसी का संग्राम (ख) हेस्टिंग का संग्राम

(ग) एड्रियानोपल का संग्राम (घ) पीडना का संग्राम।

प्रश्न 28. फ्रांस की सेना का प्रधान सेनापति क्रेसी के प्रसिद्ध संग्राम में कौन था ?

(क) एडवर्ड तृतीय (ख) फिलिप

(ग) हेरोल्ड (घ) हेनीबल।

प्रश्न 29. 'ब्लैक प्रिन्स' किस शासक का सहायक सेनापति था ?

(क) विलियम द्वितीय (ख) जान पाल

(ग) एडवर्ज तृतीय (घ) फिलिप द्वितीय।

प्रश्न 30. 'अर्ल ऑफ़ नार्थेप्टन' किस शासक का सहायक सेनापति था ?

(क) फिलिप द्वितीय (ख) सिकन्दर महान

(ग) डैरियस (घ) एडवर्ड तृतीय।

प्रश्न 31. किस सेना ने लम्बे धनुषों का प्रयोग क्रेसी के युद्ध में किया ?

(क) जर्मन की सेना ने (ख) इंग्लैण्ड की सेना ने

(ग) फ्रांस की सेना ने (घ) यूनान की सेना ने।

प्रश्न 32. तिर्यक धनुषों का प्रयोग क्रेसी के युद्ध में किस सेना ने किया ?

(क) फ्रांस की सेना ने
(ख) इंग्लैण्ड की सेना ने
(ग) दोनों राष्ट्रों की सेना ने
(घ) उपर्युक्त के किसी भी राष्ट्र की सेना ने नहीं।

प्रश्न 33. अश्वारोही सेना का पतन किस युद्ध के साथ हो गया ?

(क) कैने के युद्ध से (ख) क्रेसी के युद्ध से
(ग) हेस्टिंग के युद्ध से (घ) अरबेला के युद्ध से।

प्रश्न 34. पैदल सेना का पुनः उत्थान किस युद्ध के साथ हुआ ?

(क) क्रेसी के संग्राम से (ख) हेस्टिंग के संग्राम से
(ग) एड्रियानोपल के संग्राम से (घ) कैने के संग्राम से।

प्रश्न 35. क्रेसी के युद्ध में किस शस्त्र ने निर्णायक भूमिका निभायी ?

(क) तिर्यक धनुष (ख) लम्बे धनुष-बाण
(ग) लम्बे भाले (सरिसा) (घ) आग्नेय अस्त्र।

प्रश्न 36. विश्व के सैन्य इतिहास में क्रेसी के संग्राम का महत्त्व किस कारण से अधिक माना जाता है ?

(क) पैदल सेना का महत्त्व बढ़ने के कारण
(ख) पैदल सेना के पतन के कारण
(ग) अश्वारोही सेना के उदय के कारण
(घ) एडवर्ड की सफलता के कारण।

प्रश्न 37. विश्व सैन्य इतिहास के किस युग को 'अन्धकार का युग' कहा गया है ?

(क) वीरता के युग को (ख) पराक्रम के युग को
(ग) बारूद के युग को (घ) भाप के युग को।

प्रश्न 38. "एशिया से अटलांटिक तक राज्यों एवं साम्राज्यों का भाग्य विशाल अश्वारोही दलों द्वारा निश्चित किया जाने लगा, चाहे वे शक हों, ईसाई हों अथवा तातार हों।" गोथों के बारे में ये किसने लिखा है—

(क) जनरल जे० एफ० सी० फुलर
(ख) जनरल नेपोलियन
(ग) कैप्टन लिडिल हार्ट
(घ) मेजर जनरल डी० के० पालित।

प्रश्न 39. हेस्टिंग के संग्राम में हेरोल्ड की पराजय का प्रमुख कारण क्या था ?

(क) कम सैन्य शक्ति का होना
(ख) सेनाओं का सहयोग न प्राप्त होना
(ग) शत्रु की धोखे की नीति में आ जाना
(घ) आग्नेय अस्त्रों का अभाव होना।

प्रश्न 40. क्रेसी के संग्राम में Philip की पराजय का प्रमुख कारण क्या था ?

(क) कम सैनिक शक्ति का होना
(ख) सेनाओं में आपसी सहयोग का अभाव
(ग) मनोबल का अभाव
(घ) आग्नेय हथियारों का अभाव।

प्रश्न 41. क्रेसी के संग्राम में एडवर्ड तृतीय की विजय का प्रमुख श्रेय किसको है ?

(क) तिर्यक धनुर्धारी सेना को (ख) बड़े भालाधारी सेना को
(ग) बड़े धनुष-बाण वाली सेना को (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

प्रश्न 42. आग्नेय हथियारों का आरम्भ कब हुआ ?

(क) 12वीं शताब्दी में (ख) 14वीं शताब्दी में
(ग) 16वीं शताब्दी में (घ) 17वीं शताब्दी में।

प्रश्न 43. मध्यकालीन युद्ध कला में ईसाई धर्म का प्रमुख प्रभाव क्या रहा ?

(क) सैनिकों के मनोबल में वृद्धि हुई
(ख) हथियारों का विकास हुआ
(ग) सैनिक को विशेष सुविधायें दी जाने लगीं
(घ) सैनिक गुणों का पतन हुआ।

प्रश्न 44. 'युद्ध क्षेत्र की रानी' (Queen of Battle field) के नाम से किस सेना को सम्बोधित किया जाता है ?

(क) अश्वारोही सेना को (ख) तोपखाने को
(ग) पैदल सेना को (घ) आग्नेय हथियारों को।

प्रश्न 45. किलेबन्दी का विकास किस युग में बहुत अधिक हुआ ?

(क) पराक्रम के युग में (ख) वीरता के युग में
(ग) भाप के युग में (घ) बारूद के युग में।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर
(Answers of Objective Type Questions)

1. (ग)	2. (क)	3. (घ)	4. (ख)	5. (क)
6. (क)	7. (ग)	8. (घ)	9. (घ)	10. (ख)
11. (क)	12. (क)	13. (ख)	14. (ख)	15. (ग)
16. (घ)	17. (क)	18. (ख)	19. (क)	20 (ख)
21. (ग)	22. (ग)	23. (क)	24. (ग)	25. (क)
26. (ख)	27. (क)	28. (ख)	29. (ग)	30. (घ)
31. (ख)	32. (क)	33. (ख)	34. (क)	35. (ख)
36. (क)	37. (क)	38. (घ)	39. (ग)	40. (ख)
41. (ग)	42. (ख)	43. (घ)	44. (ग)	45. (ख)

4 बारूद का युग–1346 ई० से 1789 ई० तक (THE AGE OF GUN POWDER)

1. स्थल युद्ध कला का विकास (Development of Army Art of Warfare)

बारूद के आविष्कार के परिणामस्वरूप युद्धों में जन शक्ति (Man power) का महत्त्व कम हो गया तथा हथियारों और यन्त्रों ने अब अपना प्रमुख स्थान बना लिया। युद्धों में अब नैतिकता का पतन हो गया तथा कूटनीतिक चालों का प्रयोग अधिक किया जाने लगा। युद्ध का स्वरूप भी सार्वजनिक हो गया। इस शक्ति के विकास से युद्ध क्षेत्र में एक क्रान्ति सी आ गई, क्योंकि इससे प्राचीन युद्धास्त्र एवं व्यवस्थायें मात्र धरोहर बनकर रह गयीं। इस महान् शक्ति का विकास कब और किसने किया, इसका सही उल्लेख इतिहास में नहीं मिलता, परन्तु यह बात प्रमाणित होती है कि 14वीं शताब्दी में बारूद का आविष्कार हुआ। इस शक्ति के आविष्कार के साथ ही युद्धों के आधुनिक युग का आरम्भ होता है। इस सन्दर्भ में रूसी इतिहासकार पाकरोवस्की (Pokrovsky) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Technology in contemporary war" में स्पष्ट रूप से लिखा है—

"संसार के इतिहास में अनेकों काल आये हैं, जिनमें नये हथियारों के आविष्कार से युद्ध करने के तरीकों में सेनाओं के रूप और युद्ध कला में आधारभूत परिवर्तन हुए हैं। इतना ही नहीं इसका प्रभाव इतना विस्तृत और गम्भीर हुआ है कि सम्पूर्ण समाज का ढांचा ही इन्होंने बदल दिया है। इस तत्त्व का एक उल्लेखनीय उदाहरण बारूद का आविष्कार और उसका युद्ध कला में प्रयोग है।"[1]

बारूद के आविष्कार के साथ ही सेना को अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए हथियारों पर अब निर्भर रहना पड़ा। जनरल जे०एफ०सी०फुलर (Gen. J.F.C.Fuller) ने इस सन्दर्भ में लिखा है—

"Valour gives way to machanical art, he who wields the superior weapons, is the more formidable force irrespective of his social status or courage."[2]

इस प्रकार बारूद के युग में सामाजिक एवं नैतिक स्थिति का स्थान समाप्त हो गया और श्रेष्ठ यन्त्र ही युग का निर्णय करने लगे।

1. Pakrovsky—Technology in contemporary war.
2. J.F.C. Fuller—Armament & History page-83.

इस प्रकार बारूद की खोज हो जाने से शस्त्रास्त्रों में भी आमूलभूत परिवर्तन हुए, जिससे उद्योगों का विकास भी बहुत तेज़ी के साथ शुरू हो गया। शस्त्रास्त्रों के विकास के साथ ही युद्धों में चालबाजी, धोखाधड़ी तथा चकमा आदि का प्रयोग प्रशंसनीय एवं सफलता का सूचक बन गया। इस बात ने यह प्रमाणित कर दिया कि युद्ध में नवीन हथियार सदैव नवीन समरतन्त्र को जन्म देता है। इस शक्ति के प्रयोग से सैनिक, आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आ गया। मध्यकाल में यह माना जाता था कि युद्ध वास्तव में नैतिक मूल्यों का परीक्षण है, जिसमें चर्च गॉड (ईश्वर) की तरफ से निर्णायक भूमिका निभाता है। बारूद के विकास के साथ यह नैतिक मूल्य धराशाही हो गये और धोखा देना युद्धनीति का मुख्य आधार बन गया। युद्ध कौशल व रणनीति के इतिहास में बारूद के युग को एक क्रान्तिकारी परिवर्तन माना जाता है। उल्लेखनीय है कि यूरोप में हुई सैनिक क्रान्ति की शुरुआत में नई तकनीकी का उपयोग धीमी गति से हो रहा था। नि:सन्देह आग्नेय हथियारों के उपयोग से सेना के स्वरूप व सज्जा में ज़ोरदार बदलाव आया। अब अश्वारोही सेना का महत्त्व कम होने लगा और 15वीं शताब्दी तक पहुंचते-पहुंचते ये हासियें में चली गयी। इस समय सामन्ती गढ़ धराशाही ही नहीं हुए, बल्कि उनके शासकों के विचारों व मानसिक सोच में भी ज़ोरदार बदलाव आया। इस प्रकार यूरोप में युद्धकला, संचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में ज़ोरदारी के साथ बदलाव नज़र आये।

सबसे पहले चीन ने शोरा, सल्फर (गंधक) और लकड़ी के कोयले को मिलाकर बारूद का आविष्कार किया। चीनी लोग वैसे 13वीं शताब्दी से ही बारूद का इस्तेमाल करने लगे थे। मंगोलों ने उनसे यह तरकीब हासिल की और संभवतया उन्हीं के माध्यम से यह आविष्कार यूरोप में पहुंचा होगा। 14वीं शताब्दी के दौरान यूरोप में लम्बी कमान के धनुष के उपयोग के साथ-साथ बन्दूक का प्रयोग भी प्रारम्भ हो गया था। यूरोप में पहली बार 1320 के दशक के आरम्भ में पहली तोप बनायी गयी। इसके बाद से आग्नेय हथियारों के विकास में यूरोप लगातार आगे बना रहा। बड़ी और बेहतर तोपें बनाने हेतु पश्चिम यूरोप के देशों और तुर्की के बीच एक-दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ शुरू हो गयी। तीर की जगह तोप का इस्तेमाल होने लगा और तोप भी नली के आकार की बनायी जाने लगी। तोपों का शुरुआत में प्रयोग तेज़ी से बढ़ा और इसे अन्तिम आक्रमण के लिए प्रयोग किया जाने लगा। 1453 में तुर्की तोपों ने कान्टिटैण्ट नोपल की लड़ाई में किले को ध्वस्त कर दिया और विजय प्राप्त कर ली। आग्नेय हथियारों का स्वरूप जैसे-जैसे विकसित होता गया पैदल सेना का महत्त्व वैसे ही बढ़ता चला गया। समय के साथ आग्नेय हथियारों के प्रयोग में ज़ोरदार बदलाव आया। 15वीं शताब्दी में हथगोला सेना का एक प्रमुख अस्त्र (Weapon) बन गया और दुश्मन पर बम फेंकने के लिए विशेष दस्तों (Groups) को प्रशिक्षित किया जाने लगा। इस दौरान बन्दूक का भी प्रयोग शुरू हो गया जो कि आज के रायफल का प्रारंभिक स्वरूप था। इसी काल में अधिक भारी, बड़ी तथा दूर तक मार करने वाली बन्दूक जिसे 'मस्केट' कहा जाता था उसका विकास हुआ।

अब हम बारूद के आविष्कार के फलस्वरूप युद्ध क्षेत्र में जो महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए उनका उल्लेख करते हैं—

1. हथियारों का विकास (Arms Development)
(*a*) छोटे हथियारों का विकास (Small Arms Development)
(*b*) तोपखाने का विकास (Artillery Development)
2. युद्ध कला में विकास (Development of Warfare)
3. समरतन्त्र में विकास (Development of Tactics)
4. सामाजिक परिवर्तन (Social Changes)
5. औद्योगिक क्रान्ति (Industrial Revolution)
6. जल यन्त्रों का विकास (Development of Naval Art)

हथियारों का विकास
(Arms Development)

(क) छोटे हथियारों का विकास (Small Arms Development)—बारूद के आविष्कार के साथ छोटे-छोटे आग्नेय हथियारों का निर्माण बड़ी तेज़ी के साथ किया जाने लगा। इन हथियारों को सैनिक सरलता के साथ प्रयोग कर लेता था तथा तेजी के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचा सकता था। पहले छोटे हथियार के रूप में बन्दूक का विकास किया गया, जिसे हैण्डगन (Hand Gun) के नाम से भी सम्बोधित किया जाता था। शुरू की बन्दूकें लोहे की नाल को लकड़ी के साथ जोड़कर मोट रूप में बनी होती थीं, जिन्हें फायर करने के लिए आग लगानी पड़ती थी तथा इनकी नाल का व्यास कई इंच का होता था। धीरे-धीरे इन हथियारों में सुधार किया जाता था। सन् 1364 ई० में बनी हैण्डगन एक छोटी तोप के आकार में बनाई गई, इसका भार लगभग 10 पौंड का होता था।

इसके साथ ही वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के साथ ही इन छोटे हथियारों का विकास भी निरन्तर किया जाता रहा। इनके बाद हैण्डगन में मैच लॉक (Match Lock) की व्यवस्था बनाई गई, जिससे आग लगाने का कार्य स्वयं ट्रिगर दबाने के साथ हो जाता था और अब फायर में भी उत्तरोत्तर शुद्धता आने लगी। पश्चिमी देशों में जर्मनी, फ्रांस तथा इंग्लैंड आदि ने इन हथियारों पर विशेष विकास किया और इन्हें पैदल सेना के मूल अस्त्र के रूप में प्रयोग करने लगे थे। इन प्राचीन बारूद के हथियारों में कुछ दोष भी थे, जो इस प्रकार से हैं—

1. जल्दी फायर नहीं कर पाते थे।
2. भार अधिक होता था।
3. यान्त्रिक व्यवस्था सैनिक जल्दी समझ नहीं पाता था।
4. सही लक्ष्य पर फायर डालना कठिन होता था।
5. कीमती पुर्जे होते थे।

6. जल्दी से खराबी होने पर सुधार नहीं हो पाता था।
7. यन्त्रों की बनावट अत्यन्त जटिल होती थी।
8. लगातार फायर नहीं किया जा सकता था।
9. गतिशीलता का अभाव सदा ही रहता था।
10. लचकता का पूर्ण अभाव रहता था।

अब इन दोषों को ध्यान में रखकर पुन: छोटे हथियारों का विकास किया गया, ताकि इनको अत्यधिक प्रभावी बनाया जा सके। इसी उद्देश्य से 17वीं शताब्दी में साकेट संगीन का विकास किया गया। इससे समरतन्त्र के क्षेत्र में क्रान्ति सी आ गयी। इस सन्दर्भ में कर्नल हाईम (Col. Hime) ने लिखा है—

"संगीन के प्रवेश से मध्ययुगीन कला का अन्त और आधुनिक युद्ध कला की शुरुआत होती है।.....बारह इंच लम्बी कटार ने समरतन्त्र में क्रान्ति पैदा कर दी।"[1]

इस प्रकार छोटे हथियारों के विकास में निरन्तर वृद्धि होती रही। जनरल जे०एफ०सी०फुलर ने छोटे हथियारों के आविष्कार का वर्णन इस प्रकार से किया है—

(1) हैण्ड गन (Hand Gun)
(2) मस्केट (Musket)
(3) हथगोला (Hand Grenade)
(4) धुएं का गोला (Smoke Grenade)
(5) कांसे के विस्फोटक गोले (Metallic Explosive bomb)
(6) पहियों वाली छोटी-छोटी तोपें (Small Gun with wheel)
(7) पिस्तौल (Pestol)
(8) आग लगाने वाले गोले (Fire explosive bomb)
(9) व्हील लॉक पिस्तौल (Wheel Lock Pestol)
(10) राइफलिंग की गई पिस्तौल (Rifling Pestol)
(11) दमाऊ पलीता (Percussion Fuze)
(12) कागज़ी कारतूस (Paper Cortage)
(13) अतिरिक्त विस्फोट पदार्थ (Extra Explosive)
(14) संगीन युद्ध मस्केट (Musket with Bayonet)
(15) साकेट संगीन (Socket Bayonet)

उपरोक्त हथियारों का विकास छोटे शस्त्रों के रूप में बारूद के युग में किया गया जिससे युद्ध कला के क्षेत्र में एक क्रान्ति सी आ गई, क्योंकि परम्परागत चले आ रहे हथियारों को समाप्त कर दिया गया। उनका स्थान नवीन एवं प्रहारक आग्नेय हथियारों ने ले लिया।

---

1. Quoted by J.F.C. Fuller in his book 'Armament & History.'

(ख) तोपखाने का विकास (Artillery development)—बारूद के युग में तोपखाने का विकास भी बड़ी तेज़ी के साथ किया गया। इनका आरम्भ भी 14वीं शताब्दी के शुरू में किया गया। सबसे पहले निर्मित तोपों का मुख दोनों ओर से खुला रहता था। पीछे से गोला-बारूद भरने के पश्चात् उसके नाल मुख को बन्द कर दिया जाता था जिस समय इन तोपों का फायर किया जाता था तो फायर के समय निकलने वाली गैसें पीछे से भी निकलने लगती थी जिससे फायर क्षमता धीमी या कम हो जाती थी। इसके पश्चात् एक ओर से मुंह बन्द तथा आगे से भरी जाने वाली तोपें बनाई जाने लगीं तथा इन तोपों की नाल भी चिकनी होती थी। इसके साथ ही अनेक प्रकार की धातुओं जैसे—पीतल, तांबा, लोहा तथा काँसा आदि की तोपें निर्मित की जाने लगी थीं।

समय में परिवर्तन के साथ ही तोपखाने का विकास भी होता था और आवश्यकता के अनुसार इनके स्वरूप में भी परिवर्तन किया जाने लगा। किलेबन्दी को तोड़ने के लिए भारी तोपें प्रयोग की जाती थीं, जिन्हें खींचने के लिए 60-60 बैल तक लगाये जाते थे। मैदानी क्षेत्रों के लिए हल्की तोपें भी निर्मित की जाने लगीं। इस समय निम्न प्रकार की तोपों का निर्माण किया गया—

(1) हल्की तोपें (Light Artillery)
(2) मध्यम तोपें (Medium Artillery)
(3) भारी तोपें (Heavy Artillery)
(4) मैदानी तोपें (Field Artillery)
(5) हाविट्ज़र (Howitzer)
(6) आगे से भरी जाने वाली तोपें (Muzzle loading Artillery)
(7) गतिशील तोपें (Mobile Artillery)

इस प्रकार अनेक प्रकार की तोपों के प्रयोग के परिणामस्वरूप युद्ध पद्धति में परिवर्तन आ गया तथा पैदल सेना को पुन: शक्तिशाली सेना का गौरव प्राप्त हो गया। जबकि तोपखाने के विकास से पहले पैदल सेना केवल सहायक सेना के रूप में ही कार्य करती थी, अब निर्णायात्मक सेना बन गयी। पैदल सेना के पास अब भारी तथा हल्के दोनों प्रकार के आग्नेय हथियार हो जाने से उसमें गतिशीलता, कार्यकुशलता, निर्णयात्मक क्षमता, सरलता एवं सफलता आदि विशेषतायें भी आ गयीं। इसी कारण तो कहा गया कि—
"आग्नेय हथियारों के आरम्भ हो जाने से पैदल सेना का पुन: महत्त्व बढ़ गया और उसे अब युद्ध क्षेत्र की रानी (Queen of Battle Field) भी कहा जाने लगा।"

तोपखाने के क्रमिक विकास के परिणामस्वरूप जहां क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए, वहां पैदल सेना ने युद्धों में अपनी प्रमुख भूमिका भी प्रमाणित कर दी।

युद्ध कला में विकास (Development of Warfare)—बारूद के युग में विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप समस्त सेनाओं उसके सैन्य संगठन, अस्त्रास्त्र तथा समरतन्त्र में बड़ी तेज़ी से परिवर्तन हुआ। इसके साथ ही जलीय युद्ध कला भी अत्यधिक विकसित हुई। इस काल में जलयानों को तोपों से सज्जित किया जाने लगा। इस सन्दर्भ में प्रसिद्ध इतिहासकार **ओमेन** महोदय ने लिखा है कि—

"बारूद के आविष्कार के परिणामस्वरूप जलयान अथवा युद्धपोत एक तैरता हुआ किला बन गया था, जिससे नौ सैनिक शत्रु के युद्धपोतों पर बलपूर्वक सवार होकर उनको हथियाने का पूरा प्रयास करते थे। युद्धपोत अब तोपों एवं बन्दूकों की शक्ति पर निर्भर एक यन्त्र को रूप में माना जाने लगा था। इस प्रकार जल मनोविज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया।"

इस प्रकार इस युग में आग्नेय हथियारों के विकास के परिणामस्वरूप इस समय की युद्ध कला भी अत्यधिक विकसित हुई। नवीन हथियार के आविष्कार ने युद्ध करने की व्यवस्था, सेनाओं का स्वरूप एवं युद्ध कला आदि में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन कर दिये। इसका प्रभाव सामाजिक, आर्थिक एवं सैनिक दृष्टिकोण से बहुत अधिक पड़ा। इससे युद्ध कला का विकसित होना स्वाभाविक था।

3. समरतन्त्र में विकास (Development of Tactics)—समरतन्त्र के क्षेत्र में भी अत्यधिक परिवर्तन हुए क्योंकि शस्त्रास्त्रों का अत्यधिक विकास हुआ, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव समरतन्त्र में पड़ता था। इसी कारण तो शस्त्रों का सीधा सम्बन्ध समरतन्त्र से माना जाता है। नवीन प्रकार के हथियारों के विकास के कारण समरतन्त्र में क्रान्तिकारी विकास हुआ।

इसीलिए कैप्टन लिटिल हार्ट महोदय ने लिखा है—

"Tactics in the domain of weapons."

अत: आग्नेय हथियारों के विकास के कारण समरतन्त्र में विकास होना स्वाभाविक सा हो गया, क्योंकि इससे निम्नलिखित तत्त्वों में भी वृद्धि हो गयी थी—

1. फायर एवं गतिविधि (Fire and Movement)
2. संगठन में परिवर्तन (Changes in Organization)
3. फायर नियन्त्रण (Fire Control)
4. धुएं का प्रयोग (Use of Smoke)
5. धोखेबाजी का अधिक प्रयोग (Use of surprising)
6. गतिविधियों का निरीक्षण (Eyes for Movements)
7. क्षेत्र कौशल (Field Craft)
8. व्यक्तिगत नेतृत्व (Individual Leadership)

4. सामाजिक परिवर्तन (Social Developments)—बारूद के आविष्कार से समाज में भी तेजी के साथ परिवर्तन आ गया, क्योंकि वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप इसमें भी परिवर्तन आना स्वाभाविक ही था। आग्नेय हथियारों के प्रयोग के कारण युद्ध के पूर्व निर्धारित नैतिक नियम भी अब ताक पर रख दिये गए तथा उनका स्थान कूटनीति, धोखेबाजी तथा चालाकी आदि तत्त्वों ने ले लिया। यही कारण है कि सामाजिक मूल्यों तथा आचार संहिता में मूलभूत परिवर्तन हुआ। यदि हम संक्षेप में कहें तो अब समाज में नैतिकता का स्थान धूर्तता ने ले लिया था।

5. औद्योगिक क्रान्ति (Industrial Revolution)—आग्नेय हथियारों के विकास

के परिणामस्वरूप उद्योगों में बड़ी तेजी के साथ परिवर्तन एवं विकास हुआ, जिसे औद्योगिक क्रान्ति का रूप दिया गया। इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप नवीन हथियारों का निर्माण, गोली का निर्माण, तोपखाने में क्रमिक सुधार, वार राकेट (War Rocket) का निर्माण, भाप के जलयानों का निर्माण आदि बड़ी तीव्रता से किया जाने लगा था। इस प्रकार समस्त यूरोप में आग्नेय हथियारों के निर्माण की जोरदार होड़ सी लग गयी, जिससे प्रत्येक राष्ट्र स्वावलम्बी बनने के लिए उद्योगों के विकास में जुट गया। यही कारण है कि बारूद के युग को औद्योगिक क्रान्ति का जन्मदाता माना जाता है। इसीलिए तो कहा जाता है कि "**आवश्यकता आविष्कार की जननी है।**"

6. जलयानों का विकास (Development of Naval Art)—बारूद के युग में आग्नेय हथियारों विशेष रूप से तोपों के विकास के परिणामस्वरूप जलीय युद्ध व्यवस्था में भी जोरदार परिवर्तन आया, क्योंकि शत्रु के जलयानों का शिकार करने के लिए अपने जलयानों में बड़ी-बड़ी तोपों का प्रयोग किया जाने लगा। इस युद्ध कला में सर्वप्रथम इंग्लैंड ने श्रेष्ठता हासिल कर ली और यूरोप में ही नहीं, बल्कि समस्त संसार में श्रेष्ठ नौ सैनिक शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बन गया। इस सन्दर्भ में ओमेन महोदय ने अपनी पुस्तक " A History of the art of war in 16th Century." में वर्णन किया है कि—

"This idea of making the warship a machine designed to operate by force of gunnery, rather than a fort with a garrison of soldiers who wave to be board of the enemy in close combat, was a cardinal change in naval psychology."

(बारूद के विकास के फलस्वरूप युद्धपोत एक तैरता हुआ किला बन गया जिसमें नौ सैनिक शत्रु युद्धपोतों पर बलपूर्वक चढ़कर अपने अधिकार में करने का प्रयास करते थे, अब तोपों एवं बन्दूकों की शक्ति पर निर्भर एक यन्त्र माना जाने लगा। इस प्रकार जल की मनोवृत्ति में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया।)

इस प्रकार बारूद के युग में जलयानों के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण विकास हुआ, जिसका उल्लेख संक्षिप्त रूप में इस प्रकार कर सकते हैं—

1. समद्री युद्धों में आग्नेय हथियारों का प्रयोग होने के कारण शत्रु के जलयानों का शिकार बनाना सरल हो गया।
2. गतिशील तथा हल्के जलयानों का प्रयोग बढ़ गया।
3. जलीय सुरक्षा के लिए इसका प्रयोग अनिवार्य हो गया।
4. तकनीकी परिवर्तन हो गया।
5. समरतान्त्रिक परिवर्तन आरम्भ हो गया।
6. मनोवैज्ञानिक तत्त्वों का महत्त्व बढ़ गया।
7. कूटनीतिक चालों का प्रयोग बढ़ गया।
8. जलीय युद्धों में विनाशकता बढ़ गयी।

1550 के दशक में बन्दूक के आ जाने से, जिसकी शुरुआत इटली में स्पेन की सेना ने किया था, एक ऐतिहासिक बदलाव आया। धीरे-धीरे बन्दूक जो युद्ध भूमि के नायक बन गये और वे अन्य सभी विशेषज्ञों की अपेक्षा महत्त्वपूर्ण समझे जाने लगे। बन्दूक में **'मैच लॉक'** के स्थान पर **'व्हील लॉक'** का इस्तेमाल होने लगा। छोटे आग्नेय हथियारों और तोप की क्षमता का उपयोग बढ़ा परन्तु आधुनिक युग की तुलना में उसकी प्रगति गति काफ़ी धीमी थी। बारूद के युग में नये हथियारों के कारण **'नाइटों'** (घुड़सवार सैनिकों) का युद्ध कौशल, उनका सामर्थ्य और सम्मानजनक युद्ध का आदर्श लुप्त हो गया। युद्ध का लक्ष्य ही शत्रु की सेना को ध्वस्त करना था। 16वीं शताब्दी तक आग्नेय हथियारों एवं तोपों का महत्त्व बढ़ता ही गया। इस प्रकार बारूद के उस युग में स्थल सेना के हथियारों, युद्धकला एवं रणनीति में ज़ोरदार बदलाव आया।

2. जलीय युद्ध कला का विकास
(Development of Naval Art of War)

बारूद के युग में जलयानों का विकास तेज़ी से हुआ, क्योंकि इन पर रखकर तोपों का प्रयोग शत्रु पर किया जाने लगा था। इसी के कारण जलीय युद्ध कला में तेज़ी के साथ परिवर्तन भी हुआ। बारूद के प्रयोग के कारण ही ब्रिटिश नौ सेना एक विशाल सेना के रूप में संसार के सामने उभर कर आयी थी और व्यापारिक एवं सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों पर अपना अधिकार जमाना शुरू कर दिया था और उसका साम्राज्य विस्तार इतना अधिक हो गया कि उसके शासन क्षेत्र में सूर्यास्त नहीं होता था। इसी विशेषता के कारण ही ब्रिटिश सरकार का अन्य देशों पर एक लम्बी अवधि तक बिना किसी विरोध के अधिकार बना रहा। यद्यपि बारूद का आविष्कार चौदहवीं शताब्दी में हो गया था, किन्तु युद्ध क्षेत्र में अधिक मात्रा में प्रयोग पन्द्रहवीं शताब्दी से ही शुरू होने का उल्लेख मिलता है। प्रारम्भ में जलीय युद्ध कला के विकास में इंग्लैंड के कुशल शासक हेनरी सप्तम् ने अपने समय (1485 ई० से 1509 ई० तक) विशेष रूप से महत्त्व प्रदान किया और व्यक्तिगत रूप से रुचि लेकर इसके विकास पर बल दिया और रीजेण्ट (Regant) तथा सोवरेन (Sovereign) नामक नवीन श्रेणी के जलयानों का निर्माण करवाया था।

इन जलयानों का निर्माण विशेष रूप से आग्नेय हथियारों (Fire Arms) के प्रयोग को ध्यान में रखकर किया गया था, ताकि शत्रु पर सुविधा एवं सरलता से जलयानों द्वारा फायर डाला जा सके। यद्यपि इस समय के जलयान यन्त्र-चलित नहीं थे, अत: इनको गतिशीलता प्रदान करने के लिए पतवार के स्थान पर वादवानों का प्रयोग किया जाने लगा था। इसके बाद हेनरी अष्ठम् ने भी अपनी सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ एवं शक्तिशाली बनाये रखने के लिए जलीय युद्धकला के विकास पर बराबर बल दिया और नवनिर्मित जलयानों का पृष्ठभाग विशेष रूप से आग्नेय हथियारों से सज्जित किया जाता था। इसी उद्देश्य हेतु सन् 1520 ई० से 1530 ई० तक भारी संख्या में जलीय युद्ध कला के लिए विशेष रूप से तोपों का निर्माण किया गया था। इसके पूर्व जलयानों में बन्दूक लिए सैनिक

सवार रहते थे, जो निरीक्षण के साथ ही सुरक्षा बनाये रखते थे, किन्तु उनकी प्रहारक क्षमता कम होती थी। इसी कारण हल्की श्रेणी के अधिक प्रभावशाली मार करने वाली तोपों का विकास किया गया, जिससे जलयानों के आकार में भी परिवर्तन आया और जलीय युद्ध कला प्रत्यक्ष रूप से इससे प्रभावित हुई। इस सन्दर्भ में प्रसिद्ध इतिहासकार Omen ने अपनी रचना 'A History of the Art of war in the 16th Century' में वर्णित किया है—

"This idea of making the warship a machine designed to operate by force of gunnery, rather than a fort with a garrison of soldiers who were to be board the enemy in close combat, was a cardinal change in naval psychology."

इंग्लैंड ने अपनी नौ सेना के विकास पर विशेष बल दिया और बारूद के युग से ही इसकी शुरुआत हुई जो कि इंग्लैंड की सफलता का एक लम्बी अवधि तक रहस्य रहा। महारानी एलिजाबेथ ने भी अपनी साम्राज्य सीमाओं की सुरक्षा के लिये सामुद्रिक शक्ति के विकास पर विशेष बल दिया था और यही कारण था कि उस समय संसार के सबसे बड़े स्पेनिश समुद्री जहाज़ी बेड़े को भी अपने सामने टिकने नहीं दिया था। इस जल युद्ध में अंग्रेज़ों की सफलता का रहस्य श्रेष्ठ जलयान नहीं थे, बल्कि जलयानों में प्रयोग किये गये आग्नेय हथियार ही प्रमुख रूप से उत्तरदायी थे, क्योंकि स्पेन के जलयानों में आग्नेय हथियारों का प्रयोग वहां के लोग नाजायज मानते थे।

बारूद के युग में स्पेन एवं ब्रिटिश के मध्य नौ सेना की कार्यवाही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना थी, क्योंकि इस जलीय युद्ध में ब्रिटिश नौ सेना ने जलयानों द्वारा भीषण एवं भयानक आग्नेय हथियारों का प्रयोग करके स्पेन के जलयानों को तबाह कर दिया था। यह जल-युद्ध अथवा सामुद्रिक समरतन्त्र सीधी टक्कर पर आधारित न होकर दूर से ही फायर करने पर आधारित हो गया था। इस नौ सैनिक कार्यवाही का उल्लेख करते हुए प्रसिद्ध इतिहासकार लॉर्ड हावर्ड ने लिखा है—

"यह लड़ाई प्रातः से लेकर सायं तक लगातार चलता रही थी, इस अभियान से पूर्व ऐसे भयंकर तथा तेज़ आग्नेय हथियारों का प्रयोग नहीं देखा गया था। इस युद्ध में अनगिनत बन्दूक धारियों को कोई महत्त्व नहीं मिला, क्योंकि बड़ी-बड़ी तोपों की प्रहारक शक्ति इतनी तेज़ थी कि गोलियों की मार की कोई गणना नहीं होती थी।"

स्पेन एवं ब्रिटिश जलसेना द्वारा 1855 ई० में पहली बार विशाल शक्ति के रूप में यह लड़ाई लड़ी गयी। यही कारण है कि जलीय युद्ध कला (Naval Warfare) की दृष्टि से बारूद के युग में यह सर्वोत्तम उदाहरण है। यद्यपि इस युद्ध में स्पेन के विशाल समुद्री बेड़े (अर्मेडा) को सीमित संख्या में ब्रिटिश तोपों से सुसज्जित जलयानों ने ध्वस्त कर दिया था। इस युग में ब्रिटिश जलसेना की सफलता का प्रमुख रहस्य जहां उनकी विशाल तोप वाले जलयान थे, वहां उनके कुशल नाविकों ने भी अपनी कूटनीतिक एवं समरतान्त्रिक चालों के द्वारा शत्रु को धोखा देकर स्पेन की जलसेना को घुटने टेकने के

लिए मजबूर कर दिया था। इस युद्ध में ब्रिटिश सेना की सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि सुदृढ़ नौ सेना के बिना समुद्र पर आधिपत्य स्थापित नहीं किया जा सकता। इसमें विशेष बात ध्यान देने योग्य यह थी कि युद्ध में जलयानों की संख्या नही, बल्कि कुशल सेनापतियों की चालें एवं समरतान्त्रिक विशेषतायें सफलता के रहस्य होते हैं।

बारूद के युग में जलीय युद्ध व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए, क्योंकि प्राचीन परम्परागत जलीय युद्ध व्यवस्था के स्थान पर तोपों से सज्जित द्रुतगामी जलयानों द्वारा युद्ध व्यवस्था संचालित की जाने लगी थी। आग्नेय हथियारों के विकास ने केवल स्थल युद्ध कला को ही प्रभावित नहीं किया, बल्कि जलीय युद्ध कला को प्रत्यक्ष रूप से परिवर्तित कर दिया। इस सन्दर्भ में प्रसिद्ध रूसी इतिहासकार पाकरोवस्की महोदय ने अपनी पुस्तक—**"Science and Technology in Contemporary War"** में स्पष्ट रूप से लिखा है कि—

"There have been period in the history of the world in which the discovery of new weapons and new means of waying war fundamentally changed the shape of armies and indeed the whole art of war. Not only that but they were so for reaching that they even changed the very startification of society itself the outstanding except of this was the discovery of gun powder and its application to the waying of war."

(संसार के इतिहास में अनेकों ऐसे समय आये हैं, जिनमें नये शस्त्रों के आविष्कार से युद्ध करने के तरीकों में सेनाओं के स्वरूप में और युद्ध कला में मूलभूत परिवर्तन हुए हैं। इतना ही नहीं, बल्कि इसका प्रभाव इतना अधिक विस्तृत एवं गम्भीर हुआ कि समस्त समाज का ढांचा ही परिवर्तित हो गया है। इस बात का एक उल्लेखनीय उदाहरण बारूद का आविष्कार तथा उसका युद्ध में प्रयोग है।)

अब हम संक्षिप्त रूप में बारूद के आविष्कार के साथ ही जलीय युद्ध व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन के संदर्भ में व्याख्या करते हैं, जिसने जलीय अथवा समुद्री सीमाओं वाले देशों के लिए एक चौकसी के लिए दिशा ही नहीं दी अपितु यह सिद्ध कर दिया कि समुद्री सीमा से लगे देशों की सुरक्षा नौ सेना की शक्ति पर बहुत हद तक निर्भर करेगी। प्राचीन परम्परागत जलीय युद्ध-व्यवस्था ने एक नया मोड़ ले लिया।

1. समरतन्त्र में परिवर्तन
2. गतिशीलता का महत्त्व
3. धोखे की नीति का महत्त्व
4. सामुद्रिक शक्ति का विकास
5. जलयानों की तकनीकी का विकास
6. समुद्री युद्ध में तोपों का महत्त्व
7. मनोवैज्ञानिक तत्त्वों का महत्त्व
8. तकनीकी की महत्त्वपूर्ण भूमिका

9. कुशल नेतृत्व का महत्त्व

10. राष्ट्रीय भावना की भूमिका।

1. समरतन्त्र में परिवर्तन—तोपों के विकास के परिणामस्वरूप जलीय समरतन्त्र में सीधा परिवर्तन हुआ क्योंकि जलयानों की लड़ाई अब सीधी टक्कर न होकर दूर से ही नष्ट करने की कोशिश की जाने लगी के आधार पर होने लगी थी।

2. गतिशीलता का महत्त्व—बारूद के विकास के साथ ही विशाल जलयानों के स्थान पर हल्की श्रेणी के जलयानों को तोपों से सज्जित करने पर बल दिया जाने लगा, क्योंकि इन्हें तेज़ी के साथ शत्रु के विरुद्ध प्रयोग किया जा सके और उन्हें आसानी से निशाना बनाया जाने लगा।

3. धोखे की नीति का महत्त्व—बारूद के युग में जलीय युद्ध व्यवस्था के लिये आमने-सामने की लड़ाई के स्थान पर धोखे की नीति को विशेष रूप से अपनाया जाने लगा क्योंकि शत्रु को धोखे में रखकर ही उस पर दबाव डाला जाना अत्यन्त सरल एवं सफल कार्यवाही सिद्ध होने लगी थी।

4. सामुद्रिक शक्ति का विकास—समुद्री सीमा में लगे हुए देश यह अनुभव करने लगे कि अपने राष्ट्र की शक्ति, सुरक्षा एवं समृद्धि के लिए सामुद्रिक शक्ति का विकास आवश्यक है। इसी भावना के कारण विभिन्न प्रकार के नवीन जलयानों का निर्माण होने लगा।

5. जलयानों की तकनीकी का विकास—बारूद के आविष्कार के परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार की तोपों से सज्जित करने के लिए विभिन्न प्रकार के जलयानों का निर्माण आरम्भ हो गया, जिससे जलयानों की तकनीकी का विकास शुरू हो गया था।

6. समुद्री युद्ध में तोपों का महत्त्व—इस युग में यह अनुभव किया जाने लगा कि सामुद्रिक शक्ति वृद्धि के लिए सिर्फ जलयानों की संख्या ही सब कुछ नहीं है बल्कि उन्हें कितनी कारगर एवं संहारक तोपों से सज्जित किया गया है। बारूद के युग में तोपें समुद्री युद्ध का प्रमुख हथियार बन गयी थीं। तोपों की प्रहारक क्षमता एवं मार की दूरी के आधार पर ही जलयानों की शक्ति निर्भर होने लगी।

7. मनोवैज्ञानिक तत्त्वों का महत्त्व—बारूद के आविष्कार के परिणामस्वरूप जलीय युद्ध प्रणाली में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ कि शारीरिक शक्ति के स्थान पर मनोवैज्ञानिक तत्त्व जैसे अनुशासन, मनोबल, कर्त्तव्यनिष्ठा, बलिदान एवं कुशल नेतृत्व का महत्त्व बढ़ गया।

8. तकनीकी की महत्त्वपूर्ण भूमिका—बारूद के युग में यह अनुभव किया गया कि सामुद्रिक शक्ति के विकास के लिए श्रेष्ठ श्रेणी की तकनीकी महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी। इसी कारण प्रत्येक राष्ट्र श्रेष्ठतम तकनीकी के विकास के लिए जुट गया था। यही कारण था कि अनेक प्रकार के जलयानों एवं उनके हथियारों का विकास हुआ।

9. कुशल नेतृत्व का महत्त्व—बारूद के युग में जहां तकनीकी विकास बड़ी तेज़ी से हुआ, वहां कुशल नेतृत्व पर उसका प्रभाव अधिक निर्भर रहने लगा, क्योंकि श्रेष्ठ तकनीकी की छोटी चूक भी अत्यन्त हानिकारक प्रमाणित होने लगी थी।

10. राष्ट्रीय भावना की भूमिका—बारूद के युग ने जहां श्रेष्ठ हथियार प्रदान किये वहां राष्ट्रीय भावना की भूमिका बहुत हद तक निर्णायक सिद्ध होने लगी, क्योंकि इस समय युद्धों की विनाशक क्षमता बढ़ गई।

इस प्रकार बारूद के युग में जलीय युद्ध कला का विकास अत्यधिक हुआ। इसी कारण हम कह सकते हैं कि जलीय युद्ध कला के इस युग ने एक नवीन दिशा प्रदान की।

3. युद्ध कला में विज्ञान एवं तकनीकी का प्रभाव (Impact of Science & Technology on Warfare)

विज्ञान एवं तकनीकी का तेज़ी से विकास वास्तव में बारूद के युग से ही आरम्भ हुआ क्योंकि आग्नेय हथियारों की होड़ ने जहां औद्योगिक दौड़ शुरू कर दी, उसके लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति आवश्यक थी। इस युग का यह एक अभूतपूर्व परिवर्तन था। इस काल के पूर्व युद्ध में प्रयोग किये जाने वाले हथियार अधिकांश स्वयं सैनिकों द्वारा या जन-साधारण द्वारा तैयार कर लिये जाते थे, किन्तु आग्नेय हथियारों के आरम्भ हो जाने से हथियारों के उत्पादन केन्द्रों का तेज़ी के साथ सिलसिला शुरू हो गया। वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहायता के आधार पर आवश्यक युद्ध सामग्री एवं हथियारों का निर्माण कार्य आरम्भ हो जाने से औद्योगिक क्षेत्रों में विकास शुरू हो गया। इसके परिणामस्वरूप प्राचीन परम्परागत चली आ रही पराक्रम एवं कला कौशल का स्थान यान्त्रिक शक्ति ने ले लिया था। इसी कारण समाज के विकास का उत्तरदायित्व महान् नायकों के स्थान पर महान् आविष्कार का माना जाने लगा जैसा कि ई०एच०लेकी (E.H. Lecky) ने लिखा है—

"Hence on-words it is the great inventions more so than the great men which disturb and accelerate the progess of society."[1]

इस युग में विज्ञान एवं तकनीकी ने युद्ध कला को सर्वाधिक प्रभावित किया और सम्पूर्ण सेनाओं के संगठन, शस्त्रास्त्र, समरतन्त्र एवं साधनों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित ही नहीं किया, बल्कि अत्यधिक परिवर्तित किया। इसी कारण प्रसिद्ध रूसी इतिहासकार पाकरोवस्की ने लिखा है कि—

"15वीं शताब्दी में आग्नेय हथियारों के प्रयोग से सैनिक क्षेत्र में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया।"[2]

निरन्तर नवीन श्रेणी के हथियारों के निर्माण की इच्छा तथा निर्मित इन हथियारों के विरुद्ध रक्षा करने वाले हथियारों की भावना ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुसंधान को और भी बल प्रदान किया। इस प्रकार निरन्तर विकास की ओर बढ़ने के कारण ही इस युग

1. E.H. Lecky—"History of European Morals" (1902), Vol. I Page 126
2. Pokrovsky—Science and Technology in contemporary war.'

को पुनरुत्थान का युग (Age of Renaissance) के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। इस युग को युद्ध कला के एक नवीन युग के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि शारीरिक शक्ति का स्थान यान्त्रिक शक्ति ने ले लिया था और युद्ध का स्वरूप सार्वजनिक हो गया था।

अब हम युद्ध कला के क्षेत्र में विज्ञान एवं तकनीकी प्रभावों का उल्लेख करते हैं जो इस प्रकार से हैं—

1. हथियारों की होड़ (Development of Arms)
2. तकनीकी युद्ध का विकास (Development of Technic)
3. समरतान्त्रिक परिवर्तन (Strategical changes)
4. कूटनीतिक युद्ध (Diplomatic war)
5. मनोवैज्ञानिक युद्ध (Psychological war)
6. प्रजातान्त्रिक युद्ध (Democratic war)
7. सेना में प्रशासन का महत्त्व (Importance of Administration in Army)
8. भू-कौशलात्मक स्थानों का महत्त्व (Importance of Geostrategical places)
9. औद्योगिक विकास (Industrial development)
10. साम्राज्य विस्तार की होड़ (Development of Imperialism)
11. राजनीतिक युद्ध (Political war)
12. सेना के फैलाव का महत्त्व (Importance of Army Deployment)
13. खोजबीन का महत्त्व (Importance of Patrols)
14. आड़ एवं छिपाव का महत्त्व (Importance of Cover & Concealment)
15. किलेबन्दी में परिवर्तन (Change in Fortification)
16. पैदल सेना का महत्त्व (Importance of Infantry)
17. सहयोग का महत्त्व (Importance of co-operation)
18. चकमा का महत्त्व (Importance of Surprise)
19. नेतृत्व का महत्त्व (Importance of Leadership)
20. आपूर्ति का महत्त्व (Importance of Supply)

उपरोक्त प्रभावों की विस्तृत व्याख्या इस प्रकार से है—

1. हथियारों की होड़ (Development of Arms)—बारूद के युग में वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के प्रभाव से हथियारों के निरन्तर विकास की होड़ लग गई और प्रत्येक राष्ट्र अपनी सुरक्षा व्यवस्था को बनाये रखने के लिए हथियारों की इस दौड़ में शामिल होने लगा। इस होड़ ने तो तत्कालीन समाज की व्यवस्था को ही पूरी तरह से बदल दिया। जैसा कि पाकरोवस्की महोदय ने लिखा है—

" There have been periods in the history of the world in which the discovery of new weapons and new means of waging war fundamentally changed the shape of armies and indeed,

the whole art of war, not only that, but they were so far reaching that they ever changed the very stratification of society itself. The outstanding example of this was the discovery of gun powder *and its application to the waging of war.*"[1]

(विश्व इतिहास में ऐसे अनेक युग आये जिसमें नये अस्त्रों के आविष्कार से लड़ाई की विधि, सेनाओं के स्वरूप और युद्धनीति में आधारभूत परिवर्तन हुए हैं। इतना ही नहीं, इसका प्रभाव इतना विस्तृत एवं गम्भीर हुआ कि सम्पूर्ण समाज का ढांचा ही बदल गया। इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण बारूद की खोज और इसका युद्ध में प्रयोग है।)

इस युग में आग्नेय हथियारों की होड़ इतनी अधिक हो गयी कि इनके बिना युद्ध में भाग लेने की कल्पना भी व्यर्थ हो गई। समस्त राष्ट्र हथियारों को जुटाने में लग गये, क्योंकि युद्धों का निर्णय हथियारों के द्वारा निर्धारित किया जाने लगा था जैसा कि जनरल जे०एफ०सी०फुलर ने लिखा है—

"Tools or weapons, if only the right one can be discovered *from 99% of victory.*"[2]

(यदि उत्तम प्रकार के हथियारों एवं यन्त्रों का आविष्कार कर लिया जाए तो 99% विजय प्राप्त की जा सकती है।)

2. तकनीकी युद्ध का विकास (Development of Technical war)—हथियारों की निरन्तर बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने युद्ध को तकनीकी स्वरूप में परिवर्तित कर दिया और प्राचीन परम्परागत शारीरिक शक्ति का स्थान यान्त्रिक एवं तकनीकी व्यवस्था ने ग्रहण कर लिया। जिसे हम संक्षिप्त में कह सकते हैं कि वीरता एवं पराक्रम का स्थान यान्त्रिक कला ने ले लिया था और भुजाओं का बल हथियारों में प्रवेश कर गया। किसी भी समाज एवं राष्ट्र की पहचान उसके सामाजिक स्तर पर नहीं बल्कि उसकी हथियारों की तकनीकी के आधार पर नापी जाने लगी थी, जैसा कि जनरल जे०एफ०सी०फुलर ने लिखा है—

".....He who wield the superior weapon is the more *formidable foe irrespective of his social status or courage.*"[3]

(जो अच्छे हथियार प्रयोग करते हैं अधिक शक्तिशाली शत्रु हैं, चाहे वे कितने ही उच्च सामाजिक स्तर अथवा साहसी हो।)

3. समरतान्त्रिक परिवर्तन (Strategical Changes)—इस युग में नवीन प्रकार के छोटे, मध्यम एवं बड़े हथियारों के प्रयोग के कारण समरतान्त्रिक परिवर्तन भी हुए। इस समय सैनिकों ने भाला एवं बरछी के स्थान पर संगीन युक्त मस्केट का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया था, जिससे प्रहारक क्षमता में प्रभावशाली वृद्धि हुई। इसके साथ ही बिखर कर शत्रु को शिकार बनाया जाने लगा। ठोस संरचनायें अब समाप्त हो गयी थीं।

1. Pokrovsky—Science and Technology in contemporary war.
2. J.F.C Fuller Armament & History
3. J.F.C Fuller : Armament & History, Page-83.

फैलाव की समरतान्त्रिक संरचनाओं से शत्रु को घेरना एवं अपना बचाव करना सरल हो गया था। संगीन के प्रयोग द्वारा पैदल सेना का संगठन एवं सामरिकी में क्रान्तिकारी बदलाव आ गया। जैसा कि कर्नल हाइम ने लिखा है—

"The introduction of the bayonet marks the end of the medieval and the beginning of modern war-tactics were revolutionized by a dagger some 12 inches long."[1]

(संगीन के प्रयोग से मध्यकालीन युद्धों की समाप्ति तथा आधुनिक युद्धों का युग शुरू होता है। .... इस 12 इंच वाले छुरे ने लड़ने के ढंगों में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिये।)

4. कूटनीतिक युद्ध (Diplomatic War)—बारूद के युग में विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप नैतिक युद्धों का रूप अब कूटनीतिक युद्धों के रूप में उभर कर आ गया। इस समय युद्ध में सफल होने के लिए प्रत्येक पक्ष अपने विरोधी के लिए कूटनीतिक चालों का सहारा लेने लगा। जिसके कारण एक-दूसरे को धोखा देना तथा छल-प्रपंच का प्रयोग करना युद्ध का एक मूल मन्त्र माना जाने लगा। इस सन्दर्भ में जनरल जे०एफ०सी० फुलर ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि—

"Further, this concentration of power in the secular hands raised the monarchy above the church for war, becoming a political instrument, ceased to be a moral trial."[2]

(इस प्रकार शक्ति के धर्म निरपेक्ष हाथों में केन्द्रित हो जाने से राजतन्त्र का स्थान चर्च से ऊपर हो गया क्योंकि अब युद्ध नैतिक परीक्षण न रहकर राजनीतिक संचालित करने का साधन बन गया।)

5. मनोवैज्ञानिक युद्ध (Psychological war)—इस युग में विज्ञान एवं तकनीकी प्रभाव युद्ध कला के क्षेत्र में इतना पड़ा कि युद्धों में मनोवैज्ञानिक पहलुओं की महत्त्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका होने लगी। सैनिकों की शारीरिक शक्ति की अपेक्षा उनके अन्तर्गत निहित बलिदान, अनुशासन, साहस, नेतृत्व एवं आत्म-विश्वास की भावना का विशेष महत्त्व माना जाने लगा, क्योंकि इन तत्त्वों के अभाव में अब सफलता प्राप्त करना संभव न था। आग्नेय हथियारों ने जहां युद्ध में विनाशकता एवं भयंकरता को जन्म दिया, वहां इसके विरुद्ध मोर्चा लेने के लिए सैनिकों के अन्दर निहित मनोवैज्ञानिक तत्त्वों का महत्त्व बढ़ गया। इसका परिणाम यह हुआ कि युद्धों में सैन्य संगठन को सुव्यवस्थित एवं सुचारू रूप से संचालित करने के लिए मनोवैज्ञानिक तत्त्वों का प्रयोग अत्यन्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण माना जाने लगा।

6. प्रजातान्त्रिक युद्ध (Democratic War)—इस युग में विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप युद्ध की विनाशक व संहारक क्षमता बहुत अधिक बढ़ गई।

---

1. Colonel Hime : Quoted by J.F.C Fuller : Armament & History Page-100.
2. J.F.C Fuller : Armament & History. Page-83.

जिसका परिणाम यह हुआ कि युद्ध में सेनाओं के साथ-साथ समस्त राष्ट्र की जनता भी प्रभावित होने लगी थी। इसी कारण इसी युग में युद्ध का स्वरूप प्रजातान्त्रिक हो गया। प्रत्येक वर्ग एवं नागरिक प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में भाग लेने लगा। अब सैनिक सेवा किसी विशेष वर्ग के लिए ही नहीं रह गई बल्कि अब शासकीय व्यवसाय के रूप में आ गई थी। हथियारों की प्रगति के कारण सामन्तवाद का समापन शुरू हो गया और प्रजातान्त्रिक व्यवस्था को बढ़ावा मिलने लगा। पाकरोवस्की ने लिखा है कि—

"इसका प्रभाव इतना विस्तृत और गम्भीर हुआ कि सम्पूर्ण समाज का ढांचा ही बदल दिया।"

बारूद के इस युग में विज्ञान व तकनीकी का प्रभाव इतना पड़ा कि युद्ध में आक्रमण एवं प्रतिरक्षा के तरीके पूर्णत: बदल गये और राष्ट्र की सम्पूर्ण जनता युद्धों के स्वरूप से प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्रभावित होने लगी।

7. सेना में प्रशासन का महत्त्व (Importance of Administration in Army)—बारूद के युग में विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के प्रभाव स्वरूप सेना में प्रशासन का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया, क्योंकि प्राचीन परम्परागत चली आ रही सुदृढ़ संरचनाओं का युग समाप्त हो गया था और अब सेना विस्तृत क्षेत्र में फैलाव के साथ कार्य करने लगी थी। अत: इस व्यापक क्षेत्र में फैली सेना का नियन्त्रण एवं निर्देशन करने के लिए प्रशासन का महत्त्व बढ़ गया। इसके कारण जहां अनेक नवीन श्रेणी के हथियारों का निर्माण एवं प्रयोग शुरू हो गया था, वहां बढ़ती सैन्य संख्या पर नियन्त्रण तथा तकनीकी ज्ञान के प्रशिक्षण के लिए प्रशासनिक आवश्यकताएं बढ़ती गईं। सेनाओं के संगठन उनके शस्त्रास्त्रों एवं संरचनाओं का समुचित उपयोग करने के लिए प्रशासन का महत्त्व बढ़ना स्वाभाविक था। इसीलिए प्रशासन के सन्दर्भ में ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह ने लिखा है—

"प्रशासन एक क्रिया है, जिसके द्वारा एक संगठन जीवित रखा जाता है।"

8. भू-कौशलात्मक स्थानों का महत्त्व (Importance of Geostrategical places)—इस काल में विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के प्रभाव के कारण हथियारों की बढ़ती होड़ ने जहां अत्यधिक विनाशक एवं संहारक युद्ध को बढ़ावा दिया, वहां भू-कौशलात्मक स्थानों का महत्त्व भी बढ़ गया। एक ओर जहां शत्रु के विनाश के लिए कार्यवाही होती थी वहां उसके आक्रमण से अपनी सेना एवं सामग्री की सुरक्षा के लिए सामरिक महत्त्व के क्षेत्रों पर विशेष निगरानी रखे जाने का महत्त्व बढ़ गया। शत्रु पर हमला करने के पूर्व उसके भू-कौशलात्मक क्षेत्रों अथवा स्थानों को अपने अधिकार में किया जाने लगा। इससे अपनी सेना को अधिक-से-अधिक लाभ प्राप्त होता गया। शत्रु की सेना को अधिक-से-अधिक हानि होने के अवसर बढ़ जाते थे। इस सन्दर्भ में मेजर जनरल डी०के०पालित ने लिखा है—

"The value of topographical objective now began to show its importance and the art of disposing troops to fit the ground."

(भौगोलिक तथ्यों का विकास अब आरम्भ हो गया और अब इसे धरातल के आधार पर दलों अथवा टुकड़ियों को छिपाने की कला की शुरुआत हो गयी।)

9. औद्योगिक विकास (Industrial Development)—इस युग में विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के कारण आग्नेय हथियार के रूप में प्रयोग किये जाने वाले छोटे तथा बड़े हथियारों के निर्माण के लिए लोहे की मांग बढ़ी। इसका परिणाम यह हुआ कि लोहे एवं अन्य आवश्यक कच्चे माल की तलाश देश व विदेश में की जाने लगी, जिससे औद्योगिक विकास होना स्वाभाविक था। उद्योग धन्धे इतनी तेज़ी से विकसित किये जाने लगे कि सम्पूर्ण यूरोपीय सम्पत्ति इसमें लगाई जाने लगी, ताकि शस्त्रों का विकास करके स्वयं एवं स्वराष्ट्र की स्थिति को अत्यधिक सुरक्षित एवं सुदृढ़ बनाया जा सके। औद्योगिक क्रान्ति की आधारशिला भी इस युग में रखी गई।

10. साम्राज्य विस्तार की होड़ (Development of Imperialism)—इस युग में आग्नेय हथियारों के विकास एवं वैज्ञानिक तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप समस्त यूरोपीय राज्यों में साम्राज्य विस्तार के लिए उतावले हो उठे थे, क्योंकि साम्राज्य की सुरक्षा एवं साम्राज्य विस्तार का प्रमुख साधन विकसित आग्नेय हथियार ही थे। हथियारों की बढ़ती निरन्तर होड़ ने राज्य के खजानों को खाली कर दिया जिसकी पूर्ति के लिए कमज़ोर राज्यों को अपने अधीन करने की भावना ने साम्राज्य विस्तार को जन्म दिया। जिन राष्ट्रों के पास श्रेष्ठ हथियार नहीं थे और खनिज एवं संसाधन पर्याप्त मात्रा में थे उनको पहले अपने अधिकार में करने का प्रयास किए गए, ताकि वहां की सम्पदा का अधिक-से-अधिक दोहन किया जा सके।

इस प्रकार वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के प्रभाव से इस युग में साम्राज्य विस्तार की होड़ लग गई थी।

11. राजनैतिक युद्ध (Political War)—वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के कारण जहां आग्नेय हथियारों की प्रहारक क्षमता बढ़ गयी, वहां युद्ध के स्वरूप में परिवर्तन आया और अब युद्ध का उद्देश्य राजनैतिक अधिक हो गया था। इसके पूर्व युद्ध का उद्देश्य (Arm of War) नैतिक अधिक होता था। इस सन्दर्भ में जनरल जे०एफ०सी०फुलर ने स्पष्ट रूप में लिखा है—

"Further, this concentration of power in the secular hands, raised the monarchy above the church for war, becoming a political instrument ceased to be a moral trail."[1]

(इस तरह शक्ति के धर्म निरपेक्ष हाथों में केन्द्रित हो जाने से राजतन्त्र का स्थान चर्च से ऊपर हो गया, क्योंकि अब युद्ध नैतिक परीक्षण न होकर राजनीति संचालित करने का साधन बन गया।)

इस प्रकार राज्य की नीति के आधार पर ही युद्ध लड़े जाने लगे। मैक्यावली ने इसीलिए स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि—

1. J.F.C Fuller— Armament & History Page-93.

"War is a continuation of state policy."
(युद्ध राज्य की नीति को लागू करने का एक साधन मात्र है।)

अब धार्मिक एवं नैतिक युद्धों के स्थान पर राजनैतिक युद्ध का बोलबाला शुरू हो गया था।

12. सेना के फैलाव का महत्त्व (Importance of Army Deployment)—इस समय तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रगति के कारण प्राचीन परम्परागत ठोस संरचनाओं का युग समाप्त हो गया, क्योंकि आग्नेय हथियारों के भीषण एवं घातक प्रहार से ठोस संरचनायें क्षण भर में नष्ट हो जाती थीं। इसका परिणाम यह हुआ कि अब युद्धों में सेनाएं विभक्त होकर फैलाव के साथ शत्रु का मोर्चा संभालने लगीं, क्योंकि इससे शत्रु के आक्रमण अथवा प्रहार से बचाव करना सरल हो गया था।

इस प्रकार सेना के फैलाव का महत्त्व इस काल में विशेष रूप से बढ़ गया और नवीन प्रकार के समरतन्त्र की शुरुआत का सिलसिला शुरू हो गया था।

13. खोजबीन का महत्त्व (Importance of Patrols)—बारूद के युग में वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के प्रभाव के कारण इस समय के युद्धों में खोजबीन अथवा छानबीन को विशेष महत्त्व दिया जाने लगा, क्योंकि शत्रु आग्नेय हथियारों के प्रहार से बचने के लिए धोखेबाज़ी एवं आड़ व छिपाव का सहारा लेने लगा था। अत: ऐसी स्थिति में शत्रु की गतिविधि का पता लगाने तथा अपनी सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाये रखने के लिए खोजबीन को विशेष महत्त्व दिया जाने लगा। इस स्थिति से दो लाभ प्राप्त होने लगे, एक तो शत्रु से अपना बचाव किया जाने लगा तथा शत्रु के महत्त्वपूर्ण एवं नाजुक ठिकानों को लक्ष्य बनाकर सफलता प्राप्त की जाने लगी।

14. आड़ एवं छिपाव का महत्त्व (Importance of cover and concealment)—इस युग में विज्ञान एवं तकनीकी प्रभाव के कारण हथियारों में प्रहारक एवं विनाशक क्षमता बहुत अधिक बढ़ गई थी, जिसका परिणाम यह हुआ कि दोनों ही पक्ष अपनी सुदृढ़ स्थिति बनाए रखने के लिए आड़ एवं छिपाव को अधिक महत्त्व देने लगे। पैदल सेना ने छिपाव के लिए प्राकृतिक एवं मानव निर्मित (कृत्रिम) साधनों का सहारा लेकर शत्रु के विरुद्ध प्रभावशाली ढंग से सफलता प्राप्त करना शुरू कर दिया। इस प्रकार से इस युग में युद्धों में विशेष रूप से आड़ एवं छिपाव को महत्त्व प्रदान किया जाने लगा था।

15. किलेबन्दी में परिवर्तन (Changes in Fortification)—इस युग में आग्नेय हथियारों के विनाशकारी एवं प्रभावशाली क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए प्राचीन किलेबन्दी में भी परिवर्तन किया गया, क्योंकि प्राचीनकाल के ढंग से निर्मित किलों को भारी तोपों के प्रहार से ध्वस्त किया जाने लगा था। अत: **'आवश्यकता आविष्कार की जननी है'** के सिद्धान्त के आधार पर मज़बूत एवं तोपों से युक्त किलों के निर्माण पर बल दिया जाने लगा। इससे जहां राष्ट्र स्वयं की सीमाओं को सुरक्षित करने में समर्थ हो गया, वहां शत्रु के प्रहार को करारा जवाब देने के लिए भी तैयार हो गया था।

इस प्रकार वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के प्रभाव स्वरूप इस काल की किलेबन्दी में भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करना पड़ा था।

16. पैदल सेना का महत्त्व (Importance of Infantry)—बारूद के युग में वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रभाव के परिणामस्वरूप प्राचीन परम्परागत सेना—पैदल सेना को पुन: महत्त्वपूर्ण सेना के रूप में मान्यता प्राप्त हो गई। इसी कारण इस युग को पैदल सेना के पुनर्जागरण का युग कहा जाता है। इसी काल में पैदल सेना को "**युद्ध क्षेत्र की महारानी**" (Queen of the Battle Field) की उपाधि भी प्रदान की गई। इस युग के पूर्व एक सहायक सेना के रूप में ही मान्यता दी जाती थी।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के कारण आग्नेय हथियारों के प्रयोग ने पैदल सेना के हाथ एक चमत्कारिक शक्ति प्रदान करके इसे सहायक सेना से मुख्य सेनांग (Main Arms Forces) के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। पैदल सेना अपने आग्नेय हथियारों के द्वारा दूर से ही शत्रु को अपना लक्ष्य बनाने में सफल होने लगी थी। भिड़न्त की लड़ाई के लिए संगीन (Bayonet) का प्रयोग करके शत्रु को हर स्थिति में परास्त करना सरल हो गया। पैदल सेना को हल्की श्रेणी के प्रहारक क्षमता वाले हथियार प्रदान करके शक्तिशाली बना दिया गया ।

17. सहयोग का महत्त्व (Importance of co-operation)—बारूद के युग में विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के प्रभाव के कारण युद्ध में जहां अनेक जटिलताएं आ गईं, वहां सेनाओं का आपसी सहयोग विशेष महत्त्व रखने लगे। सहयोग की भावना के द्वारा ही सैनिक कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपनी जान जोखिम में डालकर कार्यवाही करने के लिए प्रेरित होने लगे थे। इस काल में युद्ध का क्षेत्र व्यापक हो गया था कि कोई भी सेना बिना सहयोग के विषय प्राप्त करने में समर्थ नहीं थी।

सहयोग से संक्षिप्त रूप में अभिप्राय दल भावना (Team-Spirit) से था जो कि परस्पर मिल-जुलकर कार्य करना था। इस प्रकार इस युग में सहयोग का महत्त्व पूर्ण रूप से स्वीकार किया जाने लगा था।

18. चकमा का महत्त्व (Importance of Surprise)—बारूद के युग में वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप युद्धों में धोखा-धड़ी तथा विरोधी को चकमे में डालने का विशेष महत्त्व बढ़ गया। लड़ाई में ऐसे-ऐसे आग्नेय हथियारों का प्रयोग किया जाने लगा, जिसके बारे में शत्रु को पहले से जानकारी नहीं होती थी। इस प्रकार शत्रु को तकनीकी चकमा दिया जाने लगा था। इसके साथ ही हमले की योजना व तैयारी तथा शत्रु को आक्रमण की दिशा, समय एवं स्थान गलत बताकर उसे अपनी इच्छानुसार लड़ने के लिए मजबूर कर देना कूटयोजनात्मक चकमा दिया जाने लगा। इसी सन्दर्भ में सन्तजू का यह कथन उल्लेखनीय है—

"All warfare is based on deception"

(युद्ध में सफलता का आधार शत्रु को चकमा देना है।)

जनरल जे० एफ० सी० फुलर ने चकमे के महत्त्व का वर्णन करते हुए लिखा है कि—

"Surprise is the soul of every operation, the secret of victory and the key of success."

(सैनिक कार्यवाहियों की आत्मा, विजय का रहस्य तथा सफलता की कुंजी चकमा है।)

19. नेतृत्व का महत्त्व (Importance of Leadership)—बारूद के युग में वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति ने युद्ध के स्वरूप को अत्यन्त जटिल बना दिया था क्योंकि आग्नेय हथियारों के द्वारा युद्ध अत्यन्त विनाशकारी एवं भयंकर हो गया था। सेनाओं के बिखरे समरतन्त्र एवं शत्रु की धोखे की नीतियों पर नियन्त्रण रखने के लिए श्रेष्ठ नेतृत्व की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका मानी जाने लगी, युद्ध चक्र को सही रूप से संचालित करने के उनके **नियोजन** (Planning), **कार्यान्वयन** (Execution) तथा **प्रबन्ध** (Logistic) के लिए श्रेष्ठ नेतृत्व की आवश्यकता पड़ी जो आज तक अपना महत्त्व रखती है।

इस प्रकार वैज्ञानिक एवं तकनीकी की प्रगति ने मानव-शक्ति को जहां महत्ता कम प्रदान की वहां मानव में निहित व्यक्तिगत गुणों का विशेष महत्त्व बढ़ गया।

20. आपूर्ति का महत्त्व (Importance of Supply)—इस युग में युद्ध के यन्त्रीकृत हो जाने के कारण सेनाओं की संरचना का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत हो गया जिसके परिणामस्वरूप सेनाओं में आपूर्ति व्यवस्था का विशेष महत्त्व बढ़ गया। आवश्यक हथियारों एवं सैन्य सामग्री की आपूर्ति बनाए रखने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाने लगा। इसकी महत्ता को स्वीकार करते हुए नेपोलियन ने ठीक ही लिखा था कि—

'सेना पेट के बल चलती है।'

इस प्रकार वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति ने हथियारों की होड़ लगाकर समरतन्त्र में सेनाओं का फैलाव शुरु कर दिया और उसकी आपूर्ति बनाये रखने का भी महत्त्व बढ़ गया।

बारूद के युग में युद्ध कला (Warfare) के क्षेत्र विज्ञान एवं तकनीकी प्रभाव इतना अधिक पड़ा कि प्राचीन परम्परागत ढांचा पूर्ण रूप से परिवर्तित हो गया। इसीलिए तो इस युग के सन्दर्भ में कहा जाता है—

"आग्नेय हथियारों की शुरुआत से हम इतिहास का केवल एक पृष्ठ ही नहीं पलटते बल्कि एक नया ग्रन्थ ही खुल जाता है।"

युद्ध कला में विज्ञान एवं तकनीकी का प्रभाव इतना पड़ा कि सैनिक रणनीति और युद्ध कौशल में एक बार आमूल-चूक परिवर्तन आ गया। बारूद का उपयोग आरम्भ होने से तोप दल बना जिसमें हाथ से चलाई जाने वाली बन्दूकों एवं राइफलों का प्रयोग प्रारम्भ हो गया। इसके साथ ही तोपों में भी विकास किया गया और जिन्हें जलयानों में रखकर भी चलाया जाने लगा। इस युद्ध का पूरा घटनाक्रम ही पूरी तरह से बदल गया तथा यूरोप में आरम्भिक आधुनिक सेना की संस्थागत और संगठनात्मक संरचना ही परिवर्तित हो गयी। स्थल सेनाओं में पैदल सेना का महत्त्व बढ़ गया तथा अश्वारोही सेना की प्रतिष्ठा व सम्मान धूल में मिल गया। तोपखाने के द्वारा बड़े-बड़े किलों को निशाना बनाकर

ध्वस्त किया जाने लगा। बन्दूक से युक्त सैनिक जलयानों के क्षेत्र में अपनी धाक बना बैठे और अपनी नौ सेना (Navy) के बल पर पूरी दुनिया में आधिपत्य पाने का अध्याय भी प्रारम्भ हो गया। इस युग में परिवहन व संचार व्यवस्था को बढ़ाने पर विशेष बल दिया गया। विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप ही युद्ध कला में जहां ज़ोरदार बदलाव आया, वहां इसका पूरा लाभ उठाते हुए यूरोप ने पूरी दुनिया में अपना वर्चस्व स्थापित करने का ज़ोरदार प्रयास किया। इसलिए इंग्लैण्ड के साम्राज्य को कहा जाता था कि उसके साम्राज्य में सूर्यास्त नहीं होता था अर्थात् बड़े पैमाने पर दुनिया के देशों पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। युद्ध का स्वरूप अब सार्वजनिक हो गया।

4. गुस्टावस एडाल्फस का योगदान तथा सैन्य सुधार
(Military Reform and Contribution of Gustavas Adalphus)
(1594 to 1632 A.D.)

जीवन परिचय—स्वीडन नरेश गुस्टावस एडाल्फस का जन्म 1594 ई० में हुआ। बचपन से ही प्रतिभा के धनी इस शासक ने सत्ता का कार्यभार सरलता से संचालित ही नहीं किया, बल्कि कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी अपनी नेतृत्व क्षमता एवं समरतान्त्रिक योग्यता का परिचय देकर विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लिया। एडाल्फस ने अपनी सैन्य प्रतिभा के द्वारा अल्प समय में ही स्वीडन को एक सम्मानित राष्ट्र के रूप में स्थापित कर दिया था। इस महान् सेनापति एवं राजनीतिज्ञ ने भौतिक एवं यान्त्रिक साधनों के विकास पर ही बल नहीं दिया, बल्कि भू-कौशलात्मक क्षेत्रों का लाभ उठाने की कला को एक नई दिशा दिखाई।

सन् 1611 में स्वीडन के तत्कालीन नरेश चार्ल्स नवम (Charles IX) की मृत्यु के पश्चात् 16 वर्ष की उम्र में ही स्वीडन राष्ट्र की बागडोर एडाल्फस के हाथों में आ गई थी। उस समय स्वीडन राष्ट्र चारों ओर से असुरक्षित था। उसने इस असुरक्षा व्यवस्था को पूर्ण सुरक्षित ही नहीं किया, बल्कि बाल्टिक प्रदेश पर भी अपना आधिपत्य स्थापित करने के उद्देश्य से डेनमार्क, जर्मनी, पोलैण्ड तथा सोवियत संघ के विरुद्ध भी मोर्चा लिया। अपने कार्यकाल में एडाल्फस ने सम्पूर्ण समय संघर्ष के लिए ही समर्पित कर रखा था। इसी कारण उसे '**महान् योद्धा सम्राट्**' (Great Warrior king) की उपाधि भी दी गयी थी। इसी समय सेनापति ने अपनी कुशल कूटयोजना, श्रेष्ठ समरतन्त्र तथा उत्तम श्रेणी के हथियारों के माध्यम से '**तीस वर्षीय युद्ध**' (1618-1648) में भाग लिया और सेना को एक नवीन दिशा प्रदान की। सत्रहवीं शताब्दी के सैनिक विकास का श्रेय इसी महान् सेनापति को दिया जाता है।

गुस्टावस एडाल्फस की सैनिक सराहना करते हुए प्रसिद्ध इतिहासकार **आर्थर विर्नी** महोदय ने लिखा है कि—

"*In military reform of Gustavas Adolphus certain tendencis*

at work during the XVI century reached their logical conclusion."[1]

("सोलहवीं शताब्दी की विविध नयी सैनिक गतिविधियों को गुस्टावस एडाल्फस के सैनिक सुधारों में तार्किक पूर्णता प्राप्त हुई।")

एडाल्फस के सन्दर्भ में डूपी एवं डूपी महोदय ने स्पष्ट रूप में लिखा है—

"One individual Gustavas Adolphus of Swedon was responsible for most of the changes in XVII centuary warfare. Their acceptance throughout Europe war facilitated by a series of war."[2]

("सत्रहवीं शताब्दी के सैनिक विकास को श्रेय यदि किसी एक व्यक्ति को दिया जाए तो वह स्वीडन सम्राट् गुस्टावस एडाल्फस ही है, जिसे अनेक युद्धों के कारण समस्त यूरोप ने स्वतः ही ग्रहण कर लिया।")

प्रसिद्ध सैन्य विचारक कैप्टन लिडिल हार्ट ने गुस्टावस एडाल्फस के सन्दर्भ में लिखा है कि—

"Gustavas Adolphus was the greatest military poineer of the XVII centuary and he lives in history as the creator of the first modern Army."[3]

(सत्रहवीं शताब्दी का सर्वश्रेष्ठ सैनिक अग्रदूत गुस्टावस एडाल्फस था। इतिहास में वह आधुनिक सेना के निर्माता के रूप में सदैव अमर रहेगा।)

फील्ड मार्शल माण्टगोमरी ने एडाल्फस की सैनिक योगदान की सराहना करते हुए स्पष्ट रूप से लिखा है कि—

"The greate military achievement were over attended by devotion with in and cercumspection without. He first praised God, and then provided for man, at once having an eye on his enemy's his next designs, and his soldiers present necessities."[4]

(गुस्टावस एडाल्फस की महान् सैनिक उपलब्धियों का गुप्त रहस्य उसका श्रद्धायुक्त आत्म-विश्वास तथा बाहरी तत्त्वों के प्रति सावधानी थी। वह पहले भगवान् की अर्चना करता था तत् पश्चात् प्रजा के कल्याण का प्रबन्ध करता था। वह अपनी एक पैनी निगाह शत्रु की नयी कूटनीतिक चाल पर रखने के साथ-ही-साथ अपने सैनिकों की वर्तमान आवश्यकताओं की आपूर्ति का ध्यान भी रखता था।)

गुस्टावस एडाल्फस ने सेना को सैन्य-संगठन, प्रशासन, सेनाओं तथा हथियारों में आवश्यकतानुसार सुधार किए। यह स्थायी राष्ट्रीय सेना के संस्थापक के रूप में भी माना जाता है। इसने अनुशासन, गतिशीलता, संगठन, साज-सामान, शस्त्रास्त्र, सामरिक चालों,

1. Arthur Birnie—The Art of war.
2. Dupuy & Dupuy—The Encyclopeadia of Military History.
3. Captain Liddle Hart—Thoughts on war (1919-39).
4. Field Marshal Montgomery—Concise History of warfare.

युद्ध की पोशाकों (Dress) आदि की समुचित व्यवस्था बनाए रखने पर विशेष बल दिया ताकि युद्ध में शत्रु को अपनी इच्छा के अनुसार लड़ने के लिए बाध्य किया जा सके।

योगदान (Contribution)— स्वीडन के सम्राट् गुस्टावस एडाल्फस ने निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों को विशेष रूप से दृष्टि में रखकर सेना संगठन एवं शस्त्रास्त्रों में परिवर्तन एवं सुधार किये थे। बारूद के युग के इस महान् सैन्य विशेषज्ञ ने अपनी अद्भुत ओजस्वी सैन्य प्रतिभा, वीरता, निर्णायक क्षमता एवं निर्भीकता के कारण '**उत्तर का शेर**' (Lion of North) की उपाधि भी प्राप्त की थी।

इसके द्वारा दिए गए योगदान को संक्षिप्त में इस प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है—

1. एडाल्फस ने अपने अनुभवों के आधार पर यह निर्णय ले लिया था कि श्रेष्ठ संगठन अनुशासन एवं कुशल प्रशिक्षण के द्वारा ही सेना को अत्यन्त निपुण एवं गतिशील बनाया जा सकता है, ताकि हर परिस्थिति में अपनी सेना का यथाशीघ्र एवं उचित प्रयोग किया जा सके।

2. सेना में श्रेष्ठ अनुशासन बनाए रखने के लिए नियमित व कठोर प्रशिक्षण अत्यन्त आवश्यक है।

3. पैदल सेना की निर्णयात्मक भूमिका हेतु प्रमुख हथियारों के रूप में बन्दूक (Musket) का प्रयोग आवश्यक है। इसी कारण इसमें पर्याप्त सुधार की आवश्यकता पर बल दिया।

4. सेना में संकेंद्रण (Concentration) के सिद्धान्त को विशेष ध्यान में रखकर ही कार्यवाही के लिए आगे बढ़ाना चाहिए।

5. अपनी फायर शक्ति को अत्यधिक सशक्त बनाने के लिए तोपों एवं बन्दूकों दोनों के आधार पर सामरिकी तैयार करना अत्यन्त आवश्यक है।

6. सेना में आपसी तालमेल अथवा सहयोग (Co-operation) अत्यन्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त के रूप में अपनाया जाना चाहिए।

7. युद्ध में परिस्थितियां बड़ी तेज़ी के साथ परिवर्तित होती हैं। समरतन्त्र में आवश्यकतानुसार यथाशीघ्र परिवर्तन करने की क्षमता अवश्य ही होनी चाहिए।

8. अपनी सेना को अत्यधिक सक्षम एवं कार्य में निपुण बनाने के लिए प्रशासनिक व्यवस्था (Administrative System) एवं नियन्त्रण (Control) उचित प्रकार का होना अत्यन्त आवश्यक है।

9. सेनाओं को सदैव सघन समूह फायर (Salvo) करके शत्रु पर अपना दबाव बनाए रखना चाहिए।

10. अपनी सेना के प्रशिक्षण एवं अनुशासन के लिए युद्ध के परिनियमों (Articles of war) से सैनिकों को अवश्य जानकारी करवानी चाहिए।

11. उसने सेनाओं को आक्रमण में निर्णयात्मकता, प्रतिरक्षा में अडिगता तथा अबाध गतिशीलता प्रदान करने पर विशेष बल दिया था।

12. सेनाओं के कुशल संचालन के लिए आपूर्ति व्यवस्था पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए।

सैन्य सुधार (Military Reform)— गुस्टावस एडाल्फस ने सेना को एक श्रेष्ठ संगठन के रूप में ही संगठित नहीं किया बल्कि आवश्यकतानुसार आवश्यक परिवर्तन करके एक नवीन दिशा प्रदान की। उसने सेनाओं को पुनर्गठित करके सैन्य इतिहास में व्यावसायिक एवं राष्ट्रीय सेना की शुरुआत कर दी थी। इसी कारण से तो गुस्टावस एडाल्फस को आधुनिक युद्ध कला का संस्थापक (Founder) तथा स्थायी राष्ट्रीय सेना का जनक (Father) माना जाता है—

'Gustavas Adolphus was a founder of modern warfare and father of standing national Army.'

अब हम संक्षेप में एडाल्फस द्वारा किए गए प्रमुख सैन्य सुधारों का उल्लेख करते हैं—

1. अनिवार्य सैनिक भर्ती
2. सैन्य संगठन में सुधार
3. पैदल सेना में सुधार
4. अश्वारोही सेना में सुधार
5. हथियारों में सुधार
6. तोपखाने में सुधार
7. सघन समूह फायर में सुधार
8. समरतान्त्रिक फैलाव में सुधार
9. प्रशासन में सुधार
10. सेनाओं में परस्पर सहयोग।

1. अनिवार्य सैनिक भर्ती (Compulsory Military Recruiting)— इस महान् सेनापति एवं सैन्य विचारक प्राचीन परम्परा को समाप्त करके अर्थात् किराये की विदेशी सेना के स्थान पर स्थायी राष्ट्रीय सेना के महत्त्व को समझा और अनिवार्य सैनिक भर्ती आरम्भ कर दी। इसके अन्तर्गत प्रत्येक ज़िले से राजकीय कमिश्नरों तथा स्थानीय न्यायिक अधिकारियों के माध्यम से 18 से 30 वर्ष की उम्र के स्वस्थ नवयुवकों को अनिवार्य रूप से सैनिक सेवा के उद्देश्य से भर्ती किया जाने लगा। सेना में भर्ती सैनिकों को 50 वर्ष की उम्र तक रखा जाता था। उन्हें युद्ध काल में मासिक वेतन तथा भत्ता देने की व्यवस्था भी थी। सरकार की ओर से सेनानियों को भूमि भी प्रदान की जाने की व्यवस्था थी, जिनकी लगान से स्थायी आय प्राप्त होती रहती थी। इस महान् योगदान के सन्दर्भ में माण्टगोमरी महोदय ने अपनी पुस्तक 'Concise History of warfare' में लिखा है—

"Gustavas therefore, introduced a system of conscription eventually creating the first national Army to be raised, paid, fed and equipped by the state."

(गुस्टावस ने एक नवीन व्यवस्था को जन्म दिया और स्थायी राष्ट्रीय सेना की स्थापना करके उसे राज्य के द्वारा उन्नतशील पारिश्रमिक एवं सज्जित किया।)

2. सैन्य संगठन में सुधार (Reform of Army organization)— गुस्टावस एडाल्फस ने अपनी प्रतिभा के बल पर सैन्य संगठन को पुनर्गठित किया और सर्वप्रथम सैन्य इतिहास में व्यावसायिक एवं राष्ट्रीय सेना का विकास किया। एडाल्फस छोटी-छोटी बातों पर भी विशेष रूप से ध्यान देता था ताकि कोई भी बाधा उसका मार्ग अवरुद्ध न कर सके। प्रत्येक कार्य को स्वयं पहले करके देख लेता था। उसने स्क्वाड्रन को युद्ध की सबसे छोटी संरचना के रूप में अपनाया। एक स्क्वाड्रन में 408 सैनिक तथा अन्य अधिकारी गण होते थे। इस प्रकार एक स्क्वाड्रन में कुल 500 लोग होते था। 408 सैनिकों में 216 बरछीधारी तथा 192 बन्दूकधारी होते थे। बरछीधारी सैनिक 36-36 की टुकड़ियों में 6 लाइनों में गहराई के साथ तैनात किए जाते थे, जिनके दोनों पार्श्वों में 96-96 की टुकड़ियों को 16-16 टुकड़ियों में 6 लाइनों में गहराई के साथ लगाया जाता था। इसके साथ ही आरक्षित सेना के रूप में बन्दूकधारी टुकड़ियों को ही तैनात किया जाता था।

गुस्टावस एडाल्फस ने सैन्य संगठन का विकास आधुनिक सैन्य व्यवस्था की तरह से किया था जिसे हम संक्षिप्त रूप में इस प्रकार से वर्णित करते हैं—

150 सैनिक	=	**1 कम्पनी**
4 कम्पनी	=	**1 बटालियन (स्क्वाड्रन)**
2 बटालियन	=	**1 रेजीमेण्ट**
3 रेजीमेण्ट	=	**1 ब्रिगेड**

प्रत्येक रेजीमेण्ट के साथ एक तोपखाना भी होता था।

3. पैदल सेना में सुधार (Reform in Infantry)— स्वीडन नरेश एडाल्फस ने रोमन लीजन सैन्य संगठन को अपना आदर्श पैदल सैन्य संगठन को माना था। इसी के परिणामस्वरूप उसने अपनी पैदल सेना को छोटी-छोटी इकाइयों में संगठित किया और कमाण्ड प्रणाली को विकसित किया। पैदल सेना की सबसे छोटी इकाई को कम्पनी कहा जाता था जिसमें कुछ 150 सैनिक होते थे जिसमें 75 बन्दूकधारी, 55 बरछीधारी तथा 20 अन्य अधिकारी होते थे। छोटे सैन्य दलों पर तोपों का प्रहार नहीं किया जाता था। छोटी-छोटी पैदल सेना के संगठन का उसका उद्देश्य सेना में लगातार नियन्त्रण बनाए रखना था, ताकि आत्म निर्भरता के साथ सफलतापूर्वक कार्यवाही कर सके।

1. पैदल सेना को छोटी-छोटी इकाइयों में बांटने के साथ ही साथ अभ्यास के लिए ड्रिल, बन्दूक प्रशिक्षण तथा अन्य आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाता था, ताकि तत्परता के साथ अपनी स्वयं एवं स्वराष्ट्र की सुरक्षा सुदृढ़ता के साथ कर सकें।

4. अश्वारोही सेना में सुधार (Reform in Cavalry)— गुस्टावस एडाल्फस ने यद्यपि अश्वारोही सेना का विशेष महत्त्व नहीं दिया, किन्तु उपलब्ध अश्वारोही सेना को फ्रांस की गतिशीलता तथा जर्मन की आधार पद्धति प्रदान करके सम्बन्धित रूप में

संगठित कर दिया था। उसने अपनी अश्वारोही सेना को दो भागों में पुनर्गठित किया था—

(*i*) क्यूरैजियर्स (Cuirassiers)

(*ii*) ड्रेगून्स (Dragoons)

(*i*) क्यूरैजियर्स (Cuirassiers)— यह अश्वारोही सैनिक हल्के कवच धारण करते थे तथा इनका प्रमुख हथियार तलवार होती थी। इन्हें प्रहारक सैनिक के रूप में प्रयोग में लाया जाता था।

(*ii*) ड्रेगून्स (Dragoons)— यह अश्वारोही सैनिक कवच रहित होते थे तथा इनका प्रमुख हथियार पिस्तौल होती थी। इन सैनिकों को भागने या दौड़ने वाले दल के रूप में प्रयोग में लाया जाता था।

अश्वारोही सेना का प्रमुख प्रयोग प्रारम्भिक आक्रमण के लिए ही किया जाता था। ड्रैगून्स अश्वारोही तेज़ी से आगे बढ़कर शत्रु पर फायर करके तुरन्त वापिस लौट आते थे। इसके बाद क्यूरैजियर्स सैनिक अपनी कार्यवाही करके युद्ध की शुरुआत करते थे।

5. हथियारों में सुधार (Reform in Weapons)— गुस्टावस एडाल्फस ने छोटे-छोटे हथियारों को विशेष रूप से सुधारा, ताकि उनका समुचित प्रयोग किया जा सके। सबसे पहले उसने सेना में बन्दूकधारी सैनिकों की संख्या अधिक कर दी तथा भालाधारी सैनिकों की संख्या सीमित कर दी थी। भाला की लम्बाई 16 फीट से घटाकर 11 फीट कर दी थी। बन्दूकों को अत्यन्त हल्का बनवाया, ताकि उन्हें बिना किसी सहारे के सरलता से चलाया जा सके। बन्दूक की फायर क्षमता को बढ़ाने के लिए कागज़ के कारतूस का आविष्कार कराया। बन्दूकों के नाल मुख की मोटाई कम करवा दी थी। मस्केट को मैच लॉक की जगह व्हील लॉक किया जाने लगा था। इसके साथ ही सैन्य अभियन्ता (Military Engineers) तथा चिकित्सा सेवा (Medical Services) भी आरम्भ कर दी थी। हथियारों का सही प्रयोग करने के लिए मानचित्र तथा दूरबीन के प्रयोग पर भी विशेष बल दिया।

6. तोपखाने में सुधार (Reform in Artillery)— गुस्टावस एडाल्फस ने युद्धों में तोपखाने के महत्त्व का विशेष रूप से समझते हुए अनेक महत्त्वपूर्ण सुधार किए। यूरोप में गुस्टावस ने सबसे पहले तोपखाना रेजीमेण्ट का संगठन किया और एक नवीन व्यवस्था की शुरुआत की। प्रत्येक रेजीमेण्ट में छः कम्पनियां होती थीं, जिनमें से एक कम्पनी सैनिक इन्जीनियरों की तथा एक कम्पनी विशेष विस्फोटक दल के रूप में तैनात की जाती थी। प्रत्येक 1000 सैनिकों के बीच में 10 तोपें तैनात की जाती थीं। इनमें से प्रत्येक पैदल बटालियन में दो रेजीमेण्ट तोपें होती थीं।

गुस्टावस एडाल्फस ने अपने समय में तोपों को प्रमुख रूप से तीन भागों में विभक्त किया था

(*i*) हल्का तोपखाना (Light Artillery)

अथवा

रेजीमेण्टल तोपखाना (Regimental Artillery)

(*ii*) मध्यम तोपखाना (Medium Artillery)

अथवा

रणक्षेत्रीय तोपखाना (Field Artillery)

(*iii*) घेरेबन्दी का तोपखाना (Siege Artillery)

अथवा

भारी तोपखाना (Heavy Artillery)

हल्का तोपखाना का प्रमुख उद्देश्य द्रुतगति से तीन पौण्ड तक का गोला शत्रु पर प्रहार कर सकती था तथा इन्हें आसानी के साथ युद्ध क्षेत्र में ले जाया जा सकता था। मध्यम श्रेणी की तोपों का प्रयोग मैदानी लड़ाई के निमित किया जाता था। भारी तोपखाने का प्रयोग शत्रु को घेरने तथा उसकी किलेबन्दी को तोड़ने के लिए किया जाता था। इसके साथ ही पैदल सेना के समन्वय में तोपखाने को एक विशिष्ट सेनाङ्ग के रूप में तैनात किया। इसके अन्तर्गत केवल स्वीडन के नागरिकों को ही भर्ती किया गया। तोपखाने में एडाल्फस के योगदान के सन्दर्भ में डूपी और डूपी (Dupuy & Dupuy) महोदय ने स्पष्ट लिखा है कि—

"Gustavas Adolphus was the father of modern field Artillery and of the concept of massed, mobile artillery fire."[1]

(गुस्टावस एडाल्फस आधुनिक मैदानी तोपखाने और सघन गतिशील फायरयुक्त तोपखाने का जनक (पिता) माना जाता है।)

7. सघन समूह फायर में सुधार (Reform in Salvo)— गुस्टावस एडाल्फस ने पैदल सैनिकों को सघन समूह फायर के प्रयोग पर अधिक बल दिया था। इसके अन्तर्गत एक ही साथ लगातार तीन पंक्तियां शत्रु पर अपना तीव्र फायर डालती थीं, जिसमें पहली पंक्ति अथवा कतार के सैनिक घुटने के बल पर बैठ कर दूसरी पंक्ति के सैनिक झुक कर तथा तीसरी पंक्ति के सैनिक सीधे खड़े होकर फायर करते थे। इसी क्रम में अन्य पंक्तियां बारी-बारी से शत्रु पर प्रहार करती थीं, जिससे शत्रु पर फायर दबाव सरलता के साथ डाला जाने लगा था। उसने अपनी सेना की एक टुकड़ी में दो तिहाई बन्दूकधारी सैनिकों को रखा था तथा एक तिहाई सैनिक बरछाधारी होते थे।

8. समरतान्त्रिक फैलाव में सुधार (Reform in strategical Development)— गुस्टावस एडाल्फस ने अपनी सेवाओं का समरतान्त्रिक फैलाव इस प्रकार से किया कि फायर शक्ति (Fire-Power) तथा गतिशीलता (Mobility) का एक साथ सामन्जस्य स्थापित किया जा सके, ताकि शत्रु की हर हरकत का सही लाभ उठाया जा सके। उसने अपनी सेनाओं को तीन पंक्तियों में फैलाना शुरू कर दिया तथा उनके मध्य में पर्याप्त अन्तर रहता था, ताकि वह भीड़ के रूप में न बदले। इसके साथ ही अपनी

1. Dupuy and Dupuy—Enpsychopedia of Military History — 118

अश्वारोही सेना को तीन पंक्तियों में विभक्त करके खड़ा किया और इनको गतिशील बनाए रखने के लिए बन्दूक के स्थान पर पिस्तौल से सज्जित किया था।

इस प्रकार ऐडाल्फस ने अपनी सेना का समरतान्त्रिक फैलाव इस ढंग से किया था कि पैदल, अश्वारोही तथा तोपखाना तीनों सेनाङ्ग कुशलता के साथ मिलकर शत्रु के विरुद्ध अपना मोर्चा ले सके।

9. प्रशासन में सुधार (Reform in Administration)— गुस्टावस एडाल्फस ने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए सेना में समुचित प्रशासनिक व्यवस्था बनाए रखने पर विशेष बल दिया। उसने अपनी सेनाओं को नियमित रूप समुचित भोजन, वस्त्र, अस्त्र-शस्त्र, साज-सामान, परिधान (राशन, तम्बू तथा जूते आदि) प्रदान करने की व्यवस्था की। सेना में आपूर्ति व्यवस्था बनाए रखने के लिए मैगजीन का निर्माण तथा डिपो की स्थापना की। सैनिकों को आवश्यक एवं पर्याप्त साधनों से सम्पन्न रखने के लिए युद्ध कला में विशेष व्यवस्था की थी।

गुस्टावस एडाल्फस ने प्रशासनिक सुधार करने के लिए हथियारों एवं साज-सामान में परिवर्तन करने के अलावा कठोर नियमों एवं सिद्धान्तों को विशेष रूप से लागू किया। इसी के साथ ही श्रेष्ठ अनुशासन बनाए रखने के लिए लूट-पाट एवं अनैतिकता को पूरी तरह से समाप्त कर दिया। इस सन्दर्भ में माण्टगोमरी महोदय ने लिखा है—

"His great military achievement were ever attended by devotion with in cercumspection without. He first praised God and than provided for man, at once having an eye on his enemys next designs and his soldiers present necessities."

(वास्तव में उसकी सफलता का प्रमुख रहस्य उसका सैन्य प्रशासन तथा सैन्य संगठन के नियमों के विषय में उसका पाण्डित्य था। उसने सैन्य संगठन, प्रशासन प्रशिक्षण तथा सामरिकी के क्षेत्र में नवीन तथा मौलिक विचार एवं परिवर्तन किए।)

10. सेनाओं में परस्पर सहयोग (Mutual co-operation in Armies)— गुस्टावस एडाल्फस ने सभी सेनाओं (पैदल, अश्वारोही तथा तोपखाना) के सहयोग के सिद्धान्त को अपनाया, जिससे हर प्रकार की स्थिति में शत्रु का सरलता एनं सफलतापूर्वक मुकाबला किया जा सके जहां पैदल सेना की रेजीमेण्ट बटालियन आपस में अन्तर रखकर आक्रमण करती थी, वहां उस अन्तर को पूरा करने के लिए हल्की अश्वारोही सेनाओं के दलों को समाया जाता था। अश्वारोही सेना के मध्य बन्दूकधारी पैदल सैनिक तैनात रहते थे। इसी प्रकार से पैदल सेना के रेजीमेण्ट के मध्य भाग में रेजीमेण्टल तोपों को तैनात किया जाता था।

इस प्रकार तीनों सेनाओं को सहयोग के सिद्धान्त को विशेष रूप से दृष्टि में रखकर युद्ध क्षेत्र में संगठित किया जाता था, ताकि प्रत्येक सेनाङ्ग की शक्ति का सही तथा अधिकतम उपयोग किया जा सके। इसी कारण **मेजर जनरल डी० के० पालित** ने लिखा है कि—

"It was Gustavas Adolphus who established the principle of co-operation of all arms."[1]

(यह गुस्टावस एडाल्फस ही था, जिसने सभी सेनाओं के सहयोग के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया।)

उपर्युक्त योगदान एवं सैन्य सुधारों के आधार पर हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि गुस्टावस एडाल्फस एक महान् सेनानायक था, जिसने सैन्य संगठन, समरतन्त्र, शस्त्रास्त्र एवं प्रशासन को एक नई दिशा दी और एक राष्ट्र को अपनी सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए नए निर्देश प्रदान किए। इसी कारण मोण्टगोमरी ने इसके सन्दर्भ में लिखा है—

"The carrier of Gustavas parallels with that of Alexander the great. His historical significance is above all as the founder of modern military organization."[2]

5. फ्रेड्रिक महान् का सैनिक योगदान
(Military Contribution of Frederick the Great) (1740 to 1786 A.D.)

जीवन-परिचय—फ्रेड्रिक महान् एशिया का एक योग्य एवं कुशल राजनीतिज्ञ तथा श्रेष्ठ सैन्य विशारद् था। इस महान् शासक ने अपनी अनन्य प्रतिभा के बल पर एशिया को यूरोप की सर्वाधिक शक्तिशाली मशीनरी के रूप में सेना संगठित की। इसने अपने कार्यकाल में अनेकों लड़ाइयां लड़ीं, जिनसे अनेकों नवीन समरतान्त्रिक चालों का प्रयोग किया तथा अपने अनुभवों के आधार पर महत्त्वपूर्ण सैन्य विचारों का प्रतिपादन किया। इस महान् सेनानायक ने समकालीन सैन्य व्यवस्था तथा परम्पराओं का निर्वाह करते हुए कूटयोजना, समरतन्त्र तथा योधन संभार के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए। उसने प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाने पर अधिक बल दिया था। फ्रेड्रिक महान् ने यह स्पष्ट रूप से प्रभावित कर दिया कि शारीरिक शक्ति की तुलना में मानव-मस्तिष्क कहीं अधिक शक्तिशाली होता है। इसके सन्दर्भ में प्रसिद्ध इतिहासकार आर्थर बिर्नी ने लिखा है—

"नेपोलियन की भांति फ्रेड्रिक एक ऐसे विशुद्ध बौद्धिक सेनानायक का उदाहरण था, जिसे प्राकृति ने एक योद्धा की समस्त शारीरिक विशेषताओं से वंचित कर रखा था। ऐसे व्यक्ति सैन्य अधिकारी के रूप में सर्वोच्च पद पर विरले ही पहुंच पाते हैं लेकिन जब वे पहुंचते हैं, तो वे इतिहास की धारा को ही मोड़ देते हैं।"[3]

कार्ल फ्रेड्रिक या फ्रेड्रिक महान् प्रशा के शासक फ्रेड्रिक (प्रथम) इलेक्टर का पौत्र

1. D.K Palit—The Essential of Military knowledge — 25
2. Montgomery—Concise History of Warfare.
3. आर्थर बिर्नी — युद्धकला

तथा फ्रेड्रिक विलियम का पुत्र था। वह अपने पिता की चौदह सन्तानों में चौथी सन्तान के रूप में था। इसका जन्म 24 जनवरी, 1712 ई० को हुआ था। अपने पिता फ्रेड्रिक विलियम की मृत्यु के पश्चात् उसे 31 मई, 1740 को प्रशा का शासक नियुक्त कर दिया गया। अपनी अनन्य सैन्य प्रतिभा के बल पर 1786 ई० तक प्रशा के शासन को कुशलतापूर्वक संचालित किया। प्रथम विजय उसे 10 अप्रैल, 1741 ई० को प्राप्त हुई, द्वितीय विजय 17 मई, 1742 ई० में प्राप्त की तथा 1744 ई० को प्रेग में अधिकार करके अपनी सैन्य शक्ति को पूरा 1 लाख 60 हज़ार तक पहुंचा दिया था।

फ्रेड्रिक महान् ने अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हर धूर्ततापूर्ण नीति की कूटनीति का अंग मानकर कार्य किया और प्रत्येक परिस्थिति को विशेष रूप से ध्यान में रखकर अपनी सेना एवं योजनाओं में परिवर्तन किया। इसके साथ ही अपने कुशल प्रशिक्षण, अनुशासन, अभ्यास तथा आधुनिक हथियारों से युक्त करके सेना को एक नया स्वरूप दिया। यह युद्ध के सन्दर्भ में सदैव अध्ययन, मनन एवं चिन्तन के आधार पर सैनिकों व सैन्य अधिकारियों सभी को योजनाओं के निर्धारण के पश्चात् ही कार्यवाही का आदेश प्रदान करता था। उसके युद्ध सम्बन्धी विचार जर्मन तथा फ्रान्सीसी भाषा में प्रकाशित हुए थे। पुस्तक एवं आलेख के रूप में उपलब्ध साधन इस प्रकार से हैं—

1. General Principles of War (1746)
2. Testament of Politics (1752)
3. Testament of Military (1768)
4. The Art of War (Poem)
5. Elements of Tactics (1771)
6. Letter & Articles.

अपने जीवन के अन्तिम समय में फ्रेड्रिक ने अपने युद्ध-विचारों एवं युद्ध प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया कि तड़ित युद्धों के स्थान पर सुरक्षात्मक धीमी गति वाले युद्धों को अपनाया जबकि फ्रेड्रिक को तड़ित युद्धों का जनक माना जाता था। इसमें वह अपनी सेना के कठोर प्रशिक्षण एवं अनुशासन के द्वारा तीव्रगामी हमला करके शत्रु को आश्चर्यचकित करता था। अपनी सीमित सैन्य शक्ति का सर्वोत्तम प्रयोग करने का प्रयास होता था। सन् 1786 तक ही अपने दायित्वों को निभा सका।

योगदान (Contribution)— कार्ल फ्रेड्रिक की रचनाओं के आधार पर उसके सैन्य योगदान को संक्षिप्त में इस प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं—

1. शत्रु पर सफलता प्राप्त करने के लिए तेज़ी से हमला अर्थात् तड़ित युद्ध नीति अपना कर शुरुआत की जानी चाहिए, चाहे हमारे पास शत्रु की तुलना में सैन्य शक्ति भले ही बहुत कम हो।

2. अपनी पैदल सेना को शक्तिशाली बनाए रखने के लिए उसमें तीव्रता, गतिशीलता तथा अधिकतम फायर क्षमता बनाए रखने की आवश्यकता होती है।

3. अपने सैनिकों को अत्यन्त अनुशासित होना चाहिए, जिसके लिए नियमित प्रशिक्षण एवं अभ्यास पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। क्योंकि अत्यन्त अनुशासित एवं निपुण सेना द्वारा ही युद्ध क्षेत्र में आवश्यकतानुसार संरचना में परिवर्तन किया जा सकता है।

4. शत्रु पर तिर्यक गति से पार्श्व आक्रमण करना सदैव ही अपनी सफलता का सहयोगी सिद्धान्त मानता था। इसलिए स्पष्ट रूप से लिखा है—

"Flank attack by oblique order of march."

5. शत्रु की गतिविधियों पर निगरानी रखने के लिए तथा उसको तंग करने के लिए अश्वारोही सेना का प्रयोग करना अत्यन्त आवश्यक है।

6. गतिशीलता के सिद्धान्त को प्रभावी बनाए रखने के लिए फ्रेड्रिक ने अश्वारोही तोपखाने की शुरुआत की और ऊंची मार वाली हल्की हाइविट्जर तोपों के विकास पर विशेष रूप से ध्यान दिया।

7. युद्ध में अपनी सैन्य शक्ति को निर्धारित स्थान पर अधिक केन्द्रित करने का प्रयास करना चाहिए अर्थात् केन्द्रीयकरण के सिद्धान्त पर विशेष बल दिया था।

8. युद्ध में कूटनीतिक चालों का अधिक-से-अधिक प्रयोग करना सदैव लाभदायी मानता था।

9. फ्रेड्रिक ने अपनी सेना के संगठन का आधार बटालियन स्तर पर किया तथा युद्ध के दौरान उन्हें ठोस संरचना के रूप में तैनात करना सरल मानता था।

10. युद्ध क्षेत्र में सैनिकों को आवश्यक सामग्री की आपूर्ति एवं आपसी सम्पर्क बनाए रखने की व्यवस्था पर विशेष बल दिया था।

11. अपनी सैन्य योजना इस प्रकार से तैयार की जानी चाहिए कि शत्रु को अपनी इच्छानुसार लड़ने के लिए मज़बूर कर दिया जाये। इसलिए उसने लिखा है—

"To win a battle means to compel your opponent to yield you his position."

12. सेना मे अनुशासन बनाए रखने के लिए फ्रेड्रिक ने युद्ध में सफल होने के बाद लूट-पाट तथा भागते हुए शत्रु का पीछा करवाना बन्द करवा दिया था। अपने सैनिकों को निर्दिष्ट स्थान पर डटे रहना टाहिए। इस प्रकार के विशेष आदेश प्रसारित किए थे।

13. फ्रेड्रिक महान् ने गुस्टावस एडाल्फस की भांति स्थायी राष्ट्रीय सेना पर बल दिया ताकि वह दल भावना के साथ-साथ राष्ट्रीय बलिदान के लिए तत्पर रह सकें।

14. फ्रेड्रिक महान् ने सैनिकों की चिकित्सा सेवा तथा उनके कल्याण कार्यों पर विशेष ध्यान दिया था, ताकि अपनत्व के आधार पर राष्ट्रीय भावना को अधिक-से-अधिक विकसित किया जा सके।

15. फ्रेड्रिक महान् ने युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिए सम्बन्धित सेनापति की कुशलता एवं बुद्धिमत्ता को भी बहुत हद तक उत्तरदायी माना है।

इस प्रकार फ्रेड्रिक महान् ने अपने विचारों के आधार पर सेना के सम्पूर्ण ढांचे को सुव्यवस्थित बनाने के साथ-साथ उसे सुचारू रूप से संचालित करने पर भी विशेष रूप से अपना योगदान दिया था।

सैन्य सुधार (Military Reform)—अब तक कार्ल फ्रेड्रिक के द्वारा किए गए प्रमुख सैन्य सुधारों का संक्षिप्त में उल्लेख करते हैं, जो इस प्रकार से है—

1. पैदल सेना में सुधार
2. समरतान्त्रिक संरचना में सुधार
3. तोपखाने में सुधार
4. प्रशिक्षण में सुधार
5. अनुशासन में सुधार
6. आपूर्ति व्यवस्था में सुधार
7. तिरछा आक्रमण
8. गतिशीलता में सुधार
9. हल्के हथियारों में सुधार
10. कूटियोजना में परिवर्तन

1. पैदल सेना में सुधार (Reform in Infantry)—कार्ल फ्रेड्रिक ने पैदल सेना को अत्यधिक शक्तिशाली बनाने के लिए विशेष रूप में बल दिया और उनमें गतिशीलता लाने के लिए हल्की श्रेणी के हथियार के रूप में फ्रन्ट लॉक मस्केट का प्रयोग करवाया ताकि तेज़ी के साथ शत्रु पर अधिक-से-अधिक प्रभावी फायर डाला जा सके। इसके साथ ही प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया ताकि हर परिस्थिति में सफलता के साथ सरलतापूर्वक कार्यवाही कर सके। अनुशासन के सन्दर्भ में उसने लिखा है कि—

"The slightest loosening of discipline would lead to barbarization."

2. समरतान्त्रिक संरचना में सुधार (Reform in Tactical Formation)—फ्रेड्रिक महान् ने सैन्य फैलाव के लिए शतरंज संरचना (Chess Formation) को आधार बनाया। युद्ध क्षेत्र के मध्य भाग में पैदल सेना की टुकड़ियों को दो पंक्तियों में एक-दूसरे से 100 मीटर की दूरी पर खड़ा करने पर बल दिया। पैदल सेना के दोनों पार्श्वों में अश्वारोही सेना को तैनात करना चाहिए तथा मुख्य पैदल सेना के पृष्ठ भाग में तोपखाने को लगाना चाहिए। वह पूरी सेना को एक इकाई के रूप में रखता था तथा आरक्षित सेना (Reserve Army) का विरोधी था। बटालियन और सेना के बीच में कोई दूसरी यूनिट नहीं होती थी। समस्त सेना को केन्द्रित करने पर विशेष ज़ोर देता था। इसकी समरतान्त्रिक प्रणाली के सन्दर्भ में मेजर जनरल डी० के० पालित ने स्पष्ट लिखा है—

"Except for the adaptation of Gustavas policy of distributing artillery along the whole front, Fredericks tactical doctrines were out of place in eighteenth century warfare."[1]

(गुस्टावस की तोपखाना को पूरे मोर्चे पर वितरित करने की नीति के अतिरिक्त

1. D.K. Polit—The Essentials of military knowledge.

फ्रेड्रिक की समस्त समरतान्त्रिक प्रणाली अठारहवीं शताब्दी की तत्कालिक प्रणाली से सर्वथा भिन्न थी।)

समरतान्त्रिक संरचना में सुधार के लिए उसने निम्नलिखित उपाय भी अपनाये थे जो संक्षिप्त में इस प्रकार हैं—

(i) सेना के प्रशिक्षण पर विशेष ज़ोर दिया।
(ii) सम्पूर्ण सेना को एक इकाई के रूप में रखा।
(iii) गतिशीलता एवं अनुशासन पर विशेष ज़ोर दिया।
(iv) सेना में केन्द्रीयकरण बनाए रखना आवश्यक माना।
(v) शत्रु के भौतिक विघटन पर विशेष ज़ोर दिया।
(vi) अप्रत्यक्ष उपायों के समरतन्त्र पर बल दिया।
(vii) आरक्षित सेना का विरोध किया।
(viii) शत्रु की गतिविधियों का पता लगाकर कार्यवाही पर बल दिया।
(ix) शत्रु को सदैव धोखा देना महत्त्वपूर्ण माना।
(x) तड़ित भार युद्ध प्रणाली को अपनाया।

3. तोपखाने में सुधार (Reform in Infantry)—फ्रेड्रिक महान् ने तोपखाने के महत्त्व को समझते हुए इसे गतिशील बनाने के लिए अश्व तोपखाने (Horse Artillery) की शुरुआत की। इसकी सर्वप्रथम शुरुआत 1759 ई० में की थी। इन हल्की तोपों को युद्ध क्षेत्र में घोड़े द्वारा खींच कर पहुंचाया जाता था। इन हल्की तोपों को सभी बटालियन के साथ जोड़ दिया गया क्योंकि इनको सरलता के साथ लाया तथा ले जाया जा सकता था। उसने तोपों को अत्यधिक उपयोगी बनाने के लिए फायर शक्ति तथा गतिशीलता में सहयोग स्थापित किया था। हाविट्जर श्रेणी की तोपों के विकास पर भी विशेष बल दिया। हाविट्जर तोपें अपेक्षाकृत ऊंची ट्रेजेक्टरी वाली तोपें थीं जिनसे आड़ में छिपे शत्रु पर भी फायर किया जा सकता था। इस प्रकार उसने चार पाऊण्ड रेजीमेण्ट तोपें, आठ और बारह पाऊण्ड बाकी तोपों के विकास पर भी विशेष बल दिया। पैदल सेना के पृष्ठ (Back) भाग में भी तोपखाने को तैनात किया।

4. प्रशिक्षण में सुधार (Reform in Training)—कार्ल फ्रेड्रिक ने सेना के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया। उसका विचार था कि सैनिकों को कम-से-कम दो वर्ष ड्रिल तथा सैन्य प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए ताकि वे इतने निपुण हो जाएं कि तेज़ी से प्रस्थान करते हुए अपने को आवश्यक संरचना में परिवर्तित कर सकें। पाश्चात्य सैन्य इतिहास में सबसे पहले फ्रेड्रिक ने शान्ति के समय युद्ध अभिनय द्वारा अर्थात् बनावटी युद्धों द्वारा सम्पूर्ण सेना को सामूहिक प्रशिक्षण दिया।

ड्रिल में निपुणता के कारण ही फ्रेड्रिक की सेना अत्यन्त गतिशील एवं आक्रमण की तिरछी पद्धति अपनाने में 2000 वर्ष पूर्व सिकन्दर की तरह सफल हो सकी थी। वह उच्च स्तरीय एवं सामूहिक प्रशिक्षण का पक्षपाती था। प्रशिक्षण के द्वारा सेना को मशीन की तरह कार्य करने में सक्षम बना दिया था।

5. अनुशासन में सुधार (Reform in Discipline)—फ्रेड्रिक महान् ने सेना में अनुशासन व्यवस्था को एक आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना। इसीलिए उसने सेना के प्रत्येक क्षेत्र में अप्रत्याशित सफलता प्राप्त की। सैन्य अनुशासन को बनाए रखने के लिए फ्रेड्रिक ने विजय या सफलता के बाद लूट-पाट तथा भागते हुए दुश्मन का पीछा करना बन्द करा दिया था, ताकि विजयोपरान्त सैनिकों को अपने स्थानों पर सुदृढ़ तथा सजग रखा जा सके। कठोर अनुशासन के द्वारा ही सम्पूर्ण सेना को एक समूह के रूप में एक साथ युद्धरत कर सका था।

6. आपूर्ति व्यवस्था में सुधार (Reform in Supply or Logistics)—फ्रेड्रिक महान् ने सेना में आपूर्ति व्यवस्था बनाए रखने पर विशेष बल दिया इसीलिए उसने उस समय के भण्डार गृहों की आपूर्ति व्यवस्था की जगह प्रत्येक सैनिक के साथ लगभग तीन दिन का भोजन, रेजीमेण्टल परिवहन के साथ लगभग आठ दिन का भोजन तथा आक्रमण अभियान (Compaign) के समय सेना के परिवहन में एक माह का भोजन के जाने की व्यवस्था थी।

इस प्रकार फ्रेड्रिक महान् ने सेना को आत्मनिर्भर रहकर सफलता एवं सरलता से लड़ने के लिए आपूर्ति व्यवस्था में विशेष सुधार किया था।

7. तिरछा आक्रमण (Oblique Attack)—फ्रेड्रिक महान् ने अपनी तिरछी आक्रमण व्यवस्था सिकन्दर से विपरीत अपनायी थी। इसकी सेना सबसे पहले दो लम्बी कतारों में खड़ी होती थी, इसके बाद सेना अपनी परिस्थिति एवं अवसर को देखकर आधा दाहिने अथवा आधा बायें मुड़ जाती थी। इसके बाद कॉलम संरचना (Column Formation) में आकर तिरछा होकर एक पार्श्व (Flanks) की ओर बढ़ती थी। तदुपरान्त अपनी पंक्ति सरंचना (Line Formation) में स्थिति लेने के लिए आधा दायां अथवा आधा बायां मुड़कर शत्रु की बाजू या पार्श्व पर आक्रमण करती थी। यह चाल अत्यन्त कठिन प्रक्रिया के साथ शुरू होती थी।

शान्तिकाल में केवल एक बटालियन द्वारा ही यह चाल बहुत कठिनाई के साथ सम्भव हो पाती थी, परन्तु युद्धकाल में सम्पूर्ण सेना को इन चालों को सफलतापूर्वक प्रयोग करना एक अत्यन्त कठिन कार्य होता था। यह चाल केवल फ्रेड्रिक की सेना द्वारा ही संभव थी और वह भी केवल इसलिए कि उसकी सारी सेना ड्रिल (Drill) करने में इतनी कुशल थी कि मशीन की भान्ति कार्य करती थी। उसने 1757 ई० में ल्यूथेन के संग्राम में इस समरतन्त्र को अत्यन्त सफलतापूर्वक प्रयोग किया था। इसका परिणाम यह हुआ कि आस्ट्रेलिया की विशाल सेना अस्त-व्यस्त हो गई थी।

8. गतिशीलता में सुधार (Reform in Mobility)—फ्रेड्रिक महान् ने गतिशीलता के सिद्धान्त को अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया। इसी कारण उसने पैदल सेना, शस्त्रास्त्रों एवं तोपखाने को अत्यन्त गतिशील बनाने का प्रयास किया था। इसी उद्देश्य से उसने सेना के विशेष प्रशिक्षण तथा अनुशासन की व्यवस्था की थी। उसने गतिशीलता के सिद्धान्त

को अपना कर शत्रु को धोखे में डालने पर भी बल दिया था। पैदल सेना को गतिशीलता देने के लिए जहाँ हल्की श्रेणी की हांविट्जर का प्रयोग किया, वहां तोपखाने को गतिशीलता प्रदान करने के लिए अश्वारोही तोपखाने (Horse Artillery) को जन्म दिया।

इस प्रकार गतिशीलता के द्वारा निर्धारित स्थान पर शत्रु से अधिक शक्ति के केन्द्रीयकरण करने का सिद्धान्त फ्रेड्रिक ने ही शुरू किया था।

9. हल्के हथियारों में सुधार (Reform in Light Weapons)—फ्रेड्रिक महान् ने हल्के हथियारों के प्रयोग पर अधिक बल दिया, ताकि गतिशीलता के साथ शत्रु पर आक्रामक प्रहार किया जा सके। इसी उद्देश्य से फ्रेड्रिक ने Flint Lock Musket को पैदल सेना का मूल हथियार बनाया, क्योंकि इसकी फायर शक्ति सामान्य बन्दूक से दुगनी (Double) लम्बी थी। इसके साथ ही शत्रु को आड़ में ही नष्ट करने के लिए हल्की तथा ऊंची हाउविट्ज़र तोपों को विकसित किया। उसने नए हथियार फायर एवं गतिशीलता के समन्वय के आधार (Base) पर ही निर्मित करवाए।

10 कूटियोजना में परिवर्तन (Change in Strategy)—फ्रेड्रिक महान् सैनिक तथा नागरिक दोनों ही मामलों में यथा स्थिति बनाए रखने का समर्थक था। उसने धोखे की कूटियोजना के बजाए नाश करने की कूटियोजना पर विशेष बल दिया था। उसका विचार था कि—

"To win a battle means to compel your opponent to yield you his position."

इसके साथ ही शत्रु के पूर्ण विनाश की बजाए उसे धीरे-धीरे आत्म-समर्पण के लिए बाध्य करने का समर्थक था। इसलिए इस सन्दर्भ में वर्णन किया है—

"Dislodge the enemy and win, not destroy him."

"To gain many small success is to heap a treasure."

उसकी अप्रत्यक्ष उपायों की कूटियोजना के सन्दर्भ में कैप्टन लिडिल हार्ट ने स्पष्ट लिखा है—

"He combined in his person the function of strategy and grant strategy but his tactical indirect approach was geometrical rather than psychological."

फ्रेड्रिक ने शत्रु सेना के भौतिक विघटन की कूटियोजना को महत्त्व दिया। वह मानसिक रूप से शत्रु को अव्यवस्थित करने के पक्ष न में था। कूटियोजना के सन्दर्भ में उसकी देन थी कि—

"His directness was to direct."

अपने अन्तिम चरण में फ्रेड्रिक ने नाश की कूटियोजना का समर्थन समाप्त कर दिया था। उसका ध्येय बदल गया था कि निर्णयात्मक युद्ध केवल संयोग से ही सम्भव होते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि फ्रेड्रिक महान ने अपने युग में युद्ध को एक नयी दिशा दी इसके साथ ही गतिशीलता, केन्द्रीयकरण, आपूर्ति व्यवस्था, कूटियोजना, समरतन्त्र एवं सुव्यवस्थित सैन्य संगठन के आधार पर युद्ध की सफलता के नये स्तम्भ

खड़े किए। वह स्वयं एक महान् शासक एवं कुशल सेनापति था, जिसने सेना के सुधार के लिए हर संभव सुधार किए।

फ्रेड्रिक के दोष—फ्रेड्रिक महान् ने जहां अपनी सैन्य प्रतिभा के बल पर अनेक सुधार किये वहां उसके समरतन्त्र में कुछ दोष भी दिखायी दिए। संक्षिप्त में, हम उनका उल्लेख इस प्रकार से कर सकते हैं—

1. आरक्षित सेना का अभाव था।
2. समस्त सेना एक साथ मार्च करती थी।
3. उसकी सेना में एकता एवं शृंखलाबद्धता का अभाव था क्योंकि समस्त सेना एक यूनिट की भांति थी अर्थात् सभी सेनाएं (पैदल, अश्वारोही एवं तोपखाना) को एक साथ मिला दिया था।
4. अश्व तोपखाने के प्रयोग के कारण सेना मार्च करते समय अत्यधिक लम्बी होने लगी थी तथा सेना का व्यय भी अधिक बढ़ गया था।
5. फ्रेड्रिक द्वारा अपनाया गया तिरछा आक्रमण अत्यन्त जोखिम भरा तथा त्रुटिपूर्ण था, क्योंकि आगे बढ़ते समय शत्रु पार्श्व से हमला करके भारी हानि पहुंचा सकता था।
6. तिरछा आक्रमण जिस समय किया जाता था, उस समय अपनी सेना का पृष्ठ भाग तथा संचार मार्ग अत्यन्त खतरे में पड़ जाता था।
7. आक्रमणकारी पर पृष्ठ भाग से आक्रमण करना भी सम्भव हो सकता था।
8. तिरछे आक्रमण के समय यदि सैन्य टुकड़ियों में अन्तर बढ़ जाता था तो शत्रु का सामना करते समय स्वयं कमज़ोर स्थान बन जाने का भय हमेशा बना रहता था।
9. कुशल नेतृत्व का अभाव था।
10. संचार साधनों की सुरक्षा के लिए कोई ध्यान नहीं रखा।

इस प्रकार फ्रेड्रिक महान् के सिद्धान्तों में दोषों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसी कारण प्रसिद्ध इतिहासकार आर्थर बिर्नी ने स्पष्ट रूप से लिखा है—

"फ्रेड्रिक महान् एक योग्य सेनापति के गुणों का प्रदर्शन न करके सुख्य रूप से अपनी सेना के गुणों पर आश्रित था। वह हमेशा अपने विरोधी सेनापति की मूर्खता एवं कायरता से बचता रहा।"[1]

इस सबके बावजूद फ्रेड्रिक महान् के गुणों को कभी नकारा नहीं जा सकता। वह अपने आप में एक साहसी एवं उत्साही सेनापति अवश्य था। इस सन्दर्भ में नेपोलियन का कथन उल्लेखनीय है—

"यूरोप को तीन महाशक्तियों के विरुद्ध एशिया का बचाव सात वर्ष तक लगातार वहां की सेना द्वारा नहीं अपितु फ्रेड्रिक महान् द्वारा ही सम्भव हो सका। फ्रेड्रिक की श्रेष्ठता का श्रेय उसकी समरतान्त्रिक चालों को न होकर उसके साहस एवं हिम्मत को है, क्योंकि उसने वह साहित्यक कार्य किए जो वह नहीं कर सकता था।"[2]

1. आर्थरबिर्नी—युद्धकला
2. Quoted by J.F.C. Fuller—Desesive Battle of the Western World (Vol. II)

इस प्रकार हम निर्विवाद रूप से कह सकते हैं कि फ्रेड्रिक महान् के सैनिक योगदान एवं उसके सैन्य सुधारों को कभी भी नकारा नहीं जा सकता, क्योंकि उसने अपने साहस के द्वारा एक नए समरतन्त्र को जन्म दिया।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. "आग्नेय हथियारों के प्रादुर्भाव से हम इतिहास का केवल एक अध्याय ही नहीं पलटते अपितु एक नया ही ग्रन्थ खोल देते हैं।" इस कथन के सन्दर्भ में बतलाइए कि बारूद एवं आग्नेय हथियारों ने युद्ध कला में क्या-क्या परिवर्तन किए ? ***(M.D.U.1987)***

अथवा

2. बारूद के युग में आग्नेय हथियारों के युद्ध कला पर पड़े प्रभाव की विस्तार समीक्षा कीजिए।
3. बारूद के युग में जलीय युद्ध व्यवस्था में हुए व्यापक परिवर्तन का सविस्तार पूर्वक उल्लेख कीजिए।
4. 'बारूद के युग ने समरतन्त्र का सम्पूर्ण ढांचा ही परिवर्तित कर दिया।' उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
5. बारूद के युग में युद्ध कला में विज्ञान एवं तकनीकी प्रभावों का विस्तारपूर्वक उल्लेख कीजिए।

(K.U.K. 1988, 1989 : M.D.U. 1987, 1990, 1992)

6. '15वीं शताब्दी में आग्नेय हथियारों के प्रयोग से सैनिक क्षेत्र में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया' पाकरोवस्की के इस कथन की व्याख्या करो।
7. गुस्टावस एडाल्फस को आधुनिक युद्ध कर्म का निर्माता कहा जाता है। इस कथन की पुष्टि कीजिए।
8. सत्रहवीं शताब्दी का सर्वश्रेष्ठ सैनिक अग्रदूत गुस्टावस था। इतिहास में वह आधुनिक सेना के निर्माता के रूप में अमर रहेगा। उदाहरण सहित समीक्षा करो।
9. गुस्टावस एडाल्फस के द्वारा किए गए सैन्य सुधारों की सविस्तार व्याख्या करें।
10. फ्रेड्रिक महान् के कूटियोज़नात्मक विचार क्या थे ? युद्धकला के प्रति इसकी क्या देन थी ?
11. फ्रेड्रिक महान् के सैन्य सिद्धान्तों एवं सैन्य विचारों का विस्तारपूर्वक उल्लेख करें।

12. निम्नलिखित का उल्लेख करें—
(क) फ्रेड्रिक महान् का तिरछा आक्रमण
(ख) गुस्टावस एडाल्फस के द्वारा तोपखाने का सुधार।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(Objective Type Questions)

प्रश्न 1. आग्नेय हथियारों की शुरुआत हुई थी—
(क) 14वीं शताब्दी में (ख) 15वीं शताब्दी में
(ग) 13वीं शताब्दी में (घ) 12वीं शताब्दी में।

प्रश्न 2. बारूद के आविष्कार से महत्त्व बढ़ गया था—
(क) जन शक्ति का (ख) अश्वारोही सेना
(ग) हथियार एवं यन्त्रों का (घ) उपर्युक्त सभी का।

प्रश्न 3. 'Tactics in the domain of weapon' कथन है—
(क) क्लाजविट्ज (ख) लिडिल हार्ट का
(ग) जे० एफ० सी० फुलर का (घ) नेपोलियन का।

प्रश्न 4. 'रीजेण्ट' तथा 'रोवरेन' नाम थे—
(क) सेनापतियों के (ख) तोपों के
(ग) जलयानों के (घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं।

प्रश्न 5. बारूद के युग में विश्व की सर्वोत्तम नौ सेना थी—
(क) अमेरिकी नौ सेना (ख) फ्रान्सीसी नौ सेना
(ग) जापानी नौ सेना (घ) ब्रिटिश नौ सेना।

प्रश्न 6. 1855 ई० में किसके मध्य जल सेना की लड़ाई लड़ी गई ?
(क) स्पेन व फ्रांस के मध्य (ख) स्पेन व इंग्लैण्ड के मध्य
(ग) इंग्लैण्ड व फ्रांस के मध्य (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

प्रश्न 7. "15वीं शताब्दी के आग्नेय हथियारों के प्रयोग से सैनिक क्षेत्र में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया।" उक्त कथन किसका है ?
(क) जे० एफ० सी० फुलर (ख) पॉकरोवस्की
(ग) टॉम विन्ट्रिघम (घ) कैप्टन लिडिल हार्ट।

प्रश्न 8. गुस्टावस एडाल्फस कहां का राजा था ?
(क) इंग्लैण्ड का (ख) फ्रांस का
(ग) स्वीडन का (घ) जर्मन का।

प्रश्न 9. 'महान् योद्धा सम्राट्' की उपाधि किसे दी गई थी ?
(क) गुस्टावस एडाल्फस को (ख) फ्रेड्रिक महान् को
(ग) नेपोलियन को (घ) सिकन्दर महान् को।

प्रश्न 10. 'उत्तर का शेर' किसे कहा जाता था ?

(क) नेपोलियन को (ख) सिकन्दर महान् को
(ग) फ्रेड्रिक महान् को (घ) गुस्टावस्ट एडाल्फस को।

प्रश्न 11. आधुनिक सेना का निर्माता किसे कहा जाता है ?

(क) फ्रेड्रिक महान् को
(ख) सिकन्दर को
(ग) गुस्टावस एडाल्फस को
(घ) उपर्युक्त में से किसी को भी नहीं।

प्रश्न 12. गुस्टावस एडाल्फस ने अश्वारोही सेना को कितने भागों में गठित किया—

(क) दो भागों में (ख) तीन भागों में
(ग) चार भागों में (घ) पांच भागों में।

प्रश्न 13. गुस्टावस एडाल्फस का कार्यकाल रहा—

(क) 1530 ई० से 1590 ई० तक
(ख) 1740 ई० से 1786 ई० तक
(ग) 1594 ई० से 1632 ई० तक
(घ) 1604 ई० से 1700 ई० तक।

प्रश्न 14. फ्रेड्रिक महान् किस राष्ट्र का सैन्य विचारक था ?

(क) एशिया (ख) जर्मन
(ग) स्वीडन (घ) इंग्लैण्ड।

प्रश्न 15. 'General Principles of War' पुस्तक किसकी रचना है ?

(क) गुस्टावस एडाल्फस (ख) फ्रेड्रिक महान
(ग) क्लाजेविट्ज (घ) जोमिनी।

प्रश्न 16. 'तिरछा आक्रमण' किसकी युद्ध कला थी ?

(क) नेपोलियन की (ख) जोमिनी की
(ग) फ्रेड्रिक महान् की (घ) लिडिल हार्ट की।

प्रश्न 17. एक सौ वर्षीय युद्ध (1337-1453) किन के बीच लड़ा गया ?

(क) ईरान व यूनान (ख) फ्रांस व इंग्लैण्ड
(ग) इंग्लैण्ड व रूस (घ) फ्रांस व जर्मन।

प्रश्न 18. किस देश ने पहले बारूद का आविष्कार किया ?

(क) चीन (ख) इंग्लैण्ड
(ग) फ्रांस (घ) जर्मन।

प्रश्न 19. यूरोप में पहली तोप बनायी गयी—

(क) 1310 के दशक में (ख) 1250 के दशक में
(ग) 1330 के दशक में (घ) 1320 के दशक में।

प्रश्न 20. किस देश की तोपों ने 1453 में कान्सटैटिनोपल के किले को ध्वस्त कर दिया था ?

(क) इंग्लैण्ड (ख) फ्रांस
(ग) तुर्की (घ) स्पेन।

प्रश्न 21. राइफल का निर्माण किस दशक में किया गया ?

(क) 1520 में (ख) 1530 में
(ग) 1540 में (घ) 1550 में।

प्रश्न 22 . स्पेन ने किस वर्ष पिस्तौल का आविष्कार किया ?

(क) 1550 में (ख) 1560 में
(ग) 1540 में (घ) 1570 में।

प्रश्न 23. पिस्तौल में व्हील लॉक (Wheel Lock) का प्रयोग कब किया गया ?

(क) 1452 में (ख) 1542 में
(ग) 1352 में (घ) 1562 में।

प्रश्न 24. बन्दूक की शुरुआत किस दशक में हुई ?

(क) 1530 में (ख) 1540 में
(ग) 1550 में (घ) 1650 में।

प्रश्न 25. स्पेन की सेना ने पहले बन्दूक का प्रयोग कहां किया ?

(क) इंग्लैण्ड में (ख) फ्रांस में
(ग) इटली में (घ) जर्मन में।

प्रश्न 26. रीजेण्ट तथा सोवरेन नामक थे—

(क) तोपें (ख) जलयान
(ग) पिस्तौल (घ) बन्दूकें।

प्रश्न 27. 1855 में पहली बार जल सेना की लड़ाई लड़ी गयी—

(क) स्पेन व ब्रिटिश (ख) फ्रांस व ब्रिटिश
(ग) स्पेन व फ्रांस (घ) ब्रिटेन व इटली।

प्रश्न 28. "Science and Technology in contemporary war" पुस्तक किसने लिखी ?

(क) आर्थर बिर्नी (ख) जे० एफ० सी० फुलर
(ग) पॉकरोवस्की (घ) माण्टगोमरी।

प्रश्न 29. साकेट संगीन का विकास हुआ—

(क) 17वीं शताब्दी में (ख) 16वीं शताब्दी में
(ग) 14वीं शताब्दी में (घ) 15वीं शताब्दी में।

प्रश्न 30. स्वीडन नरेश के नाम से जाना जाता है—

(क) फ्रेड्रिक महान् को (ख) नेपोलियन को
(ग) गुस्टावस एडाल्फस को (घ) लुई को।

प्रश्न 31. गुस्टावस एडाल्फस ने अश्वारोही सेना को कितने भागों में विभक्त किया ?

(क) पांच भागों में (ख) दो भागों में
(ग) चार भागों में (घ) तीन भागों में।

प्रश्न 32. स्थायी सेना की नींव रखने का श्रेय है—

(क) फ्रेड्रिक महान् को (ख) नेपोलियन को
(ग) लिडिल हार्ट को (घ) गुस्टावस को।

प्रश्न 33. 'General Principles of war' पुस्तक लिखी है—

(क) गुस्टावस एडाल्फस ने (ख) पॉकरोवस्की ने
(ग) फ्रेड्रिक महान् ने (घ) जे० एफ० सी० फुलर ने।

प्रश्न 34. अश्व तोपखाने (Horse Artillery) को सर्वप्रथम अपनाया—

(क) फ्रेड्रिक महान ने (ख) गुस्टावस एडाल्फस ने
(ग) नेपोलियन ने (घ) हिटलर ने।

प्रश्न 35. सेना के ड्रिल व प्रशिक्षण पर किसने विशेष बल दिया ?

(क) नेपोलियन ने (ख) फ्रेड्रिक महान ने
(ग) लुई VII ने (घ) विलियम ने।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर
(Answers of Objective Type Questions)

1. (क)	2. (ग)	3. (ख)	4. (ग)	5. (घ)
6. (ख)	7. (ख)	8. (ग)	9. (क)	10. (घ)
11. (ग)	12. (क)	13. (ग)	14. (क)	15. (ख)
16. (ग)	17. (ख)	18. (क)	19. (घ)	20. (ग)
21. (क)	22. (ग)	23. (ख)	24. (ग)	25. (ग)
26. (ख)	27. (क)	28. (ग)	29. (क)	30. (ग)
31. (ख)	32. (घ)	33. (ग)	34. (क)	35. (ख)

5

भाप का युग
(THE AGE OF STEAM)

बारूद का युग जहां औद्योगिक विकास की आधारशिला रख रहा था, वहां भाप के युग ने औद्योगिक विकास की आधारशिला को औद्योगिक ढांचे के रूप में स्थापित कर दिया। औद्योगिक क्रान्ति का यह प्रथम चरण था। भाप के इंजन का विकास हो जाने से उद्योगों को एक नया साधन मिल गया, जिसने स्थल क्षेत्र को ही प्रभावित नहीं किया बल्कि जलीय सीमाएं भी इसकी परिधि में आ गई थीं। इसके विकास से साधन ही सुलभ नहीं हुए, बल्कि प्रत्येक क्षेत्र में तेज़ी के गतिशीलता (Mobility) आ गई थी।

इस भाप की शक्ति के आविष्कार ने समरतान्त्रिक क्षेत्र में क्रान्तिकारी एवं महत्त्वपूर्ण विकास किया। मानवं, पशु अथवा पानी की शक्ति से चलने वाली मशीनें भाप के इंजन से चलने वाली मशीनों का मुकाबला नहीं कर सकी। इस मशीन ने उत्पादन में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि सब जगह औद्योगिक क्रान्ति तेज़ी से फैलने लगी। तेज़ी के साथ विकास के कारण इस युग को **'औद्योगिक क्रान्ति'** का युग भी कहा जाता है। इस युग की प्रमुख विशेषता व्यक्तिगत कला-कौशल के महत्त्व का पतन और एकरूपता तथा वस्तुओं के मानवीकरण (Standardization) की प्रवृत्ति की बढ़ोत्तरी होना है। इस समय बड़े पैमाने पर उत्पादन और मानवीकरण की विशेषता का प्रभाव सैन्य संगठन, शस्त्रास्त्र, साज-सामान, भर्ती तथा प्रशिक्षण पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ा।

1. भाप के युग में समरतान्त्रिक क्रान्तिकारी परिवर्तन (Tractical and Revolutionary Changes in the Age of Steam)

भाप के युग का प्रभाव युद्ध एवं संसार की प्रगति पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ा और इसने समरतान्त्रिक प्रणाली को अमूल-चूल रूप से ही परिवर्तित कर दिया। अब हम संक्षिप्त रूप में इस युग के समरतान्त्रिक क्षेत्र में होने वाले क्रान्तिकारी परिवर्तनों का वर्णन करते हैं, जो कि निम्नलिखित हैं—

1. **धोखे की नीति का युद्धों में बढ़ता महत्त्व**—इस युद्ध में अपनाए जाने वाले नियमों को पूर्ण तरह समाप्त कर दिया गया तथा इसका स्थान धोखे की नीति, छल, कपटपूर्ण नीति, चापलूसी एवं धूर्तता ने ले लिया। इसका प्रमुख कारण यह था कि शक्ति के स्थान पर कपटपूर्ण नीति अधिक सफल एवं सरल उपाय था। युद्ध के इतिहास में इस बात के अनेक उदाहरण मिलते हैं। अमेरिका के कुछ सैनिकों ने अपनी वर्दी ब्रिटिश सेना

की वर्दी के अनुरूप बनाकर ब्रिटिश सेना में घुस-पैठ करके आक्रमण की योजना बनाई थी। इसी प्रकार पहले अमरीकी नागरिकों ने आत्म समर्पण किया, परन्तु जब उन्होंने मौका देखा तभी धोखे की नीति अपनाकर शस्त्र सज्जित होकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध मैदान में आ गए।

2. सम्पूर्ण सशस्त्र राष्ट्र (Total Nation in Arms) के सिद्धान्त का विकास—इस युग में यातायात साधनों में अत्यधिक प्रगति हुई जिसके परिणामस्वरूप सेनाओं के आकार में बढ़ोत्तरी हो गई। सैनिक संख्या का विजय प्राप्त करने में सक्रिय सहयोग माना जाने लगा था जैसे कि नेपोलियन ने लिखा है—"**विशाल सेनाओं की मदद से ही शक्ति में वृद्धि हो सकती है और ईश्वर स्वयं भी उसी का पक्ष लेता है, जिसके पास बड़ी बटालियन होती है।**"

युद्ध में बड़ी मात्रा में बढ़ती रक्त रंजित परम्परा के कारण नागरिक सैनिक सेवा से कतराने लगा, जिससे सैनिक संख्या सीमित होने लगी तो कुछ देशों ने सेना में अनिवार्य भर्ती आरम्भ कर दी। नेपोलियन ने इस स्थिति को समझा और सम्पूर्ण सशस्त्र राष्ट्र के सिद्धान्त पर सैनिक भर्ती आरम्भ कर दी। नेपोलियन ने अपने संविधान में संशोधन करके समस्त नागरिकों को अनिवार्य सैनिक सेवा के लिए जुटा दिया।

3. अव्यवस्थित युद्ध कौशल—व्यावसायिक सैनिक जीवन का अन्त हो जाने के कारण युद्ध कौशल में विशेष एवं उल्लेखनीय परिवर्तन न हुआ, क्योंकि सामान्य नागरिकों को इस का रूप प्रदान कर दिया गया। इस कारण उचित प्रशिक्षण के अभाव एवं अनुशासनहीनता के कारण समरतन्त्र का पतन स्वाभाविक रूप से होता गया। उच्च अनुशासन एवं योग्य सेनानायक के अभाव में सेना की दशा दिन प्रतिदिन अव्यवस्थित होती गई क्योंकि एक सेना नायक बिना शृंखलाबद्धता के सेनाओं का नियन्त्रण नहीं कर सकता था। परिस्थिति के कारण छोटे-छोटे अनेक समूहों में सेना का नेतृत्व अनेक व्यक्तियों द्वारा किया जाने लगा जिसके परिणामस्वरूप एकरूपता एवं पंक्तिबद्धता का पूर्ण पतन हो गया। नायकत्व का विकेन्द्रीकरण हो जाने के कारण जनरल स्टाफ का आरम्भ हो गया, जिसकी सहायता के लिए क्वार्टर मास्टर जनरल (Quarter Master General) तथा एडजुटेण्ट जनरल स्टाफ (Adjutant General Staff) शाखाओं की स्थापना की गई।

4. आपूर्ति व्यवस्था का बढ़ता महत्त्व—सैनिक संख्या में दिन प्रतिदिन वृद्धि होने के परिणामस्वरूप जहां सेना का स्वरूप में परिवर्तन आया, वहां उसकी आपूर्ति व्यवस्था का विशेष महत्त्व बढ़ गया। युद्धों के लिए उद्योगों की स्थापना बड़ी तेज़ी के साथ की जाने लगी तथा इसके लिए अलग से डाक-तार की व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया। इस ओर सर्वप्रथम जर्मन राष्ट्र ने विशेष प्रगति की। सेना विस्तार के कारण आपूर्ति व्यवस्था का विशेष महत्त्व बढ़ गया। इस सन्दर्भ में जनरल जे० एफ० सी० फुलर महोदय ने अपने विचार इस प्रकार से व्यक्ति किए हैं—

"**जो राष्ट्र अपनी शान्तिकालीन अवधि का उपयोग युद्ध के लिए यन्त्र सम्बन्धी इन्जीनियरिंग शक्ति को बढ़ाने के लिए कहते हैं तथा जिनके पास अत्यन्त कुशल**

व अधिक संख्या में कुशल कारीगर और प्रशीक्षित सैनिक हैं और पर्याप्त मात्रा में कच्चे माल व शस्त्रास्त्रों के भण्डार रहते हैं, उसी राष्ट्र के पक्ष में सदैव सफलता सक्रिया रहती है।''[1]

परिवहन के क्षेत्र में वृद्धि हो जाने के फलस्वरूप सेनाओं की सैन्य सामग्री की आपूर्ति सरलता के साथ की जाने लगी।

5. रक्त रंजित युद्धों का विकास—इस काल में रक्त रंजित युद्धों में अत्यधिक वृद्धि हुई, क्योंकि विस्तृत सैन्य संगठन एवं अकुशल व अनुशासनहीन सैनिकों के कारण सैनिक समरतन्त्र का पतन हो चुका था। साथ ही इस काल के प्रसिद्ध सैन्य विचारक क्लाजविट्ज ने युद्ध को एक हिंसात्मक कार्यवाही सिद्ध किया तथा युद्ध में नर्मी तथा दया की गुन्जाइश नहीं करनी चाहिए यह बताया और कहा कि—

''War is neither a scientific game nor an international sport, but an act of voilence, pushed to its utmost bounds in the nature of war there is nothing moderate or philanthropic as such.''[1]

इस प्रकार युद्धों में कत्लेआम एवं सर्वनाश करना ही शत्रु के विरुद्ध प्रमुख उद्देश्य बन गया। जोमिनी महोदय ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **'दि डेक्लाइन ऑफ़ दि वेस्ट'** (The Declion of the West) में इस सन्दर्भ में उल्लेख किया है कि—**''युद्ध बड़े-बड़े समूहों के बीच जिनके पास अतुलनीय शस्त्रास्त्र है, रक्त बहाने वाले हो जाएंगे। हमें चौथी शताब्दी के युद्ध के दृश्यों को पुनः देखना पड़ेगा और बाध्य हो करके आदिम जाति के समय जैसे हूणों, मंगोलों तथा तातारों की भांति जीवन-यापन करना पड़ेगा।''**

6. नवीन युद्ध दर्शन का जन्म—भाप की शक्ति के अभ्युदय के फलस्वरूप विभिन्न देशों में औद्योगिक विकास बड़ी तेज़ी से हुआ और इससे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सैनिक समस्याओं का जन्म हुआ। इस प्रकार के वातावरण के कारण विभिन्न सैन्य विचारकों ने नवीन युद्ध दर्शन का प्रचार एवं प्रसार किया। इस नवीन युद्ध दर्शन में क्लाजविट्ज, जोमिनी तथा मार्क्स का सक्रिय सहयोग रहा। इस सन्दर्भ में नेपोलियन की महत्त्वपूर्ण भूमिका को भी नकारा नहीं जा सकता। उसके विचारों के अनुसार—

''All war should be systematic, for every war should have an aim and be conducted in conformity with the principles and rules of the art.''

इस प्रकार भाप के युग के आरम्भ होते ही जहां एक ओर औद्योगिक क्षेत्र में चमत्कारिक विकास हुआ वहां दूसरी ओर संसार की प्रगति एवं समस्तान्त्रिक प्रणाली भी इससे अछूती न रह सकी।

7. विनाशकारी हथियारों का विकास—भाप के युग में हथियारों को अत्यधिक संहारक एवं प्रहारक बनाने की होड़ शुरू हो गई। इसी कारण दमक टोपी (Percussion Cap) और बर्तुक सूच्याकार गोली (Cylindro Conodial Bullet) का विकास किया गया। इस प्रकार पहली मिन्नी राइफल का प्रयोग 1851 ई० में फ्रांस में किया

1. J.F.C Fuller — Armament and History.

गया। राइफल को शताब्दी का सर्वाधिक घातक हथियार बना दिया गया था। जे० एफ० सी० फुलर ने स्पष्ट रूप से लिखा है—

"The Rifle to become the most deadly weapon of the century."[1]

इसके साथ ही स्वचालित मशीनगन का विकास भी इसी युग में कर लिया गया था तथा तोपखाने की मारक क्षमता बढ़ा कर एक भयंकर हथियार के रूप में प्रस्तुत किया गया था।

8. गतिशीलता का महत्त्व—भाप के युग में गतिशीलता का अत्यधिक महत्त्व बन गया, इसी कारण गतिशील युद्ध (Mobile Warfare) की शुरुआत हो गई थी। इस समय यह अनुभव किया जाने लगा कि युद्ध में सेनाएं जितनी अधिक गतिशील होंगी, उतने ही विजय के अवसर अधिक होंगे। इसी कारण इस युग में सामरिक संरचना, भार एवं परिवहन का वितरण आदि तत्त्वों पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा था। तोपों को गतिशील गाड़ियों में स्थापित किया जाने लगा था।

9. सहयोग का महत्त्व —भाप के युग में यान्त्रिक विकास बड़ी तेज़ी के साथ हुआ, जिसके परिणामस्वरूप सामरिक क्षेत्र में सहयोग के सिद्धान्त का बहुत महत्त्व बढ़ गया। इस समय सेना विभिन्न टुकड़ियों में विभक्त होकर कार्य करती थी, जो कि मुख्य रूप से एक-दूसरे के सहयोग पर ही आश्रित होकर अपने लक्ष्य में सफल हो पाती थी। सेनाओं में केन्द्रीय वाहन के सिद्धान्त को खुलकर अपनाया जाने लगा था।

10. छापामार समरतन्त्र का विकास—इस युग में छापामार समरतन्त्र का विकास बड़ी तेज़ी के साथ हुआ। इस अनियमित युद्ध कला युद्ध क्षेत्र में क्रान्ति-सी उत्पन्न कर दी। सर्वप्रथम यह समरतन्त्र 1809 ई० में स्पेन के नागरिकों ने नेपोलियन की सेना के विरुद्ध शुरू किया था। इस व्यवस्था से नेपोलियन को भारी आघात उठाना पड़ा था। इस समरतन्त्र ने भाप के युग में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया।

भाप के युग में न केवल औद्योगिक व्यवस्था में बदलाव आया, बल्कि सम्पूर्ण व्यवस्था का ढांचा, जिसमें सामाजिक, आर्थिक, सामरिक आदि पूरी तरह से बदल गया। 1764 में जेम्सवाट ने भाप शक्ति का सफल प्रयोग इंजन के रूप में करके बड़ी-बड़ी मशीनों को संचालित किया, इसके फलस्वरूप कारखानों की उत्पत्ति होती चली गयी। इस नवीन शक्ति का उपयोग यातायात एवं परिवहन [जल एवं स्थल (रेलवे)] के रूप में किया जाने लगा। समुद्र में भाप के जलयान तथा ज़मीन में लोहे की पटरियों में रेलों के प्रचलन ने युद्ध के क्षेत्र में ही सामरिक बदलाव ही नहीं किये, बल्कि सम्पूर्ण ढांचा ही नये रूप में विकसित हो गया।

भाप के युग में समरतान्त्रिक (Tactical) क्षेत्र में भी एक महत्त्वपूर्ण एवं ज़ोरदार बदलाव आया। परम्परागत से चले आ रहे नैतिक युद्ध के नियमों को तिलांजलि दे दी

1. Clausewitz—On War

गई, क्योंकि यातायात के क्षेत्र में आये अचानक बदलाव से सामरिक ढांचा ही बदल गया। आधुनिक विज्ञान व खोजबीन की चेतना के उदय ने समाज को अनेक प्रकार से प्रभावित किया। इस दौरान हथियारों के उपयोग एवं युद्ध के तौर तरीकों में ज़बरदस्त बदलाव आया बारूद के बड़े पैमाने पर प्रयोग एवं उनकी आपूर्ति व्यवस्था का साधन उपलब्ध हो जाने के कारण आक्रमण एवं प्रतिरक्षा के तरीके बदल गये। बड़ी-बड़ी तोपों को जलयानों के माध्यम से इधर-से-उधर भेजा जाना ही सरल नहीं हुआ बल्कि जहाज़ों में रखकर उनका उपयोग भी शुरू हो गया। इस युद्ध का नज़ारा ही बदल गया और इस प्रकार यूरोप में भाप के इंजन के प्रयोग से आपूर्ति व्यवस्था का प्रबन्ध हो जाने के कारण सेना की संस्थागत और संगठनात्मक संरचना ही बदल गयी।

भाप के युग में बन्दूकों एवं तोपों से लैस यूरोपीय जलयान (Ships) नौ सेना (Navy) के क्षेत्र में छा गये और इसी से बड़ी यूरोपीय शक्तियों के पूरी दुनिया के ऊपर आधिपत्य पाने का अध्याय आरम्भ हुआ था। इस युग में सामानों का आदान-प्रदान (आपूर्ति) और लेन-देन का सिलसिला अभूतपूर्व रूप से और एक बड़े पैमाने पर बढ़ा और नये बाज़ार की ज़रूरतों के अनुसार भू परिवहन और संचार को भी सुधारने की शुरुआत हुई। इस प्रकार भाप के इस युग में यौद्धक व्यवस्था के क्षेत्र में भी एक बड़े पैमाने पर बदलाव आया।

2. रेलवे की शुरुआत (Rise of Railway)

भाप के युग में औद्योगिक प्रगति एवं यातायात के विकास के नये द्वार खुल गये। इस द्वार को खोलने की शुरुआत 1750 में पत्थर के कोयले की जानकारी मिली और इस ऊर्जा शक्ति का प्रयोग लोहा गलाने की पहली भट्ठी में किया जाने लगा। 1760 में पत्थर के कोयले से लोहा गलाने की पहल भट्ठी लगायी गयी। इस प्रकार पत्थर कोयले का उपयोग घरेलू कार्यों में भी किया जाने लगा, जिससे नवीन औद्योगिक व्यवस्था का जन्म हुआ। इन खोजों के बाद '**भाप की शक्ति**' का आविष्कार हुआ। पत्थर के कोयले से उत्पन्न तेज़ आग तथा जल के सहयोग से उत्पन्न भाप की शक्ति से यन्त्रों की संचालित करने की विधि विकसित हुई। 1764 में जेम्सवाट ने भाप शक्ति का सफल प्रयोग इन्जन में करके बड़ी-बड़ी मशीनों को चलाने में किया। परिणामस्वरूप औद्योगिक प्रगति होती गयी। इस नवीन शक्ति का उपयोग उद्योगों के अतिरिक्त यातायात के साधनों में भी होने लगा। वर्ष 1814 जार्ज स्टीवेंसन ने सबसे पहला ऐसा इंजन बनाया जो भाप की शक्ति से लोहे की पटरियों पर स्वयं चल सकता था, साथ ही लदी हुई गाड़ियों को खींच सकता था। 1830 में लिवरपुल से मैनचेस्टर तक यात्रियों व सामान को ले जाने के लिए पहली रेलगाड़ी चलाई गयी। इस आविष्कार के फलस्वरूप रेलों की शुरुआत हुई। 1853 में

भारत में पहली रेलवे लाइन लॉर्ड डलहौजी के समय बिछायी गई थी। इस सब के कुछ ही समय के अन्तराल में यूरोप में सभी जगह रेले चलने लगी। जब जेम्स वाट ने भाप के इंजन का आविष्कार किया तो इस आविष्कार के परिणामस्वरूप शक्ति का केन्द्रीयकरण हो गया। रेलवे की शुरुआत ने आवागमन तथा पूर्ति व्यवस्था के क्षेत्र में एक नवीन दिशा प्रदर्शित कर दी। विश्व का सबसे पहले देश जर्मन ही था, जिसने रेलवे की उपयोगिता सैनिक दृष्टिकोण के रूप में समझी। इस सन्दर्भ में प्रसिद्ध सैन्य विचारक जनरल जे० एफ० सी० फुलर महोदय ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Armament and History" में उल्लेख किया है कि—"**जर्मन देश में रेलवे लाइन बिछी भी नहीं थी कि वहां के निवासियों ने रेलवे की सैनिक उपयोगिता को समझना आरम्भ कर दिया।**"

रेलवे द्वारा बहुत बड़ी संख्या में सेनाओं तथा भारी मात्रा में उपयोगी एवं आवश्यक सैनिक सामग्री की पूर्ति व्यवस्था करना सरल हो गया। सर्वप्रथम सेनाओं और उपयोगी एवं आवश्यक सैनिक सामग्री आदि के लाने और ले जाने के लिए रेलों का अत्यधिक उपयोग '**अमेरिका के गृह युद्ध**' (1861 ई० से 1865 ई०) के समय किया गया। यद्यपि सैनिक दृष्टिकोण से सेनानायकों को युद्ध योजना (Strategy) बनाने के लिए रेल मार्गों पर ही आश्रित होना पड़ा। इसके साथ यद्यपि रेलवे के विकास की कुछ परिसीमाएं थीं जो कि आज तक है, जैसा कि भूगोलवेत्ता प्रो० ग्रिफिथ टेलर ने अपनी पुस्तक "Urban Geography" में वर्णन किया है—"**रेलमार्गों का निर्माण उन्हीं क्षेत्रों में हो सकता है, जहां पर प्राकृतिक धरातल समतल हो।**"

इस युग में रेलवे का आरम्भ होने के कारण इनका प्रत्यक्ष प्रभाव तत्कालीन युद्ध व्यवस्था तथा युद्ध नीति पर पड़ा। जैसा कि इस सन्दर्भ में जनरल फुलर ने लिखा है— "**विभिन्न देशों की युद्ध नीति पर उन देशों की रेलवे व्यवस्था का बहुत प्रभाव पड़ता था और रेलों के प्रयोग से युद्ध क्षेत्र में अधिक-से-अधिक सेनायें भेजने की प्रवृत्ति को और भी अधिक बल प्राप्त हुआ।**"

इस प्रकार रेलवे के शुभारम्भ के फलस्वरूप जहां एक ओर यातायात एवं आपूर्ति व्यवस्था के द्वारा राष्ट्र का आर्थिक एवं औद्योगिक विकास तेज़ी के साथ विकसित हुआ, वहां दूसरी ओर सैनिक दृष्टिकोण से इस कार्य ने युद्ध नीति एवं युद्ध व्यवस्था को भी अत्यधिक प्रभावित किया। यही कारण है कि सामरिक दृष्टिकोण से आज भी रेलवे का सक्रिय सहयोग रहता है। यातायात की प्रणालियों में रेलवे परिवहन का सबसे अधिक महत्त्व है, क्योंकि देश का आन्तरिक आवागमन एवं आपूर्ति व्यवस्था रेल मार्गों द्वारा ही सर्वाधिक सम्पन्न होती है। भाप के युग ने जहां रेलवे को जन्म देकर यातायात के साधन के लिए नये द्वार खोल दिये, वहां सैनिक एवं सामरिक दृष्टिकोण से आपूर्ति व्यवस्था के लिए नये आयाम भी खड़े कर दिये।

3. जलयानों का विकास (Development of Ships)

इस युग में सामुद्रिक युद्ध में प्रयोग किया जाने वाला पतवार से चलने वाले जल पोतों का स्थान भाप शक्ति से चलने वाले जलयानों ने ले लिया। इसके फलस्वरूप लकड़ी के स्थान पर लोहे से निर्मित जलयानों का प्रयोग किया जाने लगा। जहां रेलवे के क्षेत्र में जर्मन ने अपनी सबसे पहले सैनिक श्रेष्ठता हासिल कर ली थी, वहां सामुद्रिक शक्ति के क्षेत्र में ब्रिटेन ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। यही एक प्रमुख कारण था, जिसके कारण ब्रिटेन ने अपना सूर्य न छिपने वाला विशाल साम्राज्य स्थापित कर लिया था। अब हम संक्षिप्त में जलयानों के विकास का वर्णन करते हैं।

भाप चलित इंजनों का शुभारम्भ 19वीं शताब्दी के प्रथम दशक में युद्ध पोत के रूप में किया जाने लगा था। इसका परिणम यह हुआ कि पतवार और पाल से चलने वाले जलयानों की तुलना में भाप चलित जल पोतों की गतिशीलता अत्यधिक थी। जब भाप चलित जलयानों का निर्माण किया जाने लगा, तो प्रारम्भ में ब्रिटेन ने इसका झूठा प्रचार फैलाया कि यह अत्यन्त घातक एवं खतरनाक व्यवस्था है। इसके पीछे ब्रिटेन का उद्देश्य यह था कि कोई भी देश इस क्षेत्र में प्रगति न करे और वह हतोत्साहित हो जायें। इसका स्वयं का सदैव सामुद्रिक प्रभुत्व बना रहे। इसका परिणाम उल्टा ही हुआ और अन्य देश तेज़ी के साथ इन भापचलित जलयानों का निर्माण करने लगे। तब पुन: मजबूर होकर ब्रिटिश सरकार ने इस ओर ध्यान दिया और उसने भी भाप चलित जलपोतों का निर्माण आरम्भ कर दिया।

भाप से संचालित जलयानों के निर्माण में ब्रिटेन ने अभूतपूर्व प्रगति की और अनेक शक्तिशाली जलयानों का निर्माण कर संसार भर में शक्तिशाली नौ सैनिक महत्त्व के अड्डों की स्थापना की। यद्यपि इस क्षेत्र में फ्रांस ने भी महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय प्रगति की। 1857 ई० में फ्रांस का प्रथम कवचयुक्त जलपोत जिसका नाम **'वैरियर'** (योद्धा) था, वह लगभग 380 फीट लम्बा बना था। इसके कवच की मोटाई 4.25 इंच थी तथा इसका इंजन 6000 अश्व शक्ति (Horse Power) वाला था। इसमें भारी तोपें लगी हुई थीं। लगभग 1870 ई० में समुद्री शक्ति बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण विकास कार्य किए गए तथा इन पर प्रयोग किए जाने वाले हथियारों का विकास भी तेजी से हुआ। इस सबका परिणाम यह हुआ कि नौ सेना के समरतन्त्र में तेज़ गति से परिवर्तन हुआ।

समुद्री क्षेत्रों में संहारक एवं कुशल प्रहार करने की दृष्टिकोण से अनेक प्रकार के नवीन हथियारों का निर्माण किया गया जैसे—बिजली की सहायता से फायर करने वाली पनडुब्बी सुरंगें (Electric Fired Submarine Mines), पनडुब्बियां तथा टारपीडो (Torpedo) आदि। इन विद्युत् संचालित पनडुब्बी सुरंगों का प्रथम प्रयोग अमरीकी गृह-युद्ध (American Civil-War) में अत्यन्त संहारक एवं प्रभावशाली सिद्ध हुआ।

इसी दौरान टारपीडो का भी सफल प्रयोग करके देखा गया। पनडुब्बी का प्रथम सफल निर्माण 1776 ई० में डेविड बुशनेल (David Bushnell) द्वारा किया गया।

मध्यकाल के उत्तरार्ध में जहाज़ों के प्रवेश करने और सामान लादने-उतारने को लेकर विवाद होता था। आक्रमणकारी अपना जहाज़ दूसरे जहाजों से भिड़ा देते थे और दुश्मन के जहाज़ में घुसकर कब्जा जमाने का प्रयास करते थे। कभी-कभी अग्नेय हथियारों का भी प्रयोग किया जाता था। इसी विचार से आगे विस्तारित और संशोधित होकर युद्धपोत का रूप धारण किया। युद्ध पोत का सेनानायक अपने शत्रु को पूरी तरह क्षत-विक्षत कर देता था और उसे इस प्रकार घेर लेता था कि वह अपनी स्थिति से आगे न बढ़ सके। सबसे पहले वेनिशियाइयो (वेनिस के लोगों) ने 14वीं शताब्दी में जहाज़ पर तोपखाना रखने का काम शुरू किया और 15वीं शताब्दी में सभी यूरोपीय जहाज़ों में तोपें रखी जाने लगी । 16वीं शताब्दी में बंदूकों, तोपों, नौ सेना के आकार में बदलाव के कारण युद्धनीति में भी परिवर्तन हो गया। 18वीं व 19वीं शताब्दी में जलयानों की भाप की शक्ति आ जाने से इतनी व्यापक क्षमता आ गयी कि समुद्र शक्ति के द्वारा ही साम्राज्य विस्तार ही बात संभव हो सकी। यूरोप को दुनिया में शीर्ष स्थान पर बैठाने का श्रेय जलयानों के विकास को ही जाता है।

इस प्रकार इस भाप के युग में जलयानों के प्रयोग ने, जहां समुद्री यातायात के लिए सुरक्षित एवं गतिशील द्वार खोल दिये वहां सामरिक दृष्टिकोण से युद्ध को अत्यन्त संहारक और विनाशक बना दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि युद्ध नीति एवं समरतन्त्र में तेज़ी के साथ परिवर्तन प्रारम्भ हो गया। इस युग ने जहां औद्योगिक, आर्थिक, सामाजिक विकास किया, वहां सैनिक क्षेत्र को भी इस प्रगति में आगे की ओर और अधिक बढ़ा दिया।

4. औद्योगिक विकास
(Industrial Development)

भाप युग को औद्योगिक क्रान्ति के युग से भी सम्बोधित किया जाता है, क्योंकि इस काल में उद्योगों में बड़ी तेज़ी के साथ विकास किया गया। भाप के प्रयोग से बड़ी-बड़ी मशीनों के द्वारा वस्तुओं का निर्माण किया जाने लगा, जबकि इससे पूर्व सरल यन्त्रों के माध्यम से ही कार्य एवं उत्पादन किया जाता था। इस युग में मशीनों के उत्पादन के परिणामस्वरूप व्यक्तिगत कला-कौशल का पतन हो गया तथा वस्तुओं के मानकीकरण (Standardization) की प्रवृत्ति में बढ़ौत्तरी होती चली गयी। इस सन्दर्भ में कैप्टन वी० एन० मालीवाल ने अपनी पुस्तक "सैन्य विज्ञान" में लिखा है कि—"**इस युग के बड़े पैमाने के उत्पाद (Mass Production) और मानकीकरण (Standardization) की विशेषता का सेनाओं के संगठन, साज-सामान और भर्ती आदि पर प्रत्यक्ष एवं गहरा प्रभाव पड़ा। औद्योगिक तरीकों का सैनिक क्षेत्र में**

होने वाले विकासों का उद्योगों पर पड़ने वाले प्रभावों को अलग कर सकना कठिन है।''

इसी प्रकार से औद्योगिक उत्पादन के विकास पर अपने विचार व्यक्त करते हुए जनरल जे० एफ० सी० फुलर ने अपनी पुस्तक Armament and History में उल्लेख किया है कि—''**युद्ध के लिए अधिक-से-अधिक नागरिकों को संगठित तथा प्रशिक्षित करने के लिए अधिक-से-अधिक धन की ज़रूरत पड़ती और उसको पूरा करने के लिए अधिक-से-अधिक उत्पादन की आवश्यकता पड़ी। इन सैनिक आवश्यकताओं ने न केवल उद्योगों का विकास ही किया, बल्कि नये-नये उद्योग आरम्भ करने की प्रेरणा भी प्रदान की।**''

औद्योगिक विकास को भाप के युग में बढ़ाने के लिए आर्थिक, राजनैतिक एवं सैनिक पहलू सर्वाधिक उत्तरदायी थे। अब हम प्रत्येक पहलू का संक्षिप्त में विवेचन करते हैं—

1. आर्थिक पहलू—भाप के युग में उद्योगों को विकसित करने में सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू आर्थिक ही था, क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र अपने को आर्थिक दृष्टिकोण से शक्तिशाली बनाने के लिए बड़े पैमाने पर कारखाने और उद्योगों की स्थापना करके उत्पादन बढ़ाने में तेज़ी के साथ जुट गया। आर्थिक सम्पन्नता पाने का परिणाम यह हुआ कि जहां व्यापार में वृद्धि आई वहां उत्पादन क्षमता में वृद्धि के परिणामस्वरूप औद्योगिक विकास होना स्वाभाविक ही था। यद्यपि व्यापारिक, आर्थिक, राजनैतिक, सैनिक और औद्योगिक शक्ति एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं। इनको अलग करना सम्भव नहीं है। जैसा कि सैन्य विशेषज्ञ ई० एम० अर्ल ने अपनी पुस्तक 'Makers of Modern Strategy' में लिखा है—

"In modern times we have constantly been confronted with the inter-relation of Commercial, financial and industrial strength on the one hand and political and military strength on the other."[1]

(आधुनिक समय में स्थायी रूप से व्यापारिक, आर्थिक तथा औद्योगिक शक्ति का और राजनैतिक तथा सैनिक शक्ति का पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं।)

2. राजनीतिक पहलू—यह बात बिल्कुल सत्य है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। साम्राज्यवाद की होड़ के कारण राष्ट्रों ने सैनिक शक्ति बढ़ानी आरम्भ कर दी जिसका प्रभाव यह हुआ कि आयुधों की पूर्ति एवं विकास के लिए कारखानों का जन्म हुआ। इस सन्दर्भ में ममफोर्ड महोदय ने अपनी पुस्तक ''तकनीकी एवं सभ्यता'' (Technics and Civilization) में उल्लेख किया है—

"The most important fact about modern warfare is the stready increase of machanization from the fourteenth century on word, here military forced the pace and cleared a straight path to the development of modern large scale standardized industry."[2]

1. E.M. Earle : Makers of Modern Strategy, Page - 79
2. Mamfort : Technics and civilization

(वर्तमान युद्धों के सम्बन्ध में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि चौदहवीं शताब्दी से लगातार इनका यन्त्रीकरण होता चला आ रहा है। आधुनिक मानवीकृत तथा बड़े पैमाने के उद्योगों के विकास हेतु इस प्रकार के युद्ध की आवश्यकताओं ने एक सीधा रास्ता तैयार कर दिया।)

"Perhaps the most positive influence in the development of the machine has been that of the soldier."[1]

(मशीनों के विकास में सबसे अधिक प्रभावकारी तत्त्व सैनिक तत्त्व ही रहा है।)

इस प्रकार राजनीतिक स्वार्थों ने अपनी साम्राज्य लिप्सा के कारण उद्योगों के विकास पर अधिक ध्यान दिया और अधिक-से-अधिक संसाधन जुटाने के लिए प्रयत्नशील रहे। राजनीतिक पहलू यही था कि अपने साम्राज्य की समृद्धि ने औद्योगीकरण को अत्यधिक बढ़ावा दिया।

3. सैनिक पहलू—भाप के युग में मशीनों की वृद्धि के परिणामस्वरूप मानव की शारीरिक शक्ति का स्थान यान्त्रिक कौशल ने ग्रहण कर लिया, जिसके लिए विस्तारवादी नीति तथा साम्राज्यवादी नीति को अपनाने के लिए धन की आवश्यकता महसूस हुई। ब्रिटेन साम्राज्य विस्तार तथा नौ सैनिक श्रेष्ठता के कारण ही सबसे अधिक विकसित औद्योगिक राष्ट्र बन गया। किसी भी उत्पादन या उद्योग को विकसित करने के लिए धन की विशेष भूमिका रहती है जैसा कि जनरल फुलर के द्वारा उल्लिखित कथन से स्पष्ट होता है—**'Untill 1757, when Clives victory at Plassey unleashed the hoarded treasure of Bengal money in sufficient quantity was lacking to finance manufacture."**

(जब तक 1757 ई० में प्लासी के युद्ध को जीत कर क्लाइव के बंगाल के दबे हुए खजाने को पा लिया, तब तक उत्पादन सम्बन्धी खर्च को चलाने के लिए पर्याप्त धन का अभाव ही बना हुआ था।)

भाप के युग ने उद्योगों को अत्यधिक विकसित किया, क्योंकि जहां तक ओर नवीन मशीनों का जन्म हुआ, वहीं उससे नवीन कारखाने बने तथा धन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उत्पादन बढ़ाया गया, इसके साथ ही उत्पादन के लिए साम्राज्य विस्तार की ज़रूरत बढ़ी जिसके लिए सेना एवं हथियारों का सहारा लेना पड़ा। वहां कुछ मिलाकर औद्योगिक विकास की ही भूमिका तैयार की गई। शस्त्रास्त्र के सम्बन्ध में प्रो० मालीवाल ने लिखा है—**"वास्तव में बड़े पैमाने पर उन्नत शस्त्रास्त्र बनाने की पूर्ति के लिए मशीनों का आविष्कार और औद्योगिक क्रान्ति का विकास हुआ।"**

इस प्रकार इस युग में औद्योगिक विकास बहुत शीघ्रता तथा बड़े पैमाने पर हुआ, जिसके लिए आर्थिक, सामाजिक, सैनिक एवं वैज्ञानिक सभी तत्त्व उत्तरदायी थे। इसी कारण यह युग मुक्त रूप से औद्योगीकरण का युग माना जाता है। मानव शक्ति का स्थान यान्त्रिक साधनों ने प्राप्त कर लिया था। उद्योगों की प्रतिस्पर्धा ने राष्ट्रों को साम्राज्यवाद

1. Mamfort : Technics and civilization

के विस्तार हेतु विवश कर दिया, ताकि अधिक-से-अधिक संसाधनों को जुटाकर आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाया जा सके। राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था को सशक्त बनाने के नाम पर प्रत्येक राष्ट्र उद्योगों की होड़ में जुट गया, जिसका परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक क्षेत्र में इसका प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा और इस होड़ ने नवीन समरतन्त्र एवं नयी युद्ध व्यवस्था को जन्म दिया।

भाप के युग का प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र में इतना व्यापक पड़ा कि सभी व्यवस्थाओं में बड़ी तेज़ी के साथ परिवर्तन करना पड़ा क्योंकि वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति ने अपना प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाया था। इस युग को औद्योगिक युग का क्रान्तिकारी काल कहा जाता है। इस युग का समय 1789 ई० से 1900 ई० तक निर्धारित किया गया है।

वर्ष 1815 ई० में नेपोलियन की पराजय तथा 23 वर्षों की लगातार लड़ाई खत्म होने के बाद यूरोपीय महाद्वीप में औद्योगिक क्रान्ति की कुछ प्रगति हुई। फ्रांस, बेल्जियम, स्विट्ज़रलैण्ड और जर्मनी में मशीनों का प्रयोग होने लगा; किन्तु इनमें से कुछ देशों में सरकारों की अस्थिरता तथा जन असन्तोष के कारण कुछ समय तक उद्योगों का पूर्ण विकास नहीं हो सका। फ्रांस का लौह उद्योग 1850 ई० में प्रगति वर्ग ओर बढ़ने लगा था, यद्यपि उसको लौह अयस्क और कोयला दोनों ही मुख्य तत्त्व बाहरी देशों से मंगवाने पड़ते थे। इसी दौरान 1865 में जर्मन ने इस्पात बनाने के क्षेत्र में इंग्लैण्ड के बाद दुनिया में अपना दूसरा स्थान बना लिया। जर्मनी का एकीकरण हो जाने से यानि वर्ष 1870 में जर्मनी के राज्य एक राष्ट्र के रूप में संगठित हो गये, तब उसकी आश्चर्यजनक प्रगति हुई और कुछ समय के बाद ही जर्मन औद्योगिक विकास के मामले में इंग्लैण्ड का एक सबसे बड़ा प्रतिद्वन्दी बन गया।

यूरोप की प्रमुख शक्तियों में से एक रूस में औद्योगिक क्रान्ति सबसे बाद में जाकर कहीं आयी। यद्यपि रूस के पास अपने प्राकृतिक एवं खनिज संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थे, किन्तु पूंजी का अभाव एवं स्वतन्त्र मज़दूरों की कमी के कारण इस दौड़ में आगे नहीं बढ़ पा रहा था। जब रूस ने 1861 में कृषि गुलामों (दासों) को स्वतन्त्र कर दिया और उसे विदेशों से आर्थिक सहयोग मिल गया। तब रूस के उद्योग भी प्रगति की राह पकड़ने लगे। वास्तव में रूस का औद्योगिक विकास पूरी तेज़ी से 1917 ई० की क्रान्ति (Russian Revolution) के बाद ही हो सका।

संयुक्त राज्य अमेरिका में मशीनों का प्रयोग वर्ष 1800 ई० के पूर्व इंग्लैंड से आज़ादी मिलने के बाद ही हो गया था तथा उसके बहुत बड़े पैमाने पर कारखाने भी स्थापित हो चुके थे। वर्ष 1860 ई० तक अमेरिका में सूती कपड़ा, इस्पात, जूता उद्योग बन चुके थे। सन् 1870 ई० के पश्चात् अमेरिका उद्योगों की प्रगति तेज़ी के साथ हुई।

एशिया के देशों में सबसे पहले जापान का औद्योगिकीकरण हुआ। मध्यकाल में जापान मुख्य रूप से चीनी मिट्टी के बर्तन और खिलौने के साथ ही रेशम की वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध था। 19वीं शताब्दी के अन्त तक जापान ने इस्पात, मशीनें, धातु की अनेक वस्तुएं और रासायनिक पदार्थ इतनी प्रचुर मात्रा में उत्पादित शुरू कर दिये कि वह उन्हें

निर्यात भी करने लगा। इसके साथ ही उसका उत्पादन उच्च कोटि का होने के कारण विश्व बाज़ार में अपनी महत्त्वपूर्ण जगह बनाने में भी कामयाब हुआ।

औद्योगिकीकरण के कारण मशीनों द्वारा मानव ने थोड़े ही समय एवं शक्ति से बहुत अधिक वस्तुओं के उत्पादन की क्षमता आ गयी, इससे वस्तुओं की कीमत कम हो गयी और मनुष्यों का अपना जीवन स्तर भी ऊंचा होने लगा। इस लाभ के साथ ही मनुष्य को औद्योगिक विकास के कारण अनेक समस्याओं का भी सामना करना पड़ा। बेरोज़गारी, प्रतिकूल पर्यावरण, आपसी तनाव व प्रतिस्पर्धा, कारखानों में काम करना एवं संघर्ष आदि मशीनों के ही परिणाम हैं। मज़दूरों को मताधिकार मिल गया। और वे सरकार में अपने प्रतिनिधि भेज सके तब उन्होंने सरकार को ऐसे कानून करने के लिए मज़बूर किया जिससे औद्योगिक विकास से उत्पन्न प्रारम्भिक बुराइयां दूर हो सके। इस प्रकार औद्योगिक विकास ने विश्व के इतिहास का एक नया अध्याय अवश्य लिख दिया।

5. हथियारों का विकास (Development of Weapons)

भाप के युग में जहां औद्योगिक क्रान्ति आ गयी, वहां हथियारों के क्षेत्र में भी बड़ी तेज़ी के साथ विकास हुआ। औद्योगिक क्रान्ति ने सम्पूर्ण संसार के निवासियों के जीने के ढंग और उनके विचारों में अत्यधिक परिवर्तन कर दिये। 18वीं शताब्दी में हल्के हथियारों के क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण प्रगति उस समय हुई जब 1798 ई० में एल० जी० ब्रिमनैटैली ने एक शीघ्र विस्फोटक सिल्वर पदार्थ (Fulminating Silver) का विकास किया। इसी प्रकार एडवर्ड चार्ल्स हारवर्ड ने वर्ष 1800 ई० में विस्फोटक पारे का पता लगाया और वर्ष 1807 ई० में फारसिथ (Forsyth) ने टकराहट से जलने वाले पदार्थ (पाऊडर) का आविष्कार किया।

हल्के हथियारों का विकास—इसके साथ ही हल्की श्रेणी के हथियारों में लगातार सुधार के प्रयास जारी रहे। इस दौरान बनायी गयी फ्लिंट लॉक मस्केट (Flint Lock Musket) अपने अचूक निशाने एवं पर्याप्त प्रहारक क्षमता के कारण एक लम्बी अवधि तक पैदल सेना का प्रमुख हथियार रही। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में दो महत्त्वपूर्ण विकास कार्य किये गये। पहला 1814 में थॉमस शा (Thomus show) ने लोहे की बनी बन्दूक की बारूद की टोपी (Percussion) का आविष्कार किया। यह टोपी फुलमिनेटिंग पाऊडर (Fulminating Powder) के माध्यम से फायर होती थी। दूसरा नार्टन (Norton) द्वारा वर्तुल सूच्याकार गोली (Cylindro-conoidal Bullet) की खोज हो जाने से इसकी प्रहारक क्षमता बढ़ गयी। इसके बाद मिनी बुलेट बनायी गयी और इसी के सिद्धान्त के आधार पर 1851 में राइफलों का प्रयोग किया जाने लगा।

इन आविष्कारों के कारण पैदल सेना के समरतन्त्र में ज़ोरदार बदलाव आ गया, चूंकि बरसात के नमी वाले मौसम में भी मस्केट का प्रयोग किया जाना संभव हो गया। बड़ी मात्रा में होने वाली मिस फायर क्षमता में बड़े पैमाने पर कमी आ गयी और इसके साथ ही बढ़ती अचूकता एवं बढ़ी प्रहारक क्षमता ने राइफल को इस शताब्दी का सबसे घातक एवं उपयोगी हथियार बना दिया।

बन्दूक की नाल में चूड़ी काटने की पद्धति (राइफलिंग) का विकास हो जाने से राइफल की अचूकता एवं प्रहारक क्षमता में क्रान्तिकारी बदलाव आया। 1841 में प्रथा के एक वैज्ञानिक ड्रैसी ने पीछे से भरी जाने वाली (Breach Loading) राइफल का निर्माण किया, जिसे नीडल राइफल (Needle Rifle) के नाम से जाना जाता है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि इस राइफल से अब सैनिक लेटे-लेटे ही फायर कर सकने में सक्षम हो गया। अमेरिकन गृह युद्ध (1861-65) के दौरान राइफल में मैगजीन लगा दिये जाने से बार-बार गोली भरने की एवं फायर करने की ज़रूरत खत्म हो गयी और इसके परिणामस्वरूप फायर क्षमता में भी ज़ोरदार वृद्धि हो गयी।

समय के साथ छोटे आग्नेय हथियारों में तेज़ी के साथ बदलाव आता गया। वर्ष 1860 में नोबल (Noble) ने डाइनामाइट का आविष्कार किया, जिसका प्रयोग एक लम्बी अवधि तक लगातार किया जाता रहा। 1890 में ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने कार्डाइट नामक नोदक की खोज की, जोकि पूरी तरह धुआं रहित नोदक था। इसके प्रयोग से युद्ध क्षेत्र में दृष्टिगोचरता (Visibility) जहाँ बड़ी वहां राजनैतिक स्थितियों में गतिशीलता आ गयी।

भाप के इस युग में अनेक नाल वाली मशीनगनों का भी विकास किया गया, जिससे शत्रु पर लगातार फायर किया जा सके। इसका सबसे पहले प्रयोग 'अमेरिकी गृह-युद्ध' (American Civil War) में किया गया। शुरुआत की इस मशीनगन को गेटलिंग गन (Gatling Gun) के नाम से जाना जाता था, जिसमें 10 नालें (नली) होती थी। इसी प्रकार फ्रांस ने 25 नाल (नली) वाली मित्रेल (Mitrailleuse) नामक स्वचालित गन की खोज की थी, जोकि एक मिनट में 125 गोली तक फायर कर सकने की क्षमता रखती थी।

मशीनगन का विकास (Development of Machinegun)—वास्तविक मशीनगन का आविष्कार अमेरिकी वैज्ञानिक हेरम एस० मैक्सिम (Heram S. Maxim) द्वारा 1824 में किया गया। इस मशीनगन में स्वचालित रूप से फायर किया जा सकता था तथा एक नाली वाली मशीनगन और इसकी फायर शक्ति ने हथियारों के क्षेत्र में तहलका मचा दिया। लगातार फायर से नाल गर्म हो जाने पर उसे शीघ्र ही ठण्डा करने के लिए पानी का प्रयोग किया जाने लगा था। फ्रांस के एक वैज्ञानिक हैचकिस (Hachkish) ने 1889 ई० में ऐसी मशीनगन का निर्माण किया, जिसमें फायर नोदक की गैस के दबाव से सम्पन्न होता था। इस मशीनगन का प्रयोग जापान एवं फ्रांस की सेना द्वारा लम्बे समय तक किया गया।

तोपों का विकास (Development of Artillery)—भाप के युग में बड़े आग्नेय हथियारों की तुलना में हल्के हथियारों का विकास तेज़ी के साथ हुआ। तोपों के विकास की तुलनात्मक गति बहुत धीमी थी। तोपों में प्रयोग किये जाने वाले गोलों व बारूद के क्षेत्र में काफ़ी विकास हुए। **क्रीमियां के प्रसिद्ध युद्ध** (1856 ई०) के समय पीछे से लोड की जाने वाली तोपे प्रयोग में लायी गयी थी तथा इन तोपों में कटान की गयी थी। इसी प्रकार की तोपें का प्रयोग अमेरिकन गृह युद्ध के दौरान भी किया गया था। शत्रु सेना पर दबाव बनाने एवं भारी आघात पहुंचाने के लिए तोपों के विकास पर विशेष बल दिया जाने लगा। वर्ष 1890 ई० में तोपों की ऐसी पद्धति का विकास जिससे तोप के धक्के को रोकने वाली (Shock Absorption) गाड़ियों का निर्माण किया जाने लगा। इससे तोपों की प्रहारक क्षमता एवं अचूक निशाने में वृद्धि हुई। तोपों को ले जाने वाली गाड़ियों को कवचयुक्त बना दिया गया और उनकी फायर क्षमता में भी काफ़ी वृद्धि हो गई।

इस प्रकार भाप के इस युग में हथियारों के क्षेत्र में बड़े स्तर पर बदलाव क्रान्तिकारी ढंग से आया, जिससे प्राचीन परम्परागत युद्ध पद्धति को पूरी तरह से ही बदल कर रख दिया। यूरोप में आरंभिक आधुनिक सेना की संस्थागत एवं संगठनात्मक संरचना ही पूरी तरह से परिवर्तित हो गयी।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. "भाप के युग ने औद्योगिक विकास की आधारशिला को औद्योगिक ढांचे के रूप में स्थापित किया।" इस कथन की व्याख्या करते हुए इस युग के परिवर्तन का वर्णन करो।
2. भार के युग में विश्व इतिहास में हुए समरतान्त्रिक एवं क्रान्तिकारी परिवर्तनों की व्याख्या करो।
3. "बारूद की भांति भाप का भी युद्ध कला में क्रान्ति उत्पन्न निश्चित था।" भाप के युग में समरतान्त्रिक परिवर्तन बतायें।
4. भाप का प्रभाव युद्ध और संसार की प्रगति पर क्या पड़ा ? उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
5. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखो—
   (क) यातायात परिवर्तन में भाप का योगदान
   (ख) जल परिवहन में भाप का योगदान
   (ग) जलयानों का विकास
   (घ) रेलवे की शुरुआत।

6. "भाप के युग को औद्योगिक क्रान्ति के युग से सम्बोधित किया जाता है।" कथन की पुष्टि करते हुए औद्योगिक विकास के लिए उत्तरदायी तत्त्वों का विवेचन करें।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(Objective Type Questions)

प्रश्न 1. औद्योगिक क्रान्ति के युग से किस काल को सम्बोधित किया जाता है ?

(क) क्रूरता का युग (ख) बारूद का युग
(ग) भाप का युग (घ) पराक्रम का युग।

प्रश्न 2. भाप का युग कब-से-कब तक के समय को कहा जाता है ?

(क) 1600 ई० से 1780 ई० तक
(ख) 1780 ई० से 1880 ई० तक
(ग) 1680 ई० से 1980 ई० तक
(घ) 1580 ई० से 1690 ई० तक।

प्रश्न 3. किस युग में यातायात के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई ?

(क) भाप के युग में (ख) बारूद के युग में
(ग) परमाणु युग में (घ) तेल युग में।

प्रश्न 4. 'सम्पूर्ण सशस्त्र राष्ट्र' के सिद्धान्त का विकास किस युग में हुआ ?

(क) बारूद के युग में (ख) भाप के युग में
(ग) परमाणु युग में (घ) पराक्रम के युग में।

प्रश्न 5. भाप-चलित इंजनों की शुरुआत कब हुई ?

(क) 17वीं शताब्दी में (ख) 18वीं शताब्दी में
(ग) 19वीं शताब्दी में (घ) 20वीं शताब्दी में।

प्रश्न 6. सर्वप्रथम किस देश ने भाप-चलित जलयानों का विकास किया ?

(क) अमेरिका ने (ख) जर्मन ने
(ग) फ्रांस ने (घ) इंग्लैण्ड ने।

प्रश्न 7. पत्थर के कोयले से लोहा गलाने की पहली भट्टी कब लगायी गयी ?

(क) 1760 (ख) 1670
(ग) 1750 (घ) 1770.

प्रश्न 8. भाप को शक्ति के रूप में किस वैज्ञानिक ने पहचाना ?

(क) डलहौज़ी (ख) जेम्सवाट
(ग) जार्ज स्टीवेंसन (घ) जैक्सन।

प्रश्न 9. पहली रेलगाड़ी कब चलायी गयी ?

(क) 1730 ई० में (ख) 1820 ई० में
(ग) 1830 ई० में (घ) 1840 ई० में।

प्रश्न 10. भारत में पहली रेलवे लाइन कब बिछायी गयी ?

(क) 1830 ई० में (ख) 1843 ई० में
(ग) 1840 ई० में (घ) 1853 ई० में।

प्रश्न 11. अमेरिकन गृह युद्ध इस दौरान हुआ—

(क) 1861-65 (ख) 1860-62
(ग) 1865-70 (घ) 1830-1860.

प्रश्न 12. वर्ष 1914 में सबसे पहला रेल इंजन बनाया—

(क) जेम्स वाट (ख) जार्ज स्टीवेंसन
(ग) जार्ज गफ (घ) जैक्सन।

प्रश्न 13. फ्रांस का प्रथम कवच युक्त जलपोत का निर्माण हुआ ?

(क) 1875 ई० में (ख) 1867 ई० में
(ग) 1857 ई० में (घ) 1855 ई० में।

प्रश्न 14. फ्रांस की प्रथम कवचयुक्त जलपोत का नाम था—

(क) वैरियर (ख) विकान्त
(ग) विराट (घ) सी हॉक।

प्रश्न 15. औद्योगिक विकास की होड़ सबसे अधिक किस महाद्वीप में लगी ?

(क) एशिया में (ख) अमेरिका में
(ग) अफ्रीका में (घ) यूरोप में।

प्रश्न 16. औद्योगिक विकास के मामले में इंग्लैण्ड का सबसे बड़ा प्रतिद्वन्दी था—

(क) फ्रांस (ख) जर्मन
(ग) रूस (घ) इटली।

प्रश्न 17. रूस का औद्योगिक विकास कब शुरू हुआ ?

(क) 1871 ई० में (ख) 1851 ई० में
(ग) 1861 ई० में (घ) 1865 ई० में।

प्रश्न 18. 19वीं शताब्दी में एशिया के देशों में कहां सबसे पहले विकास हुआ—

(क) भारत में (ख) चीन में
(ग) जापान में (घ) रूस में।

प्रश्न 19. बन्दूक की बारूद की टोपी (Percussion) का आविष्कार कब हुआ ?

(क) 1814 ई० में (ख) 1815 ई० में
(ग) 1841 ई० में (घ) 1816 ई० में।

प्रश्न 20. पीछे से भरी जाने वाली राइफल (Breach Loading Rufle) का निर्माण कब किया गया ?

(क) 1831 ई० में (ख) 1851 ई० में
(ग) 1861 ई० में (घ) 1841 ई० में।

प्रश्न 21. मशीनगन का आविष्कार हेरम एस० मैक्सिम ने कब किया ?

(क) 1881 ई० में (ख) 1882 ई० में
(ग) 1884 ई० में (घ) 1883 ई० में।

प्रश्न 22. धक्का रहित तोपों का विकास किया गया—

(क) 1880 ई० में (ख) 1885 ई० में
(ग) 1892 ई० में (घ) 1890 ई० में।

प्रश्न 23. क्रीमिया के युद्ध में किस प्रकार की तोपें प्रयोग की गईं ?

(क) हल्की तोपें (ख) धक्का रहित तोपें
(ग) पीछे से लोड की जाने वाली (घ) भारी तोपें।

प्रश्न 24. फ्रांस के वैज्ञानिक हैचकिस ने हथियार का विकास किया ?

(क) राइफल (ख) मशीनगन
(ग) तोप के गोले (घ) धक्का रहित तोप।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर
(Answers of Objective Type Questions)

1. (ग)	2. (ख)	3. (क)	4. (ख)	5. (ग)
6. (घ)	7. (क)	8. (ख)	9. (ग)	10. (घ)
11. (क)	12. (ख)	13. (ग)	14. (क)	15. (घ)
16. (ख)	17. (ग)	18. (ग)	19. (क)	20 (घ)
21. (ग)	22. (घ)	23. (ग)	24. (ख)	

6 फ्रांसीसी क्रान्ति (FRENCH REVOLUTION)

1789 ई० की फ्रांसीसी क्रांति आधुनिक युग की महानतम् घटना स्वकार की जाती है। इस एक घटना के कारण न केवल फ्रांस में ही, बल्कि विश्व के अनेक देशों की सरकारों के रूप में परिवर्तन हुआ, लोगों के विचारों में क्रांति आई और प्राचीन परम्पराओं तथा प्रथाओं का अन्त हूआ। सम्पूर्ण विश्व का स्वरूप ही बदल गया, परन्तु देखना यह है कि यह क्रांति क्यों घटित हुई ? इसके कारणों को ढूंढ़ने के लिए हमें अनेक वर्षों पीछे जाना पड़ेगा। एक दृष्टि 1789 ई० से पहले के फ्रांस पर डालिए तो पूरा चित्र स्पष्ट हो जाएगा। समस्त फ्रांस की भूमि पर जागीरदारों का अधिकार था। भूमि किसान जोतते थे। वे चर्च, सरदारों तथा राजा को कर देते थे। उनके खेतों में जागीरदारों के पशु स्वतन्त्रतापूर्वक चरते रहते थे। क्या साहस था किसान का कि वह अपनी जुबान भी खोल पाता। राजा कर लगाता था, और करों की वृद्धि मनमाने ढंग से करता जाता था। जिसे चाहे कैद में डाल दो और जितने समय तक चाहे उसे जेल में रखो। विशेष बात यह थी कि वारण्ट पर राजा का हस्ताक्षर होता था, परन्तु उसे यह भी पता नहीं होता था कि कौन कैद हुआ है और कौन होगा ? देश में लगभग चार सौ प्रकार के कानून प्रचलित थे। चारों और भ्रष्टाचार का बोलबाला था। आम लोगों को जहाँ रोटी नहीं मिल रही थी और वहाँ धनी लोग ऐश्वर्य का जीवन व्यतीत कर रहे थे। इतनी विकट परिस्थितियों में क्रान्ति का घटित होना स्वाभाविक ही था।

अठाहरवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में फ्रांस की स्थिति अत्यन्त गम्भीर हो गई थी परिवर्तन होना सुनिश्चित-सा हो गया था। फ्रांस की सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गई थी, जिसके कारण समाज में अनेक शोषित वर्ग बन गए थे। सामन्तों ने फ्रांस में निरंकुश राजतन्त्र को जन्म दिया, जिससे अत्याचार तथा भ्रष्टचार का सम्पूर्ण राष्ट्र में खुलकर बोलबाला हो गया। अत: इन परिस्थितियों ने क्रान्ति को जन्म दिया जो कि स्वाभाविक ही था। इस क्रान्ति के पश्चात् अनेक क्रान्तियां हुईं, क्योंकि इस क्रान्ति का प्रभाव समस्त यूरोप पर पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक इसका असर रहा। यह क्रान्ति लोकतन्त्र की स्थापना का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कदम थी।

क्रान्ति के कारण (Caluses of Revolution)

"क्रान्ति ऐसी बिजली है जो एकाएक कौंध जाती है, टूट पड़ती है। यह वह चिंगारी है जो एकाएक धधक उठती है, शोला बन जाती है;" विक्टर ह्यगो (Victor

Hugo) की यह बात नि:संदेह सत्य है। शब्द कोष में '**क्रान्ति**' का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा गया है कि किसी शासन अथवा सामाजिक व्यवस्था के बलपूर्वक अन्त का दूसरा नाम क्रान्ति है। बल का प्रयोग प्राय: शासन या समाज से पीड़ित लोग ही करते हैं। परन्तु हमें थोड़ा और गहराई में जाना पड़ेगा। जिस प्रकार बिजली कौंधने के लिए बादल आवश्यक है, उसी प्रकार क्रान्ति के लिए अराजकता, अशान्ति तथा अव्यवस्था का वातावरण आवश्यक है। अराजकता, अशान्ति, अव्यवस्था, अत्याचार, भुख-मरी आदि बातें ही क्रान्ति को जन्म देती हैं। क्रान्ति का उदय उस समय होता है, जब भूखे मरते लोग रोटी मांगने की बजाय रोटी छीनने का निश्चय कर लेते हैं। फ्रांस की राज्यक्रान्ति की ओट में भी ऐसी ही पृष्ठभूमि तैयार हो रही थी। भीतर-ही-भीतर जो चिंगारी सुलग रही थी, उसने 1789 ई० में एक भयंकर अग्नि का रूप धारण कर लिया। समस्त फ्रांस इस अग्नि लपेट में आ गया। फिर इस क्रान्ति ने सारे यूरोप को हिलाकर रख दिया। इस क्रान्ति के मुख्य कारण को हम इस प्रकार के प्रमुख शीर्षकों में व्यक्त कर सकते हैं—

I. राजनीतिक कारण (Political Causes)
II. सामाजिक कारण (Social Causes)
III. आर्थिक कारण (Economic Causes)
IV. दार्शनिकों का योगदान (Contribution of Philosophers)
V. भयानक महामारी (Severe Famine)
VI. तत्कालिक कारण (Immediate Causes)

1. राजनीतिक कारण (Political Causes)

फ्रांस की क्रान्ति में वहां की राजनीतिक स्थिति प्रमुख रूप से उत्तरदायी थी। हम रजनीतिक व्यवस्था को इस प्रकार से वर्णित कर सकते हैं —

1. शासन व्यवस्था में दोष (Defective Regime)—फ्रांस की क्रान्ति के समय वहां की शासन-पद्धति अपना महत्त्व खो चुकी थी। इसमें निम्नलिखित दोष थे—

(*i*) **राजाओं की स्वेच्छाचारिता (Arbitrariness of the Kings)**—फ्रांस के राजा निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी थे। लुई 16वां (Louis XVI) वर्साय के भव्य व विशाल राजमहल में रहकर फ्रांस का कर्णधार बना हुआ था। पादरी तथा बड़े-बड़े सरदार उससे सलाहकार थे। शासन चलाने के लिए शाही परिषदें तथा अनेक राजकीय अधिकारी थे। राजा इनके द्वारा शासन चलाता था, परन्तु शासन का सारा ढांचा राजा के इर्द-गिर्द ही घूमता ता। उसकी इच्छा ही कानून थी। लुई ने एक बार बड़े गर्व से कहा था, **"I am france, my will is law."** के अवसर पर उसने एक झगड़े का निर्णय करते हुए कहा था, **'The thing is legal because I wish it."** राजा के इन शब्दों से स्पष्ट हो जाता है कि उसे अपनी शक्तियों पर कितना घमण्ड था। शासन में साधारण जनता या श्रेणी का कोई हाथ नहीं था। मध्यकालीन फ्रांस में कुछ ऐसी संस्थायें (Institutions) अवश्य

थीं, जो राजा की शक्ति पर रोक लगाती थी। परन्तु अब ये सभी प्रतिनिधि सभाएं या तो समाप्त कर दी गई थीं या उन्हें शक्तिहीन बना दिया गया था। फ्रांसीसी स्टेटस जनरल (States General) अथवा फ्रांसीसी संसद का 1614 ई० के बाद कभी कोई अधिवेशन नहीं बुलाया गया था। राजा अपने आपको परमात्मा का प्रतिनिधि समझता था। वह समझता था कि जनता के प्रति उसका कोई कर्त्तव्य नहीं है। जनता को शासन की आलोचना करने का कोई अधिकार नहीं था। सरकार की आलोचना करने का अर्थ था—जेल जाना। इस काम के लिए न कोई दलील दी जाती थी, न कोई अपील सुनी जाती थी और न ही कोई वकील पेश हो सकता था। राजा के दरबारियों के पास 'अधिकार पत्र' (Letter-de-Cachet—लैटर-द-काश) होते थे। ये एक प्रकार के वारन्ट (Warrant) थे। इन पर राजा की मोहर लगी होती थी, परन्तु कैद किए जाने वाले व्यक्ति का नाम तथा दण्ड की अवधि का स्थान खाली होता था। दरबारी जिसे कैद करना चाहते उसका नाम 'अधिकार-पत्र' में लिख देते थे। इसके साथ ही यह भी लिख देते थे कि उस व्यक्ति को किस प्रकार की तथा कितनी सजा मिलेगी। न जाने कितने ही निर्दोष व्यक्ति फ्रांस की जेलों में सड़ते रहे। कहने का अभिप्राय यह है कि किसी भी व्यक्ति की स्वतन्त्रता सुरक्षित नहीं थी। ऐसे निर्मम शासन के विरुद्ध जनता का रोष बढ़ता जा रहा था जिसने आगे चलकर क्रान्ति का रूप धारण कर लिया।

(ii) **अव्यवस्थित स्थानीय प्रबन्ध (Unsystematic Local Administration)**—फ्रांस का स्थानी शासन प्रबन्ध बड़ा ही त्रुटिपूर्ण था। इसे शासन की सुविधा की दृष्टि से नहीं, बल्कि शिक्षा अथवा न्याय के आधार पर बांटा गया था। कई

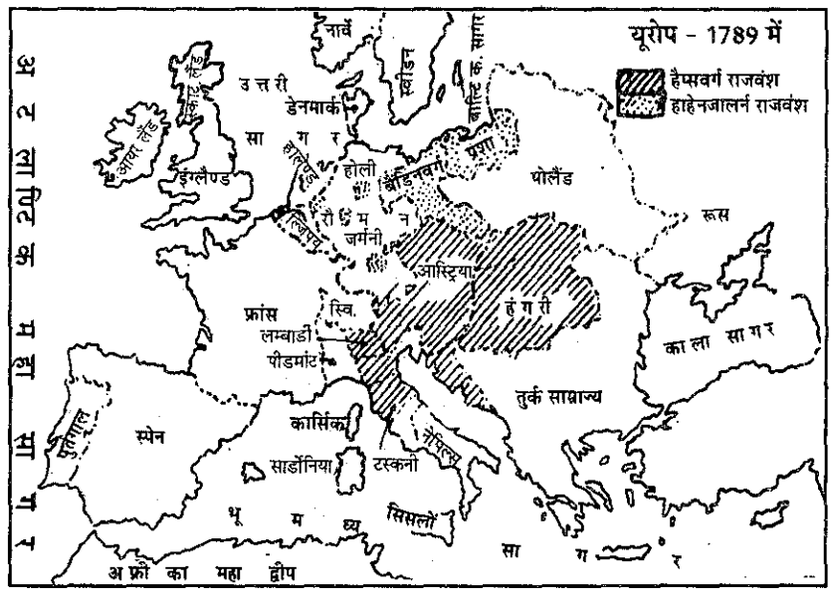

फ्रांस की क्रान्ति (1789) के समय यूरोप

बार एक प्रदेश शिक्षा के आधार पर किसी एक ज़िले का भाग होता था; परन्तु न्याय के विषय में उसका सम्बन्ध किसी दूसरे ज़िले से होता था। ज़िले का शासन किसी निर्धारित नियम अथवा लिखित विधान के अनुसार नहीं चलाया जाता था। वहां के अधिकारियों की शक्तियों के सम्बन्ध में कोई संविधान नहीं था। अत: अधिकारियों के बीच अधिकार-क्षेत्र के मामले में प्राय:झगड़े होते रहते थे। प्रान्तों का विभाजन भी त्रुटिपूर्ण था। कुछ प्रान्त बड़े थे तथा कुछ बहुत ही छोटे! पूरा विभाजन ही अपने आप में एक बहुत बड़ी उलझन थी। इस उलझन के कारण प्रशासन में अव्यवस्था फैली हुई थी। यह अव्यवस्था भी अन्त में क्रान्ति को भड़काने में सहायक सिद्ध हुई।

***(iii)* अकुशल तथा भ्रष्ट शासन (Incompetence and Corruption in Administration)**—देश में भ्रष्टाचार का बोलबाला था। सरकारी पद नीलाम होते थे। अधिक बोली देने वाले सरदार तथा जागीरदार ये पद खरीद लिया करते थे। इन धनी लोगों को शासन का कोई ज्ञान नहीं होता था। जहां तक राजा का सम्बन्ध था, वह इन लोगों के हाथ में कठपुतली के समान था। प्रान्तों के शासकों के लिए कोई निर्वाचित संस्था नहीं होती थी। नगरों में निर्वाचित सभाएं तो होती थीं, परन्तु किन्हीं दो नगरों की सभाओं की निर्वाचन पद्धति तथा शक्तियों में एकरूपता नहीं थी। शासन चल तो रहा था, चलाया नहीं जा रहा था। अधिकारी कुशल तथा योग्य नहीं थे। सरकार की अकुशलता का प्रमाण इस उदाहरण से बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगा कि जब फ्रांस में किसी चर्च की छत टपकती थी, तो उसकी मरम्मत के लिए सरकार से ऋण की प्रार्थना की थी। परन्तु उसे दस साल के पश्चात् उसके प्रार्थना-पत्र का उत्तर मिल पाता था। इन परिस्थितियों में क्या तो शासन चलता होगा और क्या जनता के हितों का ध्यान रखा जाता होगा ? अकुशल शासन के कारण जनता बुरी तरह से पिस रही थी। भला फ्रांस के जन-साधारण ऐसी स्थिति को कब तक सहन कर सकते थे। अन्त में तंग आकर उन्होंने इस भ्रष्टाचारी शासन का अन्त करने का निश्चय कर लिया।

***(iv)* शक्तियों का केन्द्रीयकरण (Cenntralization of Powerõ)**—शासन की सम्पूर्ण शक्तियां पूर्ण रूप से राजा में केन्द्रित थीं. वे अपनी शक्तियों को दैवीशक्ति मानते थे और किसी भी जनसंस्था को कोई भी अधिकार देने के पक्ष में नहीं थे। फ्रांस की सभी प्रतिनिधि सभाएं या तो समाप्त कर दी गई थीं या फिर वे राजा के हाथ की मात्र कठपुतलियां बन कर रह गई थीं। राजा अपनी इच्छा से जनता पर कर लगाता था। करों (Taxes) से प्राप्त आय को भी वह अपने मनमाने ढंग-से व्यय करता था। सभी प्रान्तीय अधिकारियों को राजा की परिषद की इच्छानुसार शासन चलाना पड़ता था। केन्द्रीयकरण की नीति के कारण अधिकारीवर्ग सदा व्यस्त रहते थे। उन्हें लगभग 40 हज़ार नगरों के प्रबन्ध का ध्यान रखना पड़ता था। अधिकारी वर्ग लगातार प्रयास करने पर भी अपना निर्धारित लक्ष्य पूरा नहीं कर पाते थे। काम अधूरा रहता था और फाइलों के ढेर लगे रहते थे। परिषद जनता की उपेक्षा करके सदैव राजा के ही हित की बात सोचती थी। इस प्रकार सारी शक्ति सिमट कर राजा तथा उसकी परिषद् के हाथों में आ गई। इन परिस्थितियों में साधारण जनता की परेशानियां दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थीं। अत: वे किसी ऐसे दिन की प्रतीक्षा में थे, जब राजतन्त्र की समाप्ति हो और उन्हें अपनी परेशानियों से मुक्ति मिले।

(v) दूषित न्याय प्रबन्ध (Defective Organisation of Judiciary)—फ्रांस की न्याय प्रणाली बड़ी विचित्र थी। वहां के कानूनों तथा नागरिक प्रशासन का अध्ययन करते हुए यह आश्चर्य होता है कि क्रान्ति 1789 ई० से पहले क्यों नहीं घटित हुई? समस्त फ्रांस में एक-जैसे कानून नहीं थे। भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न प्रकार के कानून प्रचलित थे। यदि एक भाग में रोमन कानून लागू थे, तो दूसरे बाग में जर्मन कानून प्रचिलित थे। हेज़न के अनुसार "**जो बात एक नगर में वैध थी, वही बात उस नगर से पांच मील से भी कम दूर स्थित प्रदेश में अवैध मानी जाती थी।**" फ्रांस में कुल मिला कर 400 प्रकार के कानून थे। धनी तथा निर्धन वर्ग के लिए कानून अलग-अलग थे। एक-जैसे दोष पर धनी लोग छूट जाते थे, परन्तु निर्धनों को दण्ड मिलता था। दण्ड की सीमा निश्चित नहीं थी। कई बार साधारण अपराध के लिए भी मृत्यु दण्ड तक भी दे दिया जाता था। कानूनों की भांति न्यायालय भी अनेक प्रकार के थे। राजा के न्यायालय, सामान्तों के न्यायालय तथा चर्च के न्यायालय। यह स्पष्ट नहीं था कि कौन-सा न्यायालय किस प्रकार का मुकद्दमा सुनेगा। दण्ड बड़े कठोर थे। उस समय देश में 50,000 ऐसे न्यायधीश थे, जिन्हें **'Nobility of the Robe'** कहा जाता था। इनका पद स्थायी होता था। ये लोग अपने पद खरीदते थे। इसलिए न्याय करने की बजाय ये लोग भारी जुर्माना करके अपनी जेबें भरने में लगे रहते थे। जिस देश में न्याय व्यवस्था मज़ाक बन गयी हो, वहां क्रान्ति की बाढ़ का रुक पाना असम्भव था।

2. सेना में असन्तोष (Restlessness in the Army)—सेना में फैले असन्तोष ने भी इस क्रान्ति की आग पर तेल का काम किया। सैनिकों को कठोर सैनिक अनुशासन से घृणा थी। उन्हें खाने के लिए अच्छा भोजन नहीं मिलता था। उनको वेतन भी कम मिलता था। सेना में उच्च पद प्राप्त करने की तो वह कल्पना भी नहीं कर सकते थे। उनके हृदय में सेना में पदोन्नति के नियमों के प्रति बड़ा असन्तोष था। सेना के सभी बड़े-बड़े पद सरदार खरीद लेते थे। इस प्रकार अयोग्य तथा कायर धनवान लोग पदाधिकारी बन बैठते थे, परन्तु योग्य तथा वीर लोग उनके यश के लिए अपने जीवन की आहुति दे देते थे। अनेक योग्य सैनिकों ने तो निराश होकर सेना से त्याग पत्र ही दे दिया था। राजा को सेना की इस छटपटाहट का ज्ञान था। वित्तमन्त्री **नेकर (Necker)** ने कहा था, "**हमें अपने सैनिकों पर विश्वास नहीं है।**" साधारण जनता भी यह बात भांप गई थी। लोगों को विश्वास हो गया था कि संकट पड़ने पर सेना भी उनका साथ देगी। यह बाद भी फ्रांस की क्रान्ति के लिए प्रेरणा-स्रोत सिद्ध हुई।

3. लुई 16वें का दूषित चरित्र (Faulty Character of Louis XVI)—लुई सोलहवां (Louis XVI) 1774 ई० में जब फ्रांस का सम्राट बना। उस समय उसकी आयु केवल 20 वर्ष की थी। वह बहुत अयोग्य था और उसके पास दूरदर्शिता नाम की कोई चीज़ नहीं थी। वह परिस्थितियों का सामना करने में बिल्कुल असमर्थ था। उसकी अयोग्यता का अनुमान उसके इन शब्दों से लगाया जा सकता है जो उसने सिंहासन पर

बैठते समय कहे थे, "**ऐसा लगता है कि संसार मेरे ऊपर गिर रहा है। हे भगवान्! मुझ पर कितना बोझ है और इन्होंने मुझे कोई भी शिक्षा नहीं दी।**"[1]

वास्तव में वह अत्यन्त आलसी और अस्थिर स्वभाव का व्यक्ति था। उसे ताले बनाने और महल की खिड़की से हिरनों का शिकार करने का विशेष चाव था। शासन के कार्यों में उसने कभी भी रुचि नहीं ली। उसने राज्य का सारा काम ऐसे भ्रष्ट स्वार्थी कर्मचारियों पर छोड़ रखा था, जो जनता के हितों की ओर कोई ध्यान नहीं देते थे। परिणामस्वरूप जनता में दिन-प्रति-दिन असन्तोष बढ़ता गया और उसने शासन के विरुद्ध आन्दोलन कर दिया।

4. रानी मेरी आन्तयानेत का कुप्रभाव (Queen Mari Antoinette's bad influence)—लुई 16वें की पत्नी आन्तयानेत एक अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक व्यक्ति की स्त्री थी। उसकी चाल में अनोखी शान थी। "**कहते हैं वह समय के अनुसार नृत्य नहीं करती थी.....परन्तु यदि यह बात ठीक है, तो यह दोष नृत्य करने वाले का नहीं, समय का था।**"[2]

राजा उसकी सुन्दरता पर मुग्ध था। परिमामस्वरूप शासन कार्यों में उसका प्रभाव बढ़ने लगा। वह हर समय राजा पर छायी रहती थी मिराबू (Mirabeau) ने कहा था—"**राजा के इर्द-गिर्द केवल एक ही प्राणी है, और वह है—उसकी स्त्री।**" कितने दुर्भाग्य की बात थी कि मेरिया थिरेसा (Maria Theresa) जैसी योग्य रानी के गर्भ से जन्म लेकर भी उसने फ्रांस की राजनीति को दूषित कर दिया। रानी मेरी अपने मन पसन्द लोगों को राजदरबार में उच्च स्थान दिलवाती थी और उन्हे पदत्युत करवाती थी जिनसे वह घृणा करती थी। उससे पति को नेक राय देनी चाहिए थी, परन्तु उसमें इतनी गम्भीरता कहां थी ? उसके अपने भाई ने ही उससे एक बार कहा था, "**तू राजनीति में हस्तक्षेप क्यों करती है ? एक मन्त्री को पदच्युत करवाती है और दूसरे को मन्त्री पद दिलवाने में सहयोग देती है। जब कभी तुम्हारा जी करता है, तुम किसी को प्रसन्न करने के लिए दरबार में-एक नवीन पद की घोषणा करवा लेती हो। क्या तुमने कभी सोचा है, कि तुम्हें फ्रांसीसी सरकार के कार्यों में हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार है।**' परन्तु उस पर किसी उपदेश का कोई प्रभाव न पड़ा। न देश की अवस्था और न ही समय की पुकार उसकी आंखों खोल सकीं। परिणामस्वरूप उसके दुष्प्रभाव के कारण फ्रांस क्रान्ति के मोड़ पर आ खड़ा हुआ।

5. फ्रांस के राजाओं द्वारा अपव्यय (Extravagance of the French Kings)—फ्रांस के राजा जहां निरंकुश थे, वहां अपव्ययी भी थे। वे ऐश्वर्य का जीवन व्यतीत करते थे। लुई 14वें का महल बहुत ही शानदार था जो पेरिस से 12 मील की दूरी पर वर्साय (Versailles) के स्थान पर स्थित था। कहा जाता है कि इस महल को बनवाने में लगभग 10 करोड़ डालर खर्च आया था। उस समय इसमें 18 हज़ार व्यक्ति

1. "It seems as if the universe upon me. O God! What a burden of mine and they have taught me nothing."

2. "*She is a statue of beauty when standing or sitting.. grace itself when she* moves... They she does not dance in time : but if so, it is certainly the time itself which is at fault." **—Harace Walpole**

रहते थे जो हर समय भोग-विलास में डूबे रहते थे। इन लोगों का वार्षिक खर्च लगभग 12 करोड़ रुपये था। राजा स्वयं भी राज्यकार्यों से निश्चिंत इसी महल में आनन्द का जीवन व्यतीत करता था। इस अपव्यय के कारण ही लोग **'राजदरबार को राष्ट्र की कब्र'** कहा करते थे। अन्तिम दो राजा लुई 15वां लुई 16वां भी बड़े अपव्ययी थे। उन्होंने दरबार की शोभा बढ़ानवे के लिए राष्ट्र के धन को पानी की तरह बहाया और राज्यकोष खाली कर दिया। इतना ही नहीं, फ्रांस की सरकार ऋण के बोझ से इतनी दब गई थी जिसे नये कर लगाये बिना उतार पाना संभव नहीं था ये कर सरदार और बड़े-बड़े पादरी ही दे सकते थे, जो अब तक इसे मुक्त थे। तुर्गों (Turgot) और नेकर (Necker) लुई 16वें के बहुत ही योग्य वित्तमन्त्री थे। परन्तु जब उन्होंने देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए पग उठाए तो सरदारों और बड़े पादरियों ने उनका खूब विरोध किया। मज़े की बात यह है कि राजा ने घोषणा करके भी कहा था कि **"मैं और तुर्गों ही केवल ऐसे व्यक्ति हैं, जो प्रजा से प्रेम करते हैं"**[1]

इसके बावजूद भी तुर्गों को उसके पद से हटा दिया। राजा की इस अपवव्ययता और गलत आर्थिक नीति ने भी लोगों को विद्रोह करने पर विवश कर दिया।

6. प्रतिनिध सभाओं का अभाव (Lack of Representative Bodies)—फ्रांस में कानून बनाने के लिए कोई ऐसी सभा नहीं थी, जिसमें जनता के प्रतिनिधि इकट्ठे हो सकें। पुराने समय में स्टेट्स जनरल (States General) नाम की एक सभा या परिषद् (Council) अवश्य थी, परन्तु 1614 ई० के बाद उसका कभी अधिवेशन नहीं हुआ था। यहां तक कि लोग स्टेट्स जनरल के नियम तथा संगठन को भी भूल चुके थे। इसके विपरीत फ्रांस के पड़ोसी देश इंग्लैंड में पार्लियामेंट (Parliament) थी, जिसमें जनता के प्रतिनिधि राजकीय विषयों पर विचार करते थे तथा देश के कानून बनाते थे। फ्रांस के लोगों को यह व्यवस्था बहुत पसन्द थी। वे अपने देश में भी एक कानून प्रतिनिधि सभा की स्थापना करना चाहते थे। वे पुरानी व्यवस्था को उखाड़ फेंकना चाहते थे और ऐसा केवल क्रान्ति द्वारा ही सम्भव हो सकता था।

7. अमेरिका के स्वतन्त्रता-संग्राम का प्रभाव (Effect of the American War of Independence)—अमेरिका के स्वतन्त्रता-संग्राम ने भी फ्रांसीसी क्रान्ति को भड़काने में महत्त्व पूर्ण भूमिका निभाई। इस स्वतन्त्रता संग्राम में अनेक फ्रांसीसी सैनिकों ने भी भाग लिया था और वे स्वतन्त्रता और समानता की भावनाओं से ओत-प्रोत होकर ही फ्रान्स लौटे थे।[2]

वापस लौटते समय उन्हें कूपर (Cooper) ने भी कहा था, **"आप अपने साथ हमारी भावनाएं ले जा रहे हैं, परन्तु यदि आपने इन्हें अपने देश में स्थापित करने का**

1. "Mr. Turgot and I are the only persons who love the people." —Louis XVI

2. इस विषय में संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन ने कहा था, "अमेरिका की क्रांति ने यूरोपवासियों की आंखें खोल दीं और उनमें स्वतन्त्रता तथा समानता की भावनाएं भर दीं।"

प्रयत्न किया तो आपको अनेक कठिनाइयां सहनी पड़ेंगी। हमने खून बहाकर स्वतन्वत्रता प्राप्त की है, परन्तु इसके लिए आपको खून की नदियां बहानी पड़ेंगी।'' स्वतन्त्रता की भावना से प्रेरित ये दीवाने (फ्रांसीसी सैनिक) खून की नदियां, बहाने से कब घबराने वाले थे। उन्होंने आते ही फ्रांसवासियों को निरंकुश राजतन्त्र से मुक्त होने के लिए उकसाना आरम्भ कर दिया। उन्होंने जनता को अमेरिकी गणतन्त्र आदर्शों से भी परिचित कराया। फ्रान्सीसी सैन्य अधिकारी लफायेत (Lafayette) अपने साथ अमेरिकन स्वाधीनता की घोषणा की प्रतिलिपि लाया था। वह फ्रांस में उन्हीं मानवीय अधिकारों की घोषणा करने के लिए जनता को उत्साहित कर रहा था। इस तरह फ्रांस में लोगों के विचारों में एक क्रान्ति आ गई थी। वे सोचने लगे थे कि यदि वे एक अन्य देश को अत्याचारों से मुक्त करा सकते हैं, तो वे स्वयं अत्याचारों से छुटकारा क्यों नहीं पा सकते। अत्याचारों से मुक्ति के लिए उनके सामने एक ही मार्ग था—क्रान्ति। इस विषय में एक्टन (Acton) ने ठीक ही कहा है, ***''फ्रांसीसी सिद्धान्त और अमेरिकी इस उदाहरण से फ्रांस में क्रान्ति हुई।''***

II. सामाजिक कारण (Social Causes)

फ्रांस का सामाजिक ढांचा भी दोषपूर्ण था। सभी लोगों को न तो एक समान समझा जाता था और न ही उन्हें समान प्रकार के अधिकार प्राप्त थे। समाज में सभी लोग समान और स्वतन्त्र नहीं थे। कुछ लोगों को विशेष अधिकार मिले हुए थे, परन्तु कुछ लोगों को कोई भी अधिकार प्राप्त नहीं था। वास्तव में फ्रांस का समाज तीन श्रेणियों में बंटा हुआ था—सामन्त, चर्च के अधिकारी और साधारण जनता। सामन्त और चर्च के अधिकारियों को राज्य की ओर से विशेष प्रकार के अधिकार प्राप्त थे। ये हर प्रकार के करों (Taxes) से मुक्त थे। इनकी कुल संख्या देश की जनसंख्या का लगभग एक प्रतिशत थी। इतनी कम संख्या में होने पर भी ये लोग बहुत अधिक प्रभाव रखते थे। इनके विपरीत साधारण जनता संख्या में बहुत अधिक थी, परन्तु न तो इसकी कोई ठीक प्रकार की स्थिति थी और न ही इसको कोई अधिकार प्राप्त था। करों का सारा बोझ इसी वर्ग के ऊपर था। समाज की इस असमानता के कारण लोगों में असन्तोष बढ़ता जा रहा था। मेडलिन गैव (Madelline) के शब्दों में, **''1789 ई० की क्रान्ति निरंकुशता की अपेक्षा असमानता के विरुद्ध एक विद्रोह था।''**[1]

1. चर्च के अधिकार (The rights of Church)—चर्च फ्रांस राज्य के अन्दर एक अन्य राज्य के समान था। चर्च की अपनी अलग सरकार थी और इसके अपने कर्मचारी भी होते थे। फ्रांस की भूमि का $\frac{1}{5}$ भाग इसकी सम्पत्ति थी। इस भूमि से चर्च

1. ''The Revolution of 1789 was much or less a rebellion against despotism than a rebellion against inequality.'' —**Madelline**

को भारी आय प्राप्त होती थी। इसके अतिरिक्त चर्च को लोगों पर कर लगाने का अधिकार भी प्राप्त था। भूमि की उपज का $\frac{1}{10}$ भाग चर्च को कर (Tax) के रूप में मिलता था। चर्च को अपनी भूमि सम्पत्ति पर राज्य को कर नहीं देना पड़ता था। इन सभी बातों के कारण चर्च की शक्ति और प्रभाव की कोई सीमा न थी। राज्य के बाद शक्ति तथा प्रभाव में चर्च का ही नम्बर आता था। चर्च की प्रभावशाली पुरोहित श्रेणी को दो भागों में बांटा जा सकता था—उच्च पुरोहित (पादरी) और समान्य पुरोहित।

***(i)* उच्च पुरोहित (Higher Clergy)**—फ्रांस में उच्च पुरोहितों की संख्या लगभग 6,000 थी। ये लोग बड़े प्रभावशाली थे। ये सामन्तों की भांति बड़ी शान से रहते थे। उनके पास विशाल दुर्ग, भव्य गिरजा घर, सुन्दर महल, मूल्यवान चित्र, सोने के बर्तन और हीरे-जवाहरात जड़ित चोगे ते। इनमें कुछ ऐसे भी थे, जो विलासिता का जीवन व्यतीत करते थे और राजदरबार के षड्यन्त्रों में भाग लेते थे। इन्होंने अपने धार्मिक कर्त्तव्यों का पालन करना छोड़ दिया था। इनमें से कुछ पुरोहितों की वार्षिक आय लाखों डालर थी। इस राशि को वे सहभोजों तथा मदिरापान में उड़ा देते थे। उन्हें न तो राज्य-कर (State Tax) देने की कोई चिन्ता थी और न ही राज्य के प्रति कोई कर्त्तव्य निभाने की। कर्त्तव्य करने की बातें तो केवल साधारण जनता के भाग्य में लिखी थीं। उस समय फ्रांस में लोग कहा करते थे, **"जागीरदार युद्ध करते हैं, पुरोहित प्रार्थना करते हैं और जनता कर देती है।"**[1]

***(ii)* साधारण पुरोहित (Lower Clergy)**—सामान्य पुरोहितों की संख्या सवा लाख के लगभग थी। उच्च पुरोहितों ने धार्मिक कर्त्तव्य का भार इन पुरोहितों पर छोड़ रखा था। इनकी दशा बड़ी दयनीय थी। ये बच्चों को पढ़ाते थे और साधारण लोगों की भांति बड़ी कठिनाई से जीवन व्यतीत करते थे। वास्तव में सारा काम यही लोग करते थे परन्तु चर्च की आय में से इन्हें बहुत ही कम भाग मिलता था। परिणामस्वरूप साधारण पुरोहित उच्च पुरोहितों से घृणा करते थे। यही कारण था कि क्रान्ति के समय उन्होंने जनता का साथ दिया।

2. सामान्त (The Nobles)—उच्च पुरोहितों की भांति सामन्तों को भी अनेक प्रकार के विशेष अधिकार प्राप्त थे। ये सामान्त फ्रांस की कुल भूमि के $\frac{1}{4}$ भाग के स्वामी थे। ये हर प्रकार के करों से मुक्त थे। राज्य तथा सेना के महत्त्वपूर्ण पदों पर इन्हीं का अधिकार था। सामान्त को 'मेरे मालिक' **(My Lord)** और 'अन्नदाता' **(Your Grace)** कहकर पुकारा जाता था। इन्हें कर लगाने का भी अधिकार प्राप्त था। जो माल इनके इलाके में आता था, उस पर ये कर लेते थे। इसके अतिरिक्त ये अपने अधीन किसानों की उपज का $\frac{1}{2}$ भाग कर के रूप में प्राप्त करते थे। ये अपने इलाके में

1. "The nobles fight :the cleary pray the people pay."

शराबखाने, आटे की चक्कियां आदि लगाते थे। किसानों के लिए यह आवश्यक था कि वे अपना आटा केवल इन्हीं चक्कियों से पिसवाएं और सामान्तों को उसका शुल्क दें।

शिकार सामन्तों का विशेष अधिकार था। वे बहुत बड़ी संख्या में कबूतर, हिरन आदि पालते थे। उनके ये पालतू पशु-पक्षी किसान की फसलों को नष्ट कर देते थे, परन्तु किसान उन्हें रोक नहीं सकता था। किसान अपनी इच्छानुसार फसलें नहीं बो सकता था। वह अपने खेतों के चारों ओर बाड़ भी नहीं लगा सकता था, क्योंकि ऐसा करने से सामन्तों को शिकार खेलने में बाधा पड़ती थी। किसानों के मुकद्दमों का फैसला भी सामन्त ही करते थे। वे किसानों पर जुर्माने करते थे और उन्हें कठोर दण्ड देते थे। लोग सामन्तों के इन विशेष अधिकारों से तंग आ गए थे और अब वे उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते थे।

3. मध्यम श्रेणी (The Commons)—इस श्रेणी में अध्यापक, डॉक्टर, वकील, लेखक, साहित्यकार, कलाकार, छोटे सरकारी कर्मचारी, शहरी श्रमिक और किसान आदि शामिल थे। मध्य श्रेणी के लोग धनी तथा बुद्धिमान थे। ये लोग विभिन्न प्रकार के व्यापार से काफी धन कमा रहे थे। राजा और सामन्त इनसे रुपया उधार लिया करते थे। इसी श्रेणी ने बहुत-से दार्शनिकों तथा लेखकों को जन्म दिया। इस प्रकार इस श्रेणी के लोग समृद्ध तथा योग्य होते हुए भी जन-साधारण की भांति राजनीतिक अधिकारों से वंचित थे। इनके अधिकारों की दृष्टि से इनमें तथा एक नंगे-भूखे किसान में कोई अन्तर नहीं था। इन सब बातों के परिणामस्वरूप उनमें दिन-प्रतिदिन असंतोष बढ़ता जा रहा था। फ्रांस में जब राज्य-क्रान्ति हुई तो इन्हीं लोगों ने सबसे अधिक भाग लिया। होमर (Homer) ने ठीक ही कहा है, **"क्रान्ति कुलीन तथा मध्यम-वर्ग की टक्कर का परिणाम थी।"**

फ्रांस में मज़दूरों तथा किसानों की दशा बहुत खराब थी। कारखानों में काम करने वाले मज़दूरों को बहुत कम वेतन मिलता था, जबकि उन्हें बहुत अधिक समय तक काम करना पड़ता। वे अपनी हालत से सन्तुष्ट नहीं थे। जहां तक किसानों का सम्बन्ध था, उनकी दशा सबसे अधिक खराब थी। उन्हें सरकार को भूमि-कर, नमक-कर तथा आय-कर देना पड़ता था। इसके अतिरिक्त वे चर्च तथा जागीरदारों को भी कर (Tax) देते थे। उनसे नई सड़कें बनाने और पुरानी सड़कों की मरम्मत करने का काम भी लिया जाता था। इसके अतिरिक्त जागीरदारों के खेतों में सप्ताह में तीन दिन मुफ्त काम करना पड़ता था। किसानों को पुल पार करने के लिए भी कर देना पड़ता था। वास्तव में उन्हें इतने कर, शुल्क और फीसें देनी पड़ती थीं कि उनके पास बड़ी कठिनाई से अपनी आय का 20% भाग बच पाता था। परिणामस्वरूप भूखे किसान घास और जड़ें खाकर अपनी भूख मिटाते थे और कितने ही किसान भूख से मर भी जाते थे। इस विषय में किसी ने ठीक ही कहा है, **"In France, nine-tenths of the population died of hunger, and one-tenth of indigestion."**

III. आर्थिक कारण (Economic Causes)

फ्रांस की क्रान्ति का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण फ्रांस की बिगड़ी हुई आर्थिक दशा को ही माना जाता है।[1] यदि फ्रांस की आर्थिक दशा अच्छी होती तो लुई सोलहवां स्टेट्स जनरल का अधिवेशन कभी न बुलाता और यदि वह अधिवेशन न बुलाता तो सम्भवत: क्रांति का सूत्रपात भी न होता। इसलिए यह कहना उचित है कि फ्रांस की बिगड़ी आर्थिक दशा ही क्रांति का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण थी।[2]

क्रांति के मुख्य आर्थिक कारणों का वर्णन इस प्रकार है—

1. सरकारी धन का दुरुपयोग (Misuse of the State Money)—फ्रांस के राजा बड़े ही विलासी और अपव्ययी थे। वे सदा भोग-विलास में डूबे रहते थे और धन पानी की भांति बहाते थे। लुई चौदहवें ने वार्साय के स्थान पर 30 करोड़ रूपये की लागत से एक शानदार महल बनवाया था। यह महल 25 वर्ष में बनकर तैयार हुआ था। इतिहासकार हेज़न के शब्दों में, "**इस विशाल भवन का निर्माण एक शताब्दी पहले हुआ था और आजकल के हिसाब से उस पर 12 करोड़ डालर खर्च किए गए थे। उसमें मीलों लम्बा दालान, अनगिनत उद्यान, लम्बे-लम्बे पर्यटन-मार्ग, मूर्तियां, फ व्वारे तथा बनावटी सरोवर आदि सब कुछ राजकीय वैभव और तड़क-भड़क के अनुरूप ही थे।**" अनुमान लगाया जाता है कि इस महल पर रख-रखाव के लिए 10 करोड़ रुपया वार्षिक खर्च किया जाता था। लुई चौदहवां एक योग्य शासक होते हुए भी इतना अपव्ययी था कि उसका राजकोष पूरी तरह से खाली हो गया। उसके युद्धों ने देश की आर्थिक स्थिति को और भी बिगाड़ दिया। उसके पश्चात् लुई 15वां सिहासन पर बैठा। देश की अर्थ-व्यवस्था को सुधारने की बजाय वह भी युद्धों में उलझ गया। उसके उत्तराधिकारी लुई 16वें ने भी सरकारी धन के दुरुपयोग की परम्परा का पूरा-पूरा पालन किया। उसने अपनी रंगरलियों में खूब धन लुटाया। इस कार्य में उसकी पत्नी मेरी आन्त्यनेत ने भी पूरा-पूरा साथ दिया। इन सब बातों का परिणाम यह हुआ कि फ्रांस की सरकार दिवालिया हो गई।

2. करों की अनुचित बांट (Unfair distribution of Taxes)—फ्रांस में करों का सारा भार साधारण जनता को ही सहना पड़ता था। देश की साधारण जनता निर्धन थी। फिर भी उसे कर देने पर विवश किया जाता ता। दूसरी ओर कुलीन वर्ग के लोग धनी थे और वे कर दे सकते थे, परन्तु वे कर से मुक्त थे। फ्रांस के विभिन्न क्षेत्रों में कर (Tax) की दरें भी भिन्न-भिन्न थीं। करों की इस अनुचित बांट के कारण जन-साधारण के दिलों में बड़ी घृणा थी और वे इस अन्याय के कारण बड़े दु:खी थे। अपनी आय का

1. "The revolution was precipitated by the economic factor and the track which had been laid by philosophy was fired by finance."

2. "The fiscal causes lay at the most of the revolution."

लगभग 80% भाग उन्हें करों के रूप में देना पड़ता था। उनके पास जो शेष बच जाता था, उसमें उनके लिए निर्वाह करना बड़ा कठिन था। साधारण लोगों से बेगार भी ली जाती थी। उनको वर्ष में कई बार राजा की फसलें काटनी पड़ती थीं और सड़कों के निर्माण तथा मरम्मत के समय मुफ्त कार्य करना पड़ता था। इन अत्याचारों से लोग बहुत दु:खी थे।

3. कर एकत्रित करने की दोषपूर्ण व्यवस्था (Bad System of Collecting Taxes)—करों की बांट ही अनुचित नहीं थी बल्कि कर वसूल करने की प्रणाली भी बड़ी विचित्र थी। कर वसूल करने का अधिकार नीलाम किया जाता था। जो व्यक्ति सबसे अधिक धन राजा को देता था, उसी को निश्चित भूमि से कर वसूल करने का अधिकार दे दिया जाता था। इन कर वसूल करने वालों को फार्मर्ज़ (Farmers) कहते थे। फार्मर्ज़ जनता से अधिक-से-अधिक कर लेते थे और राज्य को कर का बहुत थोड़ा भाग देते थे। कर-संग्रह करने की इस प्रणाली से राज्य की आय तो बढ़ती नहीं थी, पर किसान अवश्य ही निर्धन हो जाते थे।

4. भारी ऋण और ब्याज (Heavy Loans and Interest)—उस समय फ्रांस की गणना यूरोप के धनी देशों में होती थी, परन्तु वास्तविकता कुछ और ही थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि राज्य को काफी आय होती थी, परन्तु फ्रांस फिर भी ऋ:ण के बोझ से दबा हुआ था। कारण यह था कि राज्य और राजा की आय में कोई अन्तर नहीं था। राजा जितना रुपया चाहे राजकोष से लेकर खर्च कर सकता था। केवल राजा ही नहीं, बल्कि रानी और राज-परिवार के अन्य सदस्य भी जितना चाहते और जैसा चाहते, खर्च करते थे। किसी का साहस नहीं था कि उन्हें ऐसा करने से रोक सके। देश में बजट नाम की कोई चीज़ न थी। अत: राज्य की आय तथा व्यय का पता लगाना कठिन ही नहीं, बल्कि असम्भव था। लुई 15वें के समय में कृपापात्रों को पेंशन तथा इनाम देने की प्रथा थी। राजकोष पूरी तरह से खाली पड़ा था, इसलिए इनाम और पेंशन ऋण लेकर दी जाती थीं।

लुई सोलहवें के काल में आर्थिक स्थिति और भी गम्भीर हो गई। कहा जाता है कि लुई के समय देश का ऋण लगभग 60 करोड़ डालर तक जा पहुंच गया था। मूलधन की तो बात ही क्या, फ्रांस के लिए ब्याज चुकाना भी असम्भव था। देश की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए लुई ने यद्यपि कई योग्य अर्थ-मन्त्रियों की नियुक्ति की गई, परन्तु रानी, जागीरदार तथा पादरियों के विरोध के सामने उनकी एक न चल सकी। परिणामस्वरूप फ्रांस क्रान्ति की लपेट में आ गया।

5. व्यापारिक अवनति (Decline of Trade)—फ्रांस का व्यापार निरन्तर अवनति की ओर जा रहा था। इसकी उन्नति के मार्ग में अनेक बाधाएं थीं। देश के भिन्न-भिन्न भागों में न तो व्यापार की प्रणाली एक समान थी और न ही एक जैसे सिक्के प्रचलित थे। नाप-तौल की विधि भी भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न थी। सरकार को

व्यापारियों की सुविधा का तनिक भी ध्यान नहीं था। उन्हें ,स्थान-स्थान पर चुंगी देनी पड़ती थी जिससे व्यापार में बड़ी बाधा पड़ती थी। अत: व्यापारी वर्ग बहुत दु:खी था।

6. फ्रांस में औद्योगिक क्रान्ति (Industrial Revolution in France)— फ्रांस में औद्योगिक क्रान्ति आरम्भ हो चुकी थी। देश में अनेक नए कारखाने खुल चुके थे। इन कारखानों की स्थापना से देश के कुटीर उद्योगों को भारी धक्का पहुंचा। कुटीर उद्योगों में लगे हुए हज़ारों मज़दूर बेकार हो गए और उनमें असन्तोष फैल गया। यदि कुछ मज़दूरों को कारखानों में काम मिल भी गया हो वहां उनकी आय बहुत कम थी। उन्हें परिश्रम के अनुपात से काफ़ी कम मज़दूरी दी जाती थी। मिल मालिक दिल खोलकर कमाते थे, परन्तु मज़दूरों को दिनभर के परिश्रम के पश्चात् दो वक्त की रोटी भी नहीं मिलती थी और यह तो सर्वमान्य बात है कि भूखा पेट विद्रोह करता है। अत: विद्रोह होकर रहा और इसने क्रान्ति का रूप धारण कर लिया।

7. अमेरिका को वित्तीय सहायता (Financial Assistance to America)— अमेरिका में अंग्रेज़ों का राज्य था। जब वहां के लोगों ने इंगलैंड के विरुद्ध अपना स्वाधीनता युद्ध आरम्भ किया तो फ्रांस ने इंग्लैंड से बदला लेने के लिए अमेरिका को सैनिक तथा वित्तीय सहायता दी। इससे पहले इंग्लैंड ने अमेरिका को युद्ध में करारी हार देकर उससे कनाडा छीन लिया था। अब इंगलैंड को नीचा दिखाने का फ्रांस को एक सुनहरा अवसर मिल गया। परन्तु इस युद्ध में भाग लेना फ्रांस को महंगा पड़ा। इसके कारण उसका राजकोष पूरी तरह खाली हो गया और उस पर ऋण का भार और भी अधिक बढ़ गया। यह तो ठीक है कि इस युद्ध में इंग्लैंड को मुंह की खानी पड़ी और संयुक्त राज्य अमेरिका स्वतन्त्र हो गया, परन्तु जहां तक फ्रांस का सम्बन्ध है, उसे न तो उस युद्ध से कोई आर्थिक लाभ हुआ और न ही कोई प्रादेशिक लाभ। इसके विपरीत वह और अधिक आर्थिक संकट में फंस गया।

IV. दार्शनिकों का योगदान (Contribution of Philosophers)

यूरोप के इतिहास में 18वीं शताब्दी आलोचना तथा प्रबुद्धता (Enlightenment) की शताब्दी कहलाती है। इस युग में फ्रांस में अनेक विद्वानों, विचारकों तथा दार्शनिकों का जन्म हुआ। उन्होंने राजनीतिक विचारों से ओत-प्रोत साहित्य की रचना की, जिसमें उन्होंने शासन में प्रचलित दोषों की कड़ी आलोचना की। कुछ विचारकों ने निरंकुश शासन की निन्दा की, तो कुछ ने सामन्तों के विशेषाधिकारों पर प्रहार किया। उन्होंने चर्च की बुराइयों व कमियों का भी खण्डन किया और मनुष्य पर लगे अनुचित प्रतिबन्धों की आलोचना की। उन्होंने इस बात का प्रचार किया कि राजनीतिक तथा सामाजिक ढांचे में मौलिक परिवर्तन किए जाने चाहिएं। इन विचारों ने फ्रांस के मध्य- वर्ग के पढ़े-लिखे लोगों को अत्यधिक प्रभावित किया, जिसके फलस्वरूप देश में क्रान्तिकारी विचारों का

उदय हुआ। इसी कारण फ्रांस के दार्शनिकों को प्राय: **'क्रान्ति के पैगम्बर'** (Prophets of the Revolution) कह कर पुकारा जाता है। फ्रांसीसी क्रान्ति को जन्म देने वाले दार्शनिकों में मातेस्क्यू, वाल्तेयर, रूसों तथा दिदेरो प्रमुख हैं।

मांतेस्क्यू अपने समय का प्रसिद्ध विद्वान् और उच्चकोटि का लेखक था। वह फ्रांस की निरंकुश शासन-प्रणाली और राज के दैवी अधिकारों का कट्टर विरोधी था। वह इंग्लैंड की शासन-पद्धति का समर्थक था और अपने देश में भी वैसी ही शासन-पणाली स्थापित करना चाहता था। उसने 20 वर्षों के कठिन परिश्रम से **'The Spirit of Law'** (कानूनों की भावना) नामक एक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में उसने राजा के दैवी अधिकारों और निरंकुशता की कड़ी आलोचना की। वाल्तेयर भी अपने समय का सुप्रसिद्ध व्यंग्य लेखक था। अपने तीखे व्यंग्य लेखों के कारण उसे अनेक बार जेल में जाना पड़ा। उसके विचार काफी विकसित थे। उसे भी इंग्लैंड की न्याय-व्यवस्था ने बहुत प्रभावित किया था। वह चर्च के धार्मिक आडम्बरों और पादरियों के भ्रष्टाचार का प्रबल विरोधी था। चर्च को तो वह एक **'कुख्यात संस्था'** के नाम से पुकारा करता था। यद्यपि वह व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के पक्ष में था, फिर भी उसका आदर्श उतार और स्वच्छाचारी शासन था। वह कहता था, **"सौ चूहों की बजाय एक शेर का शासन अच्छा होता है।"** उसके विचारों में तर्क की प्रधानता थी। पुरानी मान्यताएं उसके तर्कों के आगे टिक नहीं पाती थीं। अपने विचारों का प्रसार करने के लिए उसने अनेक ग्रंथ लिखे। उसके लेखों से प्रभावित होकर लोगों का ध्यान शासन की बुराइयों की ओर आकृष्ट हुआ। वे इन दोषों का अन्त करके नवीन युग की कल्पना करने लगे। इस प्रकार वाल्तेयर ने क्रान्तिकारी विचारों को बहुत प्रसोत्साहन दिया।

3. रूसो (Rousseau— 1712-1778 A.D.)—रूसो अठारहवीं शताब्दी का सर्वोच्च दार्शनिक माना जाता है। आरम्भ में वह बहुत ही चरित्रहीन और बुरा व्यक्ति था। जॉनसन के शब्दों में, **"वह इतना बुरा व्यक्ति था कि उसे पास के ही पेड़ पर फांसी लगा देनी चाहिए थी। इसके लिए फांसी-गृह तक जाने की आवश्यकता भी नहीं थी।"** फिर भी फ्रांसीसी क्रान्ति में राजनीति दार्शनिकों में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान रूसो का ही था। वह एक नवीन समाज की स्थापना करना चाहता था। उसकी इच्छा थी कि प्राचीन समाज का पूरी तरह अन्त करके इसका संगठन नये सिरे से किया जाना चाहिए। उसने अपने विचारों का संग्रह अपनी पुस्तक **'Social Contract'** (सामाजिक समझौता) में किया है। इस पुस्तक के आरम्भ में वह लिखता है, **"Man is born free and yet he is everywhere in chains."** यही कारण था कि वह प्राचीन सामाजिक संस्थाओं को जड़ से उखाड़ देना चाहता था। इस पुस्तक में उसने एक ऐसे नवीन समाज की कल्पना की थी, जिसमें सभी को स्वतन्त्रता का अधिकार प्राप्त था। इसमें यह भी कहा गया है कि समाज का आधार उसमें रहने वाले व्यक्तियों का पारस्परिक समझौता होना चाहिए। समझौते की व्यवस्था के अनुसार यदि कोई राजा अनुचित कार्य करे तो जनता उसे तुरन्त ही पदत्युत कर दे। उसका कहना था कि राज्य की, **"जनता**

ही वास्तविक स्वामी है और राजा उसकी अनुमति से कार्य करता है।'' उसके अनुसार,सब व्यक्ति स्वतन्त्र और समान है और शासन का मुख्य कार्य व्यक्ति की स्वतन्त्रता की रक्षा करना है। इस प्रकार रूसो के विचारों के विषय में लार्डव मार्ले ने लिखा है, **''उसने फ्रांस में ऐसी शक्ति का संचार किया कि फ्रांस उस मृत्यु-जाल को तोड़कर उठ बैठा जो धीरे-धीरे उसे जकड़े जा रहा था।''** यह क्रान्ति का ही लक्षण था। तभी तो नेपोलियन महान् ने कहा था, **''रूसो के बिना फ्रांसीसी क्रान्ति असम्भव थी।''**[1]

4. अन्य दार्शनिक (Other Philosophers)—उपरोक्त दार्शनिकों के अतिरिक्त अन्य भी अनेक दार्शनिक हुए, जिन्होंने क्रान्तिकारी विचारों को खूब भड़काया। इनमें दिदेरो (Diderot), क्वेसने (Quesnay), हॉलवैश (Holbach) तथा हैल्वेशियस (Helvetius) प्रमुख थे। उन्होंने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अपने विचार प्रस्तुत किए और क्रान्ति को संगठित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वास्तव में फ्रांसीसी क्रान्ति में 18 वीं शताब्दी के दार्शनिकों का बहुत बड़ा योगदान था। काबर्ट एरगैंग लिखते हैं, **'इतिहास में ऐसे युग बहुत ही कम मिलते हैं, जिनमें विचारकों ने लोगों के विचारों को इतना अधिक प्रभावित किया कि जितना कि फ्रांसीसी दार्शनिकों ने।'** मैलट ने भी इस विषय में बड़े सुन्दर शब्द कहे हैं, **''फ्रांस के दार्शनिकों द्वारा बोए गए बीज उपजाऊ धरती पर रड़े।''**[2]

इस उपजाऊ धरती में क्रांति का पौधा बहुत ही तीव्र गति से विकसित हो गया।

V. भीषण अकाल (Severe Famine)

1788 ई० में फ्रांस के अनेक भागों में भीषण अकाल पड़ा, जिसके कारण लोग भूख से तड़प-तड़प कर मरने लगे। परन्तु फ्रांस के धनी लोग अब भी मौज उड़ा रहे थे। जो लोग प्रांतों में भूखे मर रहे थे, वे भगाकर पेरिस आ गए। उनके मन में शासन के प्रति बड़ा रोष था। उनको बताया गया था कि सारा अनाज राजा ने खरीदकर अपने गोदामों में छिपा लिया है और इसी कारण देश में अकाल पड़ा है। फिर क्या था, एक भारी भीड़ पेरिस की गलियों में इकट्ठी हो गई और उसने राजमहल को घेर लिया। इस प्रकार फ्रांस में क्रान्ति आरम्भ हो गई।

VI. तात्कालिक कारण (Immediate Cause)

फ्रांसीसी क्रान्ति का तात्कालिक कारण 'स्टेट्स जनरल' का अधिवेशन बना। यह

1. "But for Rousseau, there would have been no French Revolution."
2. "The seed sown by these remarkable writers fell upon fruitfule soil."

अधिवेशन देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए बुलाया गया। फ्रांसीसी शासकों की अपव्ययता और भारी ऋण के कारण फ्रांस लगभग दिवालिया हो चुका था। राजकोष में इतना धन भी शेष नहीं था कि शासन को ठीक ढंग से चलाया जा सके। इस समस्या के समाधान के लिए सम्राट लुई 16वें ने राज्य के प्रमुख व्यक्तियों की एक सभा बुलाई। इस सभा ने सुझाव दिया कि देश को आर्थिक दिवालियापन से बचाने के लिए धनी लोगों पर भी कर लगाया जाए, परन्तु यह बात धनी लोगों को स्वीकार न थी। उन्होंने कहा कि उन पर कर लगाने का अधिकार केवल स्टेट्स जनरल (States General) को ही है। सम्राट् के सामने अब 'स्टेट्स जनरल' का अधिवेशन बुलाने के सिवाय और कोई रास्ता न था। अत: 1789 ई० 'स्टेट्स जनरल' का अधिवेशन बुलाया गया। यद्यपि इसमें तीनों वर्गों के सदस्य थे, परन्तु 'जन-साधारण' के प्रतिनिधियों की संख्या सबसे अधिक थी। इन्होंने एक के बाद दूसरे सुधार की मांग की और अन्त में राजा को इनके सामने झुकना पड़ा। इस प्रकार यह कहना उचित होगा कि 'स्टेट्स जनरल' का अधिवेशन क्रान्ति के लिए विस्फोटक सिद्ध हुआ।

सच तो यह है कि फ्रांस की राज्य-क्रान्ति एक बिजली थी जो एकाएक टूट पड़ी। यह बिजली 1789 ई० में क्रान्ति का स्मारक बन गई, परन्तु क्रान्ति का वास्तविक कारण वह वातावरण था जो 1789 ई० से पहले ही तैयार होने लगा था। राजतंत्र के दोष तथा सामाजिक असमानता क्रान्ति के कारण बने । वास्तव में देश की अर्थ-व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। न आर्थिक अवस्था बिगड़ती, न स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाया जाता और न ही क्रान्ति का जन्म होता। स्टेट जनरल का अधिवेशन एक ऐसी चिंगारी सिद्ध हुआ कि जिसने फ्रांस में क्रान्ति की ऐसी आग भड़का दी, जिसका प्रभाव न केवल यूरोप, अपितु समस्त विश्व पर पड़ा।

अब हम विश्व की इस महान् क्रान्ति के प्रभावों का संक्षिप्त में उल्लेख करते हैं, जिसने विश्व व्यवस्था में एक अभूतपूर्व एवं अप्रत्याशित परिवर्तन करके तत्कालीन व्यवस्था को एक नवीन दिशा प्रदान की। संसार के अनेक राष्ट्र समाज की इस नवीन स्थापना के लिए प्रयत्नशील हो गये। इस प्रकार संक्षिप्त में फ्रांस की क्रान्ति के स्थायी प्रभावों का उल्लेख करते हैं—

फ्रांस की क्रान्ति के प्रभाव
(Effects of the French Revolution)

फ्रांसीसी क्रान्ति से केवल फ्रांस ही नहीं, बल्कि समस्त संसार के देश स्थायी रूप से प्रभावित हुए। वास्तव में इस क्रान्ति के कारण एक नये युग का उदय हुआ। इसके तीन मुख्य सिद्धान्त—समानता, स्वतन्त्रता और भ्रातृत्व की भावना पूरे विश्व के लिए अमर वरदान सिद्ध हुई। इन्हीं के आधार पर संसार के अनेक देशों में एक नये समाज की स्थापना का प्रयत्न किया गया। इस क्रान्ति के स्थायी प्रभावों का वर्णन इस प्रकार है—

1. स्वतन्त्रता (Liberty)—स्वतन्त्रता फ्रांसीसी क्रान्ति का एक मूल सिद्धान्त था।

इस सिद्धान्त से यूरोप के लगभग सभी देश बड़े प्रभावित हुए। फ्रांस में मानव अधिकारों के घोषणा-पत्र (Declaration of Human Rights) द्वारा सभी लोगों को उनके अधिकारों से परिचित कराया गया। देश में अर्द्धदास प्रथा (Serfdom) का अन्त कर दिया गया और निर्धन किसानों को सामन्तों के चंगुल से छुटकारा दिलाया गया। फ्रांसीसी क्रान्ति के परिणामस्वरूप अनेक देशों में निरंकुश शासन के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ हो गए। राजाओं के दैवी अधिकार समाप्त हो गए और निरंकुश शासन के स्थान पर संवैधानिक शासन की स्थापना होने लगी। लोगों ने धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करना आरम्भ कर दिया।

2. समानता (Equality)—इस क्रान्ति के कारण निरंकुश शासन का अन्त हुआ और इसके साथ ही समाज में फैली असमानता का भी अन्त हो गया। समानता क्रान्ति का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत था। इसका प्रचार लगभग सभी देशों में हुआ। इसके फलस्वरूप सभी लोग कानून की दृष्टि में एक समान समझे जाने लगे। सभी लोगों को उन्नति के समान अवसर प्राप्त होने लगे। सरकार अब सभी लोगों से एक समान व्यवहार करने लगी। वर्ग-भेद सदा के लिए समाप्त हो गया। उच्च वर्ग के विशेषाधिकारों का अन्त हो गया। समानता के सिद्धान्त के द्वारा अनेक स्थानों पर आदर्श समाज की स्थापना हुई। स्त्रियों ने भी पुरुषों के समान अधिकारों की मांग की, जो अन्त में उन्हें प्राप्त हो गए। अत: स्पष्ट है कि फ्रांसीसी क्रान्ति ने समानता का आदर्श स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

3. लोकतन्त्र (Democracy)—फ्रांस की क्रांति का पहला सिद्धान्त स्वतन्त्रता था। सभी यूरोपीय राज्यों की जनता ने स्वतन्त्रता की इस भावना का हार्दिक स्वागत किया। फ्रांस के क्रान्तिकारियों ने राष्ट्रीय सम्मेलन द्वारा निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी शासन का अन्त कर दिया और इसके स्थान पर लोकतन्त्र शासन की स्थापना की। इसके साथ ही लोगों को बताया गया कि राज्य की सारी शक्ति जनता में निहित है और राजा के दैवी अधिकारों का सिद्धान्त बिलकुल गलत है। लोगों को यह अधिकार है कि वे अपने चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा सरकार चलायें । फ्रांस की क्रान्ति ने यह स्पष्ट कर दिया था कि सरकार केवल जनता के लिए ही नहीं, बल्कि जनता के द्वारा बनाई जाये। यद्यपि नेपोलियन ने लोकतन्त्र का अन्त करके फ्रांस के सम्राट् की पदवी धारण की थी तो भी यह कार्य जनता द्वारा ही हुआ था। आरम्भ में तो लोकतन्त्र के सिद्धांत के विरुद्ध यूरोप में प्रतिक्रियाएं हई, परन्तु कुछ समय पश्चात् यूरोप तथा संसार के अन्य देशों ने इस सिद्धांत के महत्त्व को समझा और उन देशों में लोकातन्त्र का जन्म हुआ।

4. राष्ट्रीयता की भावना (Spirit of Nationalism)—फ्रांसीसी क्रान्ति के कारण फ्रांस तथा यूरोप के अन्य देशों में राष्ट्रीयता की भावना का जन्म हुआ। क्रान्ति के समय अब आस्ट्रेलिया तथा प्रशा ने फ्रांस पर आक्रमण किया था, तो फ्रांस के सभी लोग कंधे से कंधा मिला कर उनके विरुद्ध लड़े थे। यह उसकी राष्ट्रीय भावना का ही परिणाम था। वे फ्रांसीसी होने के नाते एक दूसरे को अपना भाई समझते थे और कहते थे कि देश का शत्रु हम सबका शत्रु है। अब उसका सामना करने के लिए हमें एकता के सूत्र में बंध

जाना चाहिए। इसी भावना के कारण नेपोलियन के सैनिकों ने अनेक देशों पर विजय प्राप्त की। राष्ट्रीयता की यह भावना केवल फ्रांस तक ही सीमित न रहकर जर्मनी, स्पेन, पुर्तगाल आदि देशों में भी जा पहुंची। वहां के लोगों ने भी अपने देश से विदेशी नेपोलियन की सेनाओं को निकालने के लिए संघर्ष करना आरम्भ कर दिया। कालान्तर में इसी भावना के कारण जर्मनी, इटली आदि देशों में राष्ट्रीय आन्दोलन प्रबल हुए और वहां शक्तिशाली राष्ट्रों की स्थापना हुई।

5. शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन (Changes in the field of Education)—फ्रांस में क्रान्ति से पूर्व शिक्षा का कार्य चर्च के हाथों में था। क्रान्तिकारी इस बात को भली-भांति जानते थे कि शिक्षा एक बहुत महत्त्वपूर्ण विषय है और उसका चर्च के हाथों में रहना क्रान्ति के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। यही कारण था कि उन्होंने शिक्षा का कार्य चर्च के हाथों से लेकर राज्य को सौंप दिया था। नेपोलियन के काल में पेरिस में एक विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। राष्ट्र में अनेक शिक्षा-संस्थाओं का प्रादुर्भाव हुआ। उसे आदर्श मानकर यूरोप के अन्य देशों में भी विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। विज्ञान की शिक्षा तथा अनुसंधान (Research) पर अधिक बल दिया गया।

पं० जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक 'विश्व इतिहास की झलक' (Glimpses of the World History) में फ्रांसीसी क्रान्ति के स्थायी प्रभावों का वर्णन करते हुए लिखा है, "**यह न समझना कि कन्वेन्शन ने लड़ने-भिड़ने और गिलोटिनी पर चढ़ने के सिवा कुछ न किया। सच्ची क्रान्ति से पैदा होने वाली शक्ति हमेशा बहुत ज़ोरदार होती है। इसका बहुत-सा हिस्सा तो विदेशियों से युद्ध में खप गया था, लेकिन फिर भी बहुत कुछ बच रहा था और इसके द्वारा काफी रचनात्मक काम किया गया। खासकर राष्ट्रीय शिक्षा का सारा तरीका ही बदल दिया गया। मीटर प्रणाली, जिसे आज स्कूल के सब बच्चे सीखते हैं इसी समय जारी की गई थी। इसने तमाम तोल बाटों को और लम्बाई तथा आयतन के सभी नापों को सरल कर दिया। यह प्रणाली अब दुनिया के सारे देशों में फैल गई हैं।**"

6. सामन्तवाद से प्रजातन्त्र की ओर (From Feudal System to Democratic System)—क्रान्ति से पूर्व फ्रांस में सामन्तवाद का बोलबाला था। सामन्त बड़े शक्तिशाली थे और राज्य की ओर से उन्हें विशेष अधिकार प्राप्त थे। सेना तथा राज्य के उच्च पदों पर उन्हीं की नियुक्ति होती थी। वे सरकार को कोई कर नहीं देते थे। इसके विपरीत वे निर्धन किसानों से कई प्रकार के कर वसूल करते थे। उनके पास बड़ी-बड़ी जागीरें थीं और वे ऐश्वर्य का जीवन व्यतीत करते थे। निर्धन किसान दिन-रात परिश्रम करते, परन्तु उनके परिश्रम का फल सामन्तों को पहुंचता। किसानों से प्राप्त धन को वे पानी की तरह बहाते थे।

फ्रांसीसी क्रांति ने सामन्तवाद का अन्त कर दिया। सामन्तों को उनके विशेषाधिकारों से वंचित कर दिया गया। अब उन्हें भी अन्य लोगों की भांति कर (Tax) देने पड़े थे। अर्द्धदास प्रथा (Serfdom) का अन्त कर दिया और वर्ग-भेद मिटा दिये गये। समाज

का गठन समानता के आधार पर किया गया। धीरे-धीरे से परिवर्तन यूरोप तथा संसार के अन्य देशों में भी किये गये। इस प्रकार सामन्तवाद का स्थान प्रजातन्त्र ने लेना आरम्भ कर दिया।

7. सार्वजनिक कल्याण (Public Welfare)—फ्रांस की राज्य-क्रांति ने सार्वजनिक कल्याण की भावना को विकसित किया। इस भावना से प्रेरित होकर दयालु लोगों तथा उन्नत सरकारों ने धन तथा कानूनों द्वारा लोगों के सामाजिक जीवन को सुधारने के प्रयास किए। जेलों की अवस्था को सुधारा गया तथा दासता का अन्त कर दिया गया। कारखानों , खानों तथा खेतों में काम करने वाले मज़दूरों की अवस्था में भी काफ़ी सुधार किए गए। अशिक्षितों की शिक्षा के लिए स्कूलों की स्थापना की गई तथा रोगियों के लिए अस्पताल खोले गए। पिछड़े हुए लोगों को आर्थिक सहायता प्रदान की गई। इस प्रकार क्रांति के कारण सार्वजनिक भलाई की भावना का काफी विकास हुआ।

सच तो यह है कि क्रांति ने प्रचलित कानूनों का रूप बदल दिया, सामाजिक मान्यताएं बदल डालीं और आर्थिक ढांचे में आश्चर्यजनक परिवर्तन किए। राजनीतिक दल नवीन आदर्शों से प्रेरित हुए। सुधार आन्दोलन तीव्र गति से चलने लगे। साहित्यकारों ने नवीन वाणी पाई। फ्रांसीसी क्रांति के चार स्तम्भ (Four Pillars)—समानता, स्वतन्त्रता लोकतन्त्र तथा बन्धुत्व प्रत्येक देश के लिए पथ-प्रदर्शक बने। मानवता के लिए अन्धकार का युग समाप्त हुआ और एक आशायुक्त प्रात: का उदय हुआ। क्रांतिकारियों का बलिदान रंग लाया और राजतन्त्र के अत्याचार समाप्त हुए। एक प्रसिद्ध इतिहासकार ने इस प्रभाव की विवेचना इन शब्दों में की है, "**उन्होंने (क्रांतिकारियों ने)मानवता के लिए रक्त बहाया, समस्त मानव जाति की भलाई के लिए ही उन्होंने कष्ट उठाया, अपने संघर्ष तथा विचारों को संसार के सामने रखा। ये सभी कार्य केवल मानवता के कल्याण के लिए ही थे। सभी का परिणाम अच्छा हुआ और आगे भी होगा, जबकि हम अपने विस्तृत क्षेत्र में आगे बढ़ेंगे तथा हमारे हाथों में स्वतन्त्रता, समानता तथा भातृत्व की भावना प्रतीक जलती हुई मशाल होगी।**" फ्रांस की इस प्रसिद्ध क्रान्ति ने राज्य के सम्बन्ध में एक नवीन धारणा को जन्म दिया, समाज तथा राजनीति के सम्बन्ध में नये सिद्धान्त प्रतिपादित किये और जीवन का एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। इससे नयी आशा का संचार हुआ और असीम आशाओं से जनता को अनुप्राणित किया। इस क्रान्ति के द्वारा ही सम्पूर्ण यूरोप में नवयुग का प्रारम्भ हो गया और समानता का सिद्धान्त स्थापित हो गया। पुरातन अन्ध विश्वासों को मिटाकर एक लोकतन्त्र की नयी धारा प्रवाहित कर दी और राष्ट्रीयता की भावना को संचालित किया।

फ्रांसीसी क्रान्ति जो कि एक युग परिवर्तनकारी घटना थी। इस सर्दभ से इतिहासकार हेजन ने इस प्रकार से किया है—

"**1979 की फ्रांस की क्रान्ति ने राज्य के सम्बन्ध में एक नवीन धारणा को जन्म दिया, राजनीति तथा समाज के विषय में नये सिद्धान्त प्रतिपादित किये । जीवन का एक नया दृष्टिकोण सामने रखा और एक नई आशा तथा विश्वास उत्पन्न किया। इन सबसे बहुमत, जनता की कल्पना और विचार उत्पन्न हुए। उनमें एक अद्वितीय उत्साह का संचार हुआ और असीम आशाओं ने उन्हे अनुप्राणित किया।**"

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. 'फ्रन्स की क्रान्ति ने सम्पूर्ण संसार के राष्ट्रों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया।' कथन की व्याख्या करते हुए इस क्रान्ति के कारणों का उल्लेख करें। (MDU. 1989, 1999, 2005)
2. 1789 ई० की क्रान्ति के कारणों की सविस्तारपूर्वक व्याख्या करो। (K.U. 2001)
3. 'फ्रांस की क्रान्ति एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक क्रान्ति थी' इस कथन को ध्यान में रखते हुए क्रान्ति के प्रमुख कारणों का उल्लेख करें। (K.U. 2006, MDU, 2005)
4. फ्रांस की क्रान्ति के कारण एवं इसके संसार के सैन्य इतिहास में पड़े प्रभावों का उल्लेख कीजिए।
5. 'प्रजातान्त्रिक व्यवस्था की शुरुआत का श्रेय 1789 ई० की क्रान्ति को दिया जाता है।' कथन की पुष्टि करते हुए इसके प्रभाव वर्णित करें।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(Objective Type Questions)

प्रश्न 1. फ्रांस की क्रान्ति कब हुई ?

(क) 1879 ई० में (ख) 1789 ई० में
(ग) 1907 ई० में (घ) 1917 ई० में।

प्रश्न 2. फ्रांस की क्रान्ति के समय वहां का शासक कौन था ?

(क) लुई पन्द्रहवां (ख) लुई चौहहवां
(ग) फिलिपि सोलहवां (घ) लुई सोलहवां।

प्रश्न 3. फ्रांस की क्रान्ति के समय योरोप में भूमि के स्वामी थे—

(क) जागीरदार (ख) किसान
(ग) भूमिधर (घ) उपर्युक्त सभी।

प्रश्न 4. फ्रांस की क्रान्ति के समय यूरोप की सबसे बड़ी समुद्री शक्ति था—

(क) फ्रान्स (ख) जापान
(ग) रूस (घ) इंग्लैण्ड।

प्रश्न 5. फ्रांस की क्रान्ति को जन्म देने वाला दार्शनिक था—

(क) मांतेस्कयू (ख) वाल्तेयर
(ग) रूसो (घ) उपर्युक्त सभी।

प्रश्न 6. फ्रांसीसी क्रान्ति को भड़काने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई—

(क) रूस का आन्दोलन (ख) इंग्लैण्ड का आन्दोलन

(ग) अमेरिका का स्वतन्त्रता संग्राम (घ) आस्ट्रिया का सम्राज।

प्रश्न 7. लुई 16वें की पत्नी किस राज्य की राजकुमारी की ?

(क) आस्ट्रिया (ख) इंग्लैंड

(ग) फ्रान्स (घ) अमेरिका।

प्रश्न 8. तुर्गी (Turgot) और नेकर (Necker) लुई 16वें के ते—

(क) न्याय मन्त्री (ख) वित्त मन्त्री

(ग) पादरी (घ) सामन्त।

प्रश्न 9. 'जागीरदार युद्ध करते थे, पुरोहित प्रार्थना करते ही और जनता कर देती है यह बात किस राज्य में लागू-थी ?'

(क) आस्ट्रिया (ख) इंग्लैण्ड

(ग) अमेरिका (घ) फ्रान्स।

प्रश्न 10. किस राज्य में चर्च एक अन्य राज्य के समाज अधिकार सम्भव था.

(क) इंग्लैण्ड (ख) फ्रांस

(ग) अमेरिका (घ) रूस।

प्रश्न 11. फ्रांस की भूमि का $\frac{1}{5}$ भाग सम्पत्ति इनकी थी—

(क) सामन्त (ख) चर्च

(ग) सेना (घ) मन्त्रियों।

प्रश्न 12. फ्रांस में जनता को अपनी आय का कर (Tax) देना पड़ता था—

(क) 70 प्रतिशत (ख) 50 प्रतिशत

(ग) 80 प्रतिशत (घ) 60 प्रतिशत।

प्रश्न 13. 'फ्रांस की क्रान्ति कुलीन तथा मध्यम वर्ग की टक्कर का परिणाम थी' यह कथन है—

(क) होमर का (ख) मेडलिन का

(ग) जॉनसन का (घ) रूसों का।

प्रश्न 14. स्टेट्स जनरल का अधिवेशन कब बुलाया गया ?

(क) 1788 ई० में (ख) 1789 ई० में

(ग) 1787 ई० में (घ) 1786 ई० में।

प्रश्न 15. फ्रान्स की क्रान्ति में किस शताब्दी के दार्शनिकों का बहुत बड़ा योगदान माना जाता है—

(क) 18वीं शताब्दी (ख) 15वीं शताब्दी

(ग) 17वीं शताब्दी (घ) 16वीं शताब्दी।

प्रश्न 16. लुई 16वां फ्रान्स का शासन चलाने के लिए अनुपयुक्त था, क्योंकि—

(क) नेतृत्त्व का अभाव (ख) निर्णयांक क्षमता का अभाव
(ग) भोग विलासी (घ) उर्पयुक्त सभी.

प्रश्न 17. लुई 16वीं की जो कि आस्ट्रिया की राजकुमारी थी, उसका नाम का—

(क) मेरी लुई (ख) मेरी एलिजावेथ
(ग) मेरी एन्टोयनेट (घ) मरियम.

प्रश्न 18. 'विदेशी औरत' श्रीमती वीटो' एवं श्रीमती घाटा के नाम से किसे सम्बोधित किया जाता था ?

(क) लुई 15वें की रानी को (ख) लुई 16वें की रानी को
(ग) लुई 14वें की रानी को (घ) इंग्लैण्ड की रानी को।

प्रश्न 19. फ्रांस कें लुई 16वें राज्य निवास को कहा जाता था—

(क) वर्साय (ख) फार्स्ट स्टेट
(ग) लुई महल (घ) राजमहल।

प्रश्न 20. 'श्रीमती घाटा' के नाम से फ्रान्सी जनता किसे बुलाती थी—

(क) लुई 15 वें की पत्नी को (ख) लुई 14वें की पत्नी को
(ग) लुई 16वें की पत्नी को (घ) उपयुर्क्त में कोई नहीं।

प्रश्न 21. कुलीन पादरी को कहा जाता था—

(क) फर्स्ट स्टेट (ख) सेकण्ड स्टेट
(ग) थर्ड स्टेट (घ) फोर्थ स्टेट।

प्रश्न 22. कुलीन सामन्त को जाना जाता था—

(क) फर्स्ट स्टेट (ख) स्पेशल स्टेट
(ग) सेकेण्ड स्टेट (घ) थर्ड स्टेट।

प्रश्न 23. Third State के नाम से जाना जाता था—

(क) कुलीन सामन्त (ख) कुलीन पादरी
(ग) राजमहल के कर्मचारी (घ) समान्य जनता।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर
(Answers of Objective Type Questions)

1. (ख)	2. (घ)	3. (क)	4. (घ)	5. (घ)
6. (ग)	7. (क)	8. (ख)	9. (घ)	10. (ख)
11. (ख)	12. (ग)	13. (क)	14. (ख)	15. (क)
16. (घ)	17. (ग)	18. (ख)	19. (क)	20 (ग)
21. (क)	22. (ग)	23. (घ)		

7 नेपोलियन की युद्ध कला (NAPOLIONIC ART OF WAR)

1. नेपोलियन की युद्ध कला (Napolionic Art of War)

इस महान सैन्य विचारक का जन्म 15 अगस्त 1769 में भूमध्य सागर में स्थित कोर्सिका दीप के एजैशिया नामक स्थान पर हुआ था। नेपोलियन के पिता नवाब बोनापार्ट का व्यवसाय वकालत था। कोर्सिका द्वीप फ्रान्स के आधीन हो गया था। नेपोनियन की शिक्षा पैरिस में हुई। नेपोलियन एक परिश्रमी तथा गम्भीर छात्र था, जब सन् 1785 ई० में अपना सैनिक प्रशिक्षण पूरा कर लिया, तब उसे फ्रान्सीसी तोपखाने में सब लेफ्टीनेन्ट के रूप में रखा गया। सन् 1793 ई० में 24 वर्षीय युवा कैप्टन नेपोलियन ने तूलन की घेरेबन्दी में उसने अपने उच्च सैन्य अधिकारियों को अपनी सैन्य प्रतिभा का परिचय दिया। नेपोलियन ने अपने दृढ़ संकल्प एवं आत्मविश्वास के बल पर घायल होते हुए भी अंग्रेजों के विरुद्ध प्रथम सफलता प्राप्त की। उसने युद्ध तथा प्रशासन में प्रतिभा से काम करने की सलाह दी और इस सन्दर्भ में कहा—

"one bad General is better than two good generals, with war, as with governance it is questions of fact,"

अपनी ओजस्वी प्रतिभा के बल पर 1794 ई० में ब्रिगेडियर जनरल बन गया। उसमें रोमन खून अपनी स्वतन्त्रता के लिए अब भी बह रहा था। 1796 ई० में इटली के मोर्चे को संभाला और जब इसमें सफलता प्राप्त कर वापस लौटा तो फ्रान्स की जनता ने अभूतपूर्व स्वागत किया और उसे फ्रान्सीसी गणराज्य का अध्यक्ष बना दिया गया। अनेक युद्धों में महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की और 1804 ई० में फ्रांस का सम्राट बन गया। इसके साथ ही दो वर्ष में ही योरोप के अनेक देशों पर अधिकार कर लिया और 1810 में सम्पूर्ण योरोप ही उसके अधिकार क्षेत्र में आ गया। इंग्लैंड नौ सैनिक शक्ति के कारण उसे नहीं दबा सका। अन्त में इंग्लैंड से ही उसको पराजित होना पड़ा।

सैन्य प्रतिभा के धनी इस महान् योद्धा ने सैन्य इतिहास में अपना अद्वितीय स्थान प्राप्त किया। यद्यपि युद्धों में लगातार व्यस्त रहने के कारण अपने अनुभवों तथा युद्ध कला के मौलिक ज्ञान को विधिवत वर्णित नहीं कर सका। इस सन्दर्भ में मेजर फिलिप्स महोदय ने अपनी पुस्तक 'Roots of Strategy' में लिखा है—

" Nepoleon-fought more battles than Alexander, Hannibal and Ceasar combined, he is beyond any doubt, the greatest of

Europeon soldiers. He never wrote his theories or principles on the conduct of war, although he often expressed the intention of doing so and remarked that every one would be surprised at how simple they were."

नेपोलियन के युद्ध सम्बन्धी अनेक सुत्रों का वर्णन मेजर फिलिप्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "**कूटियोजना के मूल**" (Roots of Strategy) में किये हैं, जिनके आधार पर इसकी सैनिक प्रतिभा का मूल्याँकन किया जा सकता है। उसके कुछ सैन्य विचार अत्यन्त प्रशंसनीय एवं उल्लेखनीय है जो आज के समय में भी व्यवहारिक कार्य-कुशलता में खरे उतरते है—

1. "All wars should be systematic, for every war should have an aim and be conducted in conformity with the principles and rules of the art."

(सभी युद्ध विधिवत् लड़े जाने चाहिए। सर्वप्रथम लक्ष्य का चुनाव करके युद्ध कला के सिद्धान्तों और नियमों के द्वारा उसकी प्राप्ति की जानी चाहिए।)

2. "Nothing is more important in war than unity in command."

(युद्ध में कमाण्ड की एकता अत्यन्त जरूरी होती है।)

3. " Good infantry is with out doubt, the sinew of an army."

(निःसन्देह एक अच्छी पैदल सेना किसी भी सेना की रीढ़ का काम करती है।)

4. "In war there is but one favourble moment, the great art is to seize it."

(युद्ध में लाभप्रद अवसर केवल एक बार आता है। युद्ध कला की निपुणता उस समय विशेष को उपयोग करने में है।)

5. "An Army can march any where and at any time of the year, wherever two men can place their feet."

(जहाँ कहीं भी दो आदमी कदम जमा सकते हैं, उस क्षेत्र में एक सेना साल में कभी भी प्रस्थान कर सकती है।)

6. " शत्रु सेना की पूरी तरह से पराजित ही नहीं करो, बल्कि उन्हें सदैव नष्ट करने का प्रयास करो। सदैव आक्रामक स्थिति में रहो, शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा न करके स्वयं ही शीघ्रता से आगे बढ़कर उसके यातायात के मार्गों को काट दो और अपने मार्गों को सुरक्षित रखने का सदैव प्रयास रखो।"

नेपोलियन को भाप शक्ति के युग का देवदूत माना जाता है। उसने कार्यालय में सेना का चार गुना अधिक विस्तार किया था। अब हम नेपोलियन के सैनिक विचारों का संक्षिप्त में उल्लेख करते हैं। इसे आधुनिक समरतन्त्र का जन्मदाता भी कहा जाता है। गिल्बर्ट ने अपनी पुस्तक Evolution of Tactics में लिखा है—

"उसने अपने कार्य-क्षेत्र की सभी ज्ञान की उच्च शाखाओं पर असाधारण रूप से छोटी उम्र में ही अधिकार कर लिया था। वह इतना प्रतिभाशाली था कि उसने इस क्षेत्र में सही सिद्धान्तों का पालन किया तथा यही उसकी सफलता का सबसे बड़ा और सही रहस्य है।"

नेपोलियन ने सामरिकी के निम्न सिद्धान्तों को अपनाया—

1. शत्रु का पूर्ण विनाश होना चाहिए।
2. श्रेष्ठता हासिल करने के लिए आक्रामक रहना।
3. शत्रु संचरण मार्गों को अवरुद्ध करना तथा अपने संरक्षण मार्गों को सुरक्षित रखना।
4. **"March Divided and fight united."** के सिद्धान्त का पालन।
5. शत्रु के सामरिक क्षेत्र को अपने अधिकार में करने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

नेपोलियन ने सैनिक क्षेत्र में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किये :

1. पूर्ण सशस्त्र राष्ट्र (Nation in Arms)—नेपोलियन ने समस्त क्षेत्रों का संगठन राष्ट्रीय स्तर पर किया और उसने अनिवार्य सैनिक सेवा योजना आरम्भ की, जिससे राष्ट्र एक सशस्त्र राष्ट्र के रूप में हो गया। कूट चालों के अलावा सैनिक संख्या का सफलता में सक्रिय योगदान होता था। अनिवार्य सैनिक सेवा पद्धति के द्वारा भी नेपोलियन के सैनिक अत्यन्त ओजस्वी तथा उत्साही थे, जो कि अपनी सफलता के प्रति आशावान होते थे।

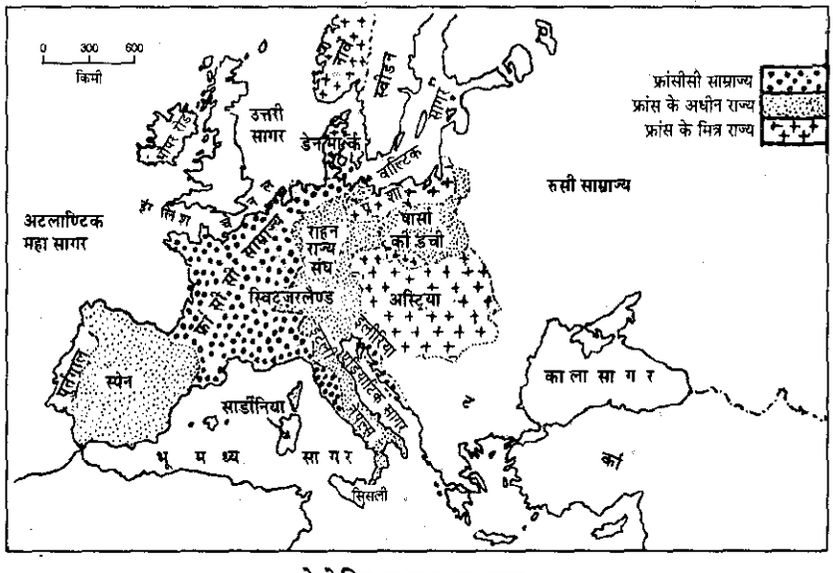

नेपोलियन का साम्राज्य

2. कॉलम संरचना (Column Formation)—नेपोलियन ने अपनी सेना को इस प्रकार से प्रशिक्षित कर दिया था कि उसके द्वारा कॉलम विरचना सरलता के साथ अपनायी जाने लगी थी। कॉलमों की सहायता तथा सुरक्षा के लिए भिड़न्त योद्धाओं की हल्की पैदल सेना का प्रयोग करने पर बल देता था। इस संरचना का प्रयोग केवल कुशल प्रशिक्षित सैनिक ही कर सकने में समर्थ होते थे अन्यथा उन पर नियन्त्रण करना कठिन हो जाता था।

3. डिवीजन पद्धति (Division System)—नेपोलियन ने इस पद्धति का विकास चरम सीमा तक पहुंचा दिया और उसने सभी प्रकार की सेनाओं का मिश्रित डिवीजनों के संगठन की शुरूआत कर दी।

इसके द्वारा सेनाओं में नियन्त्रण करना सरल हो गया तथा उसकी गतिशीलता और कूटयोजनात्मक चालों को चलने के लिए योग्यता में भी वृद्धि हो गयी। इसका प्रभाव यह हुआ कि वे शीघ्रता के साथ किसी निर्णायात्मक स्थान पर एकत्र हो जाते थे और शत्रु को अपने घेरे में घेर लेने मे समर्थ हो गये थे।

4. समूहों का अलग-अलग प्रयोग (The use of Separate Masses)—आत्मनिर्भर डिवीजनों और रसद संरचना के प्रयोग के लिए ही नेपोलियन ने इस समरतान्त्रिक क्रिया के विकसित किया। इस सन्दर्भ में गिल्बर्ट महोदय ने लिखा है

"नेपोलियन की सफलता का रहस्य समूहों का अलग-अलग प्रयोग है। इस पद्धति को अपनाने के कारण सामरिकी में एक मूल-भूत परिवर्तन हो गया और युद्ध के क्षेत्र में एक नवीन युग का उदय हुआ।"

नेपोलियन ने यह प्रमाणित कर दिया कि कार्यवाही की सामरिक अवस्था तक अथवा शत्रु के सम्पर्क स्थापित होने तक समूहों की गतिविधियों को अलग-अलग बनाये रखा जा सकता है। इसका उद्देश्य शत्रु को सभी ओर से उलझाये रखकर तथा आतंकित करके अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना ही होता था।

5. प्रदायवाहिनी में सुधार (Improvement on Logistics)—सेना में पूर्ति व्यवस्था के महत्त्व को नेपोलियन ने विशेष रूप से समझा तथा इसी कारण उसने कहा था कि, **"Army marches on its stomach."** अर्थात् सेना पेट के बल पर चलती है। सेना का क्षेत्र विस्तृत होने के कारण पूर्ति व्यवस्था बनाये रखना एक महत्त्वपूर्ण कार्य था। इसके लिए नियन्त्रण, निर्देशन, समय, दूरी यातायात एवं आपूर्ति आदि का विशेष रूप से ध्यान रखना होता था। गिल्बर्ट ने नेपोलियन की इस प्रतिभा के सन्दर्भ में लिखा है:

"It is on the domain of logistics that Napoleon's genius showed it self most conspicuously."

6. तोपखाने का विकास (Development of Artillery)—नेपोलियन ने तोपखाने के विकास पर विशेष ध्यान दिया, क्योंकि स्वयं ही वह एक कुशल तोपची था तथा उसका सैनिक जीवन तोपखाने की सेवा से आरम्भ हुआ था। उसने तोपखाने की फायर की गति, अचूक निशाने तथा मार की दूरी को बढ़ाने के लिए प्रक्षेप सिद्धान्त को विकसित किया और उच्चकोटि के गोलों का निर्माण कराया। नेपोलियन का तोपखाना शत्रु पर अपना गहरा आतंक फैलाकर उसमें कहर ढ़ा कर रख देता था। फिलिप्स ने इस सन्दर्भ में लिखा है:

"Napoleon used this artillery in masses to break the lines, spread, confusion, and prepare the way for his infantry. The

result was a material saving of lives for his infantry and enhanced chance of victory."

7. **अश्वारोही का विकास (Development of Cavalry)**—नेपोलियन ने शत्रु को चकित करने के लिए तथा अपनी सुरक्षा बनाये रखने के लिए अश्वारोही सेना को विशेष रूप से विकसित किया। उसने अपने समरतन्त्र के अनुसार अश्वारोही सेना का संगठन विभिन्न कार्यों के लिए अनेकों स्तर पर किया। इस सेना का प्रयोग छानबीन करने के लिए, शत्रु को खदेड़ने के लिए, पार्श्व व पृष्ठ की सुरक्षा के लिए किया जाता था। उसने इस सेना को तीन भागों में संगठित किया था—

(क) हल्के अश्वारोही (Light Cavalry)

(ख) मध्यम अश्वारोही (Medium Cavalry)

(ग) भारी अश्वारोही (Heavy Cavalry)

इस सन्दर्भ में Dupuy and Dupuy ने लिखा है—

"By its lightning action in pursuit, French cavalry expolited victory with minimum losses to its own army, Napoleon also used his cavalry very effectively for reconnaissance and for screening."

8. **गतिशीलता का विकास (Development of Mobility)**—नेपोलियन ने गतिशीलता को युद्ध का महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त मानकर अपनाया था। उसका विचार था, कि शत्रु पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए तेजी के साथ आक्रामक कार्यवाही करके ही काम लेना चाहिए। उसने अपने अनेक युद्धों के अनुभवों के आधार पर कहा था कि, **"In future I can lose a battle, but not a single minute."**(भविष्य में मैं युद्ध तो हार सकता हूं, परन्तु एक मिनट खोना सहन नहीं कर सकता) इस प्रकार के विचारों के कारण ही उसने गतिशीलता के सिद्धान्त को विशेष महत्ता प्रदान की।

9. **समरतन्त्र का विकास (Development of Tactics)**— नेपोलियन ने उच्च समरतन्त्र का विकास किया। जिसके अन्तर्गत विशाल सेनाओं को संगठित कर शत्रु पर आश्चर्यचकित ढंग से आक्रमण किया जाता था। उसने युद्ध में अनेक महत्त्वपूर्ण व कूटियोजना चालो का प्रयोग किया, जिससे शत्रु हतप्रद (आश्चर्यचकित) होकर भयभीत हो जाता था । नेपोलियन समरतन्त्र एवं युद्ध नीति का जन्मदाता कहा जाता है, जैसा कि इस सन्दर्भ में मेजर डी०के० पालित ने लिखा है:

"To the students of Art of warfare, be it strategy, tactics or the art of generalship, there is not other period which yield such a rich harvest of lessons as the napolionic era."

10. **कूटयोजना का विकास (Development of Strategy)**—नेपोलियन एक महान् युद्ध नीतिज्ञ था उसने अपनी योजनाओं को बड़े सुनियोजित एवं क्रमिक ढंग से अपनाया था। युद्ध आरम्भ होने के पूर्व वह अपनी कूटयोजना इस प्रकार निर्धारित किया करता था कि वह शत्रु के लिए अधिक से अधिक हानिकारक तथा स्वयं के लिए अधिक से अधिक लाभदायी सिद्ध होती थी। प्रत्येक कदम वह (नेपोलियन) सावधानी के साथ

युद्ध क्षेत्र के लिए उठाता था। इस सन्दर्भ में मेजर फिलिप्स का यह कथन उल्लेखनीय है:

"Napoleon was the first great strategist of the western world. His battles were the result of his strategical movements and were carefully calculated."

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि कूट-योजनात्मक एवं समरतान्त्रिक दृष्टिकोण से सैन्य इतिहास में नेपोलियन का योगदान अद्वितीय सा प्रतीत होता है उसके द्वारा अपनाये गये नियम आज के सिद्धान्त माने जाते हैं। इसी कारण डी०के०पालित महोदय ने लिखा है, **"युद्ध कला के विद्यार्थियों को युद्धनीति, समरतन्त्र तथा नेतृत्व कला के सम्बन्ध में जितनी शिक्षा नेपोलियन के युग से मिलती है उतनी किसी और युग से नहीं।"**

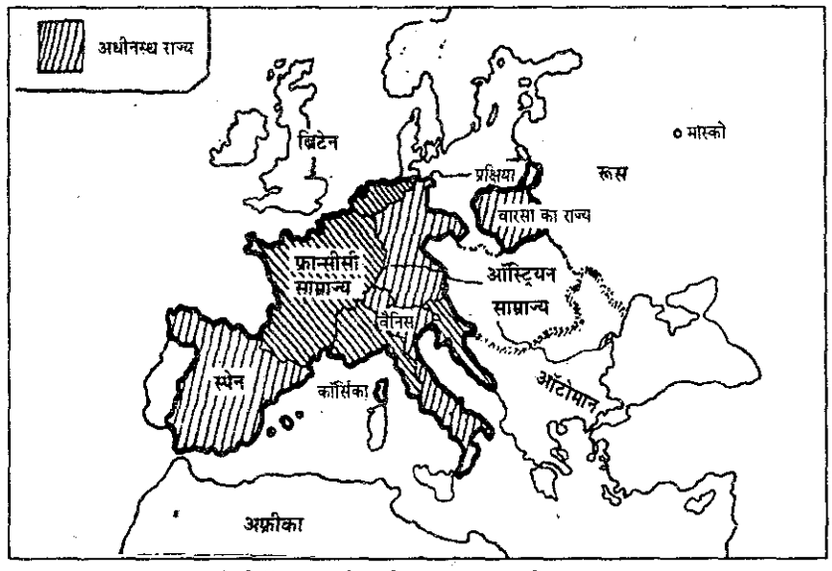

नेपोलियन के सैन्य सूत्र व सिद्धान्त
(Napoleoan Military Formula and Principles)

महान सेनापति नेपोलियन बोनापार्ट के सैन्य अनुभवों, समरतन्त्र एवं युद्ध कौशल आदि से सम्बन्धित विचारों एवं सूबों को पहली बार 1827 में जनरल बर्नाड (Gen. Barnod) ने प्रकाशित किया। महान सेनानायक के सैन्य सूत्रों एवं सिद्धान्तों को समझने एवं जानने के लक्ष्य से इसकी पुस्तक की अनेक भाषाओं में अनुवादित करके भी प्रकाशित किया गया। अमेरिका में इसका एक विशिष्ट संस्करण (Special Edition) प्रकाशित करने के लिए स्टोनवेल जैक्सन (Stonwell Jackson) ने नेपोलियन के सैन्य अभियानों एवं योजनाओं का विस्तृत अध्ययन किया। विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात्

जनरल बर्नाड ने अपने प्रथम संस्करण में नेपोलियन के 115 सैन्य सूत्रों (Formula's) का वर्णन किया था, उनमें से प्रमुख सूत्र इस प्रकार से है—

1. किसी भी अभियान का आरम्भ करने से पूर्व एक निश्चित लक्ष्य का निर्धारण एवं उसकी प्राप्ति के हर संभव प्रयास बहुत जरूरी है। यह युद्ध कला का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त भी है।

2. युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिए जरूरी है, कमान की एकता (Unity of Command) के आधार पर कार्यवाही की जाये।

3. युद्ध में सफलता का अवसर एक बार ही आता है, अत: उसका लाभ उठाना सदैव हितकारी होता है। इसमें कतई चूक नहीं की जानी चाहिए।

4. प्रत्येक युद्ध विधिवत एवं सुव्यवस्थित तरीके के आधार पर ही लड़ना चाहिए, जल्दवाजी उचित नहीं है।

5. अपनी सेनाओं के शत्रु के प्रतिरोध हेतु सतत् सतर्क एवं सज्जित रखना चाहिए ताकि आयात स्थिति में भी आसानी से निपटा जा सके।

6. विभिन्न सैन्य दलों में आपसी सहयोग एवं तालमेल होना बहुत आवश्यक होता है जिसकी अवहेलना कभी भी नहीं की जानी चाहिए। अपनी सेना के सभी अंगों को इस प्रकार से तैयार करना चाहिए कि वे प्रत्येक स्थिति में एक दूसरे को सक्रिय सहयोग दे सके।

7. अपने सैन्य दल की विजय सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि पराजित सेना का तेजी के साथ पीछा करके उसे पुन: संगठित होने का अवसर नहीं दिया जाना चाहिए।

8. पैदल सेना, नि:सन्देह रूप से सम्पूर्ण सेना को शक्ति-बल (Sinew of Army) होती है।

9. पैदल सेना की अपेक्षा घुड़सवार सेनाओं को तोपखाने के सहयोग की अधिक आवश्यकता पड़ती है।

10. नौ सेना युद्ध की अपेक्षा स्थल युद्ध में अधिक सैनिकों को जरूरत पड़ती है, क्योंकि जमीनी लड़ाई में सैनिकों को प्रतिदिन युद्धरत रहना पड़ता है।

11. एक कुशल सेनापति को युद्ध कला को रहस्यों का जानने व समझने के लिए जरूरी है कि वह सिकन्दर, हेनीबल, गुस्टावस सीजर, तुरीन, यूजीन और फ्रेडिक के सैन्य अभियानों का बार-बार अध्ययन, मनन एवं चिन्तन करे और उन्हें अपना आदर्श बनाये।

12. कुशल सैन्य संचालन के लिए जरूरी है कि प्रदायवाहिकी (Logistics) पर विशेष ध्यान दे, उसका कहना था कि **"सेना पेट के बल पर चलती है।"**

13. एक सेनापति के लिए जरूरी है कि अपनी युद्धनीतिक तथा समरतान्त्रिक अवस्थाओं में सुव्यवस्थित संचार व्यवस्था बनाये रखे।

14. युद्ध आरम्भ करने के पूर्व सम्बन्धित क्षेत्र का भौगोलिक विश्लेषण करने पर

विशेष ध्यान देना चाहिए, ताकि अपनी सेनाओं का उपभोग उसी के अनुरूप किया जा सके।

15. अपनी योजनाओं को गुप्त रखना तथा शत्रु पर आकस्मिक कार्यवाही करके उसे आश्चर्य में डालना सफलता का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।

नेपोलियन एक विलक्षण प्रतिभा का धनी सेनापति था, वह समय की नब्ज को देखना भलीभांति जानता था। उसने अपने सैन्य सूबों एवं सिद्धान्तों का पालन करते हुए ही अनेक अनापेक्षित सफलताये भी प्राप्त की। नेपोलियन ने रणनीति के साथ-साथ युद्ध वित्त व्यवस्था, सैन्य प्रस्थान, हथियारों, संभरण व्यवस्था (Logistics) व प्रशासन सम्बन्धी विभिन्न बिन्दुओं पर स्वयं ही आदेश देता था। इसके साथ ही अपनी युद्ध योजनाओं में आक्रमणात्मक कार्यवाही **(Offencive Action)**, आश्चर्यचकित **(Surprise)**, गतिशीलता **(Mobility)**, सहयोग **(co-operation)**, संकेन्द्रण **(Centralization)** तथा शक्ति की मितव्ययता **(Economy of Force)** जैसे युद्ध के सिद्धान्तों का विशेष महत्त्व प्रदान करता था। इसके साथ ही शत्रु की सेना पर मानसिक दबाव बनाये रखने के लिए मनोवैज्ञानिक तत्वों **(Psychological Factors)** पर भी विशेष ध्यान देता था। नेपोलियन शत्रु के केन्द्र पर आक्रमण करने के लिए पहले उसके दोनों पार्श्व को घेरबन्दी कर लेता था और इस समरतन्त्र को अपनाकर उसे अनेक अभियानों में अप्रत्याशित सफलता भी मिली। उसने अपनी प्रखर प्रतिभा के बल पर गुप्तचर विभाग, पुलिस विभाग एवं गृह विभाग का संगठन करके एक योग्य शासन प्रणाली की नीवं रखी। नेपोलियन ने एक अवसर पर स्वयं कहा था कि **'मैं क्रान्ति हूं।'**

नेपोलियन ने फ्रान्स की क्रान्ति (1789) का पूरा लाभ उठाया और सभी योग्य व्यक्तियों के लिये सैन्य सेवा अनिवार्य बना दी। नेपोलियन को एक ऐसी सेना का नेतृत्व करने को मिला जो कि एक नागरिकों की सेना थी। इसके कारण युद्ध का स्वरूप ही बदल गया था। नेपोलियन स्थल युद्ध कला का उस्ताद था और वह युद्ध जीतता ही गया। सारा यूरोप उसके नाम से थर्राता था और उसका ऐसा दबदबा था जैसा उसके पहले और बाद में आज तक किसी का नहीं हुआ। मारेंगो, उल्म, आस्तर लित्ज, जैना, ईल, वैग्रम तथा फ्रीडलैण्ड आदि उसकी जीती हुई मशहूर लड़ाईयों के नाम है। स्पेन, इटली, नीदरलैण्ड, राइन का कान्फेडरेशन कहलाने वांला जर्मनी का एक बड़ा हिस्सा पोलैण्ड, जो वारसा की डची कहलाता था ये सभी राज्य उसके आधीन हो गये थे। पुराना पवित्र रोमन साम्राज्य, जो बहुत दिनों से केवल नाम मात्र के लिए रह गया था वह अब बिल्कुल समाप्त हो गया। विश्व के इस अद्वितीय सेनानायक को युद्ध का देवता (The God of war) भी कहा जाता था। जोमिनी एवं क्लाजविट्ज जैसे प्रसिद्ध सैन्य विचारकों ने अपने संकलित लेखों में नेपोलियन के व्याख्यानों का उल्लेख स्पष्ट रूप से किया है।

सामरिक विश्लेषण के साथ ही नेपोलियन ने राजनैतिक क्षेत्र में भी अपनी अनोखी प्रतिभा प्रदर्शित की और उसने नागरिक कानूनों का संकलन उसका सर्वाधिक स्थायी कार्य कहा जाता है। आज भी फ्रान्स में एक मात्र मान्य विवाह पद्धति "सिविल मैरिज" के

समय पर वर-बधू (Bride & Groom)को नेपोलियन बोनापार्ट को संहिता की धाराओं के अन्तर्गत शपथ लेनी पड़ती है नेपोलियन ने स्वयं कहा था कि—

"मेरा वास्तविक गौरव मेरी 40 युद्धों की विजय में नही है। मेरी विधि की संहिता ऐसी है, जो कभी न मिट सकेगी और जो चिर स्थायी सिद्ध होगी।" यद्यपि नेपोलियन का उसके सिविल कोड के लिए ही याद किया जाता है। निम्न पांच विधि संहिताओं का संकलन हुआ था—

—**सिविल कोड** (नागरिक संहिता)

—**कोड ऑफ सिविल प्रोसीजर** (नाभिक प्रक्रिया की संहिता)

—**पीनल कोड** (फौजदारी कानून)

—**कोड ऑफ क्रिमिनल प्रोसीजर** (अपराधमूलक प्रक्रिया की संहिता)

—**कामर्शियल कोड** (व्यवसाय सम्बन्धी कानून)

इस प्रकार नेपोलियन ने न केवल सैन्य सूत्रों एवं सिद्धान्तों पर बल दिया बल्कि सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक स्थिति का भी विशेषज्ञ के रूप में विश्लेषण किया और अपने नये सिद्धान्त प्रतिपादित किये।

2. वाटरलू का युद्ध–1815 ई० (Battle of Waterloo—1815 A.D.)

पाश्चात्य सैन्य इतिहास का यह प्रसिद्ध संग्राम महान् सेनानायक नेपोलियन तथा अंग्रेज़ सेनानायक वेलिगंटन के मध्य जून 1815 ई० में लड़ा गया। इस युद्ध का विशेष महत्त्व इसलिए है कि जिस नेपोलियन का लगभग सम्पूर्ण योरोप पर अधिकार हो गया था, वह इस युद्ध में अपनी भूल के कारण ही पराजित हुआ। इस महान् योद्धा के नाम से समस्त योरोप भय खाता था उसने जीत की बजाय हार का मुंह देखा। यही उसके जीवन का अन्तिम अभियान था। जिस नेपोलियन ने अपनी अलौकिक सैन्य प्रतिभा के बल पर अनेकों अभियानों में महत्त्वपूर्ण विजय श्री हासिल की हो आखिर उसे अन्तिम युद्ध में पराजय का हार पहनना पड़ा। नेपोलियन की लोक प्रियता के सामने लुई ने विरोध करना ठीक नहीं समझा और वह उसके पेरिस में प्रवेश से पूर्व ही फ्रान्स छोड़कर भाग गया।

लिप जिग (Leip Zig) के संग्राम में पराजय के बाद नेपोलियन के सामने यह समस्या थी, कि वह अपनी सेना को फिर से किस प्रकार संगठित करे ? सैनिकों की कमी न होने पर भी साज-सज्जा का तुलनात्मक अभाव अधिक था। उसके अनेक योग्य सेनानायक लुई अठारह (Louis X VIII) से मिल गये थे। इन समस्याओं के बावजूद भी कई लाख की सेना एकत्रित कर ली तथा अपनी पांच कोरों (Five Corps) को दो टुकड़ियों मे संगठित किया।

दूसरी ओर मित्र राष्ट्रों को जैसे ही वियना में यह खबर मिली कि नेपोलियन फ्रान्स वापस आ गया है, तो उन्होंने आपसी मतभेदों को भुलाकर नेपोलियन के विरुद्ध संगठित होकर युद्ध के लिए तैयारियां करने लगे। नेपोलियन ने फ्रान्स की जनता को इस समय जो सन्देश दिया, उसमें यही कहा था कि वह उसकी रक्षा के लिए आया है और क्रान्ति से जनता को जो फायदे हुए थे वे संकट में पड़ गये हैं। उसने यह भी कहा कि भविष्य में वह शान्ति के मार्ग को अपनायेगा, किन्तु मित्र राष्ट्र उसके इस भाषण पर विश्वास करने वाले नहीं थे और उन्होंने एक लाख से अधिक सेना वेलिंगटन के नेतृत्व में ब्रुसेल्स से रवाना कर दी। इसी प्रकार एक लाख से अधिक सैनिक ब्लूसर से नेतृत्व में नामूर से रवाना कर दिये। इसके साथ ही आपात् कालीन अवस्था के लिए एक और सेना को सुरक्षित (Reserve) रखा था।

तुलनात्मक सैन्य-शक्ति
(Comparative Military Strength)

वाटरलू के इस प्रसिद्ध युद्ध में ब्रिटिश सेना के सेनानायक ड्यूक ऑफ वेलिंगटन तथा नेपोलियन ने अपने अपने पक्षों की सेनायें इस प्रकार से संगठित की थी—

ड्यूक ऑफ वेलिंगटन की सेना—

पैदल सैनिक—	49608
अश्वारोही—	12402
तोपची—	5645
तोपें—	67,655
कुल सैनिक संख्या—	67,655

इस दल में मात्र 24000 ब्रिटिश सैनिक थे। इसके साथ ही 6000 जर्मन लीजन के सैनिक भी ड्यूक ऑफ वेलिंगटन के साथ थे। जर्मन लीजन सैनिक अत्यन्त उत्साही, वीर एवं बलिदानी सैनिक थे, यह प्रत्येक परिस्थिति में शत्रु का डटकर मुकाबला कर सकते थे। इसके अलावा प्रशिया के सेनापति **ब्यूसर** के नेतृत्व में लगभग 20,000 सैनिक भी नेपोलियन के विरुद्ध मोर्चा लेने के लिए तैनात थे।

नेपोलियन की सेना—

पैदल सैनिक—	48950
अश्वारोही—	15765
तोपची—	7232
तोपें—	246
कुल सैनिक संख्या—	71947

नेपोलियन की योजना—

उधर नेपोलियन ने यह अनुमान लगाया कि शत्रु 1 जुलाई से पूर्व आगे नहीं बढ़ सकेंगे इसलिए वह वेलिङ्गटन को ब्लूसर से मिलने के पूर्व ही बेल्जियम में पराजित करने को तैयार हो गया। जब ब्लूसर को इसके इरादे का पता लग गया तो उसने सामप्रेफ की ओर

आया। 15 जून को नेपोलियन साम्ब्रे (Sambre) को पार करके लिग्नी (Ligny) नामक स्थान पर ब्लूसर की सेना को पराजित करने में सफल हुआ।

नेपोलियन की योजना यह थी कि ब्लूसर के बाँये पार्श्व को घुड़सवारों द्वारा रोककर उसके मध्य तथा दाहिने भाग को नष्ट कर दिया जाये। उसका इरादा सामने तथा पीछे दोनों ओर से आक्रमण करने का था, जिससे शत्रु बांयी तरफ लिग्नी की ओर वापस लौट जाये और वेलिङ्गटन से न मिल सके, परन्तु दुर्भाग्यवश उसकी यह योजना सफल नहीं हो सकी। इस कार्यवाही के दौरान ब्लूसर घायल होने के कारण मेलरी ले जाया गया वहां उसने वेलिगंटन से मिलने का प्रयास किया। दूसरी ओर वेलिगंटन को यह सूचना मिली की ब्लूसर ब्रेबर की ओर पीछे हट रहा है अत: इसने भी पीछे हटने का निश्चय कर लिया तथा ब्लूसर को यह सूचना दे दी कि वह मान्टसेण्ट जोन लौट रहा है। यदि उसे ब्लूसर को वहां सहायता मिली तो निश्चित रूप से युद्ध करेगा। वेलिगंटन ने (Ney) की अकर्मण्यता के कारण ही सुरक्षित पीछे की ओर हट गया। जब नेपोलियन वहां पहुंचा तो उसने वेलिगंटन का पीछा किया, परन्तु भीषण वर्षा एवं तूफान के कारण उसे कामयाबी हासिल नहीं हुई और विवश होकर नेपोलियन को वहीं रुकना पड़ा। 18 जून को दो बजे यह सूचना मिली कि ब्लूसर की सेना ब्रेबर की ओर जा रही है तो नेपोलियन ने तुरन्त ग्रांऊची को आदेश दिया कि वह इसका पीछा करे, परन्तु देरी के कारण ब्लूसर की सेना ब्रेबर पहुंच गयी।

जिस समय नेपोलियन अपनी सेना के साथ युद्ध भूमि में पहुंचा और उसने भूमि का पर्यवेक्षण किया तो उसे यह सलाह दी गयी कि भूमि गीली है अत: अभी आक्रमण करना ठीक नहीं होगा। यही नेपोलियन की भीषण भूल सिद्ध हुयी जो यह कहता था कि:

"In future I can lose a battle, but not a single minute" यही आक्रमण दो घण्टे पूर्व शुरू हो जाता तो ब्लूसर की सेना आने के पूर्व ही वेलिगंटन पूरी तरह से पराजित हो जाता।

वास्तविक संघर्ष
(Real Conflict)

संग्राम के प्रथम चरण में नेपोलियन के तोपखाने ने 11.30 बजे सुबह फायर आरम्भ कर दिया। जारोङ्ग की योजना के अनुसार होगोमान्ट (Hougomant) पर प्रदर्शन मात्र करना था, परन्तु उसने अधिकार करने का प्रयत्न किया जिससे पासा पलट गया। इसी बीच नेपोलियन ने वेलिगंटन के मध्य भाग पर आक्रमण करने का निश्चय किया। इसी समय उसके दाहिने पार्श्व से प्रशा की सेना आने का समाचार मिला तो उसने इस बाधा को दूर करने के लिए नेपोलियन ने गांऊची को बुलवाया तथा अपनी एक टुकड़ी दांये पार्श्व की रक्षा के लिए भेज दी तथा अपने कमाण्डर ने (Ney) को आक्रमण का आदेश दिया परन्तु दोषपूर्ण समरतन्त्र के कारण ही डी०एरलाङ्ग (D Arlong) को मार खाकर पीछे हटना पड़ा। इस दौरान अंग्रेज़ सेना आगे की ओर बढ़ गयी, जिससे अंग्रेज़ मार खा गये। लगभग 3.00 बजे दोपहर बाद युद्ध थम गया। इस समय दोनों ही पक्षों की हालत गम्भीर थी। नेपोलियन को यह समाचार मिल गया कि ग्रांऊची उसकी सहायता के लिए नहीं आ सकता, तब उसने युद्ध रोका था।

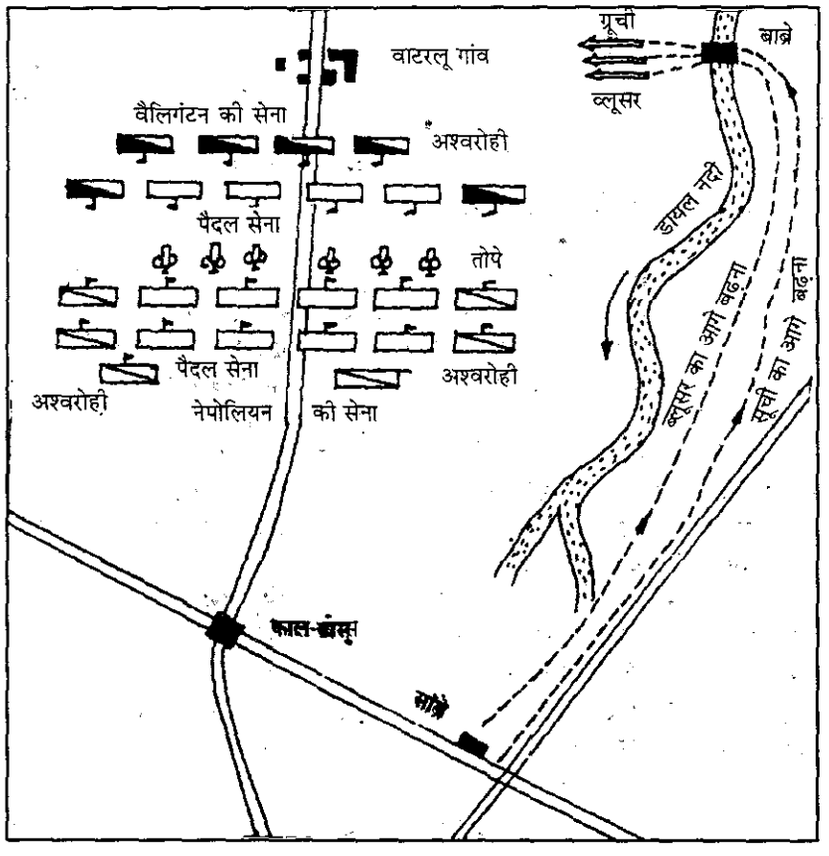

वाटरलू की लड़ाई 1215 ई०

दूसरी ओर वेलिंगटन को भी बहुत हानि उठानी पड़ी थी। उसकी योजना ब्लूसर की सहायता के द्वारा ही सम्भव थी, जबकि नेपोलियन का इरादा यह था कि ब्लूसर की सहायता मिलने के पूर्व ही वेलिंगटन को पराजित कर दिया जाये। इसका उसने प्रबन्ध कर लिया तथा भीषण गोलाबारी आरम्भ कर दी, परन्तु ने (Ney) बिना नेपोलियन की आज्ञा के ही बांये पार्श्व पर अश्वारोही सेना से आक्रमण कर दिया तथा जोश में आकर वेलिंगटन के तोपखाने पर भी कब्जा कर लिया तो उसने तोपखाने को नष्ट न करके पैदल सेना पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के प्रत्याक्रमण में वेलिंगटन की अश्वारोही ने सेनापति ने (Ney) की सेना को पीछे खदेड़ दिया तथा तोपखाने से फायर डाल दिया। इस दौरान ने (Ney) की सेना ने पुनः कब्जा करने का प्रयास किया, परन्तु तीनों सेनाओं के साथ में उपयोग न हो सकने के कारण आगे बढ़ न सका। जब पैदल सेना को नेपोलियन ने आगे बढ़ने का आदेश दिया, तो उसे भी बुरी तरह से पराजित होना पड़ा।

इस दौरान नेपोलियन अपनी सेना का उत्साह बढ़ाने के लिए चारों ओर घूम रहा था। इसी समय उसने ने (Ney) को Lattay sent पर अधिकार करने का आदेश दिया और इस कार्यवाही में ने (Ney) को सफलता भी मिल गयी, परन्तु इसके सैनिक बुरी तरह से थक चुके थे, इस कारण नेपोलियन से तुरन्त सहायता मांगी, परन्तु दुर्भाग्यवश इस समय नेपोलियन कोई सहायता नहीं कर सका। यदि इस समय सहायता मिल जाती तो निश्चित ही वेलिगंटन पराजित हो जाता। स्थिति की गम्भीरता का अध्ययन कर वेलिंगटन ने स्वयं आ करके इस मोर्चे को आकर संभाल लिया। यह नेपोलियन की दूसरी बड़ी भूल सिद्ध हुई।

उस दौरान नेपोलियन की स्थिति भी अत्यन्त गम्भीर थी, उसे दाहिने तथा पीछे दोनों ओर से शत्रु के आने का भय था। इस कारण उस समय सहायता नहीं कर सका। बाद में गार्ड की 8 बटालियन ने (Ney) को सौंप दी, परन्तु इस समय जा चुका था। अगले आक्रमण में ने (Ney) को कोई सफलता नहीं मिली, बल्कि स्वयं ही उसे अधिक हानि उठानी पड़ी।

जिस समय फ्रान्सीसी सेना का वेलिगंटन पर अन्तिम आक्रमण होने वाला था, उसी समय जीथेन **वेलिगंटन** की सहायता के लिए आ गया तथा उसने अनेक फ्रान्सीसी सैनिक दलों को खदेड़ दिया था। बेलिङ्टन ने जब शत्रु को अस्त-व्यस्त देखा तो अन्तिम आक्रमण का संकेत किया और अपने 40,0000 अश्वारोही सेना के साथ शत्रु पर तेज़ी से टूट पड़े परिणामस्वरूप नेपोलियन को पराजित होना पड़ा और पीछे लौट गया। परन्तु मित्र राष्ट्रों की सेनाओं ने नेपोलियन को फ्रान्स से भागने नहीं दिया और 15 जुलाई 1815 को उसने एक नौ सेनापति के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। अंग्रेजों ने नेपोलियन को पकड़ कर सेण्ट हेलना द्वीप पर 3 अधिकारी,1 चिकित्सक तथा 12 सेवकों के साथ एक बन्दी के रूप में रखा जहां वह 2 मई 1821 को एक लम्बी बिमारी के पश्चात् दिवंगत हुआ।

युद्ध का परिणाम
(Result of War)

इस ऐतिहासिक युद्ध के परिणामस्वरूप जहां एक और ब्रिटिश साम्राज्य को एक बड़ी प्रसिद्ध (ख्याति) मिली, वहां दूसरी ओर उसे अत्यधिक आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ा। यूरोप के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आ गया और फलस्वरूप निरकुंशवाद और प्रजातान्त्रिक प्रणालियां पनपने लगी। यूरोप के सैनिक वातावरण में एक बार शिथिलता आ गयी। नेपोलियन के पतन के पश्चात यूरोप में प्रतिक्रियावाद का बोलबाला हो गया तथा यूरोपीय देशों को अनेक क्रान्तियों का सामना करना पड़ा। नेपोलियन के कठोर शासन से तंग आ रहे देश जैसे स्वीडन, रूस, जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली, स्पेन, पुर्तगाल एवं स्विट्ज़रलैंड आदि एक बार पुन: एकत्रित होकर अपने स्वाभिमान एवं राष्ट्रीय गौरव को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो गये। सभी देशों में राष्ट्रीयता की भावना पूरी तरह उत्तेजित हो गयी।

नेपोलियन के सन्दर्भ में एक जर्मन विचारक ने आलोचनात्मक प्रसंग में लिखा है—

''नेपोलियन एक भीषण उल्कापात की तरह आया और गायब हो गया। उसने

जितना बनाया उससे कहीं अधिक नष्ट किया, परन्तु अन्ततः यह मानना पड़ेगा कि उसने अलसाये यूरोप को नींद से जगा दिया और राष्ट्रों की भावी एकता का मार्ग प्रशस्त कर दिया।''

सैन्य शिक्षायें

(Military Lessons)

1. नेपोलियन एक महत्वाकांक्षी सेनापति था, उसकी पराजय का प्रमुख कारण था। वह कभी भी दूसरों की सलाह मानने की जरूरत अनुभव नहीं करता था, न ही उसके शब्दकोष में 'असम्भव' शब्द था।

2. व्यक्तिवादी हो जाने के कारण फ्रान्स की भी परवाह न करना भी उसकी पराजय का एक कारण सिद्ध हुआ।

3. उसका किसी भी व्यक्ति पर अधिक विश्वास नहीं था, जिसके कारण उसके सच्चे मित्र भी उससे दूर हो गये थे।

4. अपनी आन्तरिक व्यवस्था पर ध्यान न देकर उसने अपना लगातार विस्तार करना चाहा, जो उसकी पराजय का एक प्रमुख कारण बना।

5. जो व्यक्ति समय का इतना पाबन्द था, वही व्यक्ति समय (मौका) खो देने के कारण दोनों मौकों पर शत्रु को लाभ दे रहा था। वह उसकी पराजय का स्वाभाविक रूप से प्रमुख कारण बना।

6. उसकी अनेक समरतान्त्रिक भूलें थीं, जिसके कारण उसे अपमानजनक पराजय का मुंह देखना पड़ा।

7. सेना का विस्तार हो जाने के कारण उसमें आपूर्ति व्यवस्था का पूरा अभाव सा होता चला गया।

8. भागते हुए शत्रु का पीछा न करना भी उसके समरतन्त्र की एक भारी भूल थी जो पराजय का एक प्रमुख कारण प्रमाणित हुई।

9. अपने देश से दूर जाकर युद्ध करके आपूर्ति व्यवस्था बनाये रखना सम्भव न हो पाया जो पराजय का कारण सिद्ध हुआ।

10. जर्मन, रूस तथा स्पेन के गुरिल्ला सैनिकों के सामने नेपोलियन के सैनिक सफल नहीं हो सके। नेपोलियन की अन्तिम पराजय के कारण इस युद्ध का विशेष ऐतिहासिक महत्त्व है। वह अपने ही सिद्धान्तों को भूलकर सफलता प्राप्त करना चाहता था, जो कि उसकी हार का प्रमुख कारण बना और इसी के साथ ही विश्व इतिहास का पृष्ठ उल्ट गया। इस युद्ध ने संसार के सैन्य इतिहास में नेपोलियन की सैन्य प्रतिभा को बहुत बड़ा आघात पहुंचाया। विश्व विजेता बनने की ललक वाला सेनापति नेपोलियन अपने ही निर्धारित सिद्धान्तों का सही रूप मे पालन नहीं कर सका। अन्ततः उसे पराजय का मुंह देखना पड़ा। उसकी पराजय के बावजूद विश्व इतिहास में अपने अनूठे नेतृत्व एवं प्रतिभा के लिए वह सदैव अमर रहेगा।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. 'युद्धकला के विद्यार्थियों के लिए नेपोलियन काल के अलावा और कोई ऐसा समय नहीं है, जो इतना पाठ सिखा सके जितना कि नेपोलियन काल।' इस कथन की समीक्षा करो।
2. युद्धकला कौशल के प्रति नेपोलियन की देन अथवा योगदान का मूल्याङ्कन सविस्तार में करो।
3. 'नेपोलियन अपने युग का एक महान सेनापति था उक्त कथन की व्याख्या करते हुए उसके सैन्य सुधारों का सविस्तारपूर्वक उल्लेख कीजिए।
4. 'वाटर लू का संग्राम (Battle of Waterloo) योरोपीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण युद्ध माना जाता है।'इस कथन की समीक्षा करते हुए सैनिक शिक्षाओं का सविस्तार पूर्वक उल्लेख कीजिए।
5. ''वाटर लू का संग्राम (Battle of Waterloo) की समरतान्त्रिक विवेचना, वास्तविक घटनाक्रम तथा सैन्य शिक्षाओं का उल्लेख कीजिए।
6. ''नेपोलियन ने 10 वीं शताब्दी की युद्धकला को नष्ट कर एक नवीन कला को जन्म दिया।'' कथन की व्याख्या करो।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(Objective Type Questions)

प्रश्न 1. नेपोलियन का जन्म हुआ था—

(क) 15 अगस्त 1769 ई० को (ख) 15 अक्तूबर 1679 ई० को
(ग) 15 अप्रैल 1669 ई०को (घ) 15 अगस्त 1679 ई० को

प्रश्न 2. 'अलग- अलग आगे बढ़ो तथा संगठित होकर लड़ो' यह कथन किस विचारक का है ?

(क) गुस्टावस एडाल्फस का (ख) नेपोलियन का
(ग) सिकन्दर महान का (घ) फ्रैड्रिक महान का

प्रश्न 3. 'सेना पेट के बल चलती है' कथन किसका है ?

(क) सिकन्दर महान का (ख) फ्रैड्रिक महान का
(ग) नेपोलियन का (घ) गुस्टावस एडाल्फस का

प्रश्न 4. 'सेना पेट के बल चलती है' से अभिप्राय है—

(क) सेना की कार्यकुशलता (ख) सेना की आपूर्ति व्यवस्था
(ग) सेना की गतिशीलता (घ) सेना का मनोबल

प्रश्न 5. 'भविष्य में मैं युद्ध तो हार सकता हूं, परन्तु एक मिनट खोना सहन नहीं कर सकता' कथन किसका है ?

(क) सिकन्दर का (ख) सन्तजू का
(ग) कलाजविट्ज का (घ) नेपोलियन का

प्रश्न 6. 'वाटर लू' का संग्राम कब लड़ा गया ?

(क) मई 1818 ई० में (ख) जून 1815 ई० में
(ग) जून 1518 ई० में (घ) मई 1814 ई० में

प्रश्न 7. वाटर लू के युद्ध में नेपोलियन का प्रतिद्वन्दी नायक था—

(क) लुई अठारहवां (ख) वेलिङ्गटन
(ग) फिलिप द्वितीय (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

प्रश्न 8. नेपोलियन ने युद्ध में आत्म-समर्पण किया—

(क) 15 अगस्त 1817 ई० को (ख) 15 जुलाई 1816 ई० को
(ग) 15 जुलाई 1815 ई० को (घ) 15 अगस्त 1818 ई० को

प्रश्न 9. 'वाटर लू' से किसे जाना जाता है—

(क) सैन्य विचारक को (ख) प्रसिद्ध कम्पनी को
(ग) प्रसिद्ध मशीन को (घ) प्रसिद्ध संग्राम को

प्रश्न 10. 'वाटल लू' युद्ध किन सेनापतियों के मध्य लड़ा गया ?

(क) नेपोलियन तथा लुई (ख) नेपोलियन तथा वेलिङ्गटन ?
(ग) नेपोलियन तथा ड्यूक (घ) नेपोलियन तथा नेल्सन

प्रश्न 11. नेपोलियन की मृत्यु हुई थी—

(क) सेण्ट हेलना में (ख) कोर्सिका में
(ग) पेरिस में (घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

प्रश्न 12. नेपोलियन की मृत्यु हुई थी—

(क) 12 मई 1820 ई० में (ख) 2 मई 1819 ई० में
(ग) 2 मई 1821 ई० में (घ) 22 मई 1822 ई० को

प्रश्न 13. नेपोलियन के सैन्य सूत्रों का उल्लेख किया है—

(क) जनरल बनार्ड ने (ख) नेल्सन ने
(ग) वेलिगंटन ने (घ) ब्लूसर ने

प्रश्न 14. जनरल बनार्ड ने नेपोलियन के कितने सैन्य सूत्र (Formula) वर्णित किये ?

(क) 125 सूत्र (ख) 115 सूत्र
(ग) 120 सूत्र (घ) 100 सूत्र

प्रश्न 15. कौन कहता था कि "मैं क्रान्ति हूं" ?

(क) नेल्सन (ख) हिटलर
(ग) नेपोलियन (घ) ब्लूसर

प्रश्न 16. युद्ध का देवता (The God of War) किसे कहा जाता था ?

(क) हिटलर को (ख) सिकन्दर को

(ग) मुसोलिनी को (घ) नेपोलियन को

प्रश्न 17. नेपोलियन को आज भी किस कोड के किए याद किया जाता है ?

(क) पीनल कोड (ख) कोड ऑफ सिविल प्रोसीजर

(ग) सिविल कोड (घ) कामर्शियल कोड

प्रश्न 18. नेपोलियन की कितनी संहिताओं (कोड) का उल्लेख किया ?

(क) पांच (ख) आठ

(ग) सात (घ) दस

प्रश्न 19. ब्लूसर किस राज्य का सेनापति था—

(क) प्रशिया (ख) आस्ट्रिया

(ग) फ्रान्स (घ) इंग्लैण्ड

प्रश्न 20. ड्यूक ऑफ वेलिंगटन किस सेना का सेनापति था ?

(क) फ्रान्स (ख) प्रशिया

(ग) स्वीडन (घ) इंग्लैंण्ड

प्रश्न 21. नेपोलियन का अन्तिम युद्ध कौन था ?

(क) मारेगो (ख) उल्म

(ग) वाटर लू (घ) लिपजिक

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर
(Answers of Objective Type Questions)

1. (क)	2. (ख)	3. (ग)	4. (ख)	5. (घ)
6. (ख)	7. (ख)	8. (ग)	9. (घ)	10. (ख)
11. (क)	12. (ग)	13. (क)	14. (ख)	15. (ग)
16. (घ)	17. (ग)	18. (क)	19. (क)	20. (क)
21. (ग)	22.			

8 समकालीन सैन्य विचारक (CONTEMPORARY MILITARY THINKERS)

1. सन्तजू (Sun-Tzu)

यह महान् सैन्य विचारक चीन का सेनापति था। उसकी प्रसिद्ध पुस्तक 'युद्ध-कला' (The Art of War) विश्व के सबसे प्राचीन सैन्य-लेख के रूप में मानी जाती है। इसके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त आज 2500 वर्ष बाद भी युद्ध की प्रकृति के लिए बहुमूल्य मार्गदर्शक है। युद्ध सम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण तत्त्वों एवं सिद्धान्तों का उल्लेख स्पष्ट रूप से किया गया है। एक विद्वान् ने इस सन्दर्भ में लिखा है कि :

In strategical and tactical point of view Suntzu's book 'The Art of War' is greater military writing in chinese literature."

इस महान् सैन्य विचारक के बताये गये नियम आज की परीक्षा की कसौटी में पूरी तरह से खरे उतरते हैं। इसने युद्ध के प्रत्येक पहलू का विश्लेषण अपनी बुद्धिमता एवं प्रतिभा के द्वारा किया है। अब हम उसके द्वारा बताये गये सैन्य सिद्धान्तों एवं नियमों का संक्षिप्त रूप में उल्लेख करते हैं :

1. **योजना रचना (Laying of Plan)**—सन्तजू ने राज्य के लिए युद्धकला को अत्यन्त आवश्यक माना और कहा कि युद्ध खोज का विषय है, जिसकी किसी भी कीमत में उपेक्षा नहीं की जा सकती। इस सन्दर्भ में उसने लिखा है कि :

"War is great affair of state,
The realm of life and death,
The road to safety or ruin,
a thing to be studied with extreme deligence."

(युद्ध राज्य का एक महान कार्य है, जीवन-मरण का क्षेत्र है, सुरक्षा एवं विनाश का मार्ग है और एक ऐसा विषय है, जिसका अध्ययन अत्यधिक बुद्धिमानी से करना चाहिए)

सन्तजू ने योजना की रचना करते समय निम्नलिखित पांच तत्त्वों पर विशेष ध्यान देने पर बल दिया था—

1. The Moral law (नैतिक नियम)
2. Heaven (आकाश)
3. Earth (भू-भाग)

4. The Commander (सेनापति)

5. The Method and Discipline (नियम एवं अनुशासन)

सन्तजू ने उपर्युक्त पांच तत्त्वों की जानकारी एक सेनानायक के लिए आवश्यक बतायी। इसके साथ ही साथ उसने निम्नलिखित सात बातों (Points) के आधार पर अपनी जीत या हार का फैसला सरलता से किया जा सकता है जैसे :

1. दोनों शासकों में किसके नैतिक नियम प्रेरणादायक हैं ?
2. दोनों जनरलों में कौन योग्य अधिक है ?
3. दोनों पक्षों में अनुशासन किसका श्रेष्ठ है ?
4. आकाश एवं भू-भाग का लाभ किस पक्ष को मिल रहा है ?
5. किस पक्ष की सेना मज़बूत है ?
6. किस पक्ष की सेना व नायक को श्रेष्ठ प्रशिक्षण प्राप्त है ?
7. किस पक्ष में पुरस्कार एवं दण्ड दोनों में महान् दृढता है ?

2. समरतन्त्र (Tactics)—सन्तजू के अनुसार प्रत्येक समरतन्त्र में सफलता पाने के लिए धोखे एवं छल की नीति को अपनाया जाना आवश्यक होता है। इस सन्दर्भ में उसने बताया कि :

1. जब हम आक्रमण के योग्य हों तो अपने को आक्रमण के अयोग्य घोषित करना चाहिए।
2. जब हम शत्रु के निकट हों तो उसे यह दिखाना कि हम दूर हैं।
3. जब हम शत्रु से अधिक सुरक्षात्मक स्थिति में हों, तो हमें आक्रमण करना चाहिए।
4. जब शत्रु की सैनिक संख्या अधिक हो, तो आक्रमण नहीं करना चाहिए।
5. शत्रु को आराम नहीं करने देना चाहिए।
6. शत्रु की एकता भंग करने का प्रयास करना चाहिए।
7. शत्रु के नाजुक या कमज़ोर स्थानों पर आक्रमण करना चाहिए।

सन्तजू ने इस सन्दर्भ में लिखा है कि :

"In war the victorious strategist seeks battle after the vicoty has been won, where as he who is lestined to defeat first fights and after wards looks for victory."

सन्तजू सदैव यह मानता था कि—

"All warfare is based on deception."

(सभी युद्ध कलायें चकमे पर आधारित होती हैं।)

"If you know the enemy and know yourself, you need not fear the result of a hundred battles."

3. कूटनीतिक चालों द्वारा आक्रमण (Attack by strategy)—सन्तजू के विचारों के अनुसार शत्रु को सदैव अपनी घातक चालों व विचारों से पराजित करना चाहिए। शत्रु की समस्त सेना को पकड़ लेना चाहिए। जनरल की योग्यता शत्रु की सेनाओं और योजनाओं को नष्ट करने में निर्भर करती है। इसके बाद ही आक्रमण का सहारा लेना चाहिए।

घेरेबन्दी के युद्ध से जहां तक सम्भव हो, विद्वान् सेनानायक को इससे बचना चाहिए, क्योंकि इसमें अधिक समय, संख्या एवं संसाधनों की आवश्यकता पड़ती है। बिना अपने सैनिकों के घायल किये हुए ही किले पर अधिकार कर लेना कूटनीतिक आक्रमण कहा जाता है।

सन्तजू ने सैनिक संख्या अधिक होने के भी अनेक लाभ बताये हैं। यदि हमारी सैनिक संख्या शत्रु से दस गुनी है, तो हम शत्रु को सुविधा के साथ घेर सकते हैं। एक कुशल कमाण्डर को तीन बातों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए—

1. कमाण्डर को अपनी सेना की क्षमता की जानकारी रखना तथा उसके आधार पर ही आदेश पारित करना चाहिए।

2. सैनिकों पर नागरिकों की भांति प्रशासन नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि दोनों में बहुत मतभेद है।

3. कमाण्डर उन अधिकारियों को सैन्य नेतृत्व न सौंपे जो कि बदलती हुई परिस्थितियों में अपने विवेक प्रतिभा तथा आत्म विश्वास के साथ काम न कर सके।

4. विजय के सिद्धान्त (Principles of Victory)—

(1) विजय प्राप्त करने के लिए कमाण्डर को यह जानना आवश्यक है कि कब युद्ध लड़ना तथा कब युद्ध नहीं लड़ना है।

(2) सफलता उसे ही मिलेगी, जो कमाण्डर उच्च व निम्न दोनों प्रकार की सेनाओं को नियन्त्रित करना जानता है।

(3) जीत उसी पक्ष की होगी जिस पक्ष के सैनिक प्रारम्भ से अन्त तक शत्रु का समान रूप से सामना करेंगे तथा जिसके सभी सैनिक अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हैं।

(4) जो कमाण्डर मौका मिलते ही शत्रु को आश्चर्य में डाल दे वह अवश्य ही विजय प्राप्त करता है।

(5) वह सेनापति जो पर्याप्त सैन्य क्षमता रखता है और बिना राजा की आज्ञा के हस्तक्षेप करने के लिए स्वतन्त्र है, वही विजयी होता है।

सन्तजू ने यह भी लिखा है कि हमें याद रखना चाहिए कि, "यदि आप स्वयं एवं शत्रु की शक्ति से परिचित हों तो युद्ध के परिणाम की उसे आवश्यकता नहीं होती, यदि आप केवल अपनी शक्ति को जानते हैं और शत्रु की शक्ति से अपरिचित है, तो पराजय हो सकती है। परन्तु यदि आप दोनों की ही शक्ति से अपरिचित हो, तो आपकी पराजय सुनिश्चित है।"

सन्तजू का यह एक कथन भी उल्लेखनीय है:

"If you know the enemy and know yourself, you need not fear the result of a hundred battles."

5. पराजय से कैसे बचना चाहिए (How to avoid Defeat)—पराजय से बचने के लिए सन्तजू ने सलाह दी है कि सेनापति को सर्वप्रथम स्वयं की सेना तथा शत्रु की सेना का सन्तुलन कर लेना चाहिए व युद्ध घोषणा से पहले ही निश्चित योजना बना

लेनी चाहिए। इसके साथ ही कमाण्डर को अनुशासन तथा नायक के कठोर नियम लागू करने चाहिएं।

6. कमजोर एवं शक्तिशाली बिन्दु (Weak and Strong Points)—प्रसिद्ध सैन्य विचारक सन्तजू ने बताया कि सेनापति को निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए तथा कमज़ोर बिन्दुओं की खोज करना तथा उन पर आक्रमण करना चाहिए ताकि इसका पूरा लाभ मिल सके:

1. चतुरता एवं गोपनीयता युद्ध का महत्त्वपूर्ण अस्त्र है, जिसके द्वारा उसे सदैव मुट्ठी में रखा जा सकता है।

2. अपनी योजना को गुप्त रखना चाहिए तथा उसके नाजुक स्थान को आक्रमण का लक्ष्य बनाना चाहिए।

3. शत्रु की कमजोरी का पता करना तथा उसकी कमजोरी के लिए उसे उत्साहित करना तथा उसकी योजना ढूंढना चाहिए।

4. समरतन्त्र पानी की भांति होता है जो नीचे को ओर बढ़ता है, इसी प्रकार हमें शत्रु को शक्तिशाली क्षेत्रों से दूर रहना चाहिए। भू-आकृति के आधार पर ही अपने समरतन्त्र को अनुकूल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

सेना का प्रस्थान करना (The Army on the March)

सन्तजू ने बताया है कि सेना के मार्च करते समय पर्वत आते हैं तो उन्हें पार करके घाटी पर शिविर के किसी एक ऊंचे स्थान पर लगाना चाहिए. लड़ने के लिए चढ़ाई नहीं चढ़नी चाहिए। अगर नदी पार करनी है तो नदी पार करके किनारे से दूर जाने की कोशिश करनी चाहिए तथा जहां तक सम्भव हो शत्रु को नदी पार करने में चकमा देना चाहिए और यदि शत्रु नदी पार कर ले तो अचानक उस पर हमला करना चाहिए।

(क) भूखण्ड से लाभ उठाना (Advantage of Terrain)—सन्तजू ने सभी प्रकार की भू-आकृति से लाभ उठाने पर बल दिया है, उसने बताया कि यदि दलदली भूमि में युद्ध होता है, तो हमें घास और पानी वाले क्षेत्र को चुनना चाहिए और जहां तक सम्भव हो दलदली भूमि को पार करके ही युद्ध करें। यदि समतल व सूखी जमीन हो तो ऐसा क्षेत्र चुनना चाहिए, जिसके दांये तथा पीछे छुपाव के लिए ऊंची-ऊंची घास हो तथा कैम्प या शिविर के लिए कठोर जमीन देखनी चाहिए। पहाड़ी किलों के पीछे तथा दाहिने तरफ वाला ढाल वाला मैदान चुनना चाहिए।

(ख) छिपाव तथा चकित करना (Ambush and Surprise)—सैन्य विचारक सन्तजू ने किसी भी क्षेत्र में कैम्प लगाते समय निम्नलिखत बातों को ध्यान में रखने के निर्देश भी दिये—

(1) पहाड़ी क्षेत्र
(2) घास से घिरे तालाब
(3) गहरे बेसिन
(4) लकड़ी के जंगल

शत्रु के गुप्तचर ऐसे स्थानों पर रहते हैं। अत: ऐसे क्षेत्र का सही ढंग से निरीक्षण करना चाहिए। जंगल में यदि पेड़ हिल रहे हैं, तो समझना चाहिए कि शत्रु आगे बढ़ रहा है, यदि चिड़ियां अचानक चहक उठें, तों समझना चाहिए कि शत्रु अचानक आक्रमण के इन्तजार में है। यदि जानवर भागते नजर आयें, तो समझना चाहिए कि आक्रमण होने वाला है। यदि धूल उड़ रही है, तो अश्वारोही सेना बढ़ रही है। यदि धूल नीची उठ रही है, तो पैदल सेना आगे बढ़ रही है। यदि धूल नीची उठ रही है तो पैदल सेना आगे पढ़ रही है।

यदि शत्रु के कैम्प में गड़बड़ी है तो समझना चाहिए कि सेना कमजोर है। यदि ध्वजों में परिवर्तन हो तो समझो की सेना सरकार के विरुद्ध है। यदि किसी लाभकारी स्थिति में शत्रु आक्रमण नहीं करता तो समझना चाहिए कि वह पूरी तरह थका है।

भूखण्ड का वर्गीकरण (Classification of Terrain)—सन्तजू ने छ: प्रकार की भू-आकृति बतायी हैं जिसकी जानकारी एक कमाण्डर को अवश्य होनी चाहिए—

(क) **सुगम धरातल** (Accessible Ground)—ऐसा स्थान जहां पर सुविधा के साथ पहुंचा जा सके तथा आपूर्ति की जा सके।

(ख) **कठिन-धरातल** (Entangging Ground)—ऐसा धरातल जहां पर से हटकर पुन: अधिकार करना कठिन हो।

(ग) **दुर्गम धरातल** (Temporizing Gound)—ऐसा धरातल जहां किसी भी पक्ष की सेना व आपूर्ति व्यवस्था न की जा सके।

(घ) **संकरे दर्रे** (Narrow Passes)—तंग या संकरे रास्ते लाभकारी एवं हानिकारी दोनों हो सकते हैं। अत: इनको अपने अधिकार में रखकर सुरक्षा करनी चाहिए।

(ङ) **खतरनाक ऊंचाई** (Precipitions Heights)—इन पर अधिकार करके वहां पर शत्रु के आने का इन्तजार करना चाहिए, यदि यह ऊँचाई शत्रु के अधिकार में हो, तो इससे दूर रहना चाहिए।

(च) **दूरस्थ स्थिति** (Distant Positions)—यदि शत्रु से अपना मोर्चा दूर हो और दोनों ही पक्षों की सैन्य शक्ति समान हो तो युद्ध करना लाभप्रद नहीं होगा।

नौ परिस्थितियां (Nine Situations)—सन्तजू ने युद्ध में नौ प्रकार के संग्राम स्थलों का उल्लेख किया है—

(क) Dispersive Ground
(ख) Facile Ground
(ग) Countentious Ground
(घ) Open Ground
(ङ) Secret Ground
(च) Ground of Intersecting higg way
(छ) Hemmendin Ground

(ज) Difficult Ground

(झ) Disperating Ground

अग्नि आक्रमण (Attack by Fire) : इस सन्दर्भ में सन्तजू ने बताया है कि—

(क) शत्रु के कैम्प को जला देना चाहिए।

(ख) शत्रु की रसद सामग्री को जला देना चाहिए।

(ग) शत्रु को समान ले जाने वाली गाड़ियां जला देनी चाहिएं.

(घ) शत्रु के शस्त्रास्त्रों एवं भण्डारों को जला देना चाहिए।

(ङ) शत्रु पर एक-एक करके फायर करना तथा उसके बीच में आग उछाल देना।

आग के द्वारा आक्रमण करते समय अपनी सेना को पांच (Five) कार्यों के लिए तैयार रखना चाहिए।

(1) यदि आग बुझती नजर आये, तो तुरन्त शत्रु के शिविर पर हमला बोलना।

(2) जब आग का विस्फोट होने पर शत्रु शान्त हो, तो समझना चाहिए कि शत्रु तुम्हारे इन्तजार में है।

(3) जब आग पूरी तरह फैली हो, तो तुरन्त आक्रमण करना चाहिए।

(4) जब आग से आक्रमण आसान हो, तो प्रतीक्षा न करो।

(5) आग लगाने के कार्य उस समय करो जब हवा आपके अनुकूल दिशा में हो।

सन्तजू ने लिखा है, **"All war-fare is based on deception." (युद्ध में सफलता का आधार शत्रु को धोखा देना है।)**

जासूसों का प्रयोग (Use of Spies)

सैन्य विचारक सन्तजू ने अपनी सफल सैन्य योजना के लिए पांच प्रकार के जासूसों के प्रयोग का उल्लेख किया है—

(1) स्थानीय जासूस (Local Spies)

(2) शत्रु के अधिकारी जासूस (Inward Spies)

(3) शत्रु के बन्दी जासूस (Converted Spies)

(4) अपने कुशल जासूस (Doomed Spies)

(5) शत्रु के चंगुल से आये जासूस (Surviving Spies)

"Spies are a most important element in war, because on them depends an army's to move."

इस प्रकार आचार्य चाणक्य के समान ही इस महान सैन्य विचारक सन्तजू ने सैनिक योजना से सम्बन्धित लगभग प्रत्येक क्षेत्र का अपनी प्रतिभा एवं अनुभव के द्वारा अद्वितीय उल्लेख किया है। इस विद्वान् ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक '**युद्ध कला**' में युद्ध नीति, समरतन्त्र, प्रशासन, आपूर्ति आदि से सम्बन्धित सभी तत्वों के स्पष्ट विचार दिये, जो कि आज भी कसौटी में पूरी तरह से खरे उतरते हैं।

2. कौटिल्य (Kautilya)

मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वारा वस्तुत: भारत को सर्वप्रथम एक राष्ट्र के रूप में विकसित किया गया, जिसका मूल श्रेय नीति-विशारद, कूटनीतिज्ञ, दूरदृष्टा सैन्य विचारक व श्रेष्ठ ब्राह्मण को है, जिसे कौटिल्य, चाणक्य अथवा विष्णुगुप्त नामों से सम्बोधित किया गया है। इस विद्वान् ने अपनी रचना '**अर्थशास्त्र**' के द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था के प्रत्येक आयाम का एक अनोखा एवं महत्त्वपूर्ण उल्लेख किया।

एक विप्र जिसके जीवन का उद्देश्य शास्त्र अध्ययन एवं अध्यापन, निरन्तर तपोरत रहता था, जो तक्षशिला विश्वद्यिालय का संस्थापक एवं मेधावी आचार्य था, वह आचार्य कौटिल्य केवल अध्यापक ही न था, बल्कि एक विशाल साम्राज्य का संस्थापक भी था। आचार्य कौटिल्य ने अपनी कृति 'अर्थशास्त्र' में जो सैन्य सिद्धान्त प्रतिपादित किये, वे आधुनिक समय में भी परीक्षा की कसौटी पर उतने ही खरे उतरते हैं। इसी कारण आचार्य कौटिल्य को प्रतिभाशाली सैन्य-विशेषज्ञ की उपाधि से अलंकृत किया गया। किसी विद्वान् ने लिखा है—

'**शुक्राचार्य के बाद चाणक्य भारत का मैक्यावेली है।**' भारत का सर्वश्रेष्ठ एवं विश्व का महान् दार्शनिक आचार्य कौटिल्य ही था। वह एक कुशल विचारक था, जिसमें प्रत्येक क्षेत्र व विषय का अदभुत ज्ञान था। जो कि अपने में एक अनन्य उदाहरण है। डॉ० एस० सी० सरकार के शब्दों में—

"He (Kautilya) confined in himself the democracy of a Stalin, the efficiency of a Hitler, the idealism of a Wilson, the imperialism of a Charchil and the patriotism of a Chiang."[1]

(उसमें (कौटिल्य) स्तालिन का प्रजातन्त्र, हिटलर की निपुणता, विल्सन का आदर्शवाद, चर्चिल की साम्राज्य लिप्सा एवं **च्यांग** की देशभक्ति एक साथ समायोजित है।)

आचार्य कौटिल्य के इस कथन से ही उसकी विद्वत्ता का अनुमान किया जा सकता है कि—"**धुर्नधारी के धनुष से निकला तीर, संभव है, किसी एक भी पुरुष को मारे या न मारे परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति के द्वारा किया हुआ बुद्धि का प्रयोग, गर्भ-स्थित प्राणियों को भी नष्ट कर देता है।**"

अब हम आचार्य कौटिल्य के अन्तर्राष्ट्रीय निर्धारक सिद्धान्तों का वर्णन करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय नीति निर्धारक सिद्धान्त निम्न है—

आचार्य कौटिल्य के अनुसार विदेश नीति छ: प्रकार की होती थी। कौटिल्य अर्थशास्त्र के अंग्रेज़ी रूपान्तर में समा शास्त्री ने लिखा है—

1. Quoted by B.K. Majumdar—Military System in Ancient India.

"Peace war, observance of neutrality, marching, alliance and making peace with one and making Peace with one and waging war with another are the six forms of state policy."

(सन्धि, विग्रह आसन, यान, संश्रय तथा द्वेधी भाव किसी राज्य से शान्ति स्थापित करना तथा दूसरे से युद्ध प्रारम्भ करना किसी राज्य की नीति के छः प्रकार होते हैं)

शान्ति स्थापित करने की प्रमुख नीतियां इस प्रकार से हैं—

(1) सन्धि (सलाह के द्वारा)

(2) विग्रह (विरोध के द्वारा)

(3) आसन (उदासीनता द्वारा)

(4) यान (आक्रमण की तैयारी द्वारा)

(5) संश्रय (सशक्त शासक का सहारे द्वारा)

(6) द्वैधी भाव (एक से सन्धि तथा दूसरे से विरोध द्वारा)

1. सन्धि—इसके अनुसार पड़ोसी देशों के साथ सन्धि करके मित्रता का व्यवहार करना होता है। आचार्य कौटिल्य ने सन्धियों के भी छः विभेद किये हैं—[2]

(क) **हीन सन्धि**—छोटी प्रवृत्ति वाली सन्धि।

(ख) **पणबन्ध सन्धि**—युद्ध न करने की सन्धि।

(ग) **मित्र सन्धि**—एक दूसरे के सहयोग करने की सन्धि।

(घ) **भूमि सन्धि**—सीमा बदलने के लिए सन्धि।

(ङ) **कर्म सन्धि**—किसी खर्चीली वस्तु को आपस में मिलकर बनाना—जैसे किली, पुल, मार्ग आदि।

(च) **अनवसित सन्धि**—जहां कोई न रहता हो उस भूमि पर मिलकर अधिकार करना।

हीन सन्धि के अन्तर्गत भी चार सन्धियां की जाती थीं—

(*i*) **आत्मभिव सन्धि**—राजा शत्रु के समक्ष कुछ धन एवं सेना लेकर आत्मसमर्पण करके यह अपनाता है।

(*ii*) **दण्डोपनत सन्धि**—इसमें सम्पूर्ण सेना सहित समर्पण करना है।

(*iii*) **कोषोपनत सन्धि**—समस्त धन सहित समर्पण करता है।

(*iv*) **देशापनत सन्धि**—किसी निश्चित राज को शत्रु को समर्पण करना होता है।

इस प्रकार से सन्धि के विभेद करके राज्य नीति का गहन अनुभव प्रतीत होता है।

2. विग्रह—इस नीति के अनुसार कौटिल्य ने बताया है कि राजा को चाहिए कि शत्रु की गतिविधियों का पता लगाये रखें जब शत्रु की आन्तरिक व्यवस्था बिखरी हुई या अस्त-व्यस्त हो उस समय का लाभ उठाते हुए शत्रु पर आक्रमण कर देना चाहिए। यह आन्तरिक अव्यवस्था चाहे शत्रु राजा या प्रजा द्वारा उत्पन्न की जाए अथवा दैवी आपति द्वारा उत्पन्न भले ही हुई हो अवसर का लाभ उठाते हुए युद्ध छेड़ देना चाहिए। जिसे हम संक्षिप्त में शीत युद्ध (Cold war) भी कह सकते हैं।

---

2. प्रो० इन्द्र—कौटिल्य अर्थशास्त्र पृष्ठ 133

3. आसन—इस नीति से तात्पर्य तटस्थता की नीति अपनाते हुए शान्त रहना तथा समुचित तैयारी बनाये रखना। कौटिल्य ने बताया कि राजा को चाहिए कि जब वह देखे की शत्रु की सेना शक्तिशाली है या बराबर की है, उस समय दोस्ती रखते हुए अपनी सामरिक तैयारी करते रहना चाहिए परन्तु ध्यान रहे कि शत्रु को इस बात का पता नहीं लगना चाहिए तभी यह सन्धि सफल हो पाती है अन्यथा नहीं।[1]

4. यान—किसी राजा के साथ प्रत्यक्ष रूप में युद्ध-अभियान प्रारम्भ कर देना ही इस नीति का तात्पर्य है। आचार्य कौटिल्य ने बताया कि यह नीति उस समय अपनायी जाती है, जब शत्रु राजा के देश में शासन व्यवस्था भंग हो तथा राजा अपने आप में मदान्ध हो, उसे प्रजा की परवाह न हो। ऐसी परिस्थिति का लाभ उठाते हुए इस यान नीति का अनुशरण करना चाहिए। उदाहरण के लिए 1971 के युद्ध में (बांग्लादेश के उदय) पाक के विरुद्ध भारत की नीति।

5. संश्रय—यह नीति वैसे अन्तिम नीति होती है, इसका संक्षिप्त तात्पर्य सहारा लेना या पराश्रित होना है। जब कोई शत्रु द्वारा अधिक परेशान किया जा रहा हो और वह राजा अपनी स्वयं की रक्षा करने में असमर्थ हो उस समय उसको चाहिए कि किसी शक्तिशाली सम्राट के समक्ष अपने आपको आत्म समर्पित कर दे इससे उत्पीड़न की स्थिति से बचा जा सके।

6. द्वैधीभाव—इस नीति का तात्पर्य दुतरफा नीति या दोहरी चाल से है। इसे इस प्रकार भी कहा गया—'**केवल बात द्वारा दो शत्रुओं में विश्वास पैदा करना किन्तु गुप्त रूप से उन्हें नष्ट करने की चेष्टा करना।**' इस सन्धि के दो अर्थ हैं—

(*i*) एक शत्रु से सन्धि करके दूसरे से विग्रह (विरोध) रखना।

(*ii*) शत्रु के साथ मित्रता (दोस्ती) का नाटक करके उसे हर संभव कमजोर करने का प्रयास करना।

इस नीति का अभिप्राय शत्रु को धोखे में रखकर उसे हानि पहुंचाना है।

इसके अतिरिक्त राज्य की नीति को लागू या कार्यान्वित करने के लिए निम्न उपाय भी वर्णित किये हैं—

1. **साम**—मित्रता से कार्य सम्पन्न करना।
2. **दाम**—अर्थ या धन से कार्य सम्पन्न करना।
3. **भेद**—आपसी मतभेद उत्पन्न करा करके कार्य सम्पन्न करना।
4. **दण्ड**—अपने बल (सैनिक) का प्रयोग करके सम्पन्न करना।
5. **छल**—बहाने की नीति द्वारा कार्य सम्पन्न करना।
6. **प्रपंच**—झूठी बातों का लालच देकर कार्य सम्पन्न कराना।
7. **मायाजाल**—नाटकीय ढंग से कार्य सम्पन्न कराना।

इस प्रकार से आचार्य कौटिल्य ने राष्ट्रीय एवं विदेश नीति के जो सिद्धान्त प्रतिपादित किये वे आधुनिक वैज्ञानिक व तकनीकी व परिवर्तनशील युग में भी खरे उतरते हैं। इसके इन सिद्धान्तों का पालन आज भी होता है। इसीलिए कहा जाता है कि कौटिल्य एक

---

1. प्रो० इन्द्र—कौटिल्य अर्थशास्त्र पेज-30

प्रतिभाशाली सैन्य विशेषज्ञ था, उसके द्वारा प्रतिपादित सैन्य विचार व प्रचार अनेक आगामी शताब्दियों के नियम बन गये। इसी विलक्षण प्रतिभा ने प्रत्येक क्षेत्र का बड़ी गहराई के साथ अध्ययन, मनन एवं विश्लेषण किया है चाहे वह सेना से सम्बन्धित हो, चाहे राज्य से सम्बन्धित, चाहे अर्थ-व्यवस्था से सम्बन्धित हो आदि का विस्तृत विवेचन करके अपनी दार्शनिकता का अनूठा परिचय दिया है। कौटिल्य की प्रतिभा के कारण ही मौर्य कालीन साम्राज्य व्यवस्था सैन्य इतिहास का आधार सिद्ध हुई। मौर्य कालीन युद्ध कला, सैन्य संगठन, सैन्य प्रशासन, सैन्य प्रशिक्षण, सैन्य अभियान, किलबन्दी, व्यूह रचना, मुख्यालय का गठन आदि-आदि कौटिल्य की देन है।

कौटिल्य की गुप्तचर व्यवस्था

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय सुरक्षा एवं सम्बर्द्धन के लिए गुप्तचरों का प्रयोग आधुनिक समय में भी अधिकाधिक किया जाता है। जब कि इस सम्बन्ध में प्राचीन भारतीयों का ज्ञान अद्वितीय था? गुप्तचर व्यवस्था युद्ध एवं् शान्ति दोनों ही समय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती थी और भविष्य में भी रहेगी। राष्ट्रीय स्तर पर इसका प्रयोग सामान्य सामाजिक व्यवस्था के साथ राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करना होता है जब कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसका प्रयोग दूसरे देश की सुरक्षा सम्बन्धी भेदों की जानकारी के लिए किया जाता है। ताकि युद्ध काल में कमज़ोर स्थानों का लाभ पूरी तरह से प्राप्त किया जा सके। मनुस्मृति (9/298) में भी शासक को सदैव स्वयं की और शत्रु सी शक्ति की सम्पूर्ण जानकारी अपने चरों द्वारा प्राप्त करने का निर्देश दिया हुआ है। ऋग्वेद (10/86) में उल्लेख है कि असुरों के सूत्रामणि यज्ञ में सुरापान करते समय जब इन्द्र को उनकी पत्नी ने मना किया एवं क्रोध व्यक्ति किया तो इन्द्र ने कहा कि हमारा यहां सुरापान करने का उद्देश्य परिस्थिति का अध्ययन करना है यह राजनीति से सम्बन्धित है। इससे स्पष्ट होता है कि गुप्तचर व्यवस्था में राजा स्वयं जब भाग लेता था, तो उसके अन्य सहयोगी अवश्य ही होंगे। इस प्रकार के अनेक उल्लेख यह सिद्ध करते हैं कि गुप्तचर व्यवस्था वैदिक काल में देवताओं एवं दैत्यों के मध्य भी प्रचलित थी।

रामायण एवं महाभारत कालीन समय में भी गुप्तचर व्यवस्था का समुचित प्रयोग प्राप्त होता है और सैन्य व्यवस्था में एक विशिष्ट अनेक रूप में मान्यता प्राप्त थी। रावण द्वारा राम के सैन्य बल का पता लगाने के लिए गुप्तचरों के प्रयोग का उल्लेख मिलता है। महाभारत काल में दुर्योधन द्वारा विराट के राज्य में रह रहे पाण्डवों का पता लगाने के लिए गुप्तचरों के भेजने का भी उल्लेख प्राप्त है। भीष्म पर्व में भीष्म के ऐसे गुप्तचरों का वर्णन है, जो अन्धे, बहरे, अपंग एवं मूर्ख बनकर गुप्तचरी करते थे। गुप्तचर व्यस्था पर सर्वाधिक विस्तृत वर्णन आचार्य कौटिल्य ने '**अर्थव्यस्था**' में पूरे चार अध्याय में किया है। अत: कौटिल्य को प्राचीन भारतीय गुप्तचर व्यवस्था का प्रकाण्ड पण्डित कहा जाया, तो अतिशयोक्ति न होगी।

गुप्तचर के कार्य—गुप्तचर व्यवस्था के जनक आचार्य कौटिल्य का मत है कि

राष्ट्रीय एवं विकास के निमित राजा का यह कर्त्तव्य है कि वह शत्रु मध्यम एवं उदासीन राजाओं उनके मन्त्रियों पुरोहित आदि अट्ठारह तीर्थों पर अपने गुप्तचर नियुक्त करें। अधीनस्त राज्यों में भी गुप्तचरों को नियुक्ति करके उनकी सहायता से शत्रु को नष्ट कर दें। युद्ध में जासूसी महता से प्रभावित कौटिल्य ने कूच करती हुई सेना के साथ, सैन्य शिविरों तथा युद्धरत सेना के साथ भी गुप्तचरों को रखने की सलाह दी है, ताकि अपने पक्ष की सेनाओं को यथासंभव उत्साहित रखते हुए शत्रु सेना को हतोत्साहित कर उसे यथाशीघ्र पराजित किया जा सके। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हर संभव उपाय जैसे—झूठ बोलकर, साम नीति के द्वारा पराजित किया जा सके। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हर संभव उपाय जैसे—झूठ बोलकर, साम, दाम, दण्ड, भेद, छल एवं प्रपंच नीति अपनाकर, विष देकर, छुरा भोंक कर स्त्रियां भेजकर तथा धर्म की आड़ लेकर आदि को अपनाने की सलाह देकर भेष बदलकर चतुरता के साथ शत्रु के किलों में प्रवेश करने तथा उसके शस्त्र भण्डार एवं उसे नष्ट करने के लिए कूटनीतिक दांव पेच अपनाने की पुष्टि की गयी है।[1]

आचार्य कौटिल्य ने गुप्तचरों का निर्धारण श्रेणियों के अनुसार किया है तथा उन्हें कर्त्तव्य परायण एवं राष्ट्रनिष्ठ रखने के लिए गुप्तचर पर गुप्तचर लगाने की व्यवस्था भी प्रतिपादित की है। कामन्दकीय नीतिसार अध्याय 12 में वर्णन है कि गुप्तचर में इतनी योग्यता होनी चाहिए कि वह लोगों की मानसिक दशा का अनुमान लगा ले, प्रखर स्मृति शक्तिवाला हो, मधुर भाषी हो, विपत्तियों को सहने तथा कठोर परिश्रम की क्षमता वाला हो। आचार्य कौटिल्य ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अलग-अलग श्रेणियों में गुप्चरों का चयन किया जिन्हें संस्थाचर (राष्ट्रीय) तथा संचारचर (अन्तर्राष्ट्रीय) गुप्तचर के रूप में वर्णित किया है।

राष्ट्रीय गुप्तचर—राष्ट्रीय स्तर पर पांच प्रकार के गुप्तचरों की व्यवस्था की जिनमें **प्रथम,** कापटिक कहलाते थे, विद्यार्थी के वेश में रहते थे जो कि निडर एवं दूसरे लोगों की इच्छा शक्ति को जानने में कुशल होते थे। **दूसरे,** उदास्थित के रूप में थे जो कि संन्यासी के वेश में विवेकी, पवित्र हृदयी, सुपरीक्षित एवं कृत्रिम साधु पुरुष गुप्तचर होता था। ये गांव के बाहर कुटिया बनाकर रहते थे तथा ग्रामीण वासियों की शासक के प्रति स्वामिभक्ति का पता लगाते थे। इनका खर्च राजा स्वयं वहन करता था। **तीसरे,** गृहपतिक कहलाते थे जो कि गृहस्थ किसान के वेश में होते थे और राजा से गुप्त रूप से जीविका अर्जित करते थे, इसके चयन में योग्य एवं विवेकी व्यक्ति का विशेष ध्यान रखते थे। **चौथे,** वैदेहक के रूप में जाने जाते थे, जो की गरीब व्यापारी के वेश में व्यापारिक क्षेत्रों में व्यापारियों को शासक के प्रति वफादार बनाना होता था। इसे आर्थिक व्यापार हेतु सहायता राजा द्वारा गुप्त रूप से प्रदान की जाती थी। **पांचवें,** तापस श्रेणी में आने वाले वे गुप्तचर होते थे, जो कि मुण्ड एवं जटाधारी के रूप बनाकर तपस्या का ढोंग रचा कर

1. प्रो० इन्द्र-कौटिल्य अर्थशास्त्र पेज 30

रहते थे तथा जिसके अनेक शिष्य मिथ्या प्रचार करके उसको प्रसिद्ध करते थे कि उनके गुरु जी की शक्तियां अलौकिक हैं, वे देव पुरुष हैं तथा उनकी सभी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होती हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय गुप्तचर—अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चार प्रकार के गुप्तचरों का वर्णन किया है जो कि संचार चर के नाम से जाने जाते थे। जिनमें से **प्रथम सत्री** कहलाते थे जो कि ज्योतिषी, नर्तक, गायक, वादक, जादूगर एवं हस्त विशेषत्र के रूप में करते थे। जिसमें अनाथ तथा बेसहारा लोगों को अंकविद्या, हस्तविद्या, मायाजाल, जम्भक विद्या, अन्तर-चक्र (पक्षियों की आवाज़ के शुभाशुभ का शास्त्र) ज्योतिष, व्याकरण, आश्रय धर्म, काम शास्त्र, गायन, वादन तथा नृत्य कला का गहन अध्ययन एवं अभ्यास कराया जाता है। ये अपनी योग्यता एवं अभ्यास से प्रत्येक व्यक्ति के साक्षात्कार मात्र से उनकी मनोवृत्ति एवं भेद का पता लगा लेते थे। दूसरे-तीक्ष्ण गुप्तचर के रूप में जाने जाते थे। इसमें वे लोग प्रशिक्षित किये जाते थे, जो किसी कारण या परिस्थितिवश जीवन से निराश हो जाते थे, परन्तु विशिष्ट साहसिक क्षमता रखने वाले होते थे जो कि धन या सम्मान के लिए जीवन की परवाह न करते हुए किसी भी विपत्ति से टकराने को तैयार रहते थे। ये अपनी कार्यदक्षता के लिए हाथी, शेर, भालू एवं सांप आदि जानवरों से (लड़कर) शारीरिक दक्षता प्राप्त करते थे। ये लोग जादूगर, मदारी, नट एवं नाटक-मण्डली आदि के वेश में रहकर कार्य करते थे। **तीसरे-रसद** गुप्तचर कहलाते थे, जो कि क्रूर, हृदयहीन एवं आलसी व्यक्ति होते थे, जिन्हें कि धन सबसे अधिक प्रिय होता था। जिसके लिए वह अपने भाई की भी हत्या करने में **संकोच** न करने वाले होते थे, यह बहुरुपिये-सूद (रसोइया), हलवाई, नहलाने वाले, बिस्तर लगाने वाले, बाल काटने वाले (नाई), कपड़े धोने वाले के रूप नें कार्य करते थे। **चौथे—भिक्षुणी** की या परिव्रणिका, इसके अन्तर्गत उच्च कुलीन व सुन्दर स्त्री गुप्तचर होती थी जो कि विधवा ब्राह्मणी हो तथा जिसका मंत्रियों आदि में सम्मान हो तथा राजा एवं मन्त्रियों के घर आना जाना हो। इसके अतिरिक्त वेश्याओं एवं विष कन्याओं का गुप्तचर के रूप में प्रयोग किया जाता था। सुन्दर-सी बच्ची को बचपन से ही विष पान करके इतना जहरीला बना दिया जाता था, कि इसके स्पर्श मात्र से जहरीला असर हो जाता था, जो कि शत्रु को अपने सौंदर्य से मोहकर अपना शिकार बनाती थी।

गुप्तचर परीक्षा विधियां—इसके साथ ही गुप्तचरों की कुछ कार्य विधियां भी वर्णित की है जो कि आज भी परीक्षा की कसौटी पर खरी उतरती है। गुप्तचर अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु **धर्मोपधा, अर्थोपधा, कामोपधा** तथा **भयोपधा** विधियों का प्रयोग करते थे। इसके द्वारा मुख्य रूप से मन्त्रियों एवं राज्यधिकारियों की परीक्षा की जाती थी। **धर्मोपधा** लागू करने में गुप्तचर सम्बन्धित व्यक्ति से कहे कि राज पुरोहित ने मुझे आपके पास भेजा है क्योंकि उनकी धारणा है कि राजा अधर्मी हो गया है अत: किसी योग्य शासक का चयन किया जाये। आपकी क्या राय है ? यदि व्यक्ति यह सुनकर क्रोधित हो तो वफादार है अन्यथा धोखेबाज़ सिद्ध कर दिया जाता था। **धनोपधा** लागू करने के लिए गुप्तचर सम्बन्धित अधिकारी से कहे कि मुझे सेनापति ने आपके पास भेजा है कि राजा को पद से हटने में सहयोग दें, जितने धन की आवश्यकता होती देंगे। अनेक मन्त्री

तथा अधिकारी साथ देने को तैयार है। आपकी क्या राय है ? यदि प्रस्ताव को ठुकरा दे तो समर्थक समझें अन्यथा विद्रोही। **कामोपधा** लागू करने के लिए रानी की विश्वास पात्र ब्राह्मणी स्वयं किसी अधिकारी से परीक्षा के लिए कहे कि 'रानी तुम्हें प्यार करती है, तुम प्यार का अनादर करो, तो बड़ा अनर्थ होगा। यदि नाराज़ हो तो वफ़ादार, नहीं तों धोखेबाज़ सिद्ध हो जायेगा। **भायोपधा** विधि के द्वारा गुप्तचर सम्बन्धिताधिकारी से कहे कि राजा आयोग्य है, अयोग्य व्यक्तियों का चयन करता है, सभी अधिकारी विरुद्ध, इसकी हत्या करवा दी जाय यदि तुम राजा का साथ दोगे तो तुम्हारी भी हत्या कर दी जायेगी। तुम्हारी क्या सहमति है ? यदि फिर भी सहायता न दें तो वफ़ादार अन्यथा वह धोखेबाज़ है।

गुप्तचर व्यवस्था की जो व्यवस्था आचार्य कौटिल्य या चाणक्य ने की है वह आज भी सैद्धान्तिक रूप में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है। अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर विश्व-शक्तियों ने प्रतिस्पर्धा अपना करके राजनीति पहली को अपने पक्ष में रखने के लिए आज भी गुप्तचर व्यवस्था का आधार बनाकर ही सफलता पाने में समर्थ हो पायी है। अमेरिका की गुप्तचर व्यवस्था सी० आई० ए० तथा रूस की के०जी०वी० इन्हीं के सिद्धान्तों पर आधारित हैं। भारतीय गुप्तचर व्यवस्था जो आचार्य कौटिल्य ने प्रतिपादित की वह आज भी अपनी महत्ता रखती है। यद्यपि समय के साथ-साथ वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति से नवीन प्रणाली का जन्म हो गया है, परन्तु मानवीय दृष्टिकोण से यह तथ्य आज भी अपनी कसौटी पर खरे उतरते हैं। इसलिए आचार्य कौटिल्य को गुप्तचर व्यवस्था का जनक माना जाता है। प्राचीन भारत में गुप्तचरों के माध्यम से शत्रु के सम्बन्ध में समाचार प्राप्त करने की व्यवस्था, आधुनिक व्यवस्था से किसी प्रकार से हीन नहीं थी, जिसका आभास आचार्य कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित गुप्तचर व्यवस्था की व्याख्या से स्पष्ट परिलक्षित होता है।

राजदूत

आचार्य कौटिल्य ने राजदूरों के कार्यों की प्रकृति, गुणों तथा अधिकारों के आधार पर तीन प्रकार के राजदूतों का उल्लेख किया है जो निम्न प्रकार से है—

1. निसृष्टार्थ
2. परिमितार्थ
3. शासनहर

1. निसृष्टार्थ—इस श्रेणी के अन्तर्गत वे राजदूत आते थे, जिन्हें शासन की ओर से राज्य के सन्दर्भ में पूर्ण अधिकार प्राप्त होते थे। ये सर्वगुण सम्पन्न सर्वश्रेष्ठ राजदूत होते थे।

2. परिमितार्थ—इस श्रेणी के अन्तर्गत वे राजदूत होते थे, जिन्हें शासन की ओर से राज्य के निर्माण के संन्दर्भ में सीमित अधिकार ही प्राप्त होते थे। यह सामान्य श्रेणी के राजपूत होते थे।

3. शासनहर—इस श्रेणी के अन्तर्गत वे राजदूत आते थे, जो शासन की ओर से केवल सन्देश-वाहक के रूप में ही कार्य कर सकते थे। इन्हें किसी प्रकार का कोई भी अधिकार प्राप्त नहीं होता था।

युद्ध-विभाग
(War Department)

आचार्य कौटिल्य ने युद्ध के महत्त्व को विशेष रूप से समझते हुए इसके विभिन्न कार्यों को सही ढंग से संचालित करने के लिए निम्नलिखित विभागों को स्थापित किया था—

1. युद्ध समिति (War Council)
2. युद्ध वित्त विभाग (War Finance Department)
3. आयुधागार (Arsenal)
4. परराष्ट्र विभाग (Foreign Department)
5. गुप्तचर विभाग (Intelligence Department)

सेनांग
(Armed Forces)

आचार्य कौटिल्य ने अपने युग में विभिन्न प्रकार की सेनाओं का स्पष्ट उल्लेख किया है जो इस प्रकार से थीं—

1. पैदल सेना (Infantry)
2. अश्वारोही सेना (Cavalary)
3. रथ सेना (Chariots)
4. हाथी सेना (Elephants)
5. जल सेना (Admiralty)
6. गुप्तचर (Sepoys)
7. आपूर्ति विभाग (Supply Department)
8. क्षेत्रीय दिक्दर्शक (Local Guides)

इन सभी प्रकार के सेनाङ्गों को समन्वित करके एक सुव्यवस्थित संगठन के रूप में गठित किया था। पैदल सेना को अनेक उपभागों में विभक्त किया था।

पैदल सेना के प्रकार
(Kinds of Infantry)

राष्ट्रीय सुरक्षा की आवश्यकता को विशेष रूप से ध्यान में रखकर पैदल सेना की शक्ति को इस प्रकार से जुटाया था—

1. **मौल बल** (स्थायी सेना)
2. **भृतक बल** (भत्ता या दैनिक वेतन वाली सेना)
3. **श्रेणी बल** (व्यापारियों द्वारा गठित सेना)
4. **मित्र बल** (पराजित राष्ट्र की सेना)

5. **अमित्र बल** (पराजित राष्ट्र की सेना)
6. **अटवी बल** (लूटपाट वाली जंगली सेना)

किलेबन्दी
(Fortification)

आचार्य कौटिल्य के किलेबन्दी के महत्त्व का वर्णन करते हुए लिखा है कि देश के चारों ओर सीमाओं पर सैनिक महत्त्व के अनुरूप राजा युद्धोचित प्राकृतिक दुर्गों का निर्माण करवाये तथा देश के मध्य भाग में नगरों व राजधानी की स्थापना करें। प्रतिरक्षात्मक स्थिति को विशेष रूप से ध्यान में रखते हुए निम्न प्रकार के किलों की उल्लेख अपनी प्रसिद्ध रचना 'अर्थशास्त्र' में किया है—

1. औदक दुर्ग (Water Fortress)
2. पार्वत दुर्ग (Hill Fortres)
3. धान्वन दुर्ग (Desert Fortress)
4. वन दुर्ग (Forest Fortress)

युद्ध में व्यूह रचना
(War- Farmations)

आचार्य कौटिल्य ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'अर्थशास्त्र' (10/6/3-7) में युद्ध क्षेत्र के अन्तर्गत व्यूह रचना के महत्त्व को समझते हुए चार प्रकार के व्यूहों का वर्णन किया है जो इस प्रकार से है—

1. **दण्ड व्यूह** (पंक्ति बद्ध सैनिक संरचना)
2. **भोग व्यूह** (सर्पाकार आकृति में बद्ध सैनिक संरचना)
3. **मण्डल व्यूह** (गोलाकार आकृति में बद्ध सैनिक संरचना)
4. **असंहत व्यूह** (अलग-अलग टुकड़ियों में बद्ध सैनिक संरचना)

इन संरचनाओं का संगठन वहां की भौगोलिक बनावट के आधार पर किये जाने का उल्लेख मिलता है।

अनेक विद्वानों ने आचार्य कौटिल्य की तुलना योरोप (इटली) के प्रसिद्ध लेखक एवं राजनीतिज्ञ मैक्यावेली से की है, जिसने अपनी पुस्तक 'दा प्रिन्स' (The Prince) में राजा को लक्ष्य प्राप्ति के लिए उचित-अनुचित सभी साधनों का सहारा लेने का उल्लेख किया है। विन्टरनिट्ज (Winternitze) आदि पाश्चात्य विद्वानों ने कौटिल्य तथा मेक्यावेली की निम्नलिखित समानतायें दर्शायी हैं—

1. दोनों ने राष्ट्र को सब कुछ माना है। राष्ट्र को अपने में ही उद्देश्य मानते हैं।
2. दोनों ही दूसरे देशों की हानि पर अपने राष्ट्र के विकास पर बल दिया है। शत्रु का हर संभव विनाश आवश्यक माना है।
3. अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किसी भी साधन, नैतिक या अनैतिक का आश्रय लेना अनुचित नहीं माना है। राजा का एक मात्र लक्ष्य साध्य को सिद्ध करना होना चाहिए।

4. दोनों ने ही युद्ध (War)को राष्ट्रनीति (State policy) का आवश्यक अंग माना है। अपने राष्ट्र की सीमा एवं प्रभाव रखने के लिए सदैव सतर्क रहने पर बल दिया है।

5. अपनी प्रजा में आतंक-स्थापित करके दृढ़ता तथा निर्दयता से शासन करने का दोनों ने ही समर्थन किया है।

6. दोनों ने ही विशाल एवं सुसंगठित गुप्तचर व्यवस्था स्थापित करने पर विशेष बल दिया था।

7. प्रजा की राजा के प्रति वफादारी की परीक्षा परोक्ष रूप से करके शत्रु समर्थकों का सफाया करना चाहिए।

उपर्युक्त समानताओं के बावजूद मेरे विचार से कौटिल्य की तुलना मैक्यावेली से करना सर्वथा अनुचित है क्योंकि कौटिल्य ने कूटनीतिक चालों के साथ नैतिकता तथा धर्म को प्राथमिकता प्रदान की थी। उसने स्पष्ट रूप से लिखा है—

"एवं दुष्टेसु अधार्मिकेषु वर्तेत, न इतरेषु"

अर्थात् कूटनीतिक चाल केवल अधार्मिक एवं दुष्ट लोगों के साथ ही अपनाये, धार्मिक लोगों के साथ नहीं।

इस प्रकार हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि आचार्य कौटिल्य अपने विचारों की कृति 'अर्थशास्त्र' के द्वारा एक शक्तिशाली राष्ट्र की आधारशिला रखने के साथ ही उसे सुव्यवस्थित एवं सुविख्यात बनाये रखने के नये आयाम प्रस्तुत किये थे, जिन्हें आज के समय में महत्त्वपूर्ण माना जाता है। राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था के नये आयाम इस महान् भारतीय सैन्य विचारक द्वारा प्रस्तुत किये गये । कौटिल्य एक महाब्राह्मण, महापण्डित, महान् नीतिवेत्ता और भारत का सर्वश्रेष्ठ सैन्य विचारक था।

निकोलो मैक्यावेली
(NICCOLO MACHIVELLI)

परिचय—निकोलो-मैक्यावेली का जन्म सन् 1469 ई० में इटली के फलोरेंस नामक प्रसिद्ध नगर में हुआ। यह एक कुशल राजनीतिक एवं श्रेष्ठ सैन्यविचारक के रूप में विख्यात था। इसे योरोपीय राष्ट्रों में वर्तमान युद्धनीति एवं कूटियोजना के प्रणेता के रूप में भी जाना जाता है। युद्धकला एवं राजनीति के सन्दर्भ में उसके विचार पन्द्रहवीं शताब्दी में ही प्रसिद्ध नहीं हुए, बल्कि आज के परिवेश में भी अपनी कसौटी में उतने ही खरे उतरते हैं। उसने आधुनिक व्यवसायी राष्ट्रीय सेना को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अत्यन्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण माना। इसने अपनी प्रतिभा के बल पर अपने राष्ट्र के महत्त्वपूर्ण प्रशासकीय एवं राजनयिक पद पर कार्य किया और अपने कटु अनुभवों के आधार पर अपनी राष्ट्रीय आधार व्यवस्था को एक नया आयाम दिया। अपने नियन्त्रण में मैक्यावेली ने लगभग 2000 सैनिकों की एक जन सेना पिसा की घेरेबन्दी के उद्देश्य हेतु तैयार की थी। इस कार्यवाही हेतु स्वयं मैक्यावेली ने अपना नियन्त्रण, निदेशन एवं संचालन करके

एक ऐतिहासिक एवं निर्णायक सफलता प्राप्त की थी। इस दौरान उसने जहां सेना में उत्तम अनुशासन एवं मनोबल बनाये रखा, वहां आवश्यक सामग्री की आपूर्ति हेतु विशेष व्यवस्था की थी। यही कारण था कि सन् 1509 ई० में पिसा ने आत्म समर्पण कर दिया था।

इस महान् राजनीतिज्ञ एवं सैन्य विचारक को उस समय परिस्थितियों ने पुनः झकझोर दिया, जब सन् 1511 ई०में मैडिसी साम्राज्य की शक्तिशाली सेना ने फ्लोरेंस पर हमला करके शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली थी, जिसका परिणाम यह हुआ कि इस महान् नायक को राजनीतिक एवं नागरिक सेवा से विलग होना पड़ा। इस परिस्थिति ने उसके जीवन को एक नवीन प्रेरणा तथा दिशा प्रदान की। उसने यह सबक लिया कि कोई भी राज्य अपने अस्तित्व को बिना शक्तिशाली सैन्य शक्ति के अधिक समय तक बनाये नहीं रख सकता।

निकोलो मैक्यावेली ने अपने जीवन के कटु अनुभवों के आधार पर युद्धनीतिक तथा कूटियोजनात्मक विचारों को निम्नलिखित पुस्तकों के रूप में संकलित किया—

1. युद्ध कला (The Art of War)
2. राजकुमार (The Prince)
3. डिसकोर्सस (Discourses)
4. फ्लोरेंस का इतिहास (History of Florence)
5. पत्र (Letters)

इन रचनाओं के माध्यम से उसने जहां युद्ध के स्वरूप, नियमों एवं कलाओं का उल्लेख किया है, वहां एक राज्य के कुशल संचालन के लिए आवश्यक नियमों एवं चालों का भी वर्णन स्पष्ट रूप से किया है।

सैन्य विचार—अब हम संक्षिप्त रूप में उसके सैन्य विचारों को इस प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं—

1. अनुशासन का महत्त्व
2. मनोवैज्ञानिक युद्ध का महत्त्व
3. सत्ता एवं सैन्यशक्ति का सम्बन्ध
4. सैन्य संगठन की श्रेष्ठता
5. सम्पूर्ण सशस्त्र राष्ट्र का समर्थक
6. युद्ध का स्वरूप
7. सेना का समरतान्त्रिक फैलाव
8. कूटियोजनात्मक चालों का समर्थक
9. राजनीतिक विचारधारा
10. निर्णयात्मक युद्धों का समर्थक
11. शासक का कर्त्तव्य
12. विजय का रहस्य

1. अनुशासन का महत्त्व—मैक्यावेली ने सेना एवं शासन नें अनुशासन बनाये रखने पर विशेष बल दिया और उसने अनुभव किया कि इसके अभाव में सेना एवं सत्ता सफल नहीं हो सकती है। इस सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से लिखा है कि—

" Good order makes man bold, confusion coward, few men are brave by nature but good order and experience make many, So therefore, discipline is more than courage."

(अनुशासन आदमी को बहादुर बनाता है, जबकि अनुशासनहीनता सैनिकों को कायर बनाती है। कुछ आदमी प्रकृति से ही बहादुर होते हैं परन्तु अनुशासन एवं अनुभव अनेकों को बहादुर बनाता है। अत: अनुशासन साहस से भी बढ़कर है।)

इसके साथ ही सेना में अनुशासन बनाये रखने के लिए निम्न बातों का विशेष उल्लेख भी किया—

(*i*) सैनिकों को श्रेष्ठ प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

(*ii*) सैनिकों को हथियारों की पर्याप्त जानकारी आवश्यक रूप से दी जानी चाहिए।

(*iii*) सैनिकों को अपने ऊँचे अथवा बड़े अधिकारियों का सम्मान करने की आदत डालनी चाहिए तथा उनकी यह कार्य प्रणाली नियमित रूप से होनी चाहिए।

(*iv*) बड़े अधिकारी का आदेश अक्षरश: पालन किया जाना चाहिए।

(*v*) हर प्रकार की कार्यवाही हेतु संकेतों की पूर्ण जानकारी अवश्य ही होनी चाहिए।

2. मनोवैज्ञानिक युद्ध का महत्त्व—इस महान् सैन्य विचारक ने युद्धों में मनोवैज्ञानिक प्रणाली को विशेष रूप से अपनाये जाने पर बल दिया था। इस सन्दर्भ में उसने स्पष्ट रूप में उल्लेख किया है—

"No Technician or engineers but courage of soldiers and spirit of commander's are necessary for a victory."

(सफलता पाने के लिए उत्तम तकनीशियन अथवा इन्जीनियर्स की अपेक्षा साहसी योद्धा तथा बहादुर सेनापति की आवश्यकता होती है।)

इस प्रकार **मैक्यावेली** ने युद्धों में अपनी शक्ति के प्रचार के साथ ही अनुशासन, प्रशासन, मनोबल एवं कुशल नेतृत्व को सशक्त बनाने के लिए विशेष बल दिया, ताकि शत्रु पर सरलता से मनोवैज्ञानिक दबाव डाला जा सके। उसने यह भी लिखा है—

"Although in all other affairs it is hateful to use fraud, in the operation of war it is praise worthy and glorious. If able to win by fraud, never use force."

(यद्यपि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में छल-प्रपंच का प्रयोग घृणास्पद है, किन्तु युद्ध में इसका प्रयोग प्रशंसनीय एवं सफलतादायक होता है, यदि छल प्रपंच से विजय प्राप्त की जा सकती है, तो सैन्य शक्ति का प्रयोग नहीं करना चाहिए।)

3. सत्ता एवं सैन्य शक्ति का सम्बन्ध—मैक्यावेली ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए श्रेष्ठ सैन्य शक्ति का होना अत्यन्त आवश्यक है। उसने

राजसत्ता एवं सैन्य शक्ति की समृद्धि की एकरूपता पर भी विशेष ध्यान दिया था। इस सन्दर्भ में उसने स्पष्ट लिखा है—

" There cannot be good laws where there are not good arms, and where there are good arms there must be good laws."

(अच्छे हथियारों के अभाव में अच्छे नियम नहीं होते परन्तु जहाँ पर उत्तम हथियार होते हैं वहां नियम अवश्य ही उत्तम होते हैं।)

जहाँ यह विचारक राज्य के लिए युद्ध को आवश्यक तत्त्व मानता था तथा उसका विचार था कि इससे बचा नहीं जा सकता।

4. सैन्य संगठन की श्रेष्ठता—इस महान् राजनीतिज्ञ एवं सैन्य विचारक ने सेना के संगठन को उच्च स्तर पर गठित करने के लिए विशेष बल दिया। युद्ध के लिए उचित प्रकार की सेनाओं का गठन, उनका उचित प्रशिक्षण तथा युद्ध की अवस्थाओं का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है—

"Battle is the end for which all armies are raised. If a general win a battle, it cancels all other errors and miscarriages."

(किसी भी सेना के संगठन का अन्तिम उद्देश्य युद्ध में विजय हासिल करना होता है। युद्ध में यदि सेनापति सफलता प्राप्त कर लेता है, तो उसकी अन्य सभी त्रुटियां स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं।)

उसने सैन्य संगठन के सन्दर्भ में एक स्थान पर स्पष्ट शब्दों में वर्णित किया है कि—

"The foundation of a state is a good military oraganization."

5. सम्पूर्ण सशस्त्र राष्ट्र का समर्थक—मैक्यावेली एक ऐसा सैन्य विचारक था कि वह सम्पूर्ण सशस्त्र राष्ट्र का प्रबल समर्थक था । वह युद्ध को समाज का एक महत्त्वपूर्ण पहलू मानता था। राष्ट्र के समस्त साधनों को युद्ध के समय उपयोग में लाना चाहिए क्योंकि युद्ध को समस्त साधनों की परीक्षा का केन्द्र बिन्दु मानता था। उसने इस सन्दर्भ मे लिखा है कि—

"That cannot be considered a war where men do not kill each other, cities are not sacked, not territories laid waste."

(ऐसी लड़ाई जिसमें आदमी एक दूसरे की हत्या न करे, नगर न लूटे तथा विशाल क्षेत्रों को उजाड़ न दिया जाए तो उसे युद्ध का रूप नहीं दिया जा सकता।)

इस सन्दर्भ में वह राष्ट्र की सम्पूर्ण शक्ति को उपयोग में लाने का पक्षपाती था।

6. युद्ध का स्वरूप—महान् राजनीतिज्ञ एवं कुशल सेनापति मैक्यावेली युद्ध को सम्पूर्ण-युद्ध (Total-War) के रूप में मानता था और कहता था कि युद्ध के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक साधन को अपनाना चाहिए तथा शत्रु का पूर्ण विनाश करने के लिए तैयार रहना चाहिए। इस सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से लिखा है—

"Complete destruction of enemy state must be the chief aim in war, real war is a fight for existence and is such struggle every thing is permitted."

(युद्ध का प्रमुख उद्देश्य शत्रु के राज्य का सम्पूर्ण विनाश होना चाहिए, क्योंकि

वास्तविक युद्ध अपने अस्तित्व के लिए लड़ा जाता है और उसमें प्रत्येक प्रकार के साधनों को खुलकर अपनाया जा सकता है।)

7. सेना का समरतान्त्रिक फैलाव—मैक्यावेली ने युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिए सेना के समरतान्त्रिक फैलाव का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है। उसके अनुसार युद्धकाल में मुख्य सैन्य दल के रूप में मध्य मोर्चे पर पैदल सैनिक लेने चाहिएं। दोनों पार्श्वों में अश्वारोही सेना तथा हल्की पैदल सेना तैनात की जानी चाहिए। युद्ध की पहल तोपखाने के भीषण प्रहार से की जानी चाहिए, इसके साथ ही पैदल सेना द्वारा धावा कर देना चाहिए, जब रास्ता साफ हो जाये, तो पैदल सैनिकों को आगे आना चाहिए। पैदल सेना की प्रथम पंक्ति में बल्लमधारी सैनिक शत्रु पर दबाव डाले तथा जब दोनों सेनाएं आमने-सामने हो जायें तब तलवारधारी सैनिक गुथ्थम-गुथ्था करके एक बड़े आघात द्वारा शत्रु को पराजित करने के लिए लग जाना चाहिए। इस सन्दर्भ में लिखा है—

"It is not gold but good soldiers that insure success in war. The basis of political power is military might and not money."

(किसी भी युद्ध में सफलता पैसे द्वारा नहीं अपितु कुशल सैनिकों द्वारा प्राप्त होती है। राजनैतिक सत्ता का आधार सैनिक शक्ति होती है आर्थिक क्षमता नहीं।)

8. कूटियोजनात्मक चालों का समर्थक—मैक्यावेली युद्धों में कूटियोजनात्मक चालों के प्रयोग का प्रबल समर्थक था। उसके अनुसार युद्ध में शत्रु को सदैव धोखे में रखने का प्रयास करना चाहिए और युद्धों में धोखा-धड़ी, अफवाहों तथा झूठे प्रचारों का जमकर प्रयोग करना चाहिए, ताकि शत्रु को हमारी वास्तविकता का ज़रा-सा भी आभास न हो सके। उसका विचार था कि युद्ध में सफलता उच्च तकनीकी तथा अभियन्ताओं के बल पर नहीं, अपितु सैनिक की साहसिक क्षमता एवं सेनापति की कूटियोजनात्मक चालों पर निर्भर करती है। उसमें लिखा है कि—

"Not technicians or engineers but courage of soldiers and strategy of commander are necessary for a victory."

9. राजनीतिक विचारधारा—इस महान् विचारक ने युद्धों का अध्ययन उस समय की परिस्थिति के अनुसार किया था। उसने युद्धों को धार्मिक परम्परागत तथा नैतिकता से दूर रखकर राजनैतिक, आर्थिक, वैधानिक तत्वों से जोड़ा। उसने युद्धकला को राजनीति के साथ जोड़ा। मैक्यावेली प्रथम आधुनिक सैन्य विचारक था, जिसने सैन्य-शक्ति के कार्यों को राजनीतिक जीवन के साथ जोड़ा था। वह यह मानता था कि राजनीतिक सत्ता का आधार सैनिक शक्ति है न कि आर्थिक क्षमता। जैसा कि स्पष्ट रूप से लिखा है—

"The basis of political power is military might and not money."

10. निर्णयात्मक युद्धों का समर्थक—मैक्यावेली वह प्रथम राजनीतिज्ञ था, जिसने युद्धों के संचालन को बंधी हुई धारणाओं से बाहर करने का प्रयत्न किया। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **'The Art of war'** में बड़े ही स्पष्ट रूप में युद्धों के कार्यों एवं व्यवस्थाओं का व्यापक वर्णन किया है। वह युद्धों में निर्णयात्मक स्थिति का पक्षपाती था। उसके

अनुसार युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिए शत्रु के विरुद्ध भयंकर तथा निर्णयात्मक दबाव नितान्त आवश्यक है, जिसके लिए सैनिकों को अनुशासित होना चाहिए। उसका विचार था कि—

"Where the every safety of country depends upon the resolution to be taken, no consideration of justice, humanity of cruelity, nor glory or shame should be allowed to prevail. Means of warfare should be judged solely with reference to efficiency."

(यदि किसी निर्णय पर राष्ट्र की रक्षा निर्भर कर रही है, तो उस समय न्याय अथवा अन्याय,मानवता अथवा क्रूरता, गौरव अथवा शर्म पर ध्यान नहीं देना चाहिए और युद्ध में प्रयुक्त साधनों का औचित्य युद्ध से प्राप्त लाभदायी परिणामों के सन्दर्भ में निर्धारित किया जाना चाहिए।

11. शासक के कर्त्तव्य—इस महान् सैन्य विचारक ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक The Prince'में शासक के कर्त्तव्यों का स्पष्ट उल्लेख किया है। यह उसे आदर्श शासक मानता था, जो हर प्रकार से अपनी राजनैतिक शक्ति बढ़ाकर अपने राज्य का निरन्तर विकास करता रहे। उसने शासक को अपनी शक्ति को सुदृढ़ बनाये रखने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये थे—

(*i*) राज्य की जनसंख्या में वृद्धि करना।

(*ii*) जीते हुए राज्यों में अपने उपनिवेश स्थापित करना।

(*iii*) राज्यों के साथ मित्रता बनाये रखना।

(*iv*) विजित राज्य की प्राप्त सम्पत्ति को कोष में जमा करना।

(*v*) खुले क्षेत्रों में लड़ाई लड़ने का प्रयास करें तथा घेराबन्दी की लड़ाई से बचने का प्रयास करना।

(*vi*) सेना को प्रशिक्षित एवं निपुण बनाये रखना।

12. विजय का रहस्य— महान् सैन्य विचारक मैक्यावेली ने युद्धों में सफलता के लिए कुछ गूढ़ रहस्य बताये थे जिनका पालन करने पर विजय प्राप्त करनें के अवसर अवश्य ही अधिक हो जाते थे। उसने सेना का अनुशासन बनाये रखने पर विशेष बल दिया ताकि विरोधी पर सही ढंग से निर्णायक दबाव डाला जा सके। सेना में उच्च मनोबल वाले सैनिक भर्ती किये जाने चाहिएं। श्रेष्ठ सैनिक ही उसकी विजय के रहस्य थे। इस सन्दर्भ में उसने स्पष्ट शब्दों में लिखा है—

"It is not gold but good soldier that insure success in war. The basis of political power is military might and not money."

(किसी भी राजा को युद्ध में सफलता पैसे द्वारा नहीं, अपितु कुशल सैनिकों के द्वारा प्राप्त होती है। राजनीतिक सत्ता का आधार सैनिक शक्ति होती है न कि आर्थिक क्षमता।)

इस प्रकार मैक्यावेली ने अपनी प्रतिभा के बल पर न केवल राजनीतिक विचार स्थापित किये, अपितु सैन्य विचारों को एक नया रूप देकर जो सिद्धान्त स्थापित किये, क्योंकि

उसने युद्ध संचालन को बंधी हुई धारणाओं से बाहर करने का प्रयत्न किया। अपनी पुस्तक **'युद्ध कला'** में बड़े प्रभावशाली ढंग से युद्ध कार्य को धार्मिक और नैतिक बन्धनों से सर्वथा अलग बताया। उसका विचार था कि युद्ध का उद्देश्य तो संवैधानिक, धार्मिक तथा राजनैतिक होता है। युद्ध काल में राज्य की समस्त शक्तियों एवं साधनों के प्रयोग का स्मर्थक था। उसके अनुसार युद्ध को तब तक लगातार चलाते रहना चाहिए, जब तक कि पूरे राष्ट्र के हित में कोई अनुकूल राजनैतिक फैसला नहीं हो जाता। इसके साथ ही उसने युद्ध के सामान्य उद्देश्य और सेना के सम्बन्धों को स्थापित करके राज्य के हित सुरक्षित बताये।

अत: हम सुनिश्चित रूप से कह सकते हैं कि इस महान् राजनीतिज्ञ एवं सैन्य विशेषज्ञ ने राज्य एवं युद्ध व्यवस्था को एक नया आयाम दिया, जो कि अपने युग की सर्वाधिक नवीन धारणा थी।

4. कार्लवॉन क्लाजविट्ज
(Karl Von Clausewitz)

जनरल क्लाजविट्ज को आधुनिक युद्ध संचालन का प्रणेता माना जाता है। इसका जन्म सन् 1780 ई० में दक्षिण प्रशा के एक अवकाश प्राप्त अधिकारी के परिवार में हुआ। जिस समय इसकी उम्र मात्र 12 वर्ष की थी, उसी समय फ्रान्स के विरुद्ध राइन अभियान में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। इसने जर्मन एवं रूस की सेनाओं में भी एक अधिकारी के रूप में कार्य किया था और नेपोलियन के विरुद्ध भी युद्ध किया था। 1801 ई० में बर्लिन अकादमी की युद्धशाला में प्रवेश लिया और शार्नहार्स्ट की अनुशंसा पर उसे कैप्टन (Captain) के रूप में प्रशा के राजकुमार अगस्ट का अंगरक्षक बनाया गया। 1806 में प्रशा की ओर से नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया, जिससे उसे दुर्भाग्यवश बन्दी बना लिया गया।1807 ई० में जर्मन वापस आया और शार्नहार्स्ट को सहयोग देने लगा जिससे उसे अब मेजर का पद प्राप्त हो गया तथा उसकी नियुक्ति बर्लिन के जनरल वार स्कूल (General War School) में कर दी गयी। प्रशा के राजकुमार फ्रेड्रिक विलियम ने भी क्लाजविट्ज के निर्देशन में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

जब 1812 ई० में प्रशा के राजकुमार ने नेपोलियन के साथ समझौता कर लिया तो क्लाजविट्ज ने जर्मन छोड़कर रूस के ज़ार की सेना में भर्ती होकर नेपोलियन के विरुद्ध आ गया। प्रसिद्ध संग्राम वाटर लू (Water-loo) में भी क्लाजविट्ज ने नेपोलियन के विरुद्ध मोर्चा सम्भाला, किन्तु वाटर लू में नेपोलियन की पराजय से क्लाजविट्ज पुन: जर्मन आ गया और अब वह मेजर जनरल के पद पर आसीन हो गया था और उसे General War School का प्राचार्य बना दिया गया। इस दौरान अपने कुशल संचालन के साथ ही अपने अनुभवों को पुस्तक के रूप में लिपिबद्ध करने की प्रक्रिया शुरू कर दी थी। राज्य की सुदृढ़ स्थिति बनाये रखने के लिए सामरिक एवं राजनैतिक पहलुओं

की महत्त्वपूर्ण व्याख्या की। वर्ष 1830 में क्लाजविट्ज को ब्रेसला में तोपखाने का प्रमुख परिनिरीक्षक (Chief of Artillery Inspection) बनाया गया, तदुपरान्त पोसेन में मुख्य स्टाफ अधिकारी (Chief Staff Officer) भी बनने का अवसर मिला। जीवन के अन्तिम वर्षों में वह पुन: जर्मन वापस लौटा और अन्तत: 16 नवम्बर 1831 ई० को परलोक सिधार गया।

सैन्य विचार—महान् विचारक क्लाजविट्ज की मृत्यु के पश्चात् उसकी लिपि को संकलित करके पुस्तक का रूप देने के लिए उसकी पत्नी ने प्रयत्न किये और सन् 1837 ई० तक 10 पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। जर्मन भाषा में Vomkriege (ON WAR) नामक तीन ग्रन्थों का Volume निकाला। इस पुस्तक में युद्ध के पूर्व कूटियोजना, युद्ध के समय की कार्यवाही-समरतन्त्र, आक्रमण तथा प्रतिरक्षा आदि पहलुओं का विस्तृत विवरण दिया है। इस पुस्तक की महत्ता को देखते हुए इसका अंग्रेजी अनुवाद 1843 ई० में प्रकाशित हुआ। तदुपरान्त अनेक भाषाओं में पुस्तक प्रकाशित की गयी। इस पुस्तक के विषय में जनरल लीफेन ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है—

"Constitute in content & Form the greatest work on-war ever written."

(तथ्यों को सर्वोचित ढंग से प्रस्तुत करने में on war पुस्तक युद्ध विषय पुस्तकों में सर्वोत्तम है।)

क्लाजविट्ज ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ON-WAR' को आठ अध्यायों में बांटा है, जो इस प्रकार से हैं—

1. युद्ध की प्रकृति (Nature of war)
2. युद्ध के सिद्धान्त (Principles of war)
3. कूटयोजना (Strategy)
4. समरतन्त्र (Tactics or combat)
5. सैन्य शक्ति (Military force)
6. आक्रमण (Attack)
7. प्रतिरक्षा (Defence)
8. युद्ध योजना (Plan of War)

अब हम संक्षिप्त रूप में युद्ध विषयक उसके विचारों का विवेचन करते हैं, जो निम्न प्रकार से थे—

1. हिंसात्मक युद्धों का समर्थक
2. राजनीतिक उद्देश्य की प्राप्ति का साधन
3. मनोवैज्ञानिक प्रभाव
4. सम्पूर्ण युद्ध का जनक
5. आक्रामक युद्ध का समर्थक
6. प्रतिरक्षात्मक कार्यवाही

7. कूटियोजनात्मक विचार
8. समरतान्त्रिक विचार
9. भाग्य एवं अवसर का समर्थक
10. युद्ध के सिद्धान्त

1. हिंसात्मक युद्धों का समर्थक—क्लाजविट्ज युद्धों में अधिक से अधिक हिंसा का समर्थक था। इस सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से उल्लेख करते हुए लिखा है कि—

"War is neither a scientific game nor an international sports, but an act of violence pushed to its utmost bounds. In the nature of war there is nothing moderate or philanthropic as such."

(युद्ध न तो वैज्ञानिक खेल है और न ही अन्तर्राष्ट्रीय खेल-कूद, बल्कि युद्ध वास्तव में एक हिंसात्मक कार्यवाही है। युद्ध में नर्मी तथा दया की कोई गुन्जाइश नहीं है।)

इस सन्दर्भ में एक जगह लिखा है कि—

" War is an act of violence intended to compel our enemy to fulfil our will."

(युद्ध एक हिंसात्मक कार्यवाही है जिसका लक्ष्य शत्रु को अपनी बात मनवाने के लिए मज़बूर करना है।)

यह भी उसने उल्लेख किया है कि—

"Victory is purchased by blood & complete victory is assured only through destruction of enemies force."

(विजय खून से प्राप्त होती है, शत्रु सेना का पूर्ण विनाश ही विजय का प्रमुख आधार है।)

2. राजनीतिक उद्देश्य की प्राप्ति का साधन—क्लाजविट्ज के अनुसार युद्ध अन्तर्राष्ट्रीय समाज में राजनैतिक असंतुलन के कारण होते हैं तथा युद्ध किसी राजनैतिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लड़े जाते हैं। उसने स्पष्ट रूप से लिखा है कि—

"War is only part of a social totality and is nothing else than the constinuation of state policy by different means."

(युद्ध समाज की समग्रता का एक हिस्सा है तथा इसके अलावा कुछ नहीं है, मात्र राज्य की नीति को लागू करने का एक साधन है।)

इसके साथ ही क्लाज़विट्ज ने लिखा है कि—

"We see therefore, that war is not merely a political act but also a real political instrument, a continuation of political commerce, a carrying out of the same by other means."

(युद्ध केवल राजनैतिक कार्यवाही ही नहीं,किन्तु एक वास्तविक राजनैतिक साधन भी है, जिसके द्वारा राजनैतिक सम्बन्धों को एक दूसरे तरीके(हिंसात्मक कार्यवाही) से जारी रखा जाता है।)

3. मनोवैज्ञानिक प्रभाव—क्लाजविट्ज युद्धों में मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अत्यधिक

समर्थक था और उसका विचार था कि युद्ध में नैतिक एवं मनोवैज्ञानिक तत्त्व अत्यधिक महत्त्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका निभाते हैं। इस सन्दर्भ में उसने लिखा है कि—

" Physical force are the wooden hilt, but moral force are the shining blade of the sward."

(किसी राष्ट्र की भौतिक शक्ति एक लकड़ी की मूठ की भांति होती है, जबकि नैतिक शक्ति एक चमकती हुई तलवार की धार के समान होती है।)

इस सन्दर्भ में एक उल्लेख यह भी किया है—

" Overthrow at the enemy should not be misunderstood as physical killing. The main battle involves the killing of the enemy's courage rather than of the enemy's soldiers."

(सम्पूर्ण शत्रु के नष्ट किये जाने का अभिप्राय सैनिकों की हत्या से नहीं है, क्योंकि लड़ाई में मुख्य उद्देश्य शत्रु के मनोबल को ध्वस्त करना होता है, न कि उनके सैनिकों की हत्या करना।)

4. सम्पूर्ण युद्ध का जनक—क्लाजविट्ज को युद्ध के सम्पूर्ण स्वरूप का प्रणेता अथवा जनक माना जाता है, क्योंकि वह पूर्ण युद्ध 'Absolute war' का प्रबल समर्थक था। वह मानता था कि इस कार्यवाही को सरल नहीं मानना चाहिए, क्योंकि युद्ध के समय सरल बात भी अत्यन्त कठिन हो जाती है, जिसके कारण प्रत्येक वर्ग इससे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है। उसने लिखा है—

"Everything is very simple in war, but simplest thing is difficult. These difficulties accumulate and produce a friction which no man can imagine exactly who has not seen war."

(युद्ध में प्रत्येक क्रिया बड़ी सरल होती है, किन्तु सबसे सरल क्रिया बड़ी कठिन होती है। इन कठिनाइयों द्वारा युद्ध के वास्तविक व अनुमानित रूपों में इतना अन्तर पड़ जाता है, जिसका अन्दाज़ा बिना युद्ध देखे नहीं लगाया जा सकता।)

क्लाज़विट्ज ने सीमित तथा असीमित दोनों प्रकार के युद्धों का उल्लेख किया है।

5. आक्रामक युद्ध का समर्थक—क्लाज़विट्ज युद्धों में आक्रामक स्थिति अपनाकर तथा शत्रु पर भीषण हिंसा करके अपने लक्ष्य की प्राप्ति का समर्थक था। उसने इस सन्दर्भ ने लिखा है कि—

"The most important thing in war will always be the art of defeating our opponent in combat."

(युद्ध में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात सदैव ही अपने शत्रु को युद्ध क्षेत्र में पराजित करना है।)

उसने लिखा है कि अपनी आक्रमण स्थिति को सुदृढ़ बनाये रखने के लिए निरन्तर अपनी पैंतरेबाजी में परिवर्तन करना चाहिए। वह आक्रामक स्थिति को भी प्रतिरक्षात्मक स्थिति के आधार पर मनवाने का पक्षपाती था।

6. प्रतिरक्षात्मक कार्यवाही—जनरल क्लाजविट्ज प्रतिरक्षात्मक कार्यवाही को युद्ध

का सशक्त स्वरूप मानता था, क्योंकि उसका विचार था कि अनेक परिस्थिति में आक्रामक युद्ध से प्रतिरक्षात्मक युद्ध अधिक शक्तिशाली होते हैं। इसके पीछे उसका तर्क था कि किसी चीज को प्राप्त करने की तुलना में उसे सुरक्षित रखना अधिक सरल होता है। वह प्रतिरक्षा को युद्ध का सर्वाधिक शक्तिशाली पहलू मानता था, क्योंकि प्रतिरक्षा करने वाले को नैतिक बल के साथ ही राजनैतिक सहानुभूति भी प्राप्त होती है। अपने परिचित क्षेत्र में सभी परिस्थितियों का सरलता से लाभ प्राप्त कर सकता है। इसके साथ ही समय तथा अप्रत्याशित घटना का भी लाभ प्राप्त होता है। इस सन्दर्भ में क्लाज़विट्ज ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है—

"Defencive warfare does not consist of waiting idly for things to happen. The purpose of fortification is to keep a considerable part of the enemy's army occupied as siege troops, and to give an opportunity to defeat the rest of his army."

(प्रतिरक्षात्मक युद्ध का अर्थ घटनाओं के घटित होने तथा निष्क्रिय रूप से प्रतीक्षा करना नहीं है, वरन इसका अभिप्राय उस कार्यवाही से है, जिसके द्वारा शत्रु सेना के बड़े भाग को घेरेबन्दी की क्रिया में फसाये रखना है, जिससे विरोधी की शेष सेना को पराजित करने का अवसर मिल सके।)

इसके साथ ही प्रतिरक्षात्मक स्थिति के महत्त्व का स्पष्ट उल्लेख करते हुए पुनः लिखा है कि—

"Defence is the stronger form of war-fare. To preserve is easier than to acquire."

(प्रतिरक्षा युद्ध कला का शक्तिशाली स्वरूप है। शत्रु के क्षेत्र में अधिकार करने की अपेक्षा अपने क्षेत्र को सुरक्षित रखना सरल होता है।)

7. कूटियोजनात्मक विचार—युद्ध क्षेत्र में जाने से पूर्व निर्धारित योजना अर्थात् कूटियोजना के सन्दर्भ में क्लाज़विट्ज ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि—

"Strategy is the theory of the use of combats for the object of war."

(युद्ध के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए लड़ाइयों की कला के प्रयोग को कूटियोजना कहा जाता है।)

क्लाज़विट्ज ने कूटियोजना के **तीन** प्रमुख उद्देश्य वर्णित किए हैं—

1. शत्रु की सैन्य शक्ति को समाप्त कर सफलता पाना।
2. शत्रु की शक्ति के भौतिक स्रोतों तथा अन्य साधनों पर अधिकार जमा लेना।
3. अपने समर्थन में जनमत जुटा लेना।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपायों का भी स्पष्ट उल्लेख किया है, जो संक्षिप्त रूप में इस प्रकार से हैं—

1. शत्रु पर सम्पूर्ण शक्ति के साथ एकजुट आक्रमण करना चाहिए।

2. ऐसी चाल चलना कि अपनी सेना का बड़ा भाग, शत्रु के एक छोटे भाग पर तेज़ी से टूट पड़े।

3. अपनी चाल द्वारा सेना के एक बड़े भाग को शत्रु के विरुद्ध युद्ध के निर्णायक स्थान यथासंभव उसके संचार साधनों के विरुद्ध लगाना तथा अपनी संचार-व्यवस्था को सुरक्षित रखना।

4. अपनी सेना को तेज़ी के साथ निर्णायक स्थल पर हमला करने के लिए तत्पर कर देना।

5. युद्ध के उद्देश्य को ध्यान में रखकर सेना का गठन करना चाहिए।

6. युद्ध के उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही कूटियोजनात्मक चालें चली जायें।

7. उद्देश्य की प्राप्ति हेतु निश्चित समय तथा स्थान पर सेना का केन्द्रीयकरण किया जाये, इसके लिए चकमा देना चाहिए।

8. ऐसी चाल चली जाये, ताकि शत्रु का पूर्ण विनाश किया जा सके।

9. युद्ध क्षेत्र में पैंतरेबाजी के लिए अपने सैनिकों में निरन्तर साहस एवं नैतिक बल बनाये रखना चाहिए।

10. अपनी आपूर्ति व्यवस्था को निरन्तर बनाये रखना चाहिए तथा आकस्मिक समस्याओं से निपटने के लिए नैतिक एवं भौतिक साधनों के साथ तैयार रहना चाहिए।

इस प्रकार कूटियोजना की विस्तृत व्याख्या क्लाज़विट्ज द्वारा की गयी है।

8. समरतान्त्रिक विचार—क्लाज़विट्ज ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ON WAR' में समरतन्त्र को युद्ध में अपनाते समय निम्नलिखित बातों पर विशेष रूप से ध्यान देने का उल्लेख किया है, ताकि सरलता के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति की जा सके। संक्षिप्त में इस प्रकार से है—

1. अपनी शक्ति को शत्रु से छिपाकर रखें।

2. सफलता के लिए आरक्षित दल अवश्य रखें।

3. पीछे के आरक्षित दलों को छोड़कर अन्य सभी तैनात दलों को तिरछा होकर युद्ध क्षेत्र में आगे बढ़ाओ।

4. शत्रु के पीछे हटने वाले मार्गों को अवरुद्ध कर देना।

5. प्रतिरक्षा के समय किलेबन्दी तथा मोर्चेबन्दी अपनाओ।

6. शत्रु पर पार्श्व (दायें अथवा बायें) से आक्रमण करना चाहिए।

7. शत्रु पर अप्रत्याशित आक्रमण करना चाहिए।

8. शत्रु को सभी ओर से उलझाये रखना तथा उसके सबसे कमज़ोर भाग से आक्रमण करना चाहिए।

9. युद्ध के दौरान अपनी सेना की लम्बी पंक्ति न करें।

10. निर्णायक युद्ध के लिए तोपखाने की पहल करके पैदल सेना द्वारा शत्रु को थका देना चाहिए।

क्लाज़विट्ज ने समरतन्त्र की परिभाषा इस प्रकार से की है—

"Tactics is the theory of use of military force in combat."

(युद्ध क्षेत्र में सैन्य शक्ति के प्रयोग का सिद्धान्त ही समरतन्त्र है।)

समरतन्त्र की व्याख्या करते हुए उसने लिखा है कि—

"The most important thing in war will always be the art of defeating our opponent in combat."

(युद्ध में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात सदैव ही शत्रु को संग्राम में पराजित करना है।)

इस प्रकार समरतन्त्र के सन्दर्भ में क्लाज़विट्ज ने प्रत्येक परिस्थिति को दृष्टि में रखकर व्याख्या की है, जो कि आज के सन्दर्भ में भी बहुत हद तक परीक्षा की कसौटी में खरी उतरती है।)

9. भाग्य एवं अवसर का समर्थक—क्लाज़विट्ज का विचार था कि प्रत्येक सेनापति को पर्याप्त अवसर का अधिकतम लाभ उठाना चाहिए। इसके साथ ही युद्धों में वह भाग्य के भाग का भी प्रबल समर्थक था। युद्ध में घटित आकस्मिक घटनायें जैसे बरसात, तूफान, आकस्मिक सेनापति की मृत्यु आदि भाग्य या संयोग से होती है। उसने इस सन्दर्भ में लिखा है कि—

"War is the province of chance. In no sphere of human activity is such a margin to be left for this instruder."

(युद्ध में संयोग बहुत महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। मानवीय क्रिया के किसी अन्य क्षेत्र में इसका इतना प्रभाव नहीं जितना युद्ध में है।)

इस प्रकार क्लाज़विट्ज युद्धों के निर्णयों में सेनापति की योग्यता परिस्थितियों का लाभ उठाने की कला का जहां स्पष्ट उल्लेख करता है, वहां वह युद्धों में भाग्य के भाग को भी खुलकर मानता था।

10. युद्ध के सिद्धान्त—क्लाज़विट्ज ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ON WAR' में किसी भी अभियान में सफलता प्राप्त करने के लिए कुछ युद्ध के सिद्धान्तों का उल्लेख किया है, जो कि आज के परिवेश में भी बहुत हद तक सहायक सिद्ध होते हैं। उसके द्वारा वर्णित किये गये सिद्धान्त संक्षिप्त में इस प्रकार से हैं—

(*i*) मानसिक सन्तुलन बनाये रखना।
(*ii*) शान्त एवं सुदृढ़ता से काम लेना।
(*iii*) हौसले के साथ कार्यवाही करना।
(*iv*) प्रतिरक्षा में भी आक्रमणात्मक स्थिति अपनाना।
(*v*) सुनिश्चित क्षेत्र में ही कार्यवाही करना।
(*iv*) आरक्षित सेना अवश्य रखना।
(*vii*) शत्रु का पीछा करना।
(*viii*) शत्रु को चकित करना।

इस प्रकार युद्ध के सिद्धान्तों के साथ ही युद्ध के वातावरण सहित प्रत्येक पहलू की

मीमान्सा करने का अनूठा प्रयास क्लाज़विट्ज द्वारा किया गया। आधुनिक युद्धनीतिक विचारों के विकास में इसकी देन अद्वितीय मानी जाती है। यद्यपि वह युद्धों में हिंसा का प्रबल समर्थक था, इसके बावजूद उसके द्वारा प्रस्तुत विचार आधुनिक युद्ध व्यवस्था के सिद्धान्त में भी बहुत हद तक खरे उतरते हैं।

5. अन्टोनी हेनरी जोमिनी
(Antone Hanre Jomini)

परिचय—यह सैन्य विचारक क्लाज़विट्ज के समय का मूल रूप से स्विट्ज़रलैण्ड का नागरिक था। इस प्रतिभा सम्पन्न सेनापति ने पहले फ्रान्स की तथा बाद में रूस की सेना में स्टाफ आफिसर के पद पर कार्य किया। जोमिनी ने स्वतन्त्र रूप से सेना की किसी बड़ी रचना का कमाण्ड नहीं किया था। वह प्रबन्धक विभाग में कमीशन होकर आया था। इस विद्वान् ने नेपोलियन के युद्धों और सफलताओं का विश्लेषण करने का प्रयास किया। जोमिनी ने इटली अभियानों की व्याख्या अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **"नेपोलियन का राज्य तथा सैन्य नीति"** में की है। जोमिनी का जन्म 1779 ई० में साधारण परिवार में फ्रान्स के वाड प्रदेश में हुआ था। सन् 1869 ई० में पेरिस में जनरल जोमिनी की मृत्यु हो गयी थी।

जनरल जोमिनी की शिक्षा पेरिस में हुई और बैंक की नौकरी से शुरुआत करने वाले इस विचारक को नेपोलियन ने इतना अधिक प्रभावित किया कि सेना में अवैतनिक कार्य के लिए भी तैयार हो गया और अंततः फ्रांस की सेना में उसे स्थान प्राप्त हो गया। अध्ययन में रुचि रखने वाले इस विचारक ने अपनी प्रथम पुस्तक 'Treatise on Great Military Operation' (महान सैन्य संक्रियाएं) में विश्व विख्यात सेनापतियों में विशेष रूप से नेपोलियन तथा फ्रेड्रिक महान की कूटियोजना तथा समरतन्त्र की तुलनात्मक व्याख्या की। नेपोलियन को जब इसकी पुस्तक प्राप्त हुई तो उसे आश्चर्य लगा कि उसकी कूटियोजना एवं समरतन्त्र सविस्तार विवेचन इस पुस्तक में है। उसने कहा कि—

"It teaches my whole system of war to my enemies."[1]

(यह पुस्तक तो मेरी युद्ध कला को मेरे शत्रुओं के लिए स्पष्ट करती है।)

नेपोलियन ने जोमिनी की कृति से प्रसन्न होकर उसे सेना में कर्नल के पद पर नियुक्त किया। इसके पश्चात् फ्रांस के प्रसिद्ध मार्शल ने (Ney) के प्रमुख स्टाफ अधिकारी के रूप में भी कार्य किया।

जोमिनी ने नेपोलियन की कार्य शैली एवं मनोवृत्ति का गहन अनुमान लगा दिया था। इसी कारण नेपोलियन द्वारा उसकी निर्धारित योजना को बिना जानकारी के ही बता दिया था। आश्चर्यचकित होकर नेपोलियन ने उसकी विलक्षण सैन्य प्रतिभा का अनुमान लगा लिया था और इसी कारण पोलैण्ड तथा प्रशा के सैन्य अभियानों में जोमिनी के

1. E.M. Earte- Markers of Modern strategy- Page 81

सुझावों के अनुसार कार्यवाही की थी। इसी प्रकार जब रूस के अभियान में नेपोलियन की सेना फँस गयी, तो उसे जोमिनी की सलाह के आधार पर सुरक्षित निकालने में सफल हो पाया था। इसकी कूटियोजनात्मक दक्षता का अनुमान लगाकर नेपोलियन ने इसे ब्रिगेडियर जनरल बना दिया था। इसी दौरान आकस्मिक बीमार हो जाने के कारण उसे वापस पेरिस आना पड़ा। जोमिनी ने नेपोलियन द्वारा किये गये इटली अभियान का उल्लेख **'नेपोलियन का राज्य तथा नीति'** नामक पुस्तक के रूप में की गयी। इस प्रकार नेपोलियन को आधुनिक युद्धों के विकास का जन्मदाता कहलाने का श्रेय बहुत हद तक जोमिनी का ही है।

अब हम जनरल जोमिनी की रचनाओं का उल्लेख करते हैं, जिनके माध्यम से उसके सैन्य विचारों एवं युद्धकला के सिद्धान्तों की स्पष्ट परख की जा सकती है, संक्षिप्त रूप में इस प्रकार से है—

1. Great Military Operation (महान् सैन्य अभियान)
2. Summary of the Art of War (युद्धकला का सारांश)
3. Pumphlets (छोटी-छोटी पत्रिकाएं)

सैन्य विचार— अब हम जोमिनी के सैन्य विचारों का संक्षिप्त में उल्लेख करते हैं, जिसके द्वारा आधुनिक सैन्य समीक्षा को एक नयी दिशा मिली, जो निम्नलिखित प्रकार से है—

1. युद्ध के सिद्धान्त
2. केन्द्रीयकरण का सिद्धान्त
3. संचार व्यवस्था का महत्त्व
4. आश्चर्यचकित करना
5. सहयोग का समर्थक
6. फायर एवं नीति
7. आपूर्ति व्यवस्था का महत्त्व
8. आक्रामक कार्यवाही
9. कूटियोजना
10. समरतन्त्र

1. युद्ध के सिद्धान्त (Principles of war)—जोमिनी इस बात का प्रबल समर्थक था कि युद्ध के कुछ निश्चित सिद्धान्त एवं नियम होते हैं, जिनकी कभी भी अवहेलना नहीं की जा सकती। इसे 'अनिश्चितता पूर्ण विज्ञान' मानने वाले समर्थकों का विरोध करते हुए उसने बड़े स्पष्टपूर्ण शब्दों में लिखा है कि—

"युद्ध के कुछ ऐसे मौलिक सिद्धान्त होते हैं, जिनकी अवहेलना करने पर भारी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है तथा युद्ध के निश्चित सिद्धान्तों का पालन करते हैं, उन्हें प्रायः प्रत्येक परिस्थिति में सफलता प्राप्त होती है।"

इसके साथ ही युद्ध के सिद्धान्तों की पुष्टि करते हुए पुन: लिखा है कि—

"सदैव से ही ऐसे आधारभूत सिद्धान्त रहे हैं, जिन पर युद्धकला के सुपरिणाम निर्भर करते हैं-ये सिद्धान्त समय, स्थान तथा शस्त्रास्त्रों के परिवर्तन से प्रभावित होते हैं।"

इस प्रकार आधुनिक युद्ध व्यवस्था में भी युद्ध के सिद्धान्तों की अवहेलना करके सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। इस सन्दर्भ में उसके विचार आज भी कसौटी में उतने ही खरे उतरते हैं।

2. केन्द्रीयकरण का सिद्धान्त (Principle of Concentration)—जोमिनी के अनुसार किसी भी अभियान में सफलता प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि अपनी सेनाओं को बड़ी तीव्रता के साथ एक निश्चित समय में एक स्थान पर केन्द्रित करें। उसका विचार था कि शक्ति का केन्द्रीयकरण (Concentration of Force) युद्धों के लिए अत्यन्त आवश्यक है, उसने इसे 'कूटियोजना के सिद्धान्तों का निर्देशक' (Guiding principles of strategy) का नाम देकर सम्बोधित किया है। इस सन्दर्भ में लिखा है कि—

"इस प्रकार सामरिक चाल चली जाये, जिससे अपनी सेना का मुख्य बड़ा भाग युद्धभूमि के निर्णयात्मक क्षेत्र पर आ जाये अथवा शत्रु के उस भाग पर केन्द्रित हो जाये, जिसे जीतना आवश्यक है।"

3. संचार-व्यवस्था का महत्त्व (Importance of Communication)—जनरल जोमिनी ने युद्धों में संचार-व्यवस्था बनाये रखना तथा शत्रु की संचार-व्यवस्था को भंग करने का एक आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण पहलू के रूप में माना है। इसके साथ ही उसने उल्लेख किया है कि अगर सम्भव हो सके , तो अपनी शक्तिशाली सेना को शत्रु के नाजुक अथवा कमज़ोर स्थानो पर पहल करके आक्रमण करना चाहिए। संचार व्यवस्था के महत्त्व का उल्लेख करते हुए बताया है कि—

"कूटियोजनात्मक प्रयासों के द्वारा शत्रु की सेना के एक बड़े भाग को सफलतापूर्वक युद्ध क्षेत्र के निर्णयात्मक स्थल पर ले जाये तथा जहां तक संभव हो उसे संचार-साधनों से दूर कर देना चाहिए और अपने को बचाये रखना चाहिए।"

इसके साथ ही उसने स्पष्ट रूप से लिखा है, जब भी कोई सेनापति किसी कूटियोजना का निर्धारण करे, तो उसे अपनी आपूर्ति व्यवस्था तथा संचार-व्यवस्था का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए।

4. आश्चर्यचकित करना (Surprise)—जोमिनी ने युद्ध के सिद्धान्तों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि शत्रु को आश्चर्यचकित करके सफलता प्राप्त करना अत्यन्त सरल एवं सुविधाजनक हो जाता है। इसका प्रमुख कारण प्रस्तुत करते हुए नेपोलियन के द्वारा आस्ट्रिया में चलाये गये अभियान का उदाहरण दिया है। यह एक ऐसा अभियान था, जिससे नेपोलियन ने एक सीमित समय में लम्बी यात्रा को पार करते हुए अनेक प्राकृतिक

बाधाओं को उठाते हुए बहुत बड़ा कूटियोजनात्मक आश्चर्य प्राप्त किया था। यह एक ऐसा अभियान था, जिसे केवल नेपोलियन ही कर सकता था।

उसने आश्चर्यचकित करने के सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से लिखा है कि—

"युद्धाभियान से पूर्व योजना तथा तैयारी पर बल दिया है , ताकि युद्ध में पहल करके गतिशीलता और शक्ति के संकेन्द्रण द्वारा शत्रु को आश्चर्यचकित कर पूर्ण सफलता प्राप्त की जा सके।"

5. सहयोग का समर्थक (Co-operation)—जोमिनी किसी भी अभियान मे कार्यवाही के लिए सभी सेनाओं के सहयोग को अनिवार्य मानता था। उसका सुझाव था कि युद्ध क्षेत्र में विभिन्न सेनाओं को भू-भाग अथवा क्षेत्र की आकृति या बनावट के अनुसार विभिन्न मोर्चों पर इस तरह से तैनात किया जाना चाहिए कि वे परस्पर सहयोग प्रदान कर सकें। जोमिनी ने युद्ध में सेना के सहयोग के सिद्धान्त का उल्लेख करते हुए स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि—

"No one arm wins battles. The combined action of all arms and services is essential to success."

(कोई भी अकेली सेना युद्ध नहीं जीत सकती, क्योंकि सफलता सभी लड़ाकू तथा सेवक सेनाओं के संयुक्त प्रयास से प्राप्त होती है।)

6. फायर एवं गति (Fire and Movement)—जोमिनी का विचार था कि युद्धाभियान के समय फायर एवं गतिशीलता के सिद्धान्त को अपनाकर जहां शत्रु को आश्चर्य में डालना सरल हो जाता है, वहां शत्रु पर दबाव डालकर दोहराकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। उसका कहना था कि हथियारों, तोपों, गोलों तथा बारूद के द्वारा शत्रु पर तीव्र प्रहार करके उसे दबा देना चाहिए और अपनी सेना को तेजी के साथ आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त करना चाहिए। **'फायर एवं गति'** (Fire and Movement) के द्वारा अपनी कूटियोजना का निर्धारण करना चाहिए। विजय प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपनी सेना को बड़ी तेजी के साथ एक स्थान पर केन्द्रित करें तथा शत्रु पर फायर करके उसे तितर-बितर होने के लिए मजबूर कर दें।

7. आपूर्ति व्यवस्था का महत्त्व (Importance of Logistics)—जोमिनी के विचार था कि आधुनिक युद्धों में आपूर्ति व्यवस्था तथा सैन्य परिचालन की सक्रिय भूमिका रहती है। इसको कभी भी नकारा नहीं जा सकता। उसने अपनी पुस्तक **'Summary the Art of War'** (युद्धकला का सारांश)में आपूर्ति (Logistics) पर एक पूरा अध्याय लिखा है। उसने युद्ध में आवश्यक आपूर्ति के सन्दर्भ में लिखा है कि—

"किसी भी युद्ध में सफलता प्राप्त करने के लिए केवल राजनैतिक उद्देश्य ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि उसके पाने के लिए सभी उचित प्रकार के साधन जैसे— हथियार, बन्दूक, तोप, गोला व बारूद आदि की आपूर्ति आवश्यक होती है।"

नेपोलियन ने इसके सिद्धान्त को ध्यान में रखकर ही कहा था कि **'सेना पेट के बल चलती है।'**

जोमिनी ने लिखा है कि—

"Logistics is the practical manner of moving armies. It is the execution of the plans of strategy and tactics."

8. आक्रामक कार्यवाही (Offencive Action)—जोमिनी युद्धों में आक्रमणात्मक कार्यवाही का प्रबल समर्थक था। सुरक्षात्मक स्थिति में बैठकर शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा करना सर्वथा अनुचित मानता था। उसका विचार था कि अपनी राज्य सीमा को सघन किलेबन्दी के द्वारा घेरना अथवा अपनी सेना को खाइयों तथा मोर्चों में छिपाना अत्यन्त निकृष्ट एवं दोषपूर्ण नीति मानता था। इस सन्दर्भ में उसने स्पष्ट शब्दों में लिखा है—

"It is bad policy to cover a frontier with fortesses very close together or bury an army in intrenchments."

उसका विचार था कि सेनापति को सदैव युद्धों में आक्रामक स्थिति अपनानी चाहिए, किन्तु वह युद्ध में अत्यधिक हिंसा का पक्षपाती नहीं था। उसके आक्रमण का उद्देश्य शत्रु के राज्य पर अधिकार करना तथा शत्रु की सेना के आत्मसमर्पण और पतन पर अधिक ध्यान देना था। इस सन्दर्भ में भी लिखा है—

"The purpose of war is to occupy whole or part of enemy territory."

(युद्ध का उद्देश्य शत्रु की सम्पूर्ण सीमा अथवा कुछ हिस्से पर अधिकार जमाना होता है।)

9. कूटियोजना (Strategy)—जोमिनी ने जहां कूटियोजना को जहां अपने शब्दों में परिभाषित करके व्यक्त किया है, वहां इसके आवश्यक पहलुओं का विस्तृत विवेचन भी किया है। उसके अनुसार—

"Strategy is the art of making war upon the map. It comprehends the whole of the theatre of operation."

(मानचित्र पर समस्त यौद्धिक कार्यवाही की समस्त परियोजनाओं का निर्धारण करना ही कूटियोजना है।)

जोमिनी ने स्पष्ट उल्लेख किया है—जब भी कोई सेनापति किसी अभियान के लिए कूटियोजना तैयार करे, तो उसे निम्नलिखित बातों पर विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए—

(*i*) शत्रु पर सम्पूर्ण ताकत से हमला करने के पूर्व लक्ष्य का निर्धारण अवश्य कर लेना चाहिए।

(*ii*) शत्रु को अधिक उलझाकर रखो तथा उसके एक कमज़ोर हिस्से पर जोरदार आक्रमण करो।

(*iii*) समय बर्बाद किये बिना ही, शत्रु पर आक्रमण किया जाना चाहिए।

(*iv*) शत्रु के सैन्य दलों का विनष्ट कर तथा छोटे दलों पर टूट पड़ो।

(*v*) सफलता मिलने पर शत्रु का पूरी शक्ति के साथ पीछा करना आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है।

(*vi*) अपनी सेना के पृष्ठ भाग में आरक्षित सेना (*Reserve Force*) को अवश्य तैनात रखो।

(*vii*) शत्रु को सदैव आश्चर्य-चकित (Surprise) करने का प्रयास करो।

(*viii*) आक्रमण की स्थिति में अपनी सेनाओं में आपूर्ति व्यवस्था (Logistics) बनाये रखो।

(*ix*) अपनी सेना को निर्णायक स्थल पर पहुंचाने का प्रयास करो।

(*x*) अपनी सेना को गतिशीलता के साथ निश्चित समय में ही निश्चित स्थान पर केन्द्रित करने का प्रयास करें।

10. समरतन्त्र (Tactics)—जोमिनी ने समरतन्त्र को युद्ध क्षेत्र की महान कला बताया है। उसके अनुसार एक योग्य सेनापति अपनी सेनाओं का समुचित प्रयोग परिस्थितियों को विशेष रूप से दृष्टि में रखकर करता है। इस विद्वान् ने समरतन्त्र को इस प्रकार से परिभाषित किया है—

"The main base of an army is the battle of Tactics."

(एक सेना का प्रमुख आधार उसकी युद्ध कला अथवा समरतन्त्र ही है।)

"Tactics includes the maneuvers of an army on the field of battle."

(युद्ध क्षेत्र में सेना की पैंतरेबाजी अथवा आक्रमण संरचनाओं को ही समरतन्त्र कहा जाता है।)

समरतन्त्र के सन्दर्भ में जोमिनी ने निम्नलिखित सुझाव भी वर्णित किये हैं—

(*i*) समरतन्त्र में शत्रु को चकित करने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि इसका अपना ही महत्त्व है।

(*ii*) समस्त सैनिकों को एक ही सेनापति के अधीन रखना चाहिए ताकि वह प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

(*iii*) युद्ध में सदैव आक्रामक स्थिति को अपनाना चाहिए।

(*iv*) शत्रु के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहिए।

(*v*) सभी सेनाङ्गो द्वारा संयुक्त प्रयास किये जाने चाहिएं।

उपरोक्त विचारों के साथ ही जोमिनी ने निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण तत्त्वों का भी स्पष्ट उल्लेख किया है—

1. युद्ध के कुछ आधारभूत सिद्धान्त होते हैं, जिन पर युद्धकला के सुपरिणाम सुनिश्चित होते हैं।

2. युद्ध मानव जाति की कोई विजातीय क्रिया नहीं, अपितु मानव सभ्यता एवं संस्कृति का एक अभिन्न अंग है।

3. जोमिनी ने सक्रिया रेखाओं (Line of operation) को आन्तरिक एवं बाह्य रूप से प्रस्तुत किया है।

4. सेनाङ्गो के कर्त्तव्यों (Duties) एवं उपयोगिता (Utilities) का विशेष उल्लेख किया है।

5. युद्धों के पूर्व योजना निर्धारित करना अत्यन्त आवश्यक बताया है।

6. शत्रु के सन्दर्भ में पूर्व जानकारी होनी आवश्यक है, इसलिए गुप्तचर एवं छानबीन दस्ते आवश्यक हैं।

7. जोमिनी ने जल एवं थल संक्रिया का भी उल्लेख किया है तथा समुद्र पर अधिकार प्राप्त करना नितान्त आवश्यक बताया है।

8. समय प्राप्त करने के लिए भू-क्षेत्र को शत्रु के लिए छोड़ते हुए, पीछे हटा जा सकता है ।

9. जोमिनी ने कमाण्ड प्रणाली तथा सैन्य अधिकारियों के कार्यों के महत्त्व का भी स्पष्ट उल्लेख किया है।

10. विश्व शान्ति के लिए अन्तर्राष्ट्रीय नियमों की सम्भावनाओं के सन्दर्भ में भी लिखा है।

इस प्रकार जोमिनी ने युद्ध के महत्त्वपूर्ण पहलुओं का एक विशिष्ट वर्णन किया है। इस विद्वान् ने जहां अपने सैन्य विचारों से नवीन दिशा दी है, वहां उसने युद्ध अभियान के पूर्व योजना तथा तैयारी पर विशेष बल दिया है। अत: हम निर्विवाद रूप से कह सकते हैं कि इस विद्वान् ने अपनी प्रतिभा से युद्धकला को एक नवीन दिशा दी है। ब्रिगेडियर जनरल हिटिल (Hittle) ने इसके सन्दर्भ में उचित ही लिखा है—

"Thus Napoleon was the God of war and Jomini was his prophet."

(नेपोलियन युद्ध का देवता था और जोमिनी उसका एक मसीहा था।)

महत्त्वपूर्ण प्रश्न
(Important Questions)

1. "कौटिल्य के समान, जनरल सन्तजू एक कुशल सेनापति और निपुण राजनीतिज्ञ था।" उक्त कथन को ध्यान में रखकर इसके विचारों की विस्तृत व्याख्या करो।
2. 'सन्तजू के द्वारा बताये गये नियम आज की परीक्षा की कसौटी में पूरी तरह खरे उतरते हैं' व्याख्या करें। *(M.D.U.2005)*
3. सन्तजू की युद्ध नीति, समरतन्त्र तथा प्रशासन व्यवस्था की विस्तारपूर्वक व्याख्या कीजिए।
4. "कौटिल्य एक प्रतिभाशाली सैन्य विशेषज्ञ था।" इस कथन की व्याख्या करते हुए उसके सैन्य विचारों की व्याख्या सविस्तार कीजिए। *(M.D.U. 2004)*
5. 'कौटिल्य के सैन्य विचार व प्रचार कई आगामी शताब्दियों के लिए नियम बन गये' कथन की पुष्टि करते हुए इसकी गुप्तचर व्यवस्था का उल्लेख करें।
6. आचार्य कौटिल्य के द्वारा बताये गये विदेशनीति के नियमों की सविस्तार व्याख्या करते हुए राजदूतों के प्रकार बतायें। *(M.D.U. 2006)*

7. ''जहां अच्छे नियम होते हैं, वहीं अच्छी सेना होगी अर्थात् जहां पर अच्छी सेना होगी, वहां पर अच्छा शासन होगा।'' कथन की व्याख्या करते हुए मैक्यावेली के सैन्य विचार लिखें।

या

8. 'मैक्यावेली एक कुशल सैन्य विचारक था जिसने युद्धकला को राजनीतिक आधार पर सुनिश्चित किया।' इस कथन की पुष्टि करते हुए उसके सैनिक विचारों की व्याख्या करो।
9. मैक्यावेली के कूटयोजनात्मक तथा समरतान्त्रिक विचारों की विस्तारपूर्वक व्याख्या करिये।
10. ''यदि छल प्रपंच से विजय प्राप्त की जा सकती है, तो शक्ति का प्रयोग नहीं करना चाहिए। मैक्यावेली के इस कथन को दृष्टि में रखते हुए उसके समरतान्त्रिक विचार बताओ।''
11. क्लाजविट्ज के द्वारा बताये गये कूटयोजनात्मक तथा समरतान्त्रिक विचारों की विस्तृत विवेचना करो। *(M.D.U. 2005)*
12. उद्देश्य की प्राप्ति के लिए क्लाजविट्ज द्वारा बताये गए उपायों का विस्तृत उल्लेख करें।
13. जनरल जोमिनी के सैन्य विचारों की विस्तारपूर्वक व्याख्या कीजिए।
14. जोमिनी द्वारा अपनाये गये कूटयोजना तथा समरतन्त्र के सिद्धान्तों की विवेचना कीजिए।
15. 'नेपोलियन युद्ध का देवता था और जोमिनी उसका मसीहा था।' कथन की व्याख्या उदाहरण सहित करो। *(K.U.K. 2004, 2006)*
16. ''किसी युद्ध को जीतने के लिए केवल राजनैतिक लक्ष्य पर्याप्त नहीं होता, अपितु उसकी प्राप्ति के लिए उचित प्रकार के शस्त्रास्त्र, बन्दूक, तोप, गोला, बारूद आदि भी आवश्यक होते हैं।'' जोमिनी के इस कथन को ध्यान में रखकर उसके विचारों की व्याख्या करो।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(Objective Type Questions)

प्रश्न 1. 'युद्ध राज्य का महान् कार्य है, जीवन मरण का क्षेत्र है।' कथन किसका है—

(क) सन्तजू का (ख) कौटिल्य का
(ग) क्लाजविट्ज का (घ) मैक्यावेली का

प्रश्न 2. युद्ध कला (The Art of War) पुस्तक किसकी रचना है।

(क) क्लाजविट्ज की (ख) सन्तजू की
(ग) जोमिनी की (घ) नेपोलियन की

प्रश्न 3. 'सभी युद्ध कलायें चकमे पर आधारित है' कथन किसका है ?

(क) क्लाजविट्ज का (क) कौटिल्य का

(ग) सन्तजू का (घ) जोमिनी का

प्रश्न 4. सन्तजू ने कितने प्रकार के जासूसों का उल्लेख किया है—

(क) पांच प्रकार के (ख) चार प्रकार के

(ग) तीन प्रकार के (घ) छः प्रकार के

प्रश्न 5. 'अर्थशास्त्र' की रचना किसने की ?

(क) कौटिल्य ने (ख) सन्तजू ने

(ग) क्लाजविट्ज ने (घ) मैक्यावेली ने

प्रश्न 6. निःसृष्टार्थ किसे कहा जाता था ?

(क) गुप्तचर (ख) राजदूत

(ग) सेनापति (घ) उपर्युक्त में कोई भी नहीं

प्रश्न 7. किसी भी राज्य की नीति को लागू करने के कितने प्रकार हैं ?

(क) चार प्रकार (ख) पांच प्रकार

(ग) छः प्रकार (घ) सात प्रकार

प्रश्न 8. कापटिक किस श्रेणी के गुप्तचर होते थे ?

(क) अन्तर्राष्ट्रीय गुप्तचर (ख) विद्यार्थी वेश में

(ग) राष्ट्रीय गुप्तचर (घ) उपर्युक्त में कोई नहीं

प्रश्न 9. संस्थाचर गुप्तचर किन्हें कहा जाता था ?

(क) संन्यासी वेश में गुप्तचर (ख) व्यापारी वेश में गुप्तचर

(ग) कृषक वेश में गुप्तचर (घ) अन्तर्राष्ट्रीय गुप्तचर

प्रश्न 10. कौटिल्य ने कितने प्रकार की व्यूह रचना वर्णित की है ?

(क) छः प्रकार की (ख) सात प्रकार की

(ग) आठ प्रकार की (घ) नौ प्रकार की

प्रश्न 11. 'ON WAR' नामक पुस्तक किसकी रचित है ?

(क) मैक्यावेली (ख) जोमिनी

(ग) क्लाजविट्ज (घ) सन्तजू

प्रश्न 12. 'युद्ध एक हिंसात्मक कार्यवाही है, उसका उद्देश्य शत्रु को अपनी बात मनवाने के लिए बाध्य करना है।' कथन है—

(क) क्लाजविट्ज का (ख) सन्तजू का

(ग) जोमिनी का (घ) मैक्यावेली का

प्रश्न 13. 'युद्ध में प्रत्येक क्रिया सरल है, किन्तु सरल क्रिया बहुत कठिन है।' कथन है—

(क) सन्तजू का (ख) जोमिनी का
(ग) मैक्यावेली का (घ) क्लाजविट्ज का

प्रश्न 14. 'राजनैतिक सत्ता का आधार सैनिक शक्ति होती है न कि आर्थिक क्षमता' कथन किसका है ?

(क) जोमिनी (ख) मैक्यावेली
(ग) क्लाजविट्ज (घ) नेपोलियन

प्रश्न 15. सम्पूर्ण युद्ध का जनक किसे कहा जाता है ?

(क) जोमिनी को (ख) क्लाजविट्ज को
(ग) मैक्यावेली को (घ) उपर्युक्त में कोई भी नहीं

प्रश्न 16. 'युद्ध क्षेत्र में सैन्य शक्ति के प्रयोग का सिद्धान्त ही समरतन्त्र है।' कथन किसका है—

(क) मैक्यावेली (ख) जोमिनी
(ग) नेपोलियन (घ) क्लाजविट्ज

प्रश्न 17. क्लाजविट्ज कहां का निवासी था ?

(क) फ्रांस का (ख) जर्मनी का
(ग) स्विट्ज़रलैण्ड का (घ) प्रशिया का

प्रश्न 18. 'Great Military Operation' पुस्तक किसकी रचना है ?

(क) क्लाजविट्ज (ख) जनरल जोमिनी
(ग) जे० एफ० सी० फुलर (घ) मैक्यावेली

प्रश्न 19. 'युद्ध का उद्देश्य शत्रु की सम्पूर्ण सीमा अथवा कुछ हिस्सों पर अधिकार जमाना है।' कथन किसका है ?

(क) जे० एफ० सी० फुलर का (ख) जनरल जोमिनी का
(ग) मैक्यावेली का (घ) क्लाजविट्ज का

प्रश्न 20. "Main base of an Army is the battle of tactics" कथन किसका है ?

(क) नेपोलियन का (ख) कैड्रिक महान का
(ग) जोमिनी का (घ) क्लाजविट्ज का

प्रश्न 21. प्रसिद्ध सैन्य विचारक सन्तजू (Suntzu) किस देश का निवासी था ?

(क) चीन (ख) भारत
(ग) फ्रांस (घ) स्वीडन

प्रश्न 22. सन्तजू की महत्त्वपूर्ण रचना का नाम है—

(क) 'ON War' (ख) The Art of war

(ग) Principles of War (घ) Strategy

प्रश्न 23. सन्तजू के अनुसार युद्ध योजना के लिए निर्धारण हेतु कितने तत्त्वों का उल्लेख किया है ?

(क) सात (ख) ग्यारह

(ग) पांच (घ) चार

प्रश्न 24. ''कमज़ोर बिन्दुओं पर एक सेनापति को अवश्य ध्यान देना चाहिये व उन पर आक्रमण करना चाहिए,'' कथन किस विद्वान् का है ?

(क) जोमिनी (ख) क्लाज़विट्ज़

(ग) नेपोलियन बोनापार्ट (घ) सन्तजू

प्रश्न 25. 'सन्तजू ने युद्ध में कितने प्रकार के स्थलों (Grounds) का उल्लेख किया है ?'

(क) दस प्रकार के (ख) नौ प्रकार के

(ग) आठ प्रकार के (घ) सात प्रकार के

प्रश्न 26. सन्तजू ने कितने प्रकार के जासूसों का उल्लेख किया है ?

(क) पांच (ख) आठ

(ग) दस (घ) सात

प्रश्न 27. अग्नि आक्रमण के समय सेना को कितने कार्यों के लिए तैयार रहना चाहिए ?

(क) पांच (ख) दस

(ग) सात (घ) आठ

प्रश्न 28. सन्तजू (Suntzu) ने भूखण्ड का वर्गीकरण (Classification of Terrain) कितने रूपों में किया है ?

(क) छः प्रकार (ख) पांच प्रकार

(ग) चार प्रकार (घ) ग्यारह प्रकार

प्रश्न 29. कौटिल्य ने पड़ोसी से सन्धि के कितने विभेद बताये हैं ?

(क) पांच विभेद (ख) छः विभेद

(ग) चार विभेद (घ) सात विभेद

प्रश्न 30. गुप्तचार व्यवस्था का जनक किसे कहा जाता है ?

(क) कौटिल्य को (ख) सन्तजू को

(ग) नेपोलियन को (घ) क्लाज विट्ज को

प्रश्न 31. कौटिल्य ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कितने प्रकार के गुप्तचर बताये हैं ?

(क) चार प्रकार के (ख) पांच प्रकार के

(ग) छः प्रकार के (घ) सात प्रकार के

प्रश्न 32. कौटिल्य ने राष्ट्रीय स्तर पर कितने प्रकार के गुप्तचर बताये हैं ?

(क) चार प्रकार के (ख) आठ प्रकार के

(ग) पांच प्रकार के (घ) नौ प्रकार के

प्रश्न 33. कौटिल्य द्वारा वर्णित किस श्रेणी के राजदूतों को शासन की ओर से राज्य के सन्दर्भ में पूर्ण अधिकार प्राप्त थे ?

(क) शासन हर (ख) परिमितार्थ

(ग) धर्मविद्या (घ) निःसृष्टार्थ

प्रश्न 34. कौटिल्य द्वारा वर्णित किस श्रेणी के राजदूत केवल सन्देशवाहक मात्र ही होते थे ?

(क) शासन हर (ख) परिमितार्थ

(ग) निःसृष्टार्थ (घ) कामोपधा

प्रश्न 35. कौटिल्य ने युद्ध में कितनी प्रकार की व्यूह रचनाओं का उल्लेख किया है ?

(क) सात प्रकार की (ख) चार प्रकार की

(ग) पांच प्रकार की (घ) आठ प्रकार की

प्रश्न 36. 'The Prince' पुस्तक की रचना किसने की है ?

(क) सन्तजू (ख) मैक्यावेली

(ग) क्लाज विट्ज (घ) जोमिनी

प्रश्न 37. फ्लोरेंस का इतिहास पुस्तक किसका संकलन है ?

(क) चाणक्य का (ख) क्लाजविट्ज का

(ग) मैक्यावेली का (घ) जोमिनी का

प्रश्न 38. सेना में अनुशासन के महत्त्व पर किस विचारक ने अधिक बल दिया ?

(क) सन्तजू ने (ख) जोमिनी ने

(ग) नेपोलियन को (घ) मैक्यावेली ने

प्रश्न 39. मैक्यावेली की प्रसिद्ध पुस्तक है—

(क) The Art of war (ख) Nature of war

(ग) The Attack (घ) Defence

प्रश्न 40. मैक्यावेली ने अपनी किस पुस्तक में शासक के कर्त्तव्यों का उल्लेख किया है ?

(क) The Art of war (ख) The Prince
(ग) History of Florence (घ) Discources

प्रश्न 41. सत्ता के लिए श्रेष्ठ सैन्य शक्ति का आवश्यक होना, किस विचारक ने बताया ?

(क) क्लाजविट्ज (ख) जोमिनी
(ग) सन्तजू (घ) मैक्यावेली ने

प्रश्न 42. कौन सा विचारक सम्पूर्ण सशास्त्र राष्ट्र का प्रबल समर्थक था ?

(क) सन्तजू (ख) जोमिनी
(ग) मैक्यावेली (घ) फ्रेड्रिक महान

प्रश्न 43. "The basis of political power is military might and not money", कथन किसका है ?

(क) सन्तजू (ख) मैक्यिावेली
(ग) क्लाजविट्ज (घ) जोमिनी

प्रश्न 44. क्लाजविट्ज किस राष्ट्र का सैन्य विचारक था ?

(क) प्रशा का (ख) आस्ट्रिया का
(ग) रोमन का (घ) यूनान का

प्रश्न 45. क्लाजविट्ज ने किसके विरुद्ध युद्ध में मोर्चा सम्भाला था ?

(क) जोमिनी के (ख) नेपोलियन के
(ग) सन्तजू के (घ) फ्रेड्रिक के

प्रश्न 46. क्लाजविट्ज ने अपनी पुस्तक 'ON WAR' को कितने अध्यायों में विभक्त किया है ?

(क) पांच अध्यायों में (ख) सात अध्यायों में
(ग) छः अध्यायों में (घ) आठ अध्यायों में

प्रश्न 47. सम्पूर्ण युद्ध (Absolute War) का जनक कहा जाता है ?

(क) जोमिनी (ख) मैक्यावेली
(ग) क्लाजविट्ज (घ) गुस्टावस एडालफस

प्रश्न 48. "Tactics is the theory of use of military force in compat" कथन किसका है ?

(क) क्लाजविट्ज (ख) जोमिनी
(ग) सन्तजू (घ) नेपोलियन

प्रश्न 49. क्लाजविट्ज ने युद्ध के कितने सिद्धान्तों का उल्लेख किया है ?

(क) दस (ख) सात

(ग) आठ (घ) नौ

प्रश्न 50. जोमिनी मूल रूप से किस देश का नागरिक था ?

(क) स्विट्ज़रलैण्ड का (ख) फ्रांस का

(ग) जर्मन का (घ) रूस का

प्रश्न 51. "Great Military Operation" नामक पुस्तक की रचना किसने की ?

(क) क्लाजविट्ज ने (ख) जनरल जोमिनी ने

(ग) नेपोलियन ने (घ) सन्तजू ने

प्रश्न 52. "Summary of the Art of war" रचना किस सैन्य विचारक की है ?

(क) क्लाजविट्ज (ख) नेपोलियन

(ग) जनरल जोमिनी (घ) गुस्टावस एडाल्फस

प्रश्न 53. "It teaches my whole system of war to my enemies." कथन किस सैन्य विचारक का है ?

(क) फ्रैड्रिक महान (ख) जनरल जोमिनी

(ग) क्लाज़विट्ज (घ) नेपोलियन

प्रश्न 54. 'फायर एव गति (Fire and Movement) के द्वारा अपनी कूट योजना का निर्धारण करना चाहिए' किसका कहना था ?

(क) जनरक जोमिनी (ख) गुस्टावस

(ग) सन्तजू (घ) क्लाजविट्ज

प्रश्न 55. 'Importance of Communication' संचार व्यवस्था के महत्त्व पर किस जनरल ने विशेष ध्यान दिया ?

(क) क्लाजविट्ज (ख) कौटिल्य

(ग) नेपोलियन (घ) जनरल जोमिनी

प्रश्न 56. 'The Main base of an army is the battle of Taches." यह विचार किसका है ?

(क) जनरल जोमिनी (ख) फ्रेड्रिक महान

(ग) नेपोलियन (घ) क्लाजविट्ज

प्रश्न 57. "नेपोलियन युद्ध का देवता था और जोमिनी उसका मसोटा था।" कथन किसका है ?

(क) जनरल हिटिल (ख) डूहेट

(ग) जनरल फुलर (घ) जनरल पालित

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर
(Answers of Objective Type Questions)

1. (क)	**2.** (ख)	**3.** (ग)	**4.** (क)	**5.** (क)
6. (ख)	**7.** (ग)	**8.** (ग)	**9.** (घ)	**10.** (ग)
11. (ग)	**12.** (क)	**13.** (घ)	**14.** (ख)	**15.** (ख)
16. (घ)	**17.** (ग)	**18.** (ख)	**19.** (ख)	**20.** (ग)
21. (क)	**22.** (ख)	**23.** (ग)	**24.** (घ)	**25.** (ख)
26. (क)	**27.** (क)	**28.** (क)	**29.** (ख)	**30.** (क)
31. (क)	**32.** (ग)	**33.** (घ)	**34.** (क)	**35.** (ख)
36. (ख)	**37.** (ग)	**38.** (घ)	**39.** (क)	**40.** (ख)
41. (घ)	**42.** (ग)	**43.** (ख)	**44.** (क)	**45.** (ख)
46. (घ)	**47.** (ग)	**48.** (क)	**49.** (ग)	**50.** (क)
51. (ख)	**52.** (ग)	**53.** (ख)	**54.** (क)	**55.** (घ)
56. (क)	**57.** (क)।			

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय 2006

World Military History
(Earliest time to 1789 A.D.)
PAPER—I

Time : Three Hours] **[Maximum Marks : 60**

नोट:—कोई **पाँच** प्रश्न कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. हथियार की परिभाषा देते हुए इसकी आवश्यक विशेषताओं का विस्तार से वर्णन करें। 4 + 8 = 12
2. कवच के आधार पर सैन्य इतिहास के वर्गीकरण से सम्बन्धित टॉम विन्ट्रिघम द्वारा प्रतिपादित विचारों की विस्तार से व्याख्या कीजिए। 12
3. रोमन लीजन के संगठन, विशेषताओं व कमियों का विस्तार से उल्लेख कीजिए। 4 + 4 + 4 = 12
4. युद्ध कला के क्षेत्र में सिकन्दर महान द्वारा किये गए सैन्य सुधारों की विवेचना कीजिए। 12
5. 378 ई० की एड्रियानोपल की लड़ाई के बाद घुड़सवार सेना के उदय के कारणों का विस्तारपूर्वक उल्लेख करें। 12
6. फ्रेड्रिक महान द्वारा युद्ध कला के क्षेत्र में किए गए सैन्य सुधार व योगदान का संक्षेप में उल्लेख करें। 12
7. 1789 ई० की फ्रांस की क्रान्ति के प्रमुख कारण कौन-कौन से थे? विवेचना कीजिए। 12
8. कैने के संग्राम की मुख्य घटनाओं का सचित्र वर्णन करते हुए इसकी सैनिक शिक्षाओं को भी स्पष्ट कीजिए। 12
9. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें:—
   (क) वाटरलू का संग्राम (1815 ई०)
   (ख) मध्यकालीन युद्धकला पर जागीरदारी प्रथा का प्रभाव। 6 + 6 =- 12
10. निम्नलिखित के सही उत्तर लिखें:—
    (क) पिडना का संग्राम कब लड़ा गया था? 2
    (ख) सैन्य इतिहास के किस काल को 'अन्धकार का युग' कहा जाता है? 2
    (ग) 'उत्तर का शेर' किसे कहा जाता है? 2
    (घ) 'Weapons and tactics' नामक पुस्तक के लेखक कौन थे? 2
    (ङ) 'पैदल सेना युद्ध क्षेत्र की रानी कही जाती है'। कथन किसका है? 2
    (च) 'बैलिस्टे' तथा 'कैटापुल्ट' क्या थे? 2

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय—2006

B.A. PART—I (M.D.U.)
DEFENCE STUDIES
World Military History (Earliest Times to 1789 A.D.)

Time Allowed : 3 Hours *Maximum Marks : 60*

नोट : किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

परीक्षार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने प्रश्न-पत्र की पूर्णतया जांच कर लें कि उनके पास प्रश्न-पत्र पूर्ण व सही है अथवा नहीं। परीक्षा के उपरान्त इसके बारे में कोई भी शिकायत नहीं सुनी जाएगी।

1. हथियार को परिभाषित करते हुए इसकी विशेषताओं का विस्तार से वर्णन कीजिए। 12
2. 'यूनानी फलेक्स' के संगठन, विशेषताओं तथा कमियों का वर्णन कीजिए। 12
3. एक स्वच्छ रेखाचित्र की मदद से कैने की लड़ाई (216 ई० पू०) का वर्णन कीजिए। 12
4. अश्वारोही सेना के पतन के प्रमुख कारणों की विस्तार से व्याख्या कीजिए। 12
5. 'वाटरलू' के संग्राम (1815 ई०) का वर्णन करें। नेपोलियन की पराजय के कारणों का उल्लेख कीजिए। 12
6. 'गुस्तावस अडोल्फस' के सैन्य सुधारों का विस्तार से वर्णन कीजिए। 12
7. महान् सैन्य विचारक 'चाणक्य' के विचार सविस्तार वर्णन कीजिए। 12
8. भाप युग की सेनाओं तथा युद्धों की विशेषताओं का सविस्तार वर्णन कीजिए। 12
9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए— 6 + 6
   (अ) फ्रांस की क्रान्ति के प्रभाव
   (ब) युद्धकला के क्षेत्र में नेपोलियन का योगदान
   (स) सिकन्दर महान् द्वारा किए गए सैन्य सुधार।
10. निम्नलिखित का सही उत्तर लिखिए— प्रत्येक 2
    (अ) 'यूनानी फलेक्स' की कुल संख्या होती थी—
    (*i*) 16384
    (*ii*) 18384
    (*iii*) 18484
    (*iv*) 16484

(ब) "विभाजित होकर आगे बढ़ो तथा मिलकर लड़ो," यह कथन किसका है—

(*i*) नेपोलियन (*ii*) जोमिनी

(*iii*) लिडिल हार्ट (*iv*) फुलर।

(स) क्रेसी का संग्राम लड़ा गया—

(*i*) रोम और यूनानियों के बीच

(*ii*) अंग्रेज़ और सिक्खों के बीच

(*iii*) अंग्रेज़ और फ्रांसीसियों के बीच

(*iv*) यूनान और फारसियों के बीच।

(द) घुड़सवार सेना का पतन सम्बन्धित है—

(*i*) अरबेला की लड़ाई से

(*ii*) क्रेसी की लड़ाई से

(*iii*) हेस्टिंग्ज की लड़ाई से

(*iv*) कैने की लड़ाई से।

(य) आग्नेय-शास्त्रों का अभ्युदय हुआ था—

(*i*) 12वीं शताब्दी में

(*ii*) 13वीं शताब्दी में

(*iii*) 14वीं शताब्दी में

(*iv*) 15वीं शताब्दी में।

(र) 'समग्र युद्ध' (total war) की अवधारणा का सम्बन्ध निम्न में किससे है—

(*i*) हुडेट

(*ii*) सिकन्दर महान्

(*iii*) मैक्यावेल्ली

(*iv*) नेपोलियन।

A
traditional
symbol of quality